UNFORTUNATE
SOULS
unfortunate souls book one
JADE M. PHILLIPS

Table of Contents

एक: रूबी
दो: रूबी
तीन: लड़का
चार: रूबी
पांच: लड़का
छह: रूबी
सात: रूबी
आठ: रूबी
नौ: रूबी
दस: रूबी
ग्यारह: रूबी
बारह: लड़का
तेरह: रूबी
चौदह: रूबी
पंद्रह: रूबी
सोलह: लड़का
सत्रह: रूबी
अठारह: लड़का
उन्नीस: रूबी
बीस: रूबी
इक्कीस: लड़का
बाईस: रूबी
तेईस: रूबी
चौबीस: लड़का
पच्चीस: रूबी
छब्बीस: रूबी
सत्ताईस: लड़का
अट्ठाईस: रूबी
उनतीस: रूबी
तीस-आदमी
इकत्तीस: रूबी
बत्तीस: रूबी
तैंतीस: लड़का
चौंतीस: रूबी
पैंतीस: लड़का
छत्तीस: रूबी
सैंतीस: रूबी

अड़तीस: रूबी
उनतीस: लड़का
चालीस: रूबी

दुर्भाग्यशाली आत्माएँ
पुस्तक एक

जेड एम फिलिप्स

मेरे पति और बच्चों के लिए: मैं आप सभी से इतना प्यार करती हूँ कि शब्दों में बयां नहीं कर सकती। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान मुझे सहन करने के लिए धन्यवाद, मैं सचमुच आपकी आभारी हूँ।
मेरे पापा को: मैं आपका जितना भी शुक्रिया अदा करूं कम है। आप मेरे सबसे बड़े समर्थक रहे हैं और मैंने कागज पर जो कुछ भी लिखा है, उसे सबसे पहले पढ़ने वाले आप ही हैं। आप मेरे हीरो हैं और मैं आपसे बहुत प्यार करता हूं।
मेरे परिवार और दोस्तों को, जिन्होंने सुख-दुख में मेरा साथ दिया, धन्यवाद!
और मेरे सभी प्रशंसकों को, जिनके बिना मेरे पास लिखने के लिए कुछ भी नहीं होता, ढेर सारा प्यार!

कॉपीराइट © 2015
यह पुस्तक संयुक्त राज्य अमेरिका के कॉपीराइट कानूनों के अंतर्गत संरक्षित है। इसमें दी गई सामग्री या कलाकृति का कोई भी पुनरुत्पादन या अन्य अनधिकृत उपयोग निषिद्ध है।
यह पुस्तक एक काल्पनिक रचना है। इसमें जीवित या मृत व्यक्तियों से कोई भी समानता महज़ संयोग है।
कवर आर्ट: बुक बर्डी डिज़ाइन्स

विषयसूची

एक: रूबी

दो: रूबी

तीन: लड़का

चार: रूबी

पांच: लड़का

छह: रूबी

सात: रूबी

आठ: रूबी

नौ: रूबी

दस: रूबी

ग्यारह: रूबी

बारह: लड़का

तेरह: रूबी

चौदह: रूबी

पंद्रह: रूबी

सोलह: लड़का

सत्रह: रूबी

अठारह: लड़का

उन्नीस: रूबी

बीस: रूबी

इक्कीस: लड़का

बाईस: रूबी

तेईस: रूबी

चौबीस: लड़का

पच्चीस: रूबी

छब्बीस: रूबी

सत्ताईस: लड़का

अट्ठाईस: रूबी

उनतीस: रूबी

तीस-आदमी

इकत्तीस: रूबी

बत्तीस: रूबी

तैंतीस: लड़का

चौंतीस: रूबी

पैंतीस: लड़का

छत्तीस: रूबी

सैंतीस: रूबी

अड़तीस: रूबी

उनतीस: लड़का

चालीस: रूबी

~समाप्त~

चोरी छिपे देखना

करने के लिए जारी:

जेड के बारे में

क्या आपको संगीत पसंद है? Spotify पर अनफॉर्चुनेट सोल की प्लेलिस्ट का आनंद लेने के लिए यहां क्लिक करें। अगर आपके पास Spotify नहीं है, तो इसे अपने ऐप स्टोर से मुफ्त में डाउनलोड करें! पढ़ने का आनंद लें!

एक: रूबी

क्या आपको पता है कि मरने का अनुभव कैसा होता है?
मैं करता हूं।
और यकीन मानिए, मैं इसकी सिफारिश बिल्कुल नहीं करूंगा।
मृत्यु का अनुभव गिरने जैसा है, बस फर्क इतना है कि गिरने के लिए कोई सहारा नहीं होता। आप अंधेरे में और भी गहरे गिरते जाते हैं, समय बीतने के साथ-साथ आपके शरीर का हर हिस्सा कमजोर और निर्बल होता जाता है। यह भयानक, अकेलापन भरा और सर्द होता है। कल्पना कीजिए कि आप आर्कटिक के बीचोंबीच बिना कपड़ों के, शून्य से नीचे के तापमान में, बर्फीले तूफान के बीच खड़े हैं, तो भी मृत्यु की ठंडक का अंदाजा लगाना मुश्किल है। सुनने में मजेदार लगता है, है ना?
तो आप अपनी मृत्युशय्या पर लेटे हुए हैं, ठंड से कांप रहे हैं, आपका शरीर अकड़ गया है और लकवाग्रस्त हो गया है, एक उंगली उठाने का प्रयास भी—चाहे आप सफल हों या न हों—उतना ही ऊर्जा से भरा है कि उसका कोई मूल्य नहीं है। जब आपको एहसास होता है कि आप वास्तव में मर रहे हैं, तो भय आपके भीतर काले तूफानी बादलों की तरह गरज उठता है, और आप चीखना, कोसना और जोर-जोर से चिल्लाना चाहते हैं। आप चिल्लाना चाहते हैं कि सत्रह साल की उम्र मरने के लिए बहुत कम है, अभी आपका समय नहीं आया है।
दुर्भाग्यवश, आप केवल हांफती हुई सांसें ही ले पा रहे हैं, आपका दिमाग कुछ करने के लिए संघर्ष कर रहा है लेकिन आपके हाथ-पैर साथ नहीं दे रहे। आपका शरीर धीरे-धीरे काम करना बंद कर देता है, मानो आप डूबते हुए जहाज के कप्तान हों। आपका रक्त प्रवाह कम हो जाता है, हृदय गति धीमी हो जाती है, फेफड़े भारी हो जाते हैं, मांसपेशियां अकड़ जाती हैं, हड्डियां ठंडी पड़ जाती हैं और नसें सुन्न हो जाती हैं।
और मरने का सबसे बुरा पहलू यह है कि आपका दिमाग सबसे आखिर में काम करना बंद करता है। आप अपने ही निजी कारागार में फँस जाते हैं, जो आपके चारों ओर ढह रहा होता है, और आपके शरीर का हर कण जीवित रहने की मानवीय प्रवृत्ति से चीख रहा होता है। यह आंतरिक संघर्ष वास्तव में यातनापूर्ण होता है।
जब आप अंततः इतने थक जाते हैं कि मृत्यु के काले रथ को स्वीकार करते हुए हार मान लेते हैं, तो सब कुछ नींद में खो जाने की तरह गायब हो जाता है - सिवाय इसके कि सुबह जागने वाला हिस्सा नहीं होता।
गायब। काला। शून्य।
मृत्यु के अंधकार से पहले मुझे जो आखिरी चीज याद है, वह एक गीला आंसू था, जो मेरे गाल से लुढ़क रहा था, और अपने साथ मेरी आत्मा का आखिरी अंश भी बहा ले जा रहा था।
लेकिन मरने की एक और प्रक्रिया है जिसका मैंने उल्लेख नहीं किया - एक ऐसी प्रक्रिया जिसे देखने का दावा बहुत से लोग नहीं कर सकते।
पुनर्जन्म।
मेरा अनुभव सचमुच काफी अपरंपरागत था, और हालांकि मेरी इच्छा थी कि यह एक पारंपरिक

पुनर्जन्म होता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यह किसी गहरी नींद से जागने जैसा बिल्कुल नहीं था, जहां आप धीरे-धीरे दुनिया में लौटते हैं और सूरज की किरणें खिड़की के पर्दों से छनकर आपके कंबल को गर्म करती हैं।

नहीं, यह तो ऐसा था जैसे किसी गर्मजोशी भरे आलिंगन से छीनकर बर्फीले पानी के टब में फेंक दिया गया हो, जिसका झटका इतना गहरा था कि अंदर तक हिल गया। यह बिल्कुल नया, विचित्र, चौंकाने वाला और बेहद दर्दनाक था। अब मुझे समझ आया कि नवजात शिशु पहली बार दुनिया में आने पर क्यों रोते हैं...

प्रकाश की हल्की सी किरण भी आपकी आँखों को झुलसा देती है। कोई भी छोटी सी आवाज़ आपके कानों में सौ गुना तेज़ होकर सायरन की चीख जैसी लगती है। कोई भी स्पर्श आपकी कोमल त्वचा पर खुरदरे कागज़ की तरह चुभता है, और बिजली के झटके हर नस, मांसपेशी और हड्डी में दौड़ते हैं, क्योंकि आपका शरीर अपने नए और अपरिचित परिवेश के अनुकूल होने की कोशिश करता है।

आपकी सूंघने की शक्ति भी बढ़ जाती है, सुगंध और महक इतनी तीव्र हो जाती हैं कि आपका संवेदनशील पेट मचलने लगता है। गर्मी और ठंड का एहसास और भी तीव्र हो जाता है, जैसे आग और बर्फ की जमा देने वाली जलन, आपका दिमाग उन रंगों, ध्वनियों और गंधों से भर जाता है जिनके अस्तित्व से आप कभी परिचित नहीं थे।

कम से कम मेरे लिए तो ऐसा ही था—मेरा शरीर एक बिल्कुल नई दुनिया में प्रवेश कर रहा था जहाँ मैं अपना नया जीवन शुरू करने वाली थी।

एक पिशाच के रूप में मेरा जीवन।

दो: रूबी

जैसे ही मैं दो-दो सीढ़ियाँ एक साथ उतरकर नीचे भागी, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, विश्वासघात ने मेरे अंदर एक अजीब सी बेचैनी पैदा कर दी थी।

"रूबी। रूबी रुको।" माँ ने मुझे पुकारा, लेकिन मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी और तब तक दौड़ती रही जब तक मैं सामने के दरवाजे तक नहीं पहुँच गई।

"रूबी कार्टर, तुम अभी यहीं वापस आओ," मेरे पिता की आवाज़ गूंजी, या जैसा कि मुझे अभी पता चला था—वह आदमी जो पिछले सत्रह सालों से मेरे पिता होने का नाटक कर रहा था। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला, मेरे गले में एक कड़वाहट सी आ गई, मैं सोच रही थी कि अगर मैं तेज़ी से भागूँ तो इस पूरी स्थिति से बच सकती हूँ और ऐसा दिखावा कर सकती हूँ कि कुछ हुआ ही नहीं।

"बेटा, चलो इस बारे में बात करते हैं," माँ ने विनती की, और उनकी शांत आवाज़ सुनकर मेरे शरीर में आक्रोश की लहर दौड़ गई, मानो जलती हुई आग।

मैं एक पल के लिए रुककर पीछे देखने लगी, यह सोचकर कि मेरे माता-पिता मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं, मेरी आँखों में अनकहे आँसू भरे हुए थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरा दिल सीने में चूर-चूर हो रहा हो।

मेरी माँ और वो 'पिता', वो आदमी जिसने इतने सालों तक झूठ बोलकर खुद को मेरा असली पिता बताया था, सीढ़ियों के ऊपर खड़े थे। उनकी भौंहें तन गई थीं, चेहरा लाल हो रहा था। मेरी माँ उदास लग रही थीं और मुझे उन पर तरस आ रहा था। बस थोड़ा सा। वो भी इस धोखे में शामिल थीं, अब तक उन्होंने सच नहीं बताया था। मैंने अपने दांत भींच लिए और मुट्ठियाँ भींच लीं। मेरी नज़र में तो वो दोनों ही नरक में जाएँ।

"तुमने मुझसे झूठ बोला!" मेरे गले में गुस्से का एक गोला सा बन गया, मेरी गर्दन दबे हुए आँसुओं से दर्द कर रही थी। मैं मुश्किल से साँस ले पा रही थी। "इतने समय से तुम... तुमने मुझसे झूठ बोला!"

माँ ने सहानुभूति भरी नज़र से मेरी ओर देखा, उनकी आवाज़ लगभग फुसफुसाहट जैसी थी। "रूबी—"

"नहीं!"

मैं घूमी और उमस भरी शाम में कूद पड़ी, और अपने पीछे दरवाजा जोर से बंद कर दिया, अपनी जिंदगी से नफरत करते हुए। जैसे ही मैं दौड़ती हुई सड़क पर भागी, एक खरगोश मेरे रास्ते से निकल गया, उस कार के पास से जो मुझे मेरे सोलहवें जन्मदिन पर मिली थी। लेकिन मैंने उस पर ध्यान ही नहीं दिया। मैं उन लोगों से दूर भागने में इतनी मशगूल थी जो मुझे अपनी बेटी कहते थे, और मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मैंने एरिजोना के उस उपनगरीय घर की तरफ देखने की हिम्मत भी नहीं की, जहाँ मैं पली-बढ़ी थी, क्योंकि मुझे पता था कि वे वैसे भी मेरे पीछे नहीं आएंगे।

वे ऐसा क्यों करते? वे दोनों तो कभी आस-पास रहते ही नहीं थे, मुझसे ज़्यादा अपने करियर की चिंता करते थे। क्या वे तब मेरे साथ थे जब मेरा पैर टूटा था? नहीं। क्या वे तब मेरे साथ थे जब मेरा पहला दांत टूटा था? नहीं। क्या वे तब मेरे साथ थे जब मेरे कुत्ते को कार ने कुचल दिया था? नहीं। मेरा सीना ऐसे जकड़ गया जैसे कोई अदृश्य हाथ मेरे फेफड़ों से हवा निचोड़ रहा हो। और अब यह

जानकर कि मेरे पिता असल में मेरे पिता नहीं थे, बल्कि एक नकली रूप थे, मैं पूरी तरह हिल गया था।

उस शाम मेरे माता-पिता ने मुझे बिठाकर कुछ बातें बताईं और समझाया कि मेरे असली पिता ने लगभग अठारह साल पहले मेरी माँ को तब छोड़ दिया था जब वह मुझसे गर्भवती थीं। वह चले गए और कभी वापस नहीं आए, और मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाई कि इतने समय से मेरा जीवन एक झूठ था। पड़ोस के पार्क में अकेले बैठे हुए मेरी आँखों से गुस्से के आँसू बहने ही वाले थे।

पूरब की ओर आसमान काला पड़ रहा था और धूसर बादल विशाल क्रोधित भेड़ों की तरह जमा हो गए थे, मानो एक और गर्मी के तूफान का आभास दे रहे हों—ठीक वैसा ही तूफान जैसा मैं अपने अंदर महसूस कर रही थी। कांपते हाथों से मैंने पास पड़े पत्थर को उठाकर फेंकने की इच्छा को दबाया, शायद मौका मिलते ही वह मेरे हाथ से छूट जाता। हवा का एक झोंका मेरे बालों को पीछे की ओर उड़ा ले गया, और मैं पास के झूले पर कूद पड़ी, अपना चेहरा हाथों में छिपाकर रोने की कोशिश करने लगी। मैंने आंसू बहाने की कोशिश की, लेकिन सुन्न पड़ जाने के कारण नहीं बहा पाई। इस चौंकाने वाली खबर ने मुझे पूरी तरह से झकझोर दिया था—और वह भी मेरे अठारहवें जन्मदिन से ठीक एक रात पहले।

मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि मेरे माता-पिता ने मुझे यह बताने में इतना समय क्यों लगाया कि मेरे पिता वास्तव में मेरे पिता नहीं थे। लेकिन जैसे-जैसे मैं इस विचार पर गौर करती गई, सब कुछ एक उलझी हुई पहेली के टुकड़ों की तरह सुलझता चला गया— कि वह मेरे साथ ज़्यादा समय क्यों नहीं बिताते थे और मुझे स्नेह दिखाने में उन्हें हमेशा क्यों हिचकिचाहट होती थी। दरअसल, मैं उनकी सच्ची बेटी नहीं थी। मैं उनकी असली बेटी नहीं थी और वह यह बात हमेशा से जानते थे।

मेरी बेतहाशा गुस्से को शब्दों में बयां करना बहुत कम होगा; परित्याग और क्रोध का मिलाजुला भाव मेरे सीने में किसी तीखे चाकू की तरह चुभ रहा था। मैं सीधा बैठ गया, सोच रहा था कि क्या करूँ, क्योंकि तेज़ हवा मेरी त्वचा को चुभ रही थी। हवा का एक और झोंका धूल का बादल लेकर आया और मैंने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं।

कम से कम मेरे पास मेरा बॉयफ्रेंड जॉन तो था। इस समय मुझे कोई और ऐसा व्यक्ति नहीं सूझ रहा था जो उसकी तरह मेरी बात समझ सके। मैंने कांपते हुए हाथ से अपनी जेब में अपना मोबाइल फोन निकाला।

“हे।” एक ही घंटी बजने पर उसने फोन उठा लिया, उसकी आवाज सुनकर मुझे राहत मिली।

“जॉन।” मैंने धीमी आवाज़ में कहा, अपनी आवाज़ को शांत रखने की कोशिश करते हुए, यह ज़ाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि मैं कितनी परेशान थी। “मैं... मुझे समझ नहीं आ रहा था कि किसे फ़ोन करूँ। मैं—”

“अच्छा हुआ तुमने रूबी को फोन किया। हमें बात करनी है।” उसकी आवाज़ दूर से आती हुई, अजीब सी लग रही थी।

अरे—क्या? मैंने उलझन में अपनी भौंहें सिकोड़ लीं और फोन को ठुड्डी और कंधे के बीच दबा लिया। मैंने उसे अपने माता-पिता के बारे में बताने के लिए फोन किया था, लेकिन उसकी आवाज़ में जो अजीबपन था, उससे लग रहा था कि उसे भी मुझसे कुछ उतना ही ज़रूरी कहना है। मेरे अंदर बेचैनी होने लगी और मैं झूले पर आगे-पीछे झूलने लगी, मेरे पैर ज़मीन पर टिके हुए थे।

कुछ देर तक हमारे बीच सन्नाटा छाया रहा, मैं यह समझने की कोशिश कर रहा था कि आखिर हो क्या रहा है। तभी पार्क में कूड़े का एक टुकड़ा उड़कर आया और जॉन ने अपना गला साफ किया।

"मेरे मन में कुछ चल रहा है। कुछ ऐसा जिसके बारे में मैं आपसे बात करना चाहता हूं।"

मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई। उसके शब्द मौसम की तरह ही अशुभ और निराशाजनक थे। वे शब्द ब्रेकअप के शब्दों जैसे लग रहे थे।

लेकिन ऐसा हो ही नहीं सकता था। जॉन बचपन से ही मेरा सबसे अच्छा दोस्त था, और जैसे-जैसे हम बड़े होते गए, चीजें बदलने लगीं और हमारी बचपन की पारंपरिक दोस्ती दोस्ती से कहीं बढ़कर हो गई। यह कभी कोई चिंगारी या रोमांच जैसा नहीं था, लेकिन ऐसा लगता था जैसे हम हमेशा से एक-दूसरे के लिए ही बने थे।

लेकिन, समझाने के बजाय, जॉन चुप हो गया मानो शब्दों की तलाश कर रहा हो। मेरे बालों की एक लट मेरे चेहरे के सामने आ गई। मैंने उसे हटा दिया।

"जॉन।" मेरी आँखों से एक छलकता हुआ आँसू निकल गया। "कुछ तो बोलो।" जैसे ही काले बादल डूबते सूरज को ढकने लगे, मुझे तापमान में गिरावट महसूस हुई। मैंने अपने हाथों को अपनी छाती के चारों ओर लपेट लिया और गहरी साँस ली। "क्या हो रहा है? बस मुझे बता दो।"

जॉन ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन स्पीकर में उसकी साँसें इतनी तेज़ सुनाई दे रही थीं मानो मैं हवा से बात कर रही हूँ। उसकी खामोशी से मुझे असहजता हो रही थी, इसलिए मैंने माहौल को हल्का करने के लिए जबरदस्ती हँसी हँस दी। "क्या? क्या तुम्हारी स्कॉलरशिप रद्द हो गई या कुछ और?"

"बस... कहीं मिल लेते हैं।" उसकी आवाज़ में दूरी और ठंडक थी।

डर मेरे पूरे शरीर में समा गया और मेरी सांसें थम गईं। मुझे सांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही थी। "जॉन, तुम अजीब व्यवहार कर रहे हो। क्या बात है? बस मुझे बता दो। मेरा दिन बहुत खराब गया है और अभी-अभी मुझे पता चला है—"

"रूब्स..." उसने एक गहरी साँस छोड़ी, जिससे मेरी बात कहने की कोशिश फिर नाकाम हो गई। फिर उसने खाँसा और गले से खराश निकाली। "मुझे एएसयू में दाखिला मिल गया है। मैं कल हॉस्टल देखने जा रहा हूँ।"

मेरा दिल ऐसे धड़क उठा जैसे बिना पैराशूट के स्काईडाइवर का दिल धड़क उठता है। जॉन को एएसयू नहीं जाना था, जो फीनिक्स में दो घंटे की दूरी पर था। हम दोनों ने टक्सन में यूनिवर्सिटी ऑफ एए जाने पर सहमति जताई थी। और वो कल, मेरे जन्मदिन पर जा रहा था?

"लेकिन..."

"यह मेरे लिए बेहतर है। यह एक बेहतर छात्रवृत्ति है। कुछ बेहतरीन पेशेवर फुटबॉल खिलाड़ी एएसयू से भर्ती होते हैं। मैं बस... इसे ठुकरा नहीं सकता।"

मेरा दिल घबराहट से तेज़ी से धड़कने लगा, लेकिन मैंने गहरी सांस ली और खुद को संभाला, यह सोचते हुए कि शायद मैं इस बात को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रही हूँ। ज़ाहिर है, मैं जॉन के लिए खुश थी और मैं उसके लिए सिर्फ़ अच्छा ही चाहती थी। हम सप्ताहांत में एक-दूसरे से मिल सकते थे, या शायद एक सेमेस्टर के बाद मैं एएसयू में दाखिला ले सकती थी।

मैंने बनावटी मुस्कान बिखेरी, स्थिति को हल्का दिखाने की कोशिश करते हुए। "कोई बात नहीं। हम एक-दूसरे से सिर्फ़ दो घंटे की दूरी पर होंगे। मैं अगले हफ़्ते टक्सन जा रही हूँ अपना हॉस्टल सेट करने के लिए। मैं तुम्हारा पसंदीदा बीन बैग ज़रूर लाऊँगी—और हाँ, शुक्रवार की रात को तुम गाड़ी चलाकर आ सकते हो, या मैं—"

"रूबी।" उसने बीच में ही टोकते हुए कहा। "मैं यही कहना चाह रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि यह तरीका काम करेगा।"

मेरे पेट में अजीब सी हलचल हुई और मैंने वही किया जो मैं हमेशा असहज महसूस करते समय करती हूँ—बकवास करने लगी। "बिल्कुल होगा। और शायद कुछ समय बाद, मैं एएसयू में नर्सिंग

प्रोग्राम के बारे में पता कर सकती हूँ। शायद मैं वहाँ ट्रांसफर ले लूँ और—"
जॉन ने गला साफ किया और मेरी बात बीच में ही रोक दी।
"मुझे... मुझे ऐसा नहीं लगता। मैं नहीं चाहूँगा कि तुम्हें ऐसा करना पड़े। तुम्हें पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। और मुझे फुटबॉल पर ध्यान देना चाहिए। हमारे पास इसके लिए समय नहीं होगा..."
"किस बात का समय?" विश्वासघात की चुभन मेरे दिल में गर्म सुईयों की तरह चुभ गई। "एक-दूसरे के लिए समय? रिश्ते के लिए समय? क्या तुम यही कहना चाह रहे हो?"
उनकी चुप्पी ने मेरे सवाल का जवाब दे दिया।
मेरा दिल चकनाचूर हो गया और मेरी आँखों में आँसू आ गए। आखिरकार, वो मुझसे रिश्ता तोड़ ही रहा था। वो आदमी—वो लड़का—जिसे मैं अपनी पूरी ज़िंदगी से जानती थी, जिसके साथ मैंने बुढ़ापा बिताने का सपना देखा था, मुझे वैसे ही छोड़ रहा था जैसे मेरे असली पिता ने मुझे और मेरी माँ को मेरे जन्म से पहले ही छोड़ दिया था, मुझे एक पुराने, चिकने, बासी फ्रेंच फ्राइज़ से भरे थैले की तरह किनारे फेंक दिया था। और मेरे अठारहवें जन्मदिन से ठीक एक दिन पहले। कमीना! मुझे अंदर से बहुत तकलीफ हो रही थी और मुझे लगा कि मैं उल्टी कर दूंगी। मैंने उसे अपने माता-पिता और अपने पिता के बारे में जो कुछ पता चला था, वो बताने से खुद को रोका। अब जब वो हमारा रिश्ता खत्म कर रहा था, तो बताने का कोई फायदा नहीं था।
जॉन ने आह भरी।
मुझे माफ करना रूबी। मैं नहीं चाहता था कि इसका अंत इस तरह हो।
मैंने अपने आँसू पोंछे और अपनी साँसों को संभालने की कोशिश की। मैं नहीं चाहती थी कि उसे पता चले कि मैं रो रही हूँ। फिर भी, मेरे आँसू मेरे होंठों तक पहुँच गए और मुँह में नमकीन स्वाद फैल गया। पार्क में तेज़ हवा चल रही थी, जिससे मेरे कान में लगे स्पीकर से कर्कश आवाज़ आ रही थी। जॉन की आवाज़ धीमी और भारी थी।
"आप बहुत अच्छे रहे हैं। लेकिन मैंने अभी तक अपना जीवन पूरी तरह से नहीं जिया है। मैंने अपने सभी विकल्पों पर विचार नहीं किया है।"
मेरी उंगलियाँ झूले की चेन पर जकड़ गईं, मेरा दुख तीव्र क्रोध में बदल गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ या क्या करूँ। लेकिन एक बात पक्की थी, मैं उससे मुझे वापस लेने की भीख नहीं माँगने वाली थी। वह मेरे माता-पिता के साथ सीधे नरक में जाए। जॉन ने सहानुभूति भरी साँस ली।
"तुम ठीक हो?"
मैंने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए, कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और पुरानी कहावत याद करने लगी, 'अगर आपके पास कहने के लिए कुछ अच्छा नहीं है तो...'
"सुनो। मुझे माफ कर दो, रूबी।"
गुस्से की आग मुझमें भड़क उठी और अब सोचता हूँ तो काश मैंने जॉन को चुप रहने की बजाय उसे दूर चले जाने को कह दिया होता। कमाल है! ये तो सच में बहुत ही बढ़िया है। मैंने गुस्से से भरी एक तीखी साँस छोड़ी, जैसे मुझमें बम फट गया हो। आखिरकार मुझे अपनी आवाज़ मिली और जो भी मेरे दिमाग में आया, मैंने बोल दिया, हालाँकि वो कोई बहुत ही तीखी बात नहीं थी।
"एएसयू में खूब मजे करो।"
मैंने अपना फोन ज़मीन पर फेंक दिया। मैं ठीक नहीं थी। मैं बिलकुल भी ठीक नहीं थी। सच कहूँ तो, मेरी हालत बिल्कुल उलट थी। मैं पूरी तरह टूट चुकी थी और अकेली थी—साथ ही साथ पागलों की तरह गुस्से से पागल भी। एक घंटे के भीतर ही मेरी दुनिया बिखर गई थी और मैंने सब कुछ खो दिया था; मेरे पिता, मेरा परिवार, और अब... मेरा बॉयफ्रेंड।

मैं झूले से कूदी और दौड़कर अपने घर वापस आ गई। तेज़ हवा मुझे ज़ोर से धक्का दे रही थी, जिससे दौड़ना मुश्किल हो रहा था। मैं अपनी कार में बैठी, जेब से चाबियाँ निकालीं और इंजन स्टार्ट किया। मुझे नहीं पता था कि मैं कहाँ जा रही हूँ या क्या करने वाली हूँ, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। मुझे बस जाना था, कहीं दूर जाना था, अपने पेट के दर्द और दिल के अंधेरे से दूर। और जैसे ही मैं गाड़ी से निकली, मानसूनी तूफान आ गया, तेज़ हवाओं ने सड़क के उस पार पेड़ों को झुका दिया। लेकिन मुझे मौसम की कोई परवाह नहीं थी, मैं पागलों की तरह गाड़ी चला रही थी, आसमान से गिरती मोटी-मोटी बूँदें मेरी आँखों में उमड़ते आँसुओं को प्रतिबिंबित कर रही थीं।

उस समय मुझे इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि मेरे आवेगपूर्ण कार्यों का नतीजा यह होगा कि मैं मौत के मुँह में जा गिरूँगा। और खुद को शांत होने और अपनी बिगड़ी हुई स्थिति को समझने का समय देने के बजाय, मैंने तूफ़ान में गाड़ी चलाकर एक गंभीर गलती कर दी। सीधे खतरे में। सीधे उस रास्ते पर जो मेरी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल देगा। सीधे मेरी मौत की ओर।

तीन: लड़का

कहते हैं ना कि एक तस्वीर हज़ार शब्दों के बराबर होती है, और वह क्या ही तस्वीर थी! धूल में पड़ी हुई, उसका शरीर अपने आप में एक कलाकृति जैसा था, दर्द से तड़पती हुई। उसकी पीली त्वचा की चमक, गर्दन पर लगे घाव से बहता हुआ चेरी जैसा लाल खून, और खामोश चीख में खुला हुआ उसका मुँह, ये सब देखकर मैं विस्मय से देखता रह गया।

वह किसी कार दुर्घटना की तरह थी, एक खूबसूरत त्रासदी, और मैं जानता था कि मुझे रुककर उसे नहीं देखना चाहिए, लेकिन मैं अपनी नज़रें उससे हटा भी नहीं पा रहा था। उसकी दुखद मोहकता का व्यंग्य मुझसे छिपा नहीं था।

पिशाचों का शिकार करते हुए इतने सालों में मैंने कभी किसी को पिशाच बनते नहीं देखा था और मेरी जिज्ञासा बेकाबू हो गई। उसके शहद जैसे सुनहरे बालों का रंग बदलकर लगभग सफेद हो जाना मुझे बेहद आकर्षित कर रहा था। उसकी भूरी आँखें डर से चौड़ी हो गईं और उनमें बैंगनी चमक आने लगी। उसके नाखून नुकीले हो गए और ज़मीन को खरोंचने लगे। फिर अचानक सच्चाई सामने आ गई और मानो मुझे पहले इसका एहसास ही न हुआ हो, इस भयावह स्थिति का अंधेरा मेरे दिमाग पर छा गया।

“हे भगवान!” डर के मारे मेरा जबड़ा कस गया। “उन्होंने तुम्हें पकड़ लिया।”

अपनी अद्भुत सुंदरता के बावजूद, वह असहनीय पीड़ा में थी। यह बात मैं न केवल उसके ज़मीन पर छटपटाने के तरीके से जानता था, बल्कि अपने वर्षों के प्रशिक्षण से भी। मैं पिशाचों के शरीर विज्ञान को लगभग अपने शरीर से भी बेहतर जानता था। और यद्यपि मैंने पिशाच बनने की पीड़ा और उसमें होने वाले रूपांतरण का अध्ययन किया था, लेकिन इसे अपनी आँखों से देखना बिल्कुल अलग अनुभव था। सच कहूँ तो, मैं भयभीत था, उसकी पीड़ा देखकर मेरा पेट बुरी तरह सिकुड़ गया था।

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसका कोई परिवार था और क्या वे इस समय उसकी तलाश कर रहे थे। वह जवान दिख रही थी, और मैंने कल्पना की कि शायद वह कोई भोली-भाली कॉलेज छात्रा रही होगी जो क्लास से घर लौट रही थी जब उसके निर्माता ने उसे पाया। लेकिन यह सिर्फ एक अनुमान था। कौन जानता था भला। लेकिन मुझे इतना पता था कि वह पिशाचवाद से संक्रमित थी और यह केवल समय की बात थी कि वह भी उन्हीं में से एक बन जाएगी।

“जॉन।” दर्द से कराहते हुए वह बोली, उसकी आवाज़ किसी जलपरी की पुकार जैसी थी। मैं भौंहें चढ़ाकर सोचने लगा कि यह जॉन कौन है। मैं उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया, और देखा कि उसके शरीर पर काटने के निशान से कहीं ज़्यादा घाव थे। ऐसा लग रहा था जैसे उसका कोई हादसा हुआ हो, लेकिन इससे पहले कि मैं उसके घावों को ठीक से देख पाता, उसकी नसों में दौड़ रहे पिशाच के खून से वे जल्दी ही भर गए। मैं उसके और करीब गया।

“जॉन कौन है? क्या वह तुम्हारा सृष्टिकर्ता है?”

“बनाने वाला?” उसने अपने पेट को ऐसे पकड़ा जैसे उसने खराब आलू का सलाद खा लिया हो, लेकिन मुझे पता था कि उसे फूड पॉइज़निंग नहीं हुई थी। “जॉन, मेरा बॉयफ्रेंड।”

अच्छा, ठीक है। तो उसका एक बॉयफ्रेंड था, या यूं कहें कि उसकी मौजूदा हालत को देखते हुए,

उसका एक बॉयफ्रेंड हुआ करता था। कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन इससे मेरे मन में एक और सवाल आया। उसका बनाने वाला कौन था?

जब एक पिशाच दूसरे पिशाच को जन्म देने का फैसला करता था, तो यह कोई सौम्य निर्णय नहीं होता था। वे इसे गंभीरता से लेते थे और अपनी रचना के साथ एक माँ की तरह रहते थे, जैसे एक माँ अपने बच्चे के साथ रहती है। वे उसे सिखाते थे और उसकी रक्षा करते थे जब तक कि नवजात शिशु स्वयं जीना नहीं सीख जाता था। तो फिर उसका निर्माता उसे अकेले ही पिशाच बनने के लिए क्यों छोड़ देता था?

मैंने अपने मन में उठने वाले बेबुनियाद विचारों को झटक दिया। मैं वहाँ किसी नवजात पिशाचनी के बारे में सोचने या उसके ऐसे व्यवहार के पीछे के कारणों पर विचार करने नहीं गई थी। मैं वहाँ आदेशों पर गई थी। मैं वहाँ मारने के लिए गई थी...

तो फिर मैंने अभी तक ऐसा क्यों नहीं किया था? मैंने दृढ़ता से अपने जबड़े भींच लिए।

"अब वो नहीं है," मैंने जॉन के उसके प्रेमी होने की बात सुनकर जवाब दिया और अपनी बंदूक और लकड़ी का खंभा उठा लिया। अगर सिर में चांदी की गोली से काम नहीं चलता – जो कि ज्यादातर मामलों में चल जाता था – तो दिल में लकड़ी का खंभा ज़रूर चलता। लेकिन फिर से, मैं हिचकिचाने लगा, सोचने लगा कि आखिर मुझे क्या रोक रहा है।

क्या यह इसलिए था क्योंकि यह पिशाच अभी पूरी तरह से पिशाच नहीं बनी थी? वह अभी भी इंसान थी, पूरी तरह से पिशाच नहीं बनी थी और मुझे मानना पड़ेगा कि मैंने पहले कभी किसी इंसान को नहीं मारा था। या फिर इसलिए कि वह मुझे उस लड़की की याद दिलाती थी जिसे मैंने बहुत पहले खो दिया था? लिली...

जमीन पर पड़ी उस महिला को देखकर मेरे मन में उमड़ी भावनाओं से मैं कांप उठा, क्योंकि यह स्थिति उस घटना से बहुत मिलती-जुलती थी जिसने मुझे सबसे पहले FUSE सेना के साथ अपनी यात्रा शुरू करने के लिए प्रेरित किया था।

मैंने ऊपर देखा और अपने चारों ओर का नजारा निहारा। जिस गोदाम की हम निगरानी कर रहे थे, वह जगह जहाँ दुष्ट आत्माओं का एक समूह छिपा हुआ था, अब पूरी तरह से नष्ट हो चुका था। और जो हिस्से अभी भी खड़े थे, वे आग की लपटों में घिरे हुए थे। मेरे साथी रेगिस्तान में पीछे हट गए ताकि उन कुछ पिशाचों और चुड़ैलों का पीछा कर सकें जो भागने में कामयाब हो गए थे। मैं अकेला रह गया था, लेकिन यह केवल अस्थायी था।

मैंने अपनी नज़रें फिर से अपने लक्ष्य पर टिका दीं, वो लड़की जो मेरी आँखों के सामने पिशाच में बदल रही थी। उसकी गाल पर एक आँसू टपक गया और उसने मेरी तरफ देखा।

जब हमारी नज़रें मिलीं, तो अचानक मेरे अंदर भावनाओं का सैलाब उमड़ आया, लेकिन जैसे ही वो आया, मैंने उसे दबा दिया, ट्रिगर पर मेरी उंगली कांप रही थी। मैं कभी भावुक इंसान नहीं रहा था, कम से कम लिली के मुझसे बिछड़ने के बाद से तो बिल्कुल नहीं, और ऐसे समय में मैं उन भावनाओं को खुद पर हावी नहीं होने दे सकता था। मैंने अपने फ्यूज़ भाइयों के साथ एक वादा किया था और मुझे उसे निभाना था। हालांकि मैं सिर्फ बीस साल का था और अपनी जगह पर बाकी सभी से छोटा था, फिर भी मैं उनका कप्तान था।

लेकिन जब मैंने दोबारा उस लड़की की ओर देखा, तो मुझे लगा कि उसके डरे हुए चेहरे ने मुझ पर कुछ असर किया, मुझे कुछ याद दिला दिया, मुझे उस रात की याद दिला दी... लिली की याद दिला दी...

नहीं।

मैंने अपना हाथ नीचे किया और बंदूक को वापस उसके होल्स्टर में डाल दिया। धिक्कार है। मैं ऐसा

नहीं कर सकता था। मैं किसी निर्दोष इंसान को नहीं मार सकता था।
हाँ, मुझे अपने फैसले का विरोधाभास समझ आ गया था, और हाँ, कल शाम तक वह इंसान पूरी तरह से पिशाच बन जाएगा। लेकिन अभी के लिए, वह बस एक लड़की थी। एक बेचारी लड़की जो संक्रमित हो गई थी। एक खूबसूरत लड़की जिससे मैं अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था।
मैंने गहरी सांस ली और लकड़ी के खंभे को अपनी बेल्ट में डाल लिया, यह महसूस करते हुए कि मेरा अगला फैसला मेरी जिंदगी को हमेशा के लिए बदल सकता है।
"धत् तेरे की। मुझे इसका पछतावा होगा।"

चार: रूबी

मेरी सांस फूल गई—और हाँ, अगर आप सोच रहे हों तो बता दूं, पिशाच भी सांस लेते हैं—अचानक ऑक्सीजन मेरे फेफड़ों में नरक की आग की तरह दौड़ गई। मेरी आँखें खुल गईं और मैं रोशनी, आवाज़ों और भयंकर गर्मी के विस्फोट में घिर गया। दर्द मेरे शरीर में हज़ारों तीरों की तरह दौड़ गया, मेरा नंगा शरीर इधर-उधर छटपटाने लगा।

मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मैं कहाँ हूँ, लेकिन सबसे ज़्यादा आश्चर्य इस बात का था कि मैं नग्न क्यों हूँ। क्या परलोक ऐसा ही होता है? सचमुच?

मेरे दिमाग में भयंकर उथल-पुथल मच गई, मानो कोई तूफान आ गया हो, मेरी आँखों के सामने तस्वीरें और रंग कौंध रहे थे। मेरी नसें पूरे शरीर में तीखे संदेश भेज रही थीं; ऐसे संदेश जो बता रहे थे कि मेरी हड्डियाँ टूट गई हैं और मांसपेशियाँ फट गई हैं। लेकिन दर्द के बीच, असहनीय संवेदनाओं का एक सैलाब एक साथ मुझ पर टूट पड़ा।

मुझे अपनी पीठ के नीचे ठंडी घास का एहसास हो रहा था और ऊपर टिमटिमाते तारे दिखाई दे रहे थे, जो पहले से कहीं ज़्यादा नज़दीक थे। और मुझे हर चीज़ की खुशबू आ रही थी। मैंने घास की ताज़गी को साँसों में समा लिया, जिसमें नीचे की मिट्टी की हल्की सी महक भी मिली हुई थी। मुझे मिट्टी और रेगिस्तानी चट्टानों की परतों के नीचे दबी हुई चिकनी मिट्टी की महक भी महसूस हुई।

और खून। मुझे इंसान के खून की गंध आ रही थी और खून की गंध— मुझे यकीन नहीं था। लेकिन यह ठंडा, बेरहम खून था। मुझे उल्टी आने लगी, मैं उस अफरा-तफरी से दूर रेंगने की कोशिश कर रहा था जिसमें मैं जागा था, एक तरह का युद्ध।

मेरे बाईं ओर एक बड़ा आग का गोला फटा, जो किसी क्रोधित अजगर की साँस की तरह मेरे पास से गुज़रा और मेरी त्वचा और बालों को झुलसा दिया। मैंने एक ऐसी आवाज़ निकाली जो किसी महिला के लिए उपयुक्त नहीं थी—घोर भय से भरी हुई—और अपना सिर उस धमाके से बचाने के लिए समेट लिया, जलते हुए मांस और कालिख की गंध मेरी नाक में भर गई। हे भगवान, मैंने उम्मीद की कि वह मेरा मांस न हो। लेकिन इससे पहले कि मेरा मन किसी नतीजे पर पहुँच पाता, एक और धमाके की गड़गड़ाहट मेरे पूरे शरीर में गूंज उठी, जिससे मेरा दर्द और बढ़ गया। मैंने अपने कान ढँक लिए और अपनी संवेदनशील आँखें उस भयावह दृश्य से बचने के लिए बंद कर लीं, काश मैं इस बुरे सपने से जाग जाती।

"अरे बाप रे!" एक आदमी चीख उठा और घोड़ों के झुंड की तरह बूट रेगिस्तान में दौड़ पड़े। मैं ज़मीन पर कसकर सिमट गया।

अब मुझे उन शब्दों का अर्थ भलीभांति पता है, लेकिन उस समय मैं बिल्कुल अनजान थी - साथ ही साथ उस दर्द से ग्रस्त शरीर पर हाथियों के नाचने जैसी अनुभूति से थोड़ी व्याकुल भी थी।

लेकिन हाथी की डिस्को की यादें कुछ पल के लिए तब मिट गईं जब आग का एक टुकड़ा मेरे चेहरे से कुछ इंच की दूरी पर आकर गिरा, जिससे मैं चीख पड़ा और ऐसा लगा जैसे गर्मी से पिघल रहा हूँ। मैं जलते हुए गोले से दूर हट गया, मेरा दिमाग बेकाबू हो रहा था।

"हटो। हटो। हटो!" और भी आवाज़ें गूंजीं और कुछ अन्य लोगों ने दिल दहला देने वाली चीखें मारीं। चारों ओर आग थी, भीषण आग और भय ने मेरे सीने में एक छेद कर दिया।

धातु का एक और बड़ा टुकड़ा मेरे शरीर के पास से फिसलता हुआ गुजरा, बस कुछ इंच से मुझे छूकर निकल गया। धातु और लकड़ी के टुकड़े मेरे शरीर पर लग रहे थे, इसलिए मैंने अपना सिर ढक लिया। मैं खांसने और हांफने लगा और खुद को कसकर समेट लिया।

मैं जहां भी था, मुझे वहां से निकलना जरूरी था वरना मैं मर जाता...

मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। अजीब बात है, यह विचार मुझे उलझन में डाल रहा था। क्या मैं मर जाऊंगी? कुछ तो गड़बड़ थी। मैंने समझने की कोशिश की कि मुझसे क्या छूट रहा है, लेकिन समझ नहीं पाई।

मैंने ऊपर देखा तो पाया कि रात का आकाश काले-नारंगी धुएँ से ढका हुआ था, जो नीचे मलबे से उठ रहा था। तभी मुझे किसी की उपस्थिति का आभास हुआ और मैंने हिलने-डुलने, भागने की कोशिश की, लेकिन मैं बस लड़खड़ाता हुआ ज़मीन पर घिसटता चला गया।

एक युवक मेरे ऊपर घुटनों के बल बैठा था, और अपने चेहरे पर बेहद उलझन भरे भाव लिए मुझे घूर रहा था। वह मुझसे मुश्किल से दो साल बड़ा होगा। उन्नीस। शायद बीस।

वह देखने में एकदम खूंखार और आक्रामक लग रहा था, हर तरह के हथियार उसके थैले में भरे हुए थे। उसने फीकी हरी रंग की मिलिट्री वर्दी और काले जूते पहने थे, उसकी मैली सी कमीज उसकी मांसपेशियों से ऐसे चिपकी हुई थी मानो दूसरी त्वचा हो। स्लेटी रंग की धूसर आँखों और चॉकलेट जैसे भूरे बालों वाला वह किसी बागी सैनिक जैसा लग रहा था। उसकी महक अद्भुत थी, गीले चमड़े, लकड़ी, मांस और कस्तूरी जैसी। मैंने गहरी साँस ली। अजीब बात है, उसमें जीवन की महक थी।

"हे भगवान!" उसकी चौड़ी आँखें मेरे शरीर पर घूमती रहीं और अंत में मेरी गर्दन पर आकर रुक गईं। "उन्होंने तुम्हें पकड़ लिया।"

मैंने हाथ बढ़ाकर अपनी गर्दन को छुआ, तो मुझे दो सूजे हुए घावों जैसे महसूस हुए। दर्द भरे ऐंठन शुरू होने से ठीक पहले मेरी उंगलियां चिपचिपी हो गईं। ये ऐंठन कांच को ईंट से तोड़ने की तरह मुझमें घुस गईं और मैं सुस्ती से कराह उठी।

"जॉन," मैंने अनजाने में ही कराहते हुए कहा।

वह और करीब आया। "जॉन कौन है? क्या वह तुम्हारा निर्माता है?"

मैंने भौंहें चढ़ा लीं। "बनाने वाला?" दर्द से मैं झुक गई, ऐसा लगा जैसे गर्म चाकू मेरे शरीर में चुभ रहे हों। दर्द कम होने के बाद मैं हांफने लगी। "जॉन। मेरा प्रेमी।"

या शायद वो अब मेरा पूर्व प्रेमी था, क्योंकि मुझे धुंधला-सा याद था कि उसने मुझसे ब्रेकअप कर लिया था। और मेरे माता-पिता के बारे में भी कुछ... मेरे पिताजी के बारे में। याददाश्त धुंधली थी और मैं सारी बातें ठीक से जोड़ नहीं पा रही थी।

हमारे पीछे हवा में ज़ोरदार झटके गूंज रहे थे। "अब वह नहीं रहा," उस आदमी ने कहा।

"रुको—" दर्द का एक और झटका मेरे शरीर में दौड़ गया, जिससे मैं जो कहने वाला था वह रुक गया और मेरे होठों से चीख-चीखकर गाली निकल गई।

उस आदमी ने अपनी कमर से बंदूक निकाली और सीधे मेरे सिर पर तान दी, और मैं डर के मारे पीला पड़ गया। ये क्या...? डर मेरे अंदर ऐसे दौड़ा जैसे कोई धारदार रेज़र चुभ रहा हो, लेकिन धुंधली सी उलझन ने मुझे जकड़ रखा था। उसका चेहरा सख्त था, उस पर कोई भाव नहीं था, और उसी पल मुझे पता चल गया कि वो मुझे मार डालेगा। लेकिन ये ठीक नहीं लग रहा था।

फिर से, ऐसा लगा जैसे कोई विचार मेरे मन में उभरने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन मेरे असहनीय दर्द के कारण आगे नहीं बढ़ पा रहा हो। काश वह मुझे मार ही डाले, कम से कम मृत्यु में तो मुझे इस भयंकर दर्द से कुछ राहत मिल जाए।

जब मुझे दर्द के एक और दौर के बाद होश आया, तो मैंने उस आदमी की आँखों में देखा। वह उलझन में लग रहा था, उसके चेहरे पर विरोधाभास के भाव साफ दिख रहे थे।
“धत् तेरे की।” उसने अपनी बंदूक वापस होल्स्टर में रख ली। “मुझे इसका पछतावा होगा।”
मैं सोच रही थी कि उसे किस बात का पछतावा हो रहा होगा, लेकिन तभी मेरा ध्यान भटक गया जब उसने मेरे नग्न शरीर पर ऊनी कंबल डाल दिया। कंबल खुरदुरा था, लेकिन उसके आवरण से मुझे राहत मिली। उसने मुझे गोद में उठा लिया और अपनी बाहों में भर लिया—उसकी बाहें जॉन से भी ज़्यादा मज़बूत थीं—और एक ही झटके में खड़ा हो गया। मैं उसकी बाहों की गर्माहट में डूब गई, और एक बार फिर उसकी मिट्टी जैसी, मसालेदार खुशबू ने मुझे जकड़ लिया। मैंने अपने हाथ उसकी गर्दन के चारों ओर लपेट लिए, उसकी गर्माहट से सुकून पाने के लिए आह भरने की इच्छा को दबाते हुए। उस युवक ने अपना सिर इधर-उधर घुमाया और चारों ओर नज़रें गड़ा दीं।
अब मुझे आग की लपटों में घिरी इमारतों का एक समूह दिखाई दे रहा था, लपटें दीवारों को चाट रही थीं और खिड़कियों व दरवाजों से निकल रही थीं। मलबा और छोटी-छोटी आग ज़मीन पर बिखरी पड़ी थी और मुझे तो ऐसा भी लगा—भले ही यह सुनने में अजीब लगे—कि ज़मीन पर एक हाथ और एक पैर अलग पड़े हुए थे। लेकिन सब कुछ धुंधला था और मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकता था।
धूसर आँखों वाले उस आदमी जैसी वर्दी पहने और हथियार ताने सैनिक विपरीत दिशा में बिखर गए। युद्ध की आवाज़ें अब भी हवा में गूँज रही थीं, हालाँकि अब वे दूर से सुनाई दे रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो विस्फोट अपने आप ही गति पकड़ रहे हों। लेकिन आग की लपटें अभी भी भड़क रही थीं और धुएँ ने मेरी दृष्टि को धुंधला कर दिया था।
“यह सब क्या हो रहा है?” मैंने अपने पेट को ऐसे पकड़ा जैसे इससे दर्द कम हो जाएगा।
उसने एक कदम बढ़ाया और रुक गया, मेरी तरफ देखते हुए बोला, "क्या तुम इतनी मजबूत हो कि मजबूती से पकड़ सको?"
मैंने एक मिनट के लिए इसके बारे में सोचा, मुझे नहीं पता था कि मैं इतनी मजबूत हूं या नहीं, लेकिन यह सोचकर कि मेरे पास कोई और विकल्प नहीं है, मैंने सिर हिला दिया।
उसने राहत की एक लंबी साँस छोड़ी और तेज़ी से चलने लगा। मैंने कुछ पल उसे देखा, फिर अपना वही सवाल दोहराया, यह सोचते हुए कि या तो उसने पहली बार मेरी बात सुनी नहीं या उसे परवाह नहीं थी। "मेरे साथ क्या हो रहा है?"
आप मुड़ रहे हैं।
“मुड़ रहे हो?”
उस आदमी का जबड़ा गुस्से से फड़क उठा और फिर उसने गहरी सांस ली। "मैं बाद में समझाऊंगा। अभी मुझे तुम्हें यहां से निकालना है।"
मैंने भौंहें चढ़ा लीं, क्योंकि मुझे लगा कि स्लेटी-धूसर आँखों वाला वह सिपाही बेतुकी बातें कर रहा है। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं अभी भी अपने गृहनगर बिस्बी, एरिज़ोना में हूँ या नहीं, एरिज़ोना में होना तो दूर की बात है। लेकिन मेस्क्वाइट के पेड़ों की खास खुशबू ने मेरी नाक में चुभन पैदा कर दी, जिससे मुझे तसल्ली मिली कि मैं कम से कम अभी भी रेगिस्तान में हूँ। मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा था, सिवाय एक भूली हुई याद की धुंधली झलक के...
बारिश। हेडलाइट्स। दर्द। अंधेरा।
“कसकर पकड़ो,” मेरे रक्षक ने कहा। अचानक, मेरा शरीर ज़ोर से हिल गया, और मैं अपनी टूटी-फूटी यादों से बाहर आ गई। वह आदमी हमें रात के अंधेरे में, आग और गूंजती गड़गड़ाहट से दूर ले

गया। मेरा शरीर उसके हिलने-डुलने के साथ उछल रहा था, मेरी बेढंगी बाहें उसकी गर्दन में लिपट गईं, और मेरा सिर पीछे की ओर ऐसे झुक गया जैसे मैं कोई टूटा हुआ खिलौना हूँ।
मुझे बहुत बुरा लग रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे मैं मर रहा हूँ...
और फिर मुझे ऐसा लगा जैसे स्वयं भगवान ने थप्पड़ मारा हो, और अगर मेरी मांसपेशियां पतली न होतीं तो मैं एकदम सीधा बैठ जाता। मुझे अब याद आया, मैं तो पहले ही मर चुका था। मुझे याद आया मेरी माँ ने मुझे मेरे असली पिता के बारे में बताया था, कि कैसे उन्होंने मुझे गर्भ में धारण करते समय उन्हें छोड़ दिया था। मुझे याद आया जॉन का मुझसे रिश्ता तोड़ना और मुझे वह दुर्घटना याद आई। मैं मर चुका था, मेरा दिल धड़कना बंद हो गया था और मेरी आत्मा मेरे शरीर से निकल गई थी। मर चुका था।
और यही मेरा नरक होना चाहिए।
अब सब कुछ समझ में आ रहा था। दर्द... असहनीय दर्द, और आग, उस पाताल लोक का प्रकोप जिसमें मुझे अनंत काल बिताना था। लेकिन इस विचार ने मुझे उलझन में डाल दिया। क्या नरक में जाने के लिए किसी को कोई जघन्य अपराध करना ज़रूरी नहीं था?
सच कहूँ तो, मैं ज़िंदगी में इतनी बुरी इंसान नहीं थी। केले के हलवे और रियलिटी टीवी देखने की लत के अलावा, मैं काफी सामान्य थी, बल्कि शायद ज़्यादातर लोगों से बेहतर थी। मैं मोहल्ले के सभी बच्चों की देखभाल करती थी, मैंने कभी किसी परीक्षा में नकल नहीं की, और घर आने में देर होने पर हमेशा फ़ोन करके बता देती थी। मैं जल्द ही कॉलेज, नर्सिंग स्कूल में दाखिला लेने वाली थी, और मैं लोगों की मदद करना चाहती थी। मुझे यह काम इतना बुरा नहीं लगता था।
मैंने मन ही मन खुद पर गुस्सा किया, यह सोचकर कि मुझे चौदह साल की उम्र में डिपार्टमेंट स्टोर से लिप-ग्लॉस की वो ट्यूब कभी नहीं चुरानी चाहिए थी। बस यही बात थी। इसी वजह से मैं इस नरक में थी। मैं एक घिनौनी, नीच चोर थी और अपनी गलतियों की सज़ा भुगत रही थी।
दर्द का एक और झटका मेरे शरीर में लगा और मैं फिर हांफने लगी। मेरे पेट में दर्द से चीख उठ रही थी, लेकिन चीखने से पहले ही मेरे मुंह में एक गंदा रुमाल ठूंस दिया गया। मैं घुट-घुट कर हांफने लगी, मेरा शरीर उस आदमी की मजबूत बाहों में छटपटाने लगा।
"चुप रहो।" उसने कपड़ा मेरे मुंह में और ठूंस दिया, यह सुनिश्चित करते हुए कि मैं उसे थूक न सकूँ। "तुम्हें चुप रहना होगा वरना हम दोनों मारे जाएँगे।" मारे जाएँगे? हम्म... मैंने एक मिनट सोचा। जो पहले से ही मर चुका हो, उसे कोई कैसे मार सकता है, है ना? और मैं तो पहले से ही मर चुका था। साफ है कि इस आदमी को गलतफहमी हो गई थी।
लेकिन मैंने अपने विचारों को वापस उस दुर्घटना की ओर मोड़ा, उस पेड़ की ओर जिसने मेरी कार को कुचल दिया और बदले में मेरे शरीर को भी, और मैंने मन ही मन सिर हिलाया। हाँ। मैं पूरी तरह मर चुका था। मैंने अपनी मौत के डर को जैसे निगल लिया, अचानक मेरे मुँह में रखे पसीने से भीगे कपड़े से मुझे घुटन होने लगी, कड़वे स्वाद से मेरी आँखों में पानी आ गया। लेकिन मैंने उस पसीने से भीगे कपड़े को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, और उससे भी ज़्यादा ज़रूरी था अपने बिखरे हुए विचारों को व्यवस्थित करने पर ध्यान केंद्रित करना।
अगर मैं मर चुकी होती तो यह स्वाभाविक ही होता कि मेरे साथ वाला आदमी भी मर चुका होता। मैंने तिरछी नज़रों से उसे देखा और वह मुर्दे जैसा नहीं लग रहा था। इसके विपरीत, उसमें जीवन की एक ताज़गी भरी महक थी, उसकी त्वचा जोश से दमक रही थी। उसका शरीर गर्म था और उसकी स्टील-ग्रे आँखें तरल और चौकस थीं। उसकी नुकीली ठुड्डी पर जगह-जगह पतले-पतले बाल उगे हुए थे, जो देखभाल न करने के कारण थे। इस सारी अफरा-तफरी में भी, मैं किसी तरह उसकी खूबसूरती की तारीफ करने में कामयाब हो गई थी, हालाँकि यह आकर्षक लड़कों को देखने का

समय नहीं था, इसलिए मैंने इस विचार को अपने दिमाग से निकाल दिया।
मेरे मन में सबसे ऊपर सवाल ही सवाल थे। ढेर सारे सवाल। लेकिन मेरा शरीर मेरी जिज्ञासा को झकझोरते हुए असहनीय पीड़ा से छटपटा रहा था, मानो उसका अपना कोई दिमाग हो, और मेरा ध्यान कहीं और भटका रहा था। मैं बड़ी मुश्किल से अपनी बाहों को उसकी गर्दन के चारों ओर लपेटे और घुटनों को पेट से सटाए रख पा रही थी।
दुनिया सन्नाटे में डूब गई। केवल मेरे रक्षक की भारी साँसें और उनके कदमों की आहट सुनाई दे रही थी, जो हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे, चट्टानों पर टकराते हुए और सूखी शाखाओं को तोड़ते हुए। दृश्य गहरे हरे, भूरे और नीले रंगों के छींटों में हमारे सामने से तेज़ी से गुज़र रहे थे, चाँदनी इतनी तेज़ थी कि हर पेड़-पौधे और जीव की हर रेखा और बारीकी को उजागर कर रही थी।
मुझे पक्का यकीन था कि मैंने एक बड़े बिच्छू को देखा था जिसकी नुकीली पूंछ ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी और वह हमला करने के लिए तैयार था। लेकिन यह नामुमकिन था। रात के अंधेरे में, ज़मीन से इतनी ऊंचाई पर और हमारी जैसी तेज़ गति से उड़ते हुए बिच्छू को कोई देख नहीं सकता था। मुझे पता था, क्योंकि मैं अपने पिताजी के साथ बिच्छू पकड़ने जाया करता था।
पिताजी। ये शब्द मेरे अंदर दुख की गोली की तरह चुभ गया और इस बात ने मुझे बुरी तरह से झकझोर दिया कि अब वो सचमुच मेरे पिता नहीं रहे। लेकिन फिर से, और बाकी सभी बेतरतीब विचारों की तरह, मैंने इसे भी नज़रअंदाज़ कर दिया, क्योंकि उस समय मेरे सामने और भी बड़ी चिंताएँ थीं— जैसे कि मैं आखिर कहाँ हूँ, और मुझे बिच्छू और कटे-फटे शरीर के अंग क्यों दिखाई दे रहे हैं। मैंने अपना सिर हिलाया, और मुझे एहसास हुआ कि मैं पागल हो रहा हूँ। हाँ। बस यही था। मैं पागलपन की राह पर चल पड़ा था।
“चलिए थोड़ी देर आराम कर लेते हैं।” उस आदमी ने मुझे एक सपाट चट्टान पर बिठा दिया, जिसकी खुरदरी सतह मेरी पीठ की संवेदनशील, नंगी त्वचा से रगड़ खा रही थी। अचानक अपने नग्न होने का एहसास होते ही, मैंने कंबल को अपने नीचे दबा लिया और अपने घुटनों के चारों ओर बाँहें लपेट लीं, मेरे गले तक एक गर्म लालिमा दौड़ गई। लेकिन अगर सैनिक ने मेरी शर्मिंदगी देखी भी, तो उसने कुछ नहीं कहा।
मैंने आकाश की ओर देखा और पाया कि चंद्रमा की स्थिति पहले से बदल गई थी। हम घंटों से दौड़ रहे थे, हालांकि समय का पता ही नहीं चला।
उस रहस्यमय सैनिक को पास ही एक चट्टान मिली और वह उस पर बैठ गया, एक पानी की बोतल निकाली और ढक्कन खोला। उसने उसे होठों से लगाया और लगातार मुझे देखता रहा, पानी पीते समय उसका गला ऊपर-नीचे हो रहा था। बाद में उसने बोतल मुझे सौंप दी।
"जल्द ही आपको इन चीजों की जरूरत नहीं पड़ेगी।"
पानी का एक घूंट लेते हुए मैंने उसे घूरकर देखा। उसका स्वाद अजीब और धातु जैसा था, और मुझे लगा जैसे उसे पीना व्यर्थ है। मैंने मुंह बनाया और उसे वापस दे दिया।
“अच्छा नहीं है, है ना?” उसने एक सूखी हंसी हंसी, जिससे मुझे भी हंसी आ गई, हालांकि लाख कोशिश करने पर भी—या यूं कहें कि मेरी अवास्तविकता—मुझे इस स्थिति में हास्य की कोई गुंजाइश नहीं दिख रही थी। मैं यहाँ एक अलग ही दुनिया में पहुँच गया था, और ऊपर से नंगा भी था। ये तो मेरे लिए कोई कॉमेडी शो नहीं था।
"आप मुझे कहाँ ले जा रहे हैं?" मेरे मन में उठ रहे सैकड़ों सवालों में से यही सवाल सबसे प्रासंगिक लग रहा था।
सिपाही ने चट्टान पर अपनी जगह बदली और अपनी घड़ी देखी; घड़ी की नीली रोशनी ने उसके तराशे हुए चेहरे को और भी निखार दिया, जिससे मुझे एक बार फिर उसकी मर्दाना खूबसूरती का

एहसास हुआ। "कोई सुरक्षित जगह।"
“क्या तुमने कभी कार के बारे में सुना है?” जाहिर है, मेरी एक आदत थी कि मैं बिना सोचे समझे ही बोल देता था। हालाँकि उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, लेकिन मेरी इस व्यंग्यात्मक टिप्पणी पर उसकी धूसर आँखों ने मुझे भेद दिया।
मुझे अपने रक्षक के बारे में पूरी तरह से यकीन नहीं था, मुझे लग रहा था कि शायद वो सिर्फ मेरी कल्पना हो। हो सकता है वो कोई अजीबोगरीब सपना हो या बीते क्रिसमस का भूत। कौन जाने। लेकिन वो एकदम गंभीर, ठंडा और मशीनी लग रहा था। हालांकि, अगर वो सच में जीवित था, तो मैं उसकी इस बेरुखी के लिए उसे दोष नहीं दे सकता था। आखिर हम अभी-अभी एक भयानक लड़ाई लड़कर आए थे।
उसकी निगाहें मुझसे हटकर रात के अंधेरे में चली गईं और मुझे मानो उसके दिमाग में कुछ चल रहा था। “हमें सड़कों से दूर और नज़रों से ओझल रहना होगा। कम से कम अभी के लिए। मैंने कुछ बहुत बुरा कर दिया है।”
मैं चौंक उठी, सोच रही थी कि उसने ऐसा क्या बुरा किया होगा। मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, चाँदनी में उसका खूबसूरत चेहरा और भी निखर रहा था। हाँ, उसने मेरे सिर पर बंदूक तानी थी, लेकिन उसने गोली नहीं चलाई, बल्कि मुझे लड़ाई के मैदान से बाहर खींचकर मलबे और आग से बचाया। मैंने कंबल के किनारे को टटोला।
"क्या कर डाले?"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर उसने जवाब दिया, "मैंने तुम्हें बचाया।"
मैंने अपनी आपस में उलझी उंगलियों पर नज़र डाली। मुझे बचाना बुरी बात क्यों थी? अचानक मुझे एहसास हुआ कि मुझे काफी समय से असहनीय दर्द नहीं हो रहा था। दर्द तो अभी भी था—गलत मत समझिए—लेकिन कम से कम अब मैं सीधा बैठ तो सकती थी। उस आकर्षक अजनबी ने अपने जबड़े भींच लिए।
"आदेश था कि नज़र आते ही हर पिशाच को मार डाला जाए।"
उसके शब्दों की तीव्रता ने मुझे एकदम सचेत कर दिया। मेरे चेहरे का रंग उड़ गया और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। डर के बावजूद, मैं ज़ोर से हंस पड़ी।
“और आपको लगता है कि मैं…पिशाच हूँ?”
उसने सिर हिलाया, उसका चेहरा गंभीर था। "अभी नहीं। लेकिन कल रात तक तुम हो जाओगे।"

पांच: लड़का

हालांकि लड़की दुबली-पतली थी, लेकिन दो घंटे से ज़्यादा समय तक रेगिस्तान में दौड़ते-दौड़ते मेरी बाहें थकने लगी थीं, क्योंकि मैं हमें घात से जितना हो सके दूर ले जाना चाहता था। अगर वे मुझे उसके साथ देख लेते, अगर मैं पकड़ा जाता... नहीं, मैं उन संभावित परिणामों के बारे में सोचना भी नहीं चाहता था जिनका मुझे सामना करना पड़ता। मैंने अपनी बाहों में उसे देखा और माथे पर शिकन आ गई।

हे भगवान, मैं क्या कर रहा था? आखिर मैं क्या कर रहा था? मैं सोचने लगा कि क्या मैं पूरी तरह से पागल हो गया हूँ और उससे भी बड़ी बात, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर किस बात ने मुझे इतना जल्दबाजी वाला फैसला लेने के लिए प्रेरित किया होगा— एक ऐसा फैसला जो मेरे करियर और शायद मेरी जिंदगी का भी अंत कर सकता है।

मुझे लगता है मैंने ठीक से सोचा नहीं था, कहीं न कहीं भावनाओं ने मुझे हावी होने दिया। लेकिन यह मेरा स्वभाव नहीं था, मुझमें भावनाएँ नहीं थीं। सच कहूँ तो, मैंने लोगों को यह भी कहते सुना था कि मुझमें दिल नहीं है। मैं पूरी तरह से मशीन हूँ। पूरी तरह से लड़ाकू। पूरी तरह से हत्यारा। एक समय था जब मुझमें भावनाएँ थीं, कई साल पहले, जब मुझे सही-गलत का ज्ञान नहीं था। लेकिन अब मैं वैसा नहीं रहा।

मैं क्षण भर के लिए रुका और अपने विकल्पों पर विचार करने लगा, सोचने लगा कि कहीं मुझे मस्तिष्क रक्तस्राव तो नहीं हो गया। अब आसमान में घोर अंधेरा छा गया था, विस्फोटों की नारंगी चमक गायब हो चुकी थी। तारे अंतरिक्ष में आनंद से टिमटिमा रहे थे, मानो मैंने अभी-अभी अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती न की हो। मैं उसे वापस ले जाकर झाड़ियों में छोड़ सकता था ताकि कोई और उसे ढूंढ ले। मैं उसे वहीं छोड़कर मुख्यालय में अपने आदमियों से मिल सकता था।

मैंने अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे मैं सचमुच किसी और से बात कर रहा हूँ, न कि अपने अंतरात्मा से लड़ रहा हूँ। लेकिन मेरी अंतरात्मा जीत गई, उसने मुझे बताया कि मैं किसी और को उस लड़की के बारे में नहीं बता सकता क्योंकि वह बोल देगी। वह सबको बता देगी कि मैंने क्या किया है और मैं यह जोखिम नहीं उठा सकता। एकमात्र दूसरा विकल्प उसे मार डालना था, और मैं पहले ही साबित कर चुका था कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे नहीं पता मैं कितनी बार और यह कहूँगा, लेकिन हे भगवान, मुझमें क्या खराबी थी?

एक बार फिर, लड़की दर्द से चीख उठी, और मैं अपनी बेतुकी हकीकत में लौट आया। मुझे आगे बढ़ना ही था, उसे ले जाकर छोड़ने के लिए कोई जगह ढूंढनी थी। और मुझे लगा कि शायद मुझे सही आदमी मिल गया है। लेकिन उस बूढ़े पिशाच और मेरे बीच एक अजीब रिश्ता था, और मुझे यकीन नहीं था कि वह हमें स्वीकार करेगा। हमने कभी बात न करने का समझौता किया था। वह मुझसे नफरत करता था और मैं उससे। दुश्मन इसीलिए तो होते हैं, है ना? लेकिन इन हालातों में... शायद...

यह सबसे अच्छा विचार नहीं था, लेकिन मेरे पास यही एकमात्र विकल्प था। मुझे इसे किसी भी तरह से सफल बनाना ही होगा।

लेकिन अब भोर होने वाली थी और लड़की को धूप से बचने के लिए आश्रय की आवश्यकता थी।

उसे पूर्ण अंधेरे की आवश्यकता थी।
मैंने बिस्बी का वह नक्शा याद करने की कोशिश की, जिसका मैंने इस टोही अभियान पर भेजे जाने के बाद कई दिनों तक अध्ययन किया था। मेरे मन में उस छोटे से कस्बे और मुख्य सड़कों की धुंधली रूपरेखा उभर आई। मुझे वह गोदाम भी दिखाई दिया, जिसकी हम निगरानी कर रहे थे, और वह नाला भी, जिससे हम अब गुजर रहे थे। आगे कुछ ऐसा था जो हमें आश्रय दे सकता था, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था कि वह क्या था। मुझे उम्मीद थी कि हम उसे किसी और के मिलने से पहले ढूंढ लेंगे...
"अब मैं चल सकती हूँ," लड़की ने चिढ़कर कहा। वह मेरी गर्दन को कसकर पकड़े हुए थी, उसके पैर मेरी बांह पर लिपटे हुए थे। कंबल उसके शरीर को मुश्किल से ही ढके हुए था, गोदाम में हुए विस्फोटों में से एक में उसके कपड़े फट गए थे। मैंने अपनी नज़रें हटाने की कोशिश की।
"तुमने पहले क्यों नहीं बताया?" मैंने उसे सीमेंट की बोरी की तरह पटक दिया और ज़मीन पर गिरते ही वो दर्द से कराह उठी और अपनी पीठ रगड़ने लगी। उसने मुझे गुस्से से घूरा और मैं उसकी झुंझलाहट देखकर मुस्कुराया।
मैंने अपने बैग से कुछ कपड़े के टुकड़े निकालते हुए कहा, "ये लो। इन्हें अपने पैरों पर बांध लो, वरना चुभन हो जाएगी।"
उसने कंबल को अपने सीने से और कसकर खींच लिया, मानो मैं उसे घूर-घूर कर देखूँ। मैं व्यंग्य भरी हंसी हंसा। हालांकि उसकी खूबसूरती मेरी नजरों से ओझल नहीं थी, पर यही आखिरी चीज थी जो मेरे दिमाग में थी।
जब हमारी नज़रें मिलीं तो उसकी गुस्से भरी निगाहें नरम पड़ गईं और मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसे पता था कि मैंने उसकी जान बचाई थी। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता था, लेकिन मुझे उसकी तीखी निगाहें अपने पैरों की उंगलियों तक महसूस हुईं। मैं असहज होकर हिल गया।
"धन्यवाद।" उसने सफेद कपड़े के चौकोर टुकड़ों को अपने छोटे हाथों में लिया और उन्हें अपने पैरों के तलवों पर बांध लिया।
मैंने गहरी सांस ली और नज़रें झुका लीं, मैं उस खतरनाक स्थिति से स्तब्ध था जिसमें मैंने हम सबको डाल दिया था। लेकिन कुछ देर बाद, मैं सीधा खड़ा हो गया और अपने कंधे सीधे किए। चाहे पसंद हो या ना हो, आखिरकार यह मेरा ही फैसला था और मुझे इसे सुधारना ही था। मैंने जल्दी से पानी पिया और अपनी पानी की बोतल बैग में रख ली।
"हम कहाँ हैं?" उसने पूछा, उसकी आवाज़ रेत की तरह कोमल और मधुर थी। मैंने उसके चेहरे और उन हाथों को गौर से देखा जहाँ घाव थे, लेकिन अब वे लगभग पूरी तरह से भर चुके थे।
"बिस्बी के ठीक बाहर।" मैंने अपने बूटों के फीते कसे और अपना बैग ठीक किया। "हमें तुम्हारे लिए कपड़े और रहने की जगह ढूंढनी होगी। जल्दी।"
मैं खड़ा हुआ और अपने आस-पास का जायज़ा लिया। हम बिल्कुल सुनसान जगह पर थे, रेगिस्तान का आसमान दूर-दूर तक फैले तारों से भरा था, दूर-दूर तक कोई दूसरा इंसान नज़र नहीं आ रहा था। मुझे यही अच्छा लगता था। अकेले इस सुनसान जगह पर मुझे बहुत शांति महसूस हो रही थी। लेकिन इस बार मैं अकेला नहीं था। मेरे साथ वो लड़की थी और अब उसकी देखभाल करना मेरी ज़िम्मेदारी थी।
एक दर्दनाक चीख ने मेरा ध्यान वापस उस लड़की की ओर खींच लिया। वह अपने कान ढके हुए थी। "कितनी तेज़ आवाज़ है!" उसका बेदाग चेहरा सिकुड़ा हुआ था और ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी रॉक कॉन्सर्ट में लाउडस्पीकर के सामने खड़ी होकर तेज़ शोर को रोकने की कोशिश कर रही हो। लेकिन झींगुरों की हल्की सी आवाज़ और कभी-कभार हवा की सरसराहट के अलावा,

रेगिस्तान में सन्नाटा पसरा हुआ था।
मुझे समझ आ गया था कि क्या हो रहा है; वह रूपांतरित हो रही थी। और जहाँ तक मुझे पता था, यह एक बेहद कष्टदायक प्रक्रिया थी। शरीर का हर अंग अति सक्रिय हो गया था, उसकी सुनने की क्षमता भी उनमें से एक थी। हल्की सी भी आवाज़ सौ गुना तेज़ हो जाती थी और उसे कम करने के लिए कुछ खास उपाय नहीं थे। लेकिन एक बार जब उसका शरीर उसके अंदर दौड़ रहे विष के अनुकूल हो जाएगा, तो यह अवस्था भी समाप्त हो जाएगी।
"ये तो बदलाव का हिस्सा है।" मैंने कंधे उचकाते हुए झूठे आत्मविश्वास से अपनी परेशानी छुपाई। "तुम्हें इसकी आदत पड़ जाएगी।"
उसने चिढ़कर मेरी तरफ देखा, अभी भी उसने अपने कान ढके हुए थे। मैं समझ गया कि मेरा बेपरवाह रवैया उसे परेशान कर रहा था और मैंने अपनी मुस्कान दबा ली।
"क्या आपके पास मोबाइल फोन है?" उसने पूछा। "क्या मैं अपनी माँ को फोन कर सकती हूँ? अपने प्रेमी को? मैं बिस्बी में रहती हूँ और—"
"नहीं।" मैंने अपना बैग कंधों पर टांगा और आगे बढ़ गई। वह दर्द से लंगड़ाते और झुकते हुए मेरे पीछे-पीछे आने लगी। मेरे पास इसके लिए समय नहीं था। मुझे हम दोनों को किसी सुरक्षित जगह पर ले जाना था।
"नहीं, आपके पास मोबाइल फोन नहीं है? या नहीं, मैं अपने परिवार को फोन नहीं कर सकता?"
मैंने आह भरी। जब मैंने उसे गोदाम में लेटे हुए देखा था, तो उसने मुझ पर गहरा असर डाला था, मेरे दिल को छू लिया था। मुझे उसके लिए बुरा लगा था। लेकिन अब वह हद से ज्यादा बोल रही थी।
"मुझे घर जाना हे।"
फिर वही बात। मैंने आह भरी। "अब तुम एक पिशाच हो—या जल्द ही बन जाओगी," मैंने धैर्य बनाए रखने की कोशिश करते हुए समझाया, और सोचा कि मुझे उसे अपने मुंह से पट्टी हटाने ही नहीं देनी चाहिए थी। "अपने पिछले जीवन के किसी भी व्यक्ति से संपर्क करना नियमों के विरुद्ध है। उन्हें अभी भी लगता होगा कि तुम लापता हो।" अब हमें आगे बढ़ना था। मैं तेजी से आगे बढ़ा और झाड़ियों की एक लंबी कतार के सामने आ पहुँचा जो हमारा रास्ता रोक रही थी।
"तो बस इतना ही?" उसने ऐसे मुंह बनाया जैसे मैंने उसे बिना दूध के दलिया दे दिया हो। "अचानक से मैं पिशाच बन गई और अब मेरा कोई परिवार या दोस्त नहीं है? स्कूल का क्या होगा? मुझे जल्द ही कॉलेज शुरू करना था।"
मैंने चिढ़कर जवाब दिया। मैं न तो उसका शोक परामर्शदाता था और न ही मुझे उसे कुछ भी देने की ज़रूरत थी, स्पष्टीकरण देना तो दूर की बात है। मैंने उसे मृत्यु के मुंह से बचाया था। क्या इतना काफी नहीं था? मैंने अपनी कुल्हाड़ी निकाली और सूखी झाड़ियों के एक घने हिस्से पर वार करना शुरू कर दिया।
जब मैंने कोई जवाब नहीं दिया तो उसने पूछा, "मेरा क्या होगा?"
यह लड़की बेहद दृढ़ थी। मैंने एक गहरी साँस ली और उसकी तरफ देखा। "अपनी पुरानी हर चीज़ को अलविदा कह दो। यही तुम्हारा नया जीवन है।"
हम झाड़ियों से होते हुए पहाड़ी की तलहटी में एक खुले मैदान में पहुँचे। वह रुक गई और मेरी तरफ देखने लगी, उसका चेहरा डरा हुआ और बेबस था। उसकी विनती भरी निगाहों का मुझ पर जो असर हुआ, उसे मैं नज़रअंदाज़ नहीं कर सका। उसकी नज़र मेरी कमर पर लटके लकड़ी के खंभे पर पड़ी और वह पीछे की ओर लड़खड़ा गई, मानो वह उसे काट ले। उसने अपना हाथ अपनी छाती पर रख लिया।
"क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं पिशाच हूँ?"

एक पल के लिए हमारी निगाहें एक-दूसरे से मिलीं, फिर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपने साथ खींच लिया।
मुझे नहीं लगता। मुझे पता है।

छह: रूबी

मुझे बिजली के झटके जैसा झटका लगा और मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि सैनिक ने मुझसे क्या कहा था। उसने कहा था कि मैं पिशाच बन रही हूँ। मैं। एक पिशाच! अगर मुझे इतना दर्द न हो रहा होता, तो मैं ज़ोर से हंस पड़ती। यह विचार ही अजीब था। बिलकुल पागलपन भरा।

पिशाच काल्पनिक जीव थे। वे हैलोवीन के परिधान और कहानियों के पात्र थे। वे कार्टून और फिल्मों में भी थे। वे काउंट ड्रैकुला थे।

वे असली नहीं थे... थे क्या?

मैंने अपने रक्षक का रूप देखा और पहली नज़र में वह एक सामान्य सैनिक लग रहा था, लेकिन गौर से देखने पर पता चला कि उसके पास व्हाइट हाउस के तोपखाने कक्ष से भी ज़्यादा हथियार बंधे हुए थे। और उसके भारी भरकम हथियारों के जखीरे से भी ज़्यादा चौंकाने वाली बात उसकी कमर पर लटकता हुआ एक अकेला हथियार था। भला कौन सा सैनिक सुरक्षा के लिए लकड़ी का खंभा रखता है? यह एहसास होते ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा कि शायद वह सच कह रहा है और मैं लड़खड़ा गया।

मेरा दिमाग चकरा रहा था, मैं वास्तविकता का कोई भी अंश पकड़ने के लिए बेताब थी। मेरे दिमाग में बार-बार कौंध रही तस्वीरों से मैं चिपकी रही, हाल की घटनाओं को फिर से याद करने की कोशिश कर रही थी। लेकिन अपने प्रेमी के साथ तीखी बहस और कार दुर्घटना के अलावा, मुझे मरने और फिर आग और विस्फोटों के बीच असहनीय दर्द से जागने के अलावा कुछ खास याद नहीं था। जाहिर है, मेरी याददाश्त से समय का एक बड़ा हिस्सा गायब था और मैंने कितनी भी कोशिश की, मैं उन टुकड़ों को जोड़ नहीं पा रही थी।

"चलो भी," वह बड़बड़ाया, मेरी मौजूदगी से साफ़ तौर पर नाराज़ था, और मैं उसे दोष नहीं दे सकती थी—मैं खुद भी उस समय वहाँ रहना नहीं चाहती थी। लेकिन उसने मेरी तरफ देखा और अचानक रुक गया, उसकी धूसर आँखों में कुछ नरम भाव था और मुझे लगा कि शायद वह सहानुभूति थी।

अजीब बात है कि मैंने अपने सुंदर रक्षक का नाम नहीं पूछा था, और न ही उसने बताया था। उसने मुझसे मेरे बारे में कुछ भी नहीं पूछा, बल्कि मुझे प्याज की बोरी की तरह अपनी बाहों में उठाया और अपने साथ ले गया। चाँद डूब चुका था और जल्द ही उजाला होने वाला था, भोर होने से पर्वत श्रृंखला धुंधली गुलाबी हो रही थी। हम एक नाले से होते हुए एक खड़ी चढ़ाई पर चढ़े, पत्थर मेरे पैरों के कपड़े को भेदकर मेरी त्वचा में चुभ रहे थे।

मेरी आँखों में आँसू भर आए, लेकिन मैं रोई नहीं। मैं इससे निकलने का रास्ता ज़रूर ढूँढूँगी। मेरा पहला ख्याल आया कि मैं अपने माता-पिता को फोन करके उस भयानक रात के बारे में बताऊँ और उनसे मुझे लेने आने की गुहार लगाऊँ। मैं उन्हें बताना चाहती थी कि मैंने जो किया उसके लिए मुझे बहुत अफ़सोस है, भले ही उन्होंने मुझसे ज़िंदगी भर एक भयानक राज़ छुपा रखा था। अब देखा जाए तो यह सब इतना बुरा नहीं लग रहा था। लेकिन जब सैनिक ने कहा कि मैं अपने परिवार से संपर्क नहीं कर सकती, तो मेरा दिल बुरी तरह सिकुड़ गया। मैं सोचने लगी कि क्या उसका मतलब अभी के लिए है या हमेशा के लिए। यह सोचकर डर मेरे दिल में खटकने लगा कि मैं अपने माता-

पिता को फिर कभी नहीं देख पाऊँगी।
सिपाही ने कहा था कि हम बिस्बी के पास हैं, मेरा गृहनगर जहाँ मैं पली-बढ़ी थी, वही जगह जहाँ उस दुर्घटना में मेरी मौत हुई थी। लेकिन अगर मैं किसी तरह घर वापस भी पहुँच जाऊँ, तो क्या वे अब मुझे चाहेंगे, इस हालत में कि मैं क्या बन चुकी हूँ? मैंने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। यह तभी संभव था जब यह आदमी सच कह रहा हो। मुझे अब भी यकीन नहीं था कि मैं उस पर भरोसा कर सकती हूँ। मेरा दिमाग बुरी तरह उलझ गया था, जैसे कोई जला हुआ सर्किट बोर्ड हो, और मैं यह समझने की कोशिश कर रही थी कि आखिर हो क्या रहा है।
"मैं बस... मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या हुआ।" मेरे दिमाग में गूंज रहे शोर के बीच मैं खुद को मुश्किल से सुन पा रही थी; कीड़े-मकोड़े इधर-उधर भाग रहे थे, हमारे पैरों की चरमराहट, हवा की सीटी। मैंने अपने कानों पर हाथ रख लिए। "मैं... एक पिशाच कैसे बन गई? मैं मर रही थी। मैं मर गई थी।"
वह एकदम रुक गया, मानो मेरी बातें उसे अटपटी लगी हों। "तुम मर गए? तुम्हें अगवा नहीं किया गया?"
मैंने अपना सिर हिलाया। "मेरा कार एक्सीडेंट हो गया था। मैं मर गया था।"
ऐसा लग रहा था मानो कोई बात उसे परेशान कर रही हो, उसका चेहरा अजीब तरह से बिगड़ गया था। लेकिन फिर अचानक उसके चेहरे के भाव बदल गए और उसने कंधे उचका दिए। "तो फिर, शायद तुम मर ही गए थे। लेकिन बस कुछ ही सेकंड के लिए। और फिर किसी पिशाच ने—पता नहीं क्यों—तुम्हें अपने जैसा बना लिया।"
मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, यह सोचते हुए कि आखिर एक पिशाच मुझे अपने समूह का हिस्सा क्यों बनाना चाहेगा? वह कौन सा समूह होगा? कोई जाति? कोई प्रजाति? और मुझे यह सब याद क्यों नहीं आ रहा है। खून चूसने वाले राक्षस में बदलना अपने आप में एक चौंका देने वाला विचार था ही, लेकिन उनका अस्तित्व ही इतना भयानक था।
"क्या आप उनमें से एक हैं?" मैंने अपने उस सुंदर रक्षक से पूछा जिसका नाम मुझे अभी तक नहीं पता था।
वह जोर से हंस पड़ा। "नहीं।"
मेरे गाल शर्म से लाल हो गए, अपमान ने मुझे पीठ में ऐसे छुरा घोंपा जैसे कोई भारी कुल्हाड़ी मार दी हो। अगर मैं सचमुच पिशाच बनने वाली थी, चाहे यह कितना भी अजीब क्यों न हो—और जाहिर तौर पर मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकती थी—तो कम से कम वह थोड़ा सम्मान तो दिखा सकता था। वरना, मैं शायद सबसे पहले उसका खून चखने का फैसला कर लेती। यह सोचते हुए कि मैं यह कैसे करूंगी, मैंने ऊपर हाथ बढ़ाकर अपने दांत महसूस किए। नुकीले दांत नहीं थे। बस चिकने, सफेद मोती जैसे दांत, दो सीधी पंक्तियों में करीने से लगे हुए थे, उन ब्रेसेस की बदौलत जो मैंने कुछ साल पहले लगवाए थे।
मैंने कहा, "अच्छा, अगर तुम पिशाच नहीं हो, तो फिर मेरी मदद क्यों कर रहे हो?"
उसने उधर देखा, उसके चेहरे पर थोड़ी सी ईमानदारी झलक रही थी। "मैं तुम्हें मार नहीं सका।"
मैंने भौंहें सिकोड़ लीं, असमंजस में पड़ गई। "लेकिन आपके अनुसार तो मैं पिशाच हूँ। और आप पिशाचों को मारते हैं। तो फिर बात क्या है?"
वह आदमी कुछ नहीं बोला, बल्कि पथरीले इलाके में लगातार चलता रहा, उसके कंधे तनाव में थे। मुझे उसके मिजाज में बदलाव महसूस हुआ।
मैंने दोबारा पूछा, "क्यों? आप मेरी मदद क्यों कर रहे हैं?"
"मैं उस दौर से दोबारा नहीं गुजर सकता," उसने बुदबुदाते हुए कहा।

“किस चीज़ से गुज़रना पड़ेगा?” मैंने झुंझलाहट भरी आवाज़ में पूछा।
उसने असंतुष्ट होकर एक गहरी सांस छोड़ी और अपने काले बालों में हाथ फेरा।
"मैंने तुम्हें इसलिए नहीं मारा क्योंकि तुम अभी भी इंसान हो।"
“तो फिर तुम मुझे इस तरह क्यों ले गए? मुझे वहीं क्यों नहीं छोड़ दिया?”
उसने गुस्से से कहा, "क्योंकि वे तुम्हें मार डालते।"
उनकी परेशान करने वाली बातों को सुनकर मेरा दिल बैठ गया।
"वे कौन हैं?"
“फ्यूज सैनिको।” उस आदमी के जवाब संक्षिप्त और सटीक थे। वह बात नहीं करना चाहता था, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। मुझे जवाब चाहिए थे।
“और ये सैनिक पिशाचों को मारते हैं?”
हम पिशाचों को मारते हैं।
क्या आप सरकार के लिए काम करते हैं?
"क्या तुम कभी चुप नहीं रहोगे?" उसने मुझे चिढ़ भरी नज़र से देखा, लेकिन जब उसने देखा कि मैं क्या महसूस कर रहा था, तो वह जम गया—एक भयंकर दर्द की लहर मेरे शरीर को ऐसे चीर रही थी जैसे कोई बेकाबू होकर मांस काटने वाला चाकू मुझ पर चल रहा हो।
चीखते हुए मैं ज़मीन पर गिर पड़ी और सिकुड़कर गेंद जैसी हो गई। मेरे शरीर की हर नस, हर मांसपेशी और हर हड्डी ऐसे लग रही थी जैसे फट रही हो, टूट रही हो और आग से जल रही हो। वह आदमी घुटनों के बल बैठा और मेरा सिर पथरीली ज़मीन से बचाने के लिए अपनी गोद में रख लिया। "धिक्कार है!" उसने अपनी बेढंगी उंगलियों से मेरी पीठ सहलाई, मानो मुझे थोड़ा दिलासा देने की कोशिश कर रहा हो। मानो अनंत काल बीत गया हो, तब जाकर दर्द थोड़ा कम हुआ और मैं हांफने लगी।
“यह तो बस कुछ समय के लिए है।” फिर से, उसने अजीब तरह से मेरी पीठ सहलाई, मानो उसने पहले कभी ऐसा किया ही न हो। हालाँकि वह आदमी मेरे लिए बिल्कुल अजनबी था, उसकी मौजूदगी ने मुझे सुकून दिया, उसकी उंगलियाँ मेरी दर्द भरी त्वचा पर मरहम की तरह थीं। मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई, जिसे मैं शायद सुख समझ बैठी थी। लेकिन मेरे सीने में भावनाओं का एक गोला उमड़ रहा था, जो फटने को तैयार था।
“मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचूँ।” मैंने अपने चेहरे को हाथों से ढक लिया, आँसू रोकने की कोशिश करते हुए। “जब मैं मरी थी तब मैंने अपना परिवार खो दिया था, और अब तुम कह रहे हो कि मैं उन्हें फिर से खो रही हूँ। और मैं एक ऐसे प्राणी में बदल रही हूँ जो सिर्फ़ कहानियों में ही होना चाहिए।” अपराधबोध मेरे अंदर उमड़ रहा था, आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। “यह पागलपन है। यह बेहूदा है।” मुझे नहीं पता मैंने कितनी बार ये कहा था, लेकिन मुझे यकीन था कि ये आखिरी बार नहीं होगा। मैंने उसकी गहरी आँखों में देखा और पलकें झपकाईं। “तुम कौन हो? मैं तुम्हारा नाम तक नहीं जानती।”
उस आदमी ने अपने जबड़े भींच लिए और मुझे घूरने लगा। उसने एक रुमाल निकाला और मुझे दे दिया।
"लड़का।"
“क्या हुआ?”
“गाय स्टोन। मैं फ्यूज़ सेना का कैप्टन हूँ।” मैंने उसकी ओर देखा, लेकिन इससे पहले कि मैं और कोई सवाल पूछ पाता, उसने आगे बताया। “फ्यूज़ का मतलब है अभागी आत्माओं का खात्मा करने वाला गुट। हम सरकार का एक गुप्त संगठन हैं जिसका मुख्य उद्देश्य अभागी आत्माओं का

सफाया करना है।"
मैंने अपनी आँखें पोंछीं और रूमाल से नाक साफ की। "बदकिस्मत आत्माएँ?"
वह रुका और अपने चेहरे पर हाथ फेरने लगा। मुझे लगा कि वह मुझे जरूरत से ज्यादा जानकारी दे रहा है। लेकिन उसने बोलना जारी रखा।
"पिशाच, चुड़ैलें, वेयरवुल्फ—या जैसा कि हम उन्हें कहते हैं—बदकिस्मत आत्माएँ।" उनके चेहरे पर कई भावों का मिश्रण था। उनका चेहरा दृढ़ संकल्प से भरा था, लेकिन साथ ही साथ जवानी की कोमलता भी लिए हुए था। चेहरे पर कोई झुर्रियाँ या रेखाएँ नहीं थीं, बस उनकी चिकनी त्वचा पर कहीं-कहीं बिना शेव की हुई दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल थे। मैंने हाथ बढ़ाकर उनके गाल को छुआ।
"कैप्टन बनने के लिए तुम बहुत छोटे हो," मैंने कहा। उसने मेरे स्पर्श को ऐसे झटक दिया जैसे मैंने उसे डंक मार दिया हो। शर्म से मेरे गाल लाल हो गए और मैंने अपना हाथ नीचे कर लिया।
"मैं अपने काम में माहिर हूं," उसने अपने बैग में कुछ ढूंढते हुए कहा।
मैंने गाय की बेरुखी को अनसुना कर दिया और अंधेरे को छंटते हुए देखा, आसमान का रंग हल्के गुलाबी से गहरे भूरे रंग में बदलता जा रहा था। मैंने अपनी नज़रें झुका लीं और एक तरह से तनकर ज़मीन को घूरने लगी, स्थिति को समझने की कोशिश कर रही थी, उसके कहे शब्दों से अभी भी परेशान थी। मैं जो बन रही थी। यह पागलपन था और मैं अपनी याददाश्त में छूटे हुए हिस्सों को भरने के लिए बेताब थी कि मैं इस तरह कैसे बन गई, लेकिन भर नहीं पा रही थी।
"क्या तुम फिर से चल सकती हो?" उसने पूछा, और मुझे मेरे विचारों से बाहर निकाला। मैंने सिर हिलाया और कंबल को अपने सीने से और करीब खींच लिया। ऐसे समय में, मेरी शर्मिंदगी लगभग हास्यास्पद लग रही थी। लगभग। लेकिन शुक्र है कि गाय ने मेरा मज़ाक नहीं उड़ाया, बल्कि मुझे ज़मीन से उठने में मदद की, हालाँकि मुझे मानना पड़ेगा कि उसने थोड़ी सख्ती से मदद की। "सूरज निकल रहा है। हमें जल्दी करनी होगी।"
उनके चेहरे पर घबराहट साफ झलक रही थी और इससे मुझे बेचैनी होने लगी। लेकिन किसी वजह से, हालांकि मुझे खुद नहीं पता क्यों, मुझे गाइ स्टोन पर भरोसा था।
बिना कुछ कहे, उसने मेरा हाथ पकड़ा और हम रेगिस्तान में चल पड़े। कुछ मिनट बाद, हम एक पहाड़ी पर चढ़े और चोटी पर रुक गए। दूसरी ओर एक जर्जर स्पेनिश कैथोलिक मिशन था, जिसके शीर्ष पर तीन सफेद मेहराबों में तांबे की घंटियाँ लगी थीं। तीन मंजिला इमारत विशाल दिख रही थी और धुंधले रेगिस्तान में चमक रही थी। गाय ने मेरी ओर एक नज़र डाली।
समय समाप्त हो गया है। आशा है आपको चर्च जाना अच्छा लगेगा।

सात: रूबी

मैं पहाड़ी की चोटी पर गाय के बगल में खड़ा था, मेरा दिमाग इस नई जानकारी से चकरा रहा था। मेरा शरीर दर्द से कांप रहा था और मुझे उस सैनिक की बात पर यकीन होने लगा था जिसने कहा था कि मैं पिशाच में बदल रहा हूँ। हालाँकि यह पूरी तरह से पागलपन था, मैं अपने शरीर के संकेतों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। मैं सचमुच बदल रहा था, मेरी इंद्रियाँ तीव्र हो रही थीं, और मैंने अपने पूरे जीवन में इससे पहले कभी कुछ इतना अजीब महसूस नहीं किया था।

हमने रेगिस्तानी परिदृश्य पर नीचे की ओर देखते हुए अपने सामने खड़े विशाल मिशन को निहारा। उसके चारों ओर कैक्टस के झुंड थे, जिनके सफेद और पीले फूल मेरी आँखों के सामने खिल रहे थे, हर पंखुड़ी मानो सोते हुए सूरज को खोज रही हो। छोटे-छोटे काले कीड़े फूलों पर बिखरे हुए थे, मानो अपने अस्थायी आश्रय का आनंद ले रहे हों।

मेरी बढ़ी हुई दृष्टि ने मुझे चकित कर दिया। मैं एक इंसान के रूप में जितना देख सकता था, उससे कहीं अधिक दूर तक देख सकता था और हर चीज़ का विवरण इतना सटीक था। इतना सुंदर। चर्च की ऊंची सफेद दीवारें उगते सूरज की रोशनी में आड़ू रंग की हो गईं और मैं मिट्टी की ईंटों की खुरदरी बनावट को ऐसे देख सकता था मानो मैं ठीक उसके सामने खड़ा हूँ।

मैंने अपने बगल में खड़े अपने रक्षक पर एक नजर डाली।

गाय स्टोन।

वह किसी रहस्यमयी गुप्त सेना का कप्तान लग रहा था, जिसका मकसद मुझ जैसे लोगों को, मुझ जैसे पिशाचों को मारना था। इस अवास्तविक विचार पर मैं घबराकर हँस पड़ी, और सोचने लगी कि क्या मैं सचमुच खुद को पिशाच मान रही हूँ। मुझमें कुछ तो अलग था, यह तो पक्का था। मेरा शरीर बदल रहा था, मेरी इंद्रियाँ नियॉन लाइट की तरह तेज़ हो रही थीं, दर्द गर्म नदियों की तरह मेरे शरीर में बह रहा था। लेकिन एक पिशाच? मैंने अविश्वास से अपना सिर हिलाया, तभी गाय ने मेरा हाथ पकड़ लिया।

वह मुझे पहाड़ी से नीचे ले जाकर भव्य प्रवेश द्वार तक ले गया, जहाँ लकड़ी का मेहराबदार दरवाजा हमारे सामने बंद हो गया। उसने लोहे का हैंडल आज़माया, लेकिन दरवाजा हिला तक नहीं। वह पूरब की ओर मुड़ा और उगते सूरज को देखकर भौंहें चढ़ाईं। हैंडल पकड़े हुए ही उसने सहारा लेने के लिए अपना पैर दरवाजे पर रखा और धक्का दिया। दरवाजे से चरमराहट की आवाज़ आई, लेकिन वह हिला तक नहीं।

"धिक्कार है!" उसने दरवाजे को धक्का दिया और धकेलने की कोशिश की। उसने हैंडल को हिलाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

“क्या मैं धूप में जल जाऊँगा?” मैंने पूछा। सभी को पुरानी कहानियों का पता था कि पिशाच धूप में झुलस जाते हैं और उन्हें या तो धूप में जलाकर मारा जा सकता है या फिर दिल में भाला घोंपकर। लेकिन अब जब मैं खुद उन पौराणिक जीवों में से एक में बदल रहा था, तो मैंने सोचा कि मुझे यह जानना ज़रूरी है कि क्या यह सच है।

“हाँ।” उसने खुद को दरवाजे के चौखट के सहारे सटाया, उसकी तंग टी-शर्ट के नीचे उसकी मांसपेशियाँ उभरी हुई थीं। जैसे कड़ाही में अंडा पक रहा हो, वैसे ही मेरे अंदर गर्मी की एक तीव्र

लहर दौड़ गई। क्या यह सूरज की गर्मी थी? या मेरे रक्षक के मजबूत शरीर का मुझ पर प्रभाव? जो भी हो, मेरा चेहरा लाल हो गया, माथे पर पसीने की बूँदें थीं। गर्मी से हाँफते हुए मैंने क्षितिज की ओर देखा।

मुझे थोड़ी गर्मी लग रही है।

गाय घुटनों पर हाथ रखकर झुक गया, अपने असफल प्रयासों से थका हुआ। उसने चिंता भरी निगाहों से मेरी ओर देखा, और मुझे अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए देखा। उसने एक पल के लिए मुझे देखा, फिर तीखे स्वर में बोला।

"एक ओर खड़े हो जाओ।"

मैं दरवाजे से तेजी से दूर हट गई और गाय कम से कम दस कदम पीछे हट गया, जिससे उसे दौड़ने की जगह मिल गई। अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही, वह उछला और दोनों पैरों से दरवाजे पर लात मारी। धूल के गुबार के साथ दरवाजा खुल गया। वह पीछे की ओर लड़खड़ाया, लेकिन संभलकर मेरा हाथ पकड़कर मुझे अंदर धकेल दिया। हमारे पीछे दरवाजा बंद करने से पहले, मैंने रेगिस्तान के दृश्य पर एक नजर डाली, उगते सूरज के नीचे विशाल पहाड़ बैंगनी दानवों की तरह लग रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं सचमुच पिशाच बनने वाली हूँ और गाय सच कह रहा है, तो यह आखिरी सूर्योदय होगा जो मैं कभी देखूँगी।

मेरी स्थिति की सच्चाई मेरे सामने आ गई, मेरे किए की निंदा का सच मेरे शरीर में ऐसे समा गया जैसे चिलचिलाती धूप की लपटें। मैं अपने परिवार को फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। जॉन को फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। मैंने जो किया था उसकी गंभीरता से मेरा दिल बैठ गया और खुद को घुटनों पर गिरकर रोने से रोकने के लिए मैंने अपनी पूरी ताकत लगा दी। मेरी मौत के लिए मैं खुद ही जिम्मेदार थी।

आग का विशाल गोला पहाड़ी की चोटी से झाँका, और अपनी नारंगी रोशनी से पूरे इलाके को रोशन कर दिया। मेरी आँखें—चाहे सूरज की गर्मी से या अपनी बेबसी के गहरे एहसास से—उसे देखते ही नम हो गईं। गाय ने मुझे एक तरफ धकेल दिया और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया, जिससे हम लगभग अंधेरे में डूब गए।

पास ही एक बेंच पर उन्हें कुछ मोमबत्तियाँ मिलीं और उन्होंने उन्हें जला दिया, जिनकी रोशनी से गिरजाघर के अंदर हल्की चमक फैल गई। मेरी आँखें रोशनी के अनुकूल हो गईं और मैं चारों ओर के नज़ारे को निहारने लगा। गिरजाघर की दीवारें चौकोर और डिब्बे जैसी नहीं थीं, बल्कि गोल और घुमावदार थीं, उनके अवतल अग्रभागों पर सोने की परत चढ़ी हुई थी। संतों के धुंधले चित्र सुनहरे मेहराबों में ऊँचे लटके हुए थे और सफेद नक्काशीदार मूर्तियाँ हर कोने में रखी हुई थीं, उनके चेहरे अंधेरे में खोखले और उदास लग रहे थे।

छतें बेहद ऊंची थीं, कमरा विशाल था, और हवा में धूल के कण चमक रहे थे। चर्च के मुख्य हॉल के बीचोंबीच लंबी लकड़ी की बेंचें लगी थीं और चर्च का पिछला हिस्सा अंधेरे में गायब हो रहा था। अपने कैथोलिक पालन-पोषण के बावजूद, मैंने कभी ऐसी जगह नहीं देखी थी, और मैं खुद को रोक नहीं पाई और मेरी सांसें थम गईं।

उस आदमी ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बेंचों के बगल वाले गलियारे में ले गया। "सूरज तेज होने पर खिड़कियों से बहुत ज्यादा रोशनी आएगी।"

मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया—शायद मेरी विकट परिस्थिति या शायद मेरी हताशा—लेकिन मैं पास की ही एक बेंच पर घुटने टेककर बैठ गया और अपने शरीर पर त्रिमूर्ति का चिन्ह बनाया। माथा। छाती। बायां कंधा। दायां कंधा।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर।

मैं बचपन में कभी-कभार चर्च जाया करता था, लेकिन कभी बहुत धार्मिक नहीं था। पर मैंने सोचा कि अगर मुझे पिशाच के शरीर में धरती पर ही नरक भोगना है, तो कम से कम पहले अपने पापों का प्रायश्चित तो कर ही लूँ। गाय ने मुझे अपनी उंगलियाँ होठों तक लाते और उन्हें चूमते हुए देखा, यह आस्था का प्रतीक था जो मेरी दादी ने मुझे बचपन में सिखाया था। उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

"गंभीरता से?"

मैंने उसकी तरफ देखा और अपने शरीर के चारों ओर कंबल को कसकर लपेट लिया। "मैं बहुत समय से चर्च नहीं गई थी। लेकिन मुझे लगा कि जाना ही सही रहेगा।"

गाइ ने नाक सिकोड़ी और मेरा चेहरा धूप से भी ज़्यादा लाल हो गया। मैं वहीं खड़ी रह गई, एक इंसान के रूप में मेरे आखिरी पलों पर उसकी बेपरवाह प्रतिक्रिया देखकर मैं दंग रह गई। मैंने आँखें सिकोड़ लीं, यह सोचकर कि उसे इस स्थिति में ज़रा भी मज़ाक कैसे मिल गया।

"क्या?"

"एक कैथोलिक वैम्पायर," वह हँसते हुए बोला। "अब तो मैंने सब कुछ देख लिया।"

मैंने उसका उपहास उड़ाया जब उसने मुझे घुटनों के बल से खींचकर चर्च के पीछे की ओर ले गया। मेरी गर्दन पर रहस्यमय काटने के घाव से तेज़ दर्द हो रहा था और पैरों पर पट्टियाँ बंधी होने के बावजूद, रेगिस्तान में दौड़ते समय सुरक्षा न मिलने के कारण तलवों में जलन हो रही थी।

"लो।" गाय ने नक्काशीदार लकड़ी के दो दरवाज़े खोल दिए। उसने एक मोमबत्ती जलाई और उसे दरवाज़े के अंदर रखा। "आज तुम यहीं सोओगे।" मैंने अंदर के उस छोटे से अंधेरे कमरे में झाँका और अपने विकल्पों पर विचार किया, जो दुर्भाग्यवश, न के बराबर थे। मैंने पीछे मुड़कर चर्च के भव्य दृश्य को देखा और मेरी नज़र मदर मैरी की एक मूर्ति पर पड़ी। उन्होंने अपने हाथ अपनी छाती पर रखे हुए थे और उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

"ठीक है, फेथ।" गाय ने मुझे दरवाजे से धक्का देकर मेरा ध्यान वापस अपनी ओर खींचा। "अब आराम करने का समय है।"

"रूबी," मैंने बड़बड़ाते हुए कहा और गाय को मुझे उस छोटे से कमरे में ठूंसने दिया। उसने मोमबत्ती एक पुरानी बारोक शैली की मेज पर रख दी। उसके बगल में एक जर्जर लकड़ी की कुर्सी और दर्जनों धूल भरी किताबों से भरी एक पुरानी अलमारी थी। वहाँ कोई खिड़की नहीं थी, और फर्श पर केवल एक गंदा कालीन बिछा था। "मेरा नाम रूबी है," मैंने इस बार अकड़कर दोहराया। "रूबी कार्टर। अगर आपने पहली बार में नहीं सुना हो तो।"

"रूबी अच्छी है।" उसने मुझे एक शरारती मुस्कान दी। "लेकिन मुझे फेथ ज़्यादा पसंद है।"

इस आदमी ने मुझे चिढ़ा दिया और मैं झुंझलाहट से चिढ़ गई। मेरी प्रतिक्रिया देखकर वह शायद खुश हो गया और मुस्कुराते हुए दीवार पर टंगी एक खूंटी से सफेद चोगा उठाया। उसने मुझे पकड़ाते हुए कहा, "इसे पहन लो।"

मैंने रेशमी कपड़े को अपनी उंगलियों के बीच से छूकर देखा और पहचान लिया कि यह किसी वेदी सेवक का वस्त्र है। लेकिन यह कम से कम पचास साल पुराना रहा होगा। सफेद रेशम घिसकर क्रीम रंग का हो गया था, और लेस के नाजुक पैटर्न ने इसके किनारे और आस्तीनों को सजाया हुआ था।

गाइ ने मुझसे मुंह फेर लिया और मुझे प्राइवेसी देने के लिए दरवाजे की तरफ मुंह कर लिया। मैंने एक पल के लिए उसे घूरा, फिर अपना कंबल ज़मीन पर गिरा दिया। मैंने अपने सिर पर बाथरोब सरकाया और अपनी बांहें आस्तीनों में डाल लीं। यह मेरे घुटनों से थोड़ा ऊपर तक लटक रहा था और किसी पुराने ज़माने के नाइटगाउन जैसा लग रहा था। यह मेरी पहली पसंद का कपड़ा नहीं था,

लेकिन कैप्टन इम्पॉसिबल के साथ पूरा दिन नग्न बिताने से तो यह निश्चित रूप से बेहतर था।
“अब देख लो,” मैंने गुस्से से कहा और कालीन पर बैठ गई, अपने पैरों से खून से सने कपड़े हटा दिए। वह मुड़ा, मोमबत्ती की रोशनी में उसका गठीला शरीर पीला चमक रहा था। उसकी धूसर आँखें मुझे घूरते हुए और गहरी हो गईं।
“अपने हाथ फैलाओ।” उसने उदाहरण के तौर पर अपने हाथ आगे बढ़ा दिए। उसकी इस अजीबोगरीब गुजारिश पर मैंने भौंहें चढ़ा लीं। “बस कर दो,” वह बड़बड़ाया और मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा। फिर वह मेरे सामने घुटनों के बल बैठ गया और एक हाथ से मेरी कलाई पकड़ ली। उसने दूसरे हाथ से पीछे की ओर हाथ बढ़ाया और धातु की दो भारी हथकड़ियां निकाल लीं। मैं चौंक गई, अविश्वास से मेरी सांसें थम गईं।
"क्या आप मुझे हथकड़ी पहना रहे हैं?"
“हां।” उनकी आवाज सपाट थी, मेरे सदमे का उन पर कोई असर नहीं हुआ था।
“पर... मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है।” मेरे सीने में समुद्र की ऊंची लहरों की तरह घबराहट उमड़ पड़ी, लेकिन उसने धातु के कंगन मेरी कलाई पर कसकर बांध दिए और उन्हें खींचकर यह सुनिश्चित किया कि सब ठीक हो गया है। मैंने मुंह बना लिया। राजकुमार द्वारा बचाए जाने का सपना तो धराशायी हो गया।
गाइ पीछे झुक गया और भौंहें चढ़ा लीं। "आज रात जब तुम जागोगे, तब तक तुम पूरी तरह से पिशाच बन चुके होगे। मैं कोई जोखिम नहीं ले सकता।"
मैंने उसकी कठोर आँखों में देखा, मेरा वो चंचल रवैया जो मैंने पहले अपनाया था, गायब हो गया और उसकी जगह डर ने ले ली। मेरे कांपते शरीर में हताशा दौड़ गई। "क्या तुम मेरे साथ रहोगे?" मुझे डर था कि वो मुझे अकेला छोड़ देगा।
उन्होंने कुछ पल मेरे शब्दों पर विचार किया, उनके चेहरे के भाव समझ से परे थे। "क्या तुम चाहते हो कि मैं ऐसा करूँ?" उनकी आवाज़ धीमी और कर्कश थी।
“हाँ।” मैंने उदास होकर अपनी कलाई की ओर देखा। हालाँकि मैं उस आदमी से चौबीस घंटे से भी कम समय पहले मिली थी और उसे चिड़चिड़ा और रूखा समझती थी, फिर भी मुझे उसकी ज़रूरत थी। मुझे किसी की ज़रूरत थी। मैं अकेलापन महसूस कर रही थी और यह बात मानना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, पर डर मेरे अंदर जंग लगे बोर्ड की तरह कचोट रहा था। उसके ठंडे व्यवहार के बावजूद, उसका साथ मुझे अच्छा लगेगा और आखिरकार मैंने फुसफुसाते हुए कहा, “मैं डरी हुई हूँ।”
गाइ ने आह भरी और मेरे पैरों पर लिपटे खून से सने कपड़े उठाए। उसने उन्हें मेरी दोनों कलाइयों और हथकड़ियों के बीच ठूंस दिया। मैंने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।
“ये हथकड़ियां चांदी की हैं,” उसने समझाया। “चांदी पिशाच की ताकत को कमजोर कर देती है जिससे वे भाग नहीं सकते, लेकिन इस प्रक्रिया में जलन हो सकती है। ये कपड़े कुछ हद तक दर्द से राहत देंगे।”
मैंने विस्मय से नीचे देखा। "और अगर वे चांदी के न होते तो?"
"आप जितने शक्तिशाली पिशाच बनते हैं, उसके आधार पर आप चांदी को छोड़कर किसी भी चीज को भेदने में सक्षम हो सकते हैं।"
“ओह।” मैंने अपनी उंगलियों को धातु पर रगड़ा।
अब लेट जाओ और सोने की कोशिश करो। अगले बारह घंटे सबसे कठिन होने वाले हैं।
मैंने उसकी ओर देखा और उसके शब्दों पर विचार किया। अगर अगले बारह घंटे सबसे कठिन होंगे, तो पिछले चार घंटों में मैंने क्या महसूस किया होगा? मैं भय से कांप उठा।

उन्होंने मेरी घबराहट को भांप लिया होगा, इसलिए उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा। “सब ठीक हो जाएगा। तुम इससे उबर जाओगी। और तुम अकेली नहीं होगी।”
उसकी अचानक दिखाई गई दयालुता पर मैं आश्चर्य से भौंहें चढ़ा बैठी। हालाँकि मुझे उस पर भरोसा करने का कोई कारण नहीं था, फिर भी गाय के शब्दों ने मुझे सुकून दिया। उसकी उंगलियाँ मेरे कंधे पर ठहरीं, हमारी आँखें मिलीं, और एक पल के लिए, मैंने उसके रूखे बाहरी रूप के पीछे छिपी सच्चाई को देखा, एक गर्माहट मेरे अंदर एक सुखदायक स्नान की तरह दौड़ गई। लेकिन उसने तुरंत अपना हाथ पीछे खींच लिया, मानो उसे शर्मिंदगी महसूस हो रही हो।
अब जाओ। लेट जाओ और थोड़ी देर सोने की कोशिश करो।
मैंने ऊपर उसकी ओर देखा, मेरे होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। शायद वो उतना बुरा इंसान नहीं था जितना मैंने सोचा था। मैं कालीन पर लेट गई और उस कैप्टन के बारे में सोचने लगी जिसने मुझे बचाया था। उसमें कुछ मज़बूती और ताकत थी, फिर भी कोमलता और गर्माहट थी। मुझे उसके साथ सुरक्षित महसूस हुआ, जैसा जॉन के साथ कभी नहीं हुआ था।
गाइ दीवार से लगी पुरानी लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गया, अपने जूते उतारे और पैर मेज पर रख दिए। उसने अपनी कमरबंद से नुकीली लकड़ी की कील निकाली और उसे हाथ में पकड़े हुए अपना हाथ पेट पर रख लिया। ऐसा करते हुए उसने मुझे घूरकर देखा और मैं सोचने लगा कि क्या वह मुझे खतरा समझता है, यह जानते हुए कि जब मेरे दांत निकल आएंगे तो वह मुझे खतरा समझने लगेगा।
वह आगे झुका, मोमबत्ती बुझाई और दीवार के सहारे वापस बैठ गया। अंधेरे ने मेरी दृष्टि को ढक लिया और गाय और उसके इरादों के बारे में सारे सवाल गायब हो गए। लेकिन घोर अंधेरे में भी, और दर्द की चुभन के बावजूद, मैं अपनी दृष्टि में आए बदलाव को देखकर चकित रह गया, जो पल-पल तेज होती जा रही थी। परछाइयाँ रेखाओं में बदल गईं, फिर आकृतियों और धुंधले भूरे रंग में। गाय का शरीर लेटा हुआ था, लेकिन मैं समझ गया कि वह आराम से नहीं था; उसकी मांसपेशियां तनाव से भरी हुई थीं।
एक बार फिर, मुझे अपने परिवार की याद आई, और मैंने उन्हें जिस तरह से छोड़ा था, उसके लिए मुझे बहुत बुरा लग रहा था। और अब, शायद, वे सोच रहे होंगे कि मैं मर गया हूँ। दुख से मेरा पेट दुख से भर गया और मुझे सांस लेने में तकलीफ होने लगी। हालाँकि मुझे अपने अगले सवाल का संभावित जवाब पता था, फिर भी मैंने चुप्पी तोड़ते हुए वह सवाल पूछ लिया।
"क्या मैं अपने माता-पिता को सिर्फ एक कॉल कर सकता हूँ?"
“नहीं,” गाय ने बुदबुदाते हुए कहा।
मैंने आह भरी, अंततः इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि मेरा जीवन आधिकारिक तौर पर बदल चुका था।
तो जब मैं जागूंगा तो मैं पिशाच बन जाऊंगा?
"हाँ।"
क्या मुझे खून पीना पड़ेगा?
“हां,” उसने तीखे स्वर में उत्तर दिया।
मैं बेचैनी से फर्श पर करवटें बदल रहा था, मेरी रीढ़ की हड्डी में हल्का दर्द हो रहा था। मैं सोच रहा था कि पिशाच बनकर मेरा जीवन कैसा होगा। मैं सोच रहा था कि मुझमें कितना बदलाव आएगा। मैं सोच रहा था कि उस रात सूरज ढलने के बाद क्या होगा। मैंने अंधेरे में गाय की ओर देखा। उसकी आँखें बंद थीं।
"चूंकि मैं पिशाच बनने वाला हूं, तो क्या तुम मुझे मार डालोगे?"

"अगर तुमने मुझसे एक और सवाल पूछा तो मैं तुम्हें अभी मार डालूंगा।"
मैं करवट बदलते हुए एक तरफ लुढ़क गई, मेरे मुंह से हल्की सी हंसी निकल गई। उसके शब्द धमकी भरे नहीं थे, बल्कि हल्के-फुल्के मज़ाक जैसे थे। मुझे पूरा यकीन था कि अगर उसने अब तक मुझे नहीं मारा है, तो वह सोते समय भी मुझे नहीं मारेगा। लेकिन आज रात, जब मैं एक पिशाच के रूप में जागी, तो मुझे इतना यकीन नहीं था। मैंने पीछे मुड़कर देखा।
"शुभ रात्रि, गाइ।"
और हालांकि मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं था, लेकिन मुझे लगा कि मैंने उसके होंठों पर एक बचकानी मुस्कान देखी।
"शुभ रात्रि फेथ।"

आठ: रूबी

मेरी खोपड़ी के पिछले हिस्से में ऐसा दर्द हो रहा था मानो किसी ने मुझे बल्ले से मारा हो, गर्दन पर काटने के घाव से तेज़ दर्द हो रहा था और, भले ही यह अकल्पनीय लगे, चर्च के कठोर फर्श पर मेरी त्वचा भी दर्द कर रही थी। लेकिन इस दर्द के बावजूद, मेरा शरीर अंततः थकान से हार गया और मैं नींद और जागने के बीच की एक धुंधली सी अवस्था में खो गया।

और धुंध के बीच से बीते दिनों की कुछ झलकियाँ उभरीं। वे टूटी-फूटी और खंडित थीं, धुंधली सी, मेरे चारों ओर अधूरी जानकारियों के बवंडर की तरह घूम रही थीं। लेकिन उस अफरा-तफरी के बीच से मेरी माँ की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। मुझे अपनी मृत्यु से पहले के पल याद आ गए…

“हम समझते हैं कि तुम परेशान हो, जान। यह एक सामान्य प्रतिक्रिया है।”

“क्या?” मैंने एक गहरी साँस ली, फिर दूसरी साँस लेने में मुझे बहुत मुश्किल हुई। “आप कह रहे हैं कि मेरे पापा असल में मेरे पापा नहीं हैं?” मेरी नज़रें तेज़ी से मेरे माता-पिता के चेहरों पर घूम रही थीं, मैं समझने की कोशिश कर रही थी कि वे मुझे क्या कह रहे हैं।

“ऐसा नहीं है, बेटा। माँ ने पापा का हाथ पकड़ा— या यूँ कहें कि उस आदमी का हाथ पकड़ा जिसे मैं इतने सालों से अपना पापा समझती आ रही थी। ढलते सूरज की रोशनी मेरी खिड़की से अंदर आ रही थी और उनके चिंतित चेहरों पर पड़ रही थी। वे दोनों मेरे बिस्तर पर मेरे सामने बैठे थे। अपनी पसंदीदा कुर्सी पर उनके सामने बैठे हुए मेरे पेट में बेचैनी भारी पत्थरों की तरह उठ रही थी, लेकिन उस शाम इससे मुझे कोई आराम नहीं मिला। माँ ने गहरी साँस ली, मेरे ‘पापा’ को एक नज़र देखा और फिर मेरी तरफ देखा।

“तुम्हारे पापा हमेशा से तुम्हारे पापा रहे हैं और हमेशा तुम्हारे पापा ही रहेंगे। वो तुमसे उतना प्यार करते हैं जितना तुम सोच भी नहीं सकते।”

मेरा दिल पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ी से धड़कने लगा, धोखे की भावना से मेरा चेहरा लाल हो गया। मैंने अपने 'पिता' की तरफ देखा, मेरे पेट में भयंकर गुस्सा उबल रहा था।

"अगर आप मेरे असली पिता नहीं हैं, तो फिर कौन है?"

उसने बोलने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन मां ने उसका हाथ दबाकर उसे रोक दिया।

“जब मैं तुम्हारे गर्भ में चार महीने की थी, तब तुम्हारे जैविक पिता मुझे छोड़कर चले गए थे। और उसके बाद मैंने उनसे कभी संपर्क नहीं किया।”

“क्यों?” मेरी आवाज लड़खड़ा गई, मैंने अचानक पूछा। “वह हमें छोड़कर क्यों चला गया?” मैंने अपनी माँ को घूरकर देखा, मानो मैं अतीत में झाँक सकती हूँ, मानो सारे जवाब उनकी भूरी आँखों के नीचे छिपे हों। उनकी निगाहें हट गईं और उन्होंने अपनी गोद की ओर देखा। एक लंबे क्षण के बाद उन्होंने ऊपर देखा।

“सच कहूँ तो, रूबी, मुझे नहीं पता। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि वो इंसान जिसने तुम्हें शब्दों से परे प्यार किया है और हर मुश्किल में तुम्हारे साथ खड़ा रहा है, ठीक तुम्हारे सामने बैठा है।” उसने फिर से उसका हाथ दबाया।

उन्होंने मेरी ओर देखा, उनकी आँखों में सहानुभूति झलक रही थी। उन्होंने गला साफ किया, उनकी आवाज़ थोड़ी कर्कश थी। “रूबी, वह सही कह रही है। खून का रिश्ता मायने नहीं रखता। मायने

सिर्फ यह रखता है कि मैं तुम्हारा पिता हूँ और तुम मेरी बेटी हो। हम एक परिवार हैं, और मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।"

मैं अविश्वास से उसे देखती रही, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा, एक ऐसा चेहरा जो मुझे कभी एहसास नहीं हुआ था कि मेरे चेहरे से बिलकुल अलग है। उसकी आँखें हरी थीं, जबकि मेरी भूरी। उसके बाल काले थे, जबकि मेरे हल्के। उसका चेहरा लंबा था, जबकि मेरा गोल। मुझे यह कैसे पता नहीं चला? मैं इतनी मूर्ख कैसे हो गई कि मैंने सोचा कि मैं उसकी असली बेटी हूँ, जबकि असल में कोई और आदमी था जिसने मुझे जन्म दिया था? मेरी माँ के किसी और आदमी के साथ होने का ख्याल मुझे घृणा से भर देता था, मेरा खून रगों में पिघले हुए लावा की तरह उबल रहा था।

सामने बैठे उस आदमी को, जो खुद को मेरा पिता बता रहा था, मैं न सिर्फ पहचान नहीं पा रहा था, बल्कि मुझे पूरी जिंदगी झूठ बोला गया था। मुझे उनकी सहानुभूति नहीं चाहिए थी। मुझे उनसे सच के सिवा कुछ नहीं चाहिए था। मेरे पैरों से लेकर सिर तक एक भयंकर आग सी भड़क उठी और मैं अपनी सीट से उठ बैठा, मेरी आँखों में आँसू भर आए थे।

"अभी क्यों?" मैं रो पड़ी। "अभी क्यों, जब मैं अठारह साल की होने ही वाली हूँ?" मेरा सीना काँप रहा था, मानो मैं सिसकियाँ रोक रही थी। "मुझे तब क्यों नहीं बताया जब मैं छोटी थी? जब मेरे पास इसे समझने का समय होता?"

पिताजी ने मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन वह मुस्कान सच्ची नहीं लग रही थी। "हमने वही किया जो हमें सबसे अच्छा लगा।"

"हां बेटा," मां ने आगे कहा। "हम तब तक इंतजार करना चाहते थे जब तक हमें यह न लगे कि तुम इसे समझने लायक बड़े हो गए हो। और हम समझते हैं कि तुम परेशान हो।"

परेशान? परेशान? ओह, मैं बहुत परेशान थी। उनकी हिम्मत तो देखिए, इतने समय तक अपने इकलौते बच्चे से झूठ बोलते रहे। मेरे पेट में जैसे आग सी मच गई, मानो फटने ही वाली थी। मैंने जोर से ठहाका लगाया।

"सत्रह साल!" मैं चीख पड़ी, मेरी आवाज़ तीखी हो गई थी। "तुमने इतना लंबा इंतज़ार किया, इसे हमेशा के लिए अपने तक ही क्यों नहीं रखा? मुझे ज़िंदगी भर झूठ क्यों नहीं बोलते रहे? लगता है तुम झूठ बोलने में माहिर हो।"

रूबी, ऐसा नहीं है।

मेरे माता-पिता दोनों खड़े हो गए, मानो मुझे शांत करने के लिए अपने हाथ ऊपर उठा रहे हों। लेकिन मैं उनकी बात नहीं मान रहा था।

"तो फिर यह क्या है? मुझे बताओ? अगर यह कोई भयानक झूठ नहीं है, तो फिर यह क्या है?"

मैंने जवाब का इंतजार नहीं किया, बल्कि अपने बेडरूम का दरवाजा झट से खोलकर बाहर निकल गया।

मुझे धुंधला-सा याद है कि जब मैं सीढ़ियों से नीचे भागा तो उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश की। मुझे धुंधला-सा याद है कि मैंने उनकी बातों को अनसुना कर दिया था और उनके नरक में जाने की कामना की थी। मैं शाम के अंधेरे में भाग निकला, उन लोगों से दूर जिन्होंने मुझे धोखा दिया था। उन लोगों से दूर जो बहुत लंबे समय तक मेरे माता-पिता होने का दावा करते रहे।

मैंने अपने पूरे जीवन में कभी इतना दुख और इतना गुस्सा महसूस नहीं किया था। मेरे दिल में एक गहरा घाव हो गया था, एक ऐसा घाव जिसके भरने का मुझे डर था। मेरी बस यही ख्वाहिश थी कि मुझे स्वीकार किया जाए, मुझे प्यार मिले, और उस पल मुझे इनमें से कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

दर्द की लहर ने मेरे भीतर उथल-पुथल मचा दी और वास्तविकता मेरे सामने आ गई। बढ़ती हुई

पीड़ा से बचने के लिए मैं खुद को छटपटाने लगा। मैं वापस स्पेनिश-कैथोलिक मिशन में था, गाय दीवार से लगी कुर्सी पर सो रहा था। छोटा कमरा धीरे-धीरे मेरी नज़रों में आने लगा, लेकिन जैसे ही वह साफ़ हुआ, दर्द भरी तस्वीरें मेरे दिमाग में एक खराब स्ट्रोब लाइट की तरह टकरा उठीं। मैंने अपनी आँखें सिकोड़ लीं और मुट्ठियाँ भींच लीं, दर्द पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गया। मैं चीख उठा, मेरा शरीर बेकाबू होकर ज़मीन पर इधर-उधर पटक रहा था। मेरे शरीर का हर हिस्सा दर्द कर रहा था और असहनीय पीड़ा की लपटें उठ रही थीं।

"इसे रोक दो!" मेरी आवाज़ इतनी ऊँची हो गई जितनी मैंने कभी सोची भी नहीं थी और पल भर में गाय मेरे बगल में घुटनों के बल बैठ गया।

"बस गहरी सांस लो। सब ठीक हो जाएगा।" उनके शांत लहजे ने मुझे चौंका दिया। उनकी उलझी हुई आँखों ने जिस तरह से मुझे देखा, वह मेरे दिल को गहराई से छू गया। उनकी भौंहें चिंता से सिकुड़ी हुई थीं और मैं सोच रही थी कि क्या उन्हें सच में मेरी परवाह है और मैं किस दौर से गुजर रही हूँ। शारीरिक यातनाओं के अलावा, क्या उन्हें उस मानसिक पीड़ा का भी एहसास था जो मुझे अपने परिवार को खोने से हुई थी—और उस लड़के को खोने से भी जिसे मैंने पूरी जिंदगी प्यार किया था?

मुझे सोचने का भी समय नहीं मिला था कि पलकों के नीचे चकाचौंध कर देने वाली तेज रोशनी की किरणें मकड़ी के जाले की तरह फैल गईं। मैंने अपनी हथेलियों से अपनी आँखें ढक लीं और छटपटाने लगी, मेरे हाथ अभी भी हथकड़ियों से बंधे हुए थे।

"याद रखना..." गाय की आवाज़ दर्द के बीच से ठंडी बारिश की तरह निकली। "यह सिर्फ़ अस्थायी है।"

"अस्थायी..." मैं हांफते हुए बोली। मेरे कानों में हज़ारों बच्चों की चीख-पुकार गूंज रही थी। बहुत तेज़ आवाज़ थी। मुझे हमेशा से बच्चे प्यारे थे, उनकी हंसी से मैं हमेशा खुश हो जाती थी, लेकिन अब मेरा मन कर रहा था कि उन सभी छोटे-छोटे बच्चों को एक-एक घूंसा मार दूं जो मेरे कानों में चीख रहे थे। मैंने अपना सिर ऐसे झुकाया जैसे आवाज़ को रोक सकूं, लेकिन आवाज़ और तेज़ हो गई। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे।

"विश्वास। मेरी तरफ देखो।"

मैंने कोशिश की, लेकिन बिजली का एक झटका मेरी रीढ़ की हड्डी में लगा और मेरे हाथ-पैरों, उंगलियों और पैरों तक फैल गया। मैं सिसक उठा। आखिर मैंने ऐसा क्या किया था कि मुझे यह सब सहना पड़ा? क्या यह किसी तरह की सज़ा थी? क्या मैंने 'भगवान तुमसे नफरत करते हैं और तुम्हें सज़ा देना चाहते हैं' वाली लॉटरी जीत ली थी? मैं फिर से चीख उठा, तभी गाय ने मुझे अपनी बाहों में भर लिया। उसने मुझे कसकर पकड़ रखा था, मैं बेकाबू होकर छटपटा रहा था।

"श्श्श," उसने मुझे चुप कराया। लेकिन कहना आसान था, करना मुश्किल। मैंने खुद को संभालने की कोशिश की, अपनी हरकतों पर काबू पाने की कोशिश की, पर नामुमकिन था। दर्द से तड़पते हुए मैं बुरी तरह छटपटाने लगी और गाय ने मुझे और कसकर गले लगा लिया।

"फेथ... मेरी तरफ देखो।"

मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी, लेकिन मैंने अपनी गर्दन घुमाई और उसकी आँखों में देखा। कोमल, धूसर आँखें।

"मुझ पर ध्यान केंद्रित करो। मैं यहीं तुम्हारे साथ हूँ।"

मुझे इस हालत में देखकर उसकी निगाहों में गहरा दर्द झलक रहा था, लेकिन साथ ही मुझे उसमें हिम्मत भी दिखाई दे रही थी। मैंने अपनी निगाहें उसकी आँखों में टिकाए रखीं और मानो वह मुझे अपनी हिम्मत दे रहा हो, दर्द धीरे-धीरे कम होता गया और सहने लायक हो गया। मैं उसकी बाहों में

हांफती और कराहती रही, मेरा शरीर ठंड से कांप रहा था।
“मैं तो जम ही रहा हूँ... जम ही रहा हूँ।” अचानक से मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर बर्फ में डूबा हुआ हो।
“यह इसका हिस्सा है।” गाय ने ऊनी कंबल उठाया और मुझे अच्छे से लपेट दिया। मैंने देखा कि वह पहले से कितना सावधान और कोमल था। मेरा सिर उसकी गोद में था और उसने धीरे से मेरे चेहरे से बाल हटाए। मेरे होंठ कांप रहे थे और दांत किटकिटा रहे थे।
काश मुझे पता होता कि आखिर इसकी वजह क्या थी, किसने मुझे इस... चीज़ में बदल दिया। शायद तब मुझे इससे उबरने में मदद मिलती। लेकिन मेरी याददाश्त का अधूरा हिस्सा मेरे दिमाग में बसा रहा और मैंने दर्द के आगे हार मान ली।
“ये सब कब रुकेगा?” मैंने मन ही मन सोचा। हे भगवान, काश ये सब रुक जाता। काश ये सब बस एक भयानक बुरा सपना होता और मैं अपने बिस्तर पर जाग जाती। मैं अपने मम्मी-पापा को गले लगाती, उनसे कहती कि मैं उस तरह गुस्से में घर से निकल जाने के लिए माफी मांगती हूँ। उन्हें बताती कि हालात चाहे जैसे भी हों, मैं उनसे प्यार करती हूँ।
गाय ने भौंहें चढ़ाकर अपने अंगूठे से मेरे गाल को सहलाया। उसका अचानक आया स्नेह मुझे भा गया, लेकिन यह सुकून क्षणिक था। उसकी आवाज़ को बिना रोए सुनना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। मेरा शरीर कांप रहा था।
“मुझे ठीक से पता नहीं,” उसने मेरे चेहरे को देखते हुए जवाब दिया। “लेकिन मैंने सुना है कि एक बार संक्रमित हो जाने पर, अगली शाम सूरज डूबने पर इसके प्रभाव कम हो जाने चाहिए।”
“कितना समय लगेगा?” मैंने धीमी आवाज़ में पूछा।
उसने नीचे देखा और अपनी घड़ी का बटन दबाया, जिससे नीली रोशनी में उसका मजबूत जबड़ा और उस पर उगी हल्की दाढ़ी और भी निखर उठी। "लगभग दस घंटे और, कम या ज्यादा।"
मैं सोच रही थी कि क्या मैं इसे झेल पाऊँगी और भला अगले दस घंटे कैसे गुजार पाऊँगी। ऐसा लग रहा था मानो सदियाँ बीत चुकी हों और हमने अभी शुरुआत ही की हो। ठंड से मेरी मांसपेशियाँ काँप रही थीं और मेरे दाँत आपस में बज रहे थे।
मुझे लग रहा है कि मैं ठंड से जम कर मर जाऊँगा। क्या और कंबल हैं?
“नहीं।” गाय ने मेरी तरफ देखा और आह भरी। कुछ देर बाद, उसने अपना सिर हिलाया, मानो कुछ ऐसा करने वाला हो जिसका उसे बाद में पछतावा हो। वह ज़मीन पर लेट गया और मेरे पीछे आकर मुझे अपने आलिंगन में ले लिया। उसकी गर्म बाहें मेरे चारों ओर लिपट गईं। मैंने हैरानी से अपनी भौंहें उठाईं, लेकिन कोई शिकायत नहीं की। यह रात भर का—या दिन भर का—सबसे अच्छा एहसास था। क्या दिन का समय था? मुझे अब यकीन नहीं था।
"धन्यवाद।"
मैं सोच रही थी कि अचानक उसके अंदर इतनी दया कैसे जाग उठी और क्या उसके नरम दिल होने के बारे में मेरा अनुमान सही था। मैं सोच रही थी कि आखिर वह कौन है, यह आदमी जो एक पल बर्फ की तरह ठंडा होता है और अगले ही पल गर्म कंबल की तरह सुकून देता है। हम कुछ देर तक घोर अंधेरे में वहीं लेटे रहे, हमारी धीमी सांसों की आवाज़ ही एकमात्र आवाज़ थी।
“मुझसे बात करो।” मेरे दांत ज़ोर से बज रहे थे और मुझे डर था कि अगर मैं और ज़ोर से बोलूँगी तो दर्द होगा। “अपने बारे में बताओ।” मैंने सोचा कि अगर मैं उसकी बातें सुनूँगी तो शायद मेरा ध्यान बँट जाएगा। खैर, इस समय तो मैं कुछ भी करने को तैयार थी।
गाइ मेरे पीछे सरक गया, उसकी छाती की ताकत मेरी पीठ से ज़ोर से दब रही थी। उसकी बाहें चिकनी थीं, ठोस चट्टानों की तरह मुझे कसकर पकड़े हुए थीं।

“तुम क्या जानना चाहती हो?” उसके सांसों की गर्माहट से मेरे बालों में सिहरन दौड़ गई और उसके ताज़ा आफ्टरशेव की हल्की खुशबू ने मेरी इंद्रियों को शांत कर दिया।
“सच।” मैं और जानना चाहता था। मुझे जवाब चाहिए थे, ठीक वैसे ही जैसे मुझे अपने माता-पिता से जवाब चाहिए थे। “तुमने मुझे क्यों बचाया?”
हमारे बीच एक तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया और मुझे पता चल गया कि मैंने उसके दिल को छू लिया है। लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं थी, और यही पहला सवाल था जो मेरे मन में आया।
"यह एक लम्बी कहानी है।"
“दस घंटे,” मैंने बचे हुए समय के संदर्भ में कहा। इस यातना के खत्म होने में दस घंटे। पिशाच बनने में दस घंटे। ठंड से बचने के लिए मैंने अपने दांत भींच लिए।
उसने गहरी सांस ली, उसकी छाती का उभार मेरी पीठ से टकराया। उसने सांस छोड़ी और बोलना शुरू किया, "एक लड़की थी..."
बिल्कुल। कहानी की शुरुआत अक्सर ऐसे ही होती है; एक लड़की से। मैं चुपचाप उसके बोलने का इंतज़ार करती रही। वह रुका, अपने विचारों को समेटने लगा, सोच-समझकर शब्दों का चुनाव करने लगा, ठीक वैसे ही जैसे मुझे लगता था कि वह हर काम में करता है।
“उसका नाम लिली था।” उसका नाम लेते ही उसका शरीर तनावग्रस्त हो गया, जाहिर है यह एक संवेदनशील विषय था। “मैं जवान था। मैंने अभी-अभी प्रशिक्षण शिविर पूरा किया था। मैंने अपने पिता की इच्छा के अनुसार कॉलेज नहीं किया, बल्कि हाई स्कूल के बाद सीधे सेना में भर्ती हो गया।”
मैंने गाय की आवाज़ पर ध्यान केंद्रित किया, उसकी धीमी लय पर, और उस शांत प्रभाव पर जो उसने मुझ पर डाला। बोलने से पहले उसने एक और गहरी साँस ली।
मुझे लोगों के बीच रहना कभी पसंद नहीं था और मैं आमतौर पर शहर नहीं जाता था। लेकिन जब भी जाता, तो सिएरा विस्टा के एक स्थानीय ढाबे में कॉफी पीता था। वहीं हमारी मुलाकात हुई। वह कॉलेज में फर्स्ट ईयर की छात्रा थी, पत्रकारिता की। वह मेरे बारे में जानना चाहती थी। वह युवाओं पर सैन्य सेवा के प्रभावों के बारे में मेरा इंटरव्यू लेना चाहती थी। मैं उससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था, लेकिन वह लगातार कोशिश करती रही। दिन-ब-दिन वह मुझसे बात करने की कोशिश करती रही। और दिन-ब-दिन मैं उसे नज़रअंदाज़ करता रहा। मैं सोचता था कि उसे मुझमें क्या दिखता है या वह मेरा इंटरव्यू क्यों लेना चाहती है। शायद इसलिए कि मैं उसके लिए एक चुनौती पेश करता था?
उसकी बाहें मेरे चारों ओर और कस गईं, मेरे शरीर को अपनी गर्माहट में लपेट लिया। बर्फीली ठंडक गायब हो गई और मैं उसमें पिघल गई, यह सोचकर अविश्वास हो रहा था कि वह मेरे सामने इस तरह खुल रहा है। जब मैंने उससे बात करने के लिए कहा था, तो मैं मौसम के बारे में बात करने से भी संतुष्ट हो जाती, लेकिन यह भी उतना ही अच्छा था। नहीं, यह उससे भी बेहतर था। मैं आखिरकार गाय का एक दूसरा पहलू देख रही थी, एक ऐसा पहलू जिसके बारे में मुझे शक था कि बहुत कम लोग उसे देख पाते हैं।
“खैर,” उसने गहरी और भारी आवाज़ में कहना जारी रखा। “आखिरकार मैं मान गया। मैंने उससे कहा कि वह मेरा इंटरव्यू ले सकती है, लेकिन सिर्फ़ मेरी शर्तों पर। वह मान गई। मैं उसे अपने कैंपसाइट पर ले गया, वह रेगिस्तान जहाँ मैं छुट्टी के दिनों में अक्सर वीकेंड पर जाया करता था। तब मैं सेना में एक सिपाही था और दोस्तों से ज़्यादा अपनी ट्रेनिंग को लेकर चिंतित था। मैं एक सर्वाइवलिस्ट की तरह जीना पसंद करता था।”
मैंने तुरंत गाइ को रेगिस्तान में उसके सैन्य साजो-सामान में देखा, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उसे

पिछली रात देखा था जब उसने मुझे बचाया था—कैमो पैंट, काले जूते, कीचड़ से सनी तंग कमीज। अगर मैं खुद कहूँ तो, यह एक बुरा नज़ारा नहीं था। गाइ थोड़ा हिला, जिससे उसके आकर्षक व्यक्तित्व की मेरी छवि धरी की धरी रह गई। उसने अपनी कोहनी के बल खुद को सहारा दिया।

"तो वो मेरे साथ आई और उसने देखा कि मैं कैसे अपना जीवन जीती हूँ। मुझे जंगल में अकेले रहना कितना अच्छा लगता था, बस तारे और मैं। खुली जगहें। मैं वहाँ आज़ाद थी। खुद को खुलकर जीने के लिए आज़ाद। मैंने सोचा कि अगर मैं उसे अपना सादा जीवन दिखा दूँ, जिस तरह से मैं प्रकृति की मार झेलना पसंद करती हूँ, तो वो आखिरकार मुझे अकेला छोड़ देगी। आख़िर कौन सी लड़की खरगोश का शिकार करना और लकड़ी काटना चाहेगी? लेकिन वो मेरे साथ दो दिन और तीन रातें रही, अपनी डायरी में लिखती रही, मुश्किल से एक शब्द भी बोली। और फिर वो अगले सप्ताहांत वापस आई, और उसके अगले सप्ताहांत भी। और हमारा दो दिन का इंटरव्यू कब का बीत चुका था और गर्मी का मौसम खत्म होने वाला था। आख़िरकार मुझे उससे प्यार हो गया। वो पहली इंसान थी जिससे मैं बिना किसी रोक-टोक के अपने दिल की बात कह सकती थी। वो मुझे समझती थी। और मैं उसे समझती थी। ठीक उसी समय जब मैं उसे अपने साथ रहने के लिए कहने, शायद शादी करने के बारे में भी सोच रही थी, वो मुझसे छीन ली गई।"

वह एक पल के लिए चुप हो गया, जिससे मेरी जिज्ञासा और बढ़ गई। मैं सोचने लगी कि उसकी लिली को कहाँ ले जाया गया है और कौन ले गया है। और उसमें ऐसी क्या बात थी जिसने उसे इतना प्रभावित किया था।

"उसे मुझसे छीन लिया गया..." मेरी पीठ पर सांस लेते हुए उसकी छाती फूल गई, "एक पिशाच ने।"

उसके शब्द मेरे लिए किसी झटके से कम नहीं थे। मुझे सब समझ आ गया। सब कुछ स्पष्ट हो गया। मैं गाय स्टोन को एक दिन से भी कम समय से जानता था, लेकिन अब मैं उसे समझ गया था। मैं समझ गया था कि वह ऐसा क्यों था। ठंडा, अलग-थलग और सबसे महत्वपूर्ण बात, एक पिशाच हत्यारा। मेरे मन में कई तरह की भावनाएँ उमड़ आईं, करुणा और अपराधबोध का मिलाजुला रूप।

"और इसीलिए अब आप FUSE के लिए काम करते हैं? बदला लेने के लिए?"

उसने कुछ नहीं कहा, बस सहमति में सिर हिलाया। अचानक— मानो उसकी प्रेमिका के बिछड़ने के लिए मैं ही व्यक्तिगत रूप से दोषी हूँ— अपराधबोध ने मेरे दिल को ऐसे चकनाचूर कर दिया जैसे कोई फूलदान दीवार पर पटक दिया गया हो।

मैंने फुसफुसाते हुए कहा, "मुझे माफ करना। यह बहुत भयानक रहा होगा..."

कोई बात नहीं। बहुत समय पहले की बात है।

मुझे आश्चर्य हुआ कि उनका मतलब वास्तव में कितना समय था। कुछ ही वर्षों से अधिक नहीं हो सकता था क्योंकि वे मुझसे केवल कुछ ही वर्ष बड़े थे। मुझे इस बात का पूरा यकीन था। उनके जाने का दर्द मेरे भीतर गूंज रहा था और मैं समझ सकती थी कि वे अपने अगले शब्दों को सोच-समझकर चुन रहे थे।

"और जब मैंने तुम्हें ज़मीन पर अकेला पड़ा देखा... ऐसा लगा जैसे सब कुछ दोबारा हो रहा हो। मैं उन्हें तुम्हें मारने नहीं दे सकता था।" अब उसकी आवाज़ में कुछ अलग सा भाव था। वह अब वैसा कठोर नहीं था जैसा पहले मेरे साथ था। वह कुछ नरम पड़ गया था।

"धन्यवाद," मैंने धीमी आवाज़ में कहा।

लेकिन उसके शब्दों से जो ध्यान भटका, वह अचानक ही भुला दिया गया क्योंकि मेरे शरीर में ऐंठन का एक और दौर दौड़ गया। गाय मेरी ओर झुका, उसकी आँखें गंभीर थीं और चेहरा चिंता से भरा

हुआ था।
"अभी मुझे धन्यवाद मत दो। हम अभी भी खतरे से बाहर नहीं निकले हैं।"

नौ: रूबी

दर्द से मेरी पलकें झपक रही थीं, एक परेशान करने वाले सपने की फुसफुसाहट, जिसे मैं याद नहीं कर पा रही थी, बुझती हुई जन्मदिन की मोमबत्ती की तरह धीरे-धीरे गायब हो रही थी। मैं बेचैनी से छटपटा रही थी, मेरा पेट ऐसे मरोड़ रहा था मानो मेरी दयनीय स्थिति का मज़ाक उड़ा रहा हो। मुझे नहीं पता था कि पुराने मिशन में प्रवेश किए हुए कितना समय बीत गया था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे अनंत काल बीत गया हो। गाय मेरे साथ फर्श पर लेटा हुआ था, उसका एक हाथ मेरे कंधे पर था, और उसका हाथ मेरे चेहरे के सामने लटक रहा था। उसकी साँसें धीमी और नियमित थीं और मुझे लगा कि हम दोनों किसी समय सो गए होंगे।

मुझे अब ठंड नहीं लग रही थी, मेरे पीछे उसके शरीर की गर्माहट मुझे सुकून दे रही थी। उसके इतने करीब होने के ख्याल से मेरे गाल लाल हो गए और मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे उसकी छाती का मेरी पीठ से दबना कितना अच्छा लग रहा था। लेकिन पेट में हो रहे दर्द ने मेरा ध्यान भटका दिया और मैं फिर से छटपटाने लगी, मेरे अंदरूनी अंग मरोड़ने और मरोड़ने लगे।

जागते ही गाय एकदम सीधा बैठ गया और उसकी उंगलियां धीरे से मेरी बांह पर लिपट गईं। वह मेरे ऊपर झुक गया।

"क्या तुम ठीक हो?" उसने पूछा, और उसकी आवाज़ नींद से भरी हुई थी। उसने आँखें सिकोड़ लीं और अँधेरे में एकटक देखता रहा। लेकिन मैं उसे साफ़-साफ़ देख पा रहा था। उसके बिखरे हुए बाल हर तरफ फैले हुए थे और वह अजीब तरह से प्यारा लग रहा था।

मैंने सिर हिलाया, लेकिन मेरे पेट में तेज दर्द उठा, जैसे कोई गर्म चाकू मुझे चीर रहा हो। यह देखकर गाय ने मेरा ध्यान भटकाने की कोशिश की।

"तुम्हारा क्या? तुमने मुझे अपनी कहानी नहीं सुनाई..." जब मैं कांपने लगी तो वह लेट गया और उसने मुझे फिर से अपनी बाहों में भर लिया।

हम्म... मेरी कहानी। मेरे बदलाव के दर्द के साथ-साथ, एक गहरा दुख ज़हर की तरह मुझमें समा गया। कुछ दिन पहले तक— मेरी कहानी अच्छी थी। एक अच्छा जीवन था। मेरा एक सामान्य परिवार था जो मुझसे प्यार करता था और एक ऐसा प्रेमी था जिस पर मैं भरोसा कर सकती थी— और हाँ, तब मैं एक इंसान थी। लेकिन अब... अब सब कुछ हवा के झोंके में धूल की तरह उड़ गया था। मेरी कहानी अब दुख भरी थी। एक ऐसी कहानी जिसके बारे में मुझे पक्का नहीं था कि मैं किसी को बताना चाहती हूँ या नहीं। एक बार फिर, गर्म ब्लेड मेरी पीठ पर गहरे घाव कर रहे थे और मैंने खुद को रोकते हुए अपनी गर्दन झुका ली। मैंने उसके सवाल पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। मेरी कहानी के बारे में उसका सवाल।

"मेरा... मेरा नाम रूबी है—फेथ नहीं।" गाय हँस पड़ा और दर्द के बावजूद मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। "मैं... मेरी ज़िंदगी पहले काफी सामान्य थी। एक अच्छी ज़िंदगी..." दर्द से कराहते हुए मैं वाक्य पूरा नहीं कर पाई, मेरे पूरे शरीर में पीड़ा की लहर दौड़ रही थी।

"और क्या?" उनकी गहरी आवाज़ ने मेरा ध्यान वापस बातचीत की ओर खींचा। "बताओ, क्या इतना अच्छा था?"

मैंने गहरी सांस ली, ताकि मेरे अंदरूनी अंगों में चुभ रही सुइयों से राहत मिल सके।

“मुझे नहीं पता। मैं... मुझे हमेशा स्कूल अच्छा लगता था। मैं पियानो बजाती थी—पियाती थी।” मैं सोच रही थी कि मैं कब इस बात को स्वीकार कर पाऊंगी कि मैं एक पिशाच हूँ और अब चीजें कभी पहले जैसी नहीं रहेंगी।

"तुम अभी भी खेल सकते हो," गाय ने सुझाव दिया।

मैं हँस पड़ा। “पियानो बजाने वाला पिशाच?” यह विचार विचित्र और हास्यास्पद था। मैंने कल्पना की कि सर्कस में जोकर के कपड़े पहने पिशाच, लाल नाक वगैरह लगाए, वाद्य यंत्र बजा रहे हैं और तरह-तरह के करतब दिखा रहे हैं। यह सोचकर मैं ज़ोर से हँस पड़ा।

“मुझे तो इसमें कोई दिक्कत नहीं दिखती।” मैंने महसूस किया कि उसने कंधे उचका दिए। “हमने समाज के अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले पिशाचों को पकड़ा है। कुछ बारटेंडर थे और कुछ पुलिसवाले। तो फिर पियानोवादक क्यों नहीं?”

मैंने सिर हिलाया, यह महसूस करते हुए कि हमारी बेतुकी बातचीत दर्द को कम करने में मदद कर रही थी। "मुझे नहीं पता। शायद यह सुनने में मज़ेदार लगता है।"

गाइ ने आह भरी और उसका शरीर मेरे ऊपर आराम से टिक गया। मैं उससे लिपट गई, यह महसूस करते हुए कि मैं नहीं चाहती थी कि हमारा साथ खत्म हो। अभी नहीं। खासकर तब जब इसका मतलब यह हो कि मुझे दुनिया का सामना एक खून चूसने वाले राक्षस के रूप में करना पड़ेगा।

“और क्या?” गाय ने जोर देकर कहा। “ऐसी कौन सी बात है जो आस्था को आस्था बनाती है?”

मैंने झुंझलाहट भरी सांस छोड़ी। वह मेरा नाम अच्छी तरह जानता था, लेकिन न जाने क्यों मुझे फेथ कहकर बुला रहा था। मैं मन ही मन मुस्कुराई। कोई बात नहीं। मैं इसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दूंगी। खासकर तब जब मैं आखिरकार थोड़ा बेहतर महसूस करने लगी थी।

“उम... मैं हमेशा अपनी माँ जैसी बनना चाहती थी। वो एक नर्स हैं। वो बहुत खूबसूरत हैं... और मैंने आज तक जितने भी लोगों से मुलाकात की है, उनमें सबसे ज़्यादा दयालु हैं।” उन्हें खोने के ख्याल से अचानक मेरे सीने में उदासी की लहर दौड़ गई। “मुझे उनकी बहुत याद आती है...”

“तुमने कहा था कि तुम्हारा कॉलेज में दाखिला हो गया है?” गाय ने बीच में टोकते हुए कहा, एक संवेदनशील विषय से ध्यान हटाने की कोशिश करते हुए; वह कड़वी सच्चाई कि मैं अब कभी अपने परिवार को नहीं देख पाऊँगी। मैंने सोचा कि हमारी आखिरी बातचीत कितनी भयानक थी, हमारी आखिरी बातचीत। दुख ने मेरे दिल में गहरे घाव कर दिए, लेकिन मैंने उस कड़वी भावना को नज़रअंदाज़ कर दिया और गाय की बातों में उलझ गई। मुझे इससे कोई परेशानी नहीं थी।

“हाँ। मैं नर्स बनना चाहती थी। मुझे इसी सेमेस्टर से शुरू करना था, लेकिन... फिर मेरी मौत हो गई।” मैं मुस्कुराई, शायद आखिरकार इस अजीबोगरीब स्थिति को स्वीकार करते हुए। “मुझे लगता है कि इससे किसी की भी योजनाएँ चौपट हो जाएँगी।”

गाइ ने हंसी भरी सांस ली। वह कुछ देर चुप रहा, मेरी कही बातों पर सोचता रहा। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ बोल पाता, मेरे शरीर में बिजली का एक तेज झटका लगा, जिससे मेरे मुंह से चीख निकल गई और मेरे पैर सीधे मेरे सामने फैल गए। गाइ ने मुझे और कसकर गले लगाया और अपनी उंगलियों से मेरे बालों को पीछे किया। ऐसा लगा जैसे मैंने कोई खतरनाक रसायन पी लिया हो और वह मेरे खून में दौड़ रहा हो, जहरीला और भयानक। मैं हांफ रही थी, संकुचन से मेरी सांसें रुक रही थीं। मेरे माथे पर पसीना आ रहा था।

“तुमने कहा था कि तुम्हारा एक बॉयफ्रेंड था। उसका नाम क्या था?” गाय मुझे फिर से ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उस आदमी का ज़िक्र करना जिसने मेरी सबसे मुश्किल घड़ी में मेरा दिल तोड़ दिया था, मुझे अच्छा ध्यान भटकाने का तरीका नहीं लगा।

“जॉन।” मैंने लगभग गुर्राते हुए उसका नाम लिया, मुझे उसका नाम सुनना बिल्कुल पसंद नहीं था।

“जॉन रॉजर्स। हम साथ पले-बढ़े हैं।”
इस बार असहनीय दर्द और भी ज़्यादा ज़ोर से मुझ पर हावी हो गया और मैं इसे और सहन नहीं कर सका। मैंने ज़ोर से गाली दी। मेरा शरीर फिर से हिल गया और जंगली जानवर की तरह छटपटाने लगा।
“विश्वास… बस ध्यान केंद्रित करो।” गाय की आवाज़ मुझे धीमी, गड़गड़ाती बिजली की याद दिला रही थी, उसकी बाहें अभी भी पीछे से मुझे घेरे हुए थीं। “मेरी आवाज़ पर ध्यान केंद्रित करो।”
“मैं… कोशिश कर रहा हूँ।” तेज़ रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं और कानों में चीखें गूँज उठीं। ऐसा लग रहा था जैसे मेरी हड्डियाँ टूट रही हों, एक-एक करके। आग मेरी त्वचा को झुलसा रही थी और मेरी मांसपेशियाँ बुरी तरह अकड़ रही थीं। मैंने सोचा था कि मरना बुरा होता है, लेकिन इसके मुकाबले तो कुछ भी नहीं।
मेरे मुंह से अस्पष्ट स्वरों की एक श्रृंखला निकल गई, मेरे पैर इधर-उधर बेतरतीब ढंग से हिल रहे थे, और मैंने पास की कुर्सी को लात मारकर गिरा दिया। गाय मेरे ऊपर चढ़ गया, मुझे कसकर पकड़ लिया, उसका शरीर मेरे चारों ओर एक गर्म कंबल की तरह लिपटा हुआ था, और मैं अपने हाथों में फंसी हथकड़ियों की बेचैनी से छटपटा रही थी। लेकिन कुछ क्षणों बाद, मेरा दर्द कम हो गया और गाय थोड़ा खिसका ताकि मैं अपनी कलाई खोल सकूं, लेकिन वह मेरे ऊपर से उतरा नहीं, बल्कि और करीब झुक गया, उसका चेहरा मेरे चेहरे से बस एक इंच की दूरी पर था।
“कोई बात नहीं।” अंधेरे में भी मैं उसकी आँखों में सच्चाई देख सकती थी, उसके साँसों की गर्माहट अपने चेहरे पर महसूस कर सकती थी। “सब ठीक हो जाएगा।”
उसकी नाक लगभग मेरी नाक से छू रही थी, हमारी आँखें एक-दूसरे में खोई हुई थीं। हम इतने करीब थे कि एक पल के लिए मुझे लगा कि वह मुझे चूम लेगा। लेकिन उस काल्पनिक कोमल पल के बजाय, जो कि कल्पना मात्र से ही हास्यास्पद था, मैंने उल्टी कर दी। सीधे उसके चेहरे पर।
उसकी आँखों और ठुड्डी से उल्टी बहकर मुझ पर ही गिर रही थी। वह एक पल के लिए मुझे घूरता रहा, जैसे जम गया हो। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह मुझे मुक्का मारेगा, उल्टी करने की कोशिश करेगा या खुद ही उल्टी कर देगा।
शर्मिंदगी से मैंने अपने निचले होंठ को काट लिया। "अब मुझे अच्छा लग रहा है।"
उसने पलकें झपकाईं, उसका चेहरा कीचड़ से सना हुआ था, और जब उसने अपनी जेब से रूमाल निकालकर उस कीचड़ को पोंछा तो मैं खुद पर काबू न रख पाने के कारण हंस पड़ी।
“अच्छा। मुझे खुशी है।” उसके होंठों पर एक ऐसी मुस्कान फैल गई जो उसकी आँखों तक तो नहीं पहुँची, और मुझे लगा कि वह मुझे बहुत घिनौना समझ रहा है। मैं उसे दोष नहीं दे सकती थी, मैं सचमुच घिनौनी थी।
लेकिन मैं उसकी धुंधली निगाहों में अनंत काल तक देखती रही और खुद को उनमें खोई हुई महसूस करती रही, दर्द हवा में उड़ता चला गया। मेरे सामने खड़ा युवक अब तक का सबसे सुंदर था और मैं उसकी ओर खिंची चली जा रही थी— भले ही उसके चेहरे पर मेरी उल्टी के निशान थे। शायद यह सिर्फ इसलिए था क्योंकि हम दोनों एक साथ इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में फंस गए थे, और इतने लंबे समय तक इतने करीब रहने के कारण, ऐसा किसी के साथ भी हो सकता था। लेकिन यह किसी तरह अलग था, अनोखा। यह एक ऐसा जुड़ाव था जैसा मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था, और मुझे पता था कि वह भी इसे महसूस कर रहा था।
"अब जब तुमने मुझ पर उल्टी कर दी है," गाय ने कहा। "तो यह उचित ही है कि मैं तुम्हें वही कहूँ जो मैं चाहता हूँ... फेथ।"
मैंने आंखें घुमाईं, क्योंकि मुझे पता था कि वह मुझे उतनी अच्छी तरह नहीं देख सकता जितना मैं

उसे देख सकती थी। "तुम मेरा नाम बदलने पर इतना ज़ोर क्यों दे रहे हो?"
वह फर्श पर करवट बदलकर एक तरफ लेट गया, जिससे हम आमने-सामने हो गए। उसने अपनी कोहनी पर सहारा लिया, जिससे उसकी उभरी हुई बाइसेप्स दिखाई दे रही थीं। उसने झुकी हुई आँखों से मेरी ओर देखा। "क्योंकि, तुम मुझे रूबी जैसी नहीं दिखती।"
"शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि आप मुझसे वैम्पायर बनने के बाद ही मिले हैं। मेरा नाम पहले भी मुझ पर खूब जंचता था।"
"शायद।" मैंने उसकी आँखों में मौजूद धब्बों को गौर से देखा, जो धूसर रंग पर गहरे नीले रंग के थे, और एक लंबे क्षण के बाद, पलकें झपकाकर उनसे मुक्त हो गई।
“फिर भी ‘फेथ’ ही क्यों? फैंग्स या काउंट ड्रैकुला क्यों नहीं?” मेरे विचार से, वे अधिक उपयुक्त उपनाम थे।
उन्होंने मेरी ओर देखा, उनकी आँखें तूफानी समुद्र की तरह चमक रही थीं। “जिसको अभी-अभी अनंत काल के लिए पृथ्वी पर रहने का श्राप मिला हो, फिर भी तुम प्रार्थना करने के लिए घुटनों के बल बैठते हो। तुममें आस्था है और मैंने ऐसी आस्था पहले कभी नहीं देखी।”
उस भावना ने मुझे प्रसन्न किया और मैं मुस्कुरा उठा।
“ठीक है, कोई बात नहीं।” मैंने शरारती अंदाज़ में अपनी पलकें झपकाईं। “लेकिन अगर तुम मुझे फेथ कह सकते हो, तो मैं तुम्हें कैप्टन इम्पॉसिबल कह सकती हूँ।”
उसने नाक सिकोड़ी। "जो भी तुम्हें अच्छा लगे, फेथ।" इस बार उसकी मुस्कान उसकी आँखों तक पहुँच गई, एक पूरी तरह से खिलखिलाती मुस्कान।

दस: लड़का

मैं पुरानी लकड़ी की कुर्सी पर दीवार से टेक लगाकर बैठ गया, मेरे पैर मेज पर टिके हुए थे। झुंझलाहट में, मैंने अपने बगल में रखी लकड़ी की कील से हाथ हटाया और सो रही पिशाचनी पर नज़र डाली, हालाँकि चारों ओर घना अंधेरा था और मैं केवल उसकी आकृति ही देख पा रहा था। कमरे में आए हुए कई घंटे बीत चुके थे, लेकिन रूबी आखिरकार गहरी नींद में सो गई थी, जैसा कि मुझे लग रहा था।

चर्च के छोटे से कमरे में बीता दिन लंबा और थका देने वाला था। मैंने रूबी को उसके बदलाव के दौर में दिलासा देने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैं खुद को ही धोखा दे रही थी, मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करूं। फिर भी, उससे मेरा जो जुड़ाव था, वह साफ था, एक ऐसा जुड़ाव जिसे स्वीकार करने में मुझे मुश्किल हो रही थी। फिर भी, किसी तरह उसने मेरे लिए उसके सामने खुल कर बात करना और वो बातें बताना आसान बना दिया जो मैंने कभी किसी को नहीं बताई थीं, मानो कोई पुराना घाव फिर से खुल गया हो। लेकिन रूबी ने मुझे धिक्कारने के बजाय, ऐसे सुना जैसे उसे सच में मेरी परवाह हो, और यह सोचकर मुझे बेचैनी होने लगी।

बहुत समय पहले की उस रात से, जिस रात लिली को खोने के बाद मेरी पूरी जिंदगी बदल गई थी, मैंने कसम खाई थी कि मैं फिर कभी अपनी सुरक्षा में ढील नहीं दूंगा, खुद को सुरक्षित रखने के लिए मैंने अपने चारों ओर एक मजबूत दीवार खड़ी कर ली थी। लेकिन मैं सोच रहा था कि रूबी के सामने मुझे वह दीवार तोड़ने की इतनी तीव्र इच्छा क्यों हो रही थी। उसमें ऐसा क्या था जो मुझे ऐसा महसूस कराता था? मुझे यकीन नहीं था, लेकिन मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा था, मुझे लगता था कि इससे मैं कमजोर और असुरक्षित महसूस कर रहा था। उस कठोर इंसान जैसा नहीं जैसा मैंने खुद को ढाला था। मैंने आह भरी और कुर्सी से आगे झुककर मेज पर रखी मोमबत्ती जला दी। छोटा सा कमरा पीली रोशनी से जगमगा उठा।

मैंने अपनी निगाहें रूबी पर टिका दीं, जो फर्श पर इतनी शांत पड़ी थी कि मानो मरी हुई हो। वह रूपांतरण के अंतिम चरण में थी। उसकी भूरी पुतलियाँ अब गहरे बैंगनी रंग की हो गई थीं। उसके सुनहरे शहद जैसे बाल अब चमकीले प्लैटिनम रंग के हो गए थे और उनकी लंबाई दोगुनी हो गई थी। उसके नाखून खंजर की तरह तेज़ थे। लेकिन उसके रूपांतरण का अंतिम संकेत उसके नुकीले दाँत थे।

हालांकि इतने सालों की ट्रेनिंग के बाद मुझे पता था कि क्या होने वाला है, फिर भी जब उसने दर्द से चीखने के लिए अपना मुंह खोला और अपने नुकीले दांत दिखाए तो मैं चौंक गया। उसके गुलाबी होंठों के नीचे से दिखते हुए उसके दांत मोटे, हाथीदांत जैसे और एकदम नुकीले थे— जैसे तबाही मचाने वाले हथियार हों। इसीलिए मैंने उसे हथकड़ी पहनाई थी, यह जानते हुए कि आखिरकार ऐसा होना ही है, लेकिन मैं इसे जितना हो सके टालता रहा था। लेकिन समय बीतता जा रहा था और जहर उसके शरीर पर हावी हो चुका था। अब वह लगभग पूरी तरह से पिशाच बन चुकी थी।

उसकी छाती कोमल साँसों के साथ ऊपर-नीचे हो रही थी और उसकी घनी काली पलकें उसके गालों पर टिकी हुई थीं। मैंने उसके चेहरे के हर पहलू को गौर से देखा—नाजुक नाक, घुमावदार गाल की हड्डियाँ, छोटी ठुड्डी। मेरी नज़र उसके होंठों पर टिकी, जो गुलाब की कली की तरह भरे हुए

और लाल थे। उसकी भौहें भूरी थीं, उसके हल्के बालों की तुलना में गहरी और वह बेहद खूबसूरत थी; मैं उसकी सुंदरता को नज़रअंदाज़ नहीं कर सका। कोई भी आदमी ऐसा ही करता।
उसने अपनी छोटी उंगलियों को मोड़ा और ऐसे कांपने लगी जैसे किसी सपने में खोई हो, उसकी कलाई पर चांदी के हथकड़ी गहनों की तरह लटक रहे थे। मैं सोच रही थी कि उसके मन में क्या चल रहा है, वह क्या सपना देख रही है। क्या यह उसका परिवार था, उसका बीता हुआ जीवन था, या वह जॉन नाम का लड़का जिसके बारे में उसने पहले बात की थी?
उसके प्रेमी को लेकर उसकी ईर्ष्या ने मेरा खून खौला दिया और मैंने अपनी इस प्रतिक्रिया पर हँसने की इच्छा को दबा लिया, क्योंकि यह पागलपन था। वह मेरी नहीं थी और निश्चित रूप से किसी और की भी नहीं। सच कहूँ तो, वह इंसान भी नहीं थी और अपनी खूबसूरत शस्त्रता से मुझे पल भर में मार सकती थी। और अब समय ही बताएगा कि जागने पर वह कितनी हिंसक होगी।
लेकिन वो इतनी प्यारी और—अजीब बात है—मज़ेदार थी, अपने रूप परिवर्तन के दौरान भी। मुझे हैरानी हो रही थी कि अब जब वो पिशाच बन गई है, तो क्या उसका व्यवहार बदलेगा। मैंने इस विचार को नज़रअंदाज़ करते हुए अपना सिर हिलाया। एक बार जब वो जाग जाएगी और मैं उसे खाना खिला दूँगा, तो मैं उसे उस बूढ़े पिशाच के पास ले जाऊँगा और उसे उससे निपटने दूँगा। फिर किसी को पता चलने से पहले ही मैं मुख्यालय वापस आ जाऊँगा।
मुख्यालय। धिक्कार है।
मैंने अपना मोबाइल फोन जेब से निकाला और मन ही मन खुद को कोसने लगा कि मैंने पहले इसके बारे में क्यों नहीं सोचा। अगर वे चाहते तो FUSE मेरे फोन से मेरा पता लगा सकते थे। मैंने फोन बंद किया और वापस जेब में रख लिया, फिर खड़ा हो गया। फोन बंद होने पर भी वे मेरा पता लगा सकते थे, लेकिन मैं अभी अपना मोबाइल फोन फेंकने में हिचकिचा रहा था, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि कब और अगर मुझे बैकअप के लिए कॉल करने की ज़रूरत पड़ेगी। लेकिन मुझे उम्मीद नहीं थी कि मेरे आदमियों को अगले कुछ दिनों तक मेरी कमी खलेगी, क्योंकि मुझे पता था कि उनके मुझे ढूंढने से पहले मेरे पास अभी भी समय है।
मैंने बाहें फैलाईं और जम्हाई ली। पिछले चौबीस घंटों में मुझे ठीक से नींद नहीं आई थी। एक बार ये सब खत्म हो जाए, तो मैं चैन से सोऊंगा, लेकिन अभी मुझे कुछ शिकार करना था। रूबी के जागने पर मुझे उसके लिए थोड़ा खून लाना था।
हाल ही में डूबे सूरज की वजह से शाम की हवा अभी भी गर्म और शुष्क थी, एरिजोना में गर्मियों की एक आम रात। पौधे, जो संख्या में कम ही थे, हल्के पीले-हरे रंग के थे। कैक्टस हर आकार और प्रकार के झुंड में उग रहे थे, और कांटेदार पेड़ अपनी नुकीली उंगलियों से शाम के आकाश को छू रहे थे। मैंने धुंधलके में मुश्किल से दिखाई दे रही ऊंची इमारत पर एक नज़र डाली और सोचा कि रूबी के जागने से पहले मेरे पास कुछ और घंटे हैं।
मैं एक सपाट चट्टान पर बैठ गया और अपने थैले से अपनी छुरी निकालकर उसे तेज करने लगा। उस पर मेरा उपनाम, स्टोन, खुदा हुआ था और उसे देखते ही पुरानी यादें मुझे बुरी तरह से जकड़ गईं। मेरे आस-पास की हर चीज़—रेगिस्तान, लिली द्वारा दी गई छुरी, गर्मी की खुशबू—मुझे उस चीज़ की याद दिला रही थी जो मैंने बहुत पहले खो दी थी, वह रात जब वह मुझसे बिछड़ गई थी। मुझे लगा जैसे मैं किसी याद में खिंचा चला जा रहा हूँ, लेकिन मैंने उसे झटक दिया, उस रास्ते पर दोबारा नहीं जाना चाहता था। मैं अपने अतीत का गुलाम बन चुका था, लेकिन उस पल मैं उसे खुद पर हावी नहीं होने देना चाहता था। मुझे इससे भी बड़ी समस्याओं की चिंता थी।
हवा के अचानक बदलते झोंके ने मेरे विचारों को भंग कर दिया, जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मुझे तुरंत एहसास हो गया कि कुछ गड़बड़ है। मैं जम गया, चाकू की धार अभी भी सान पर टिकी

थी, हिलने की हिम्मत नहीं हो रही थी, बस सांस रोके हुए था। मुझे पता था कि बाहर कुछ तो है—शायद हवा का अचानक शांत हो जाना या फिर झींगुरों का अचानक चहचहाना बंद हो जाना। लेकिन किसी भी तरह, डर मेरे अंदर समा गया। आसमान अंधेरा हो गया और पहाड़ों पर चमकती नारंगी रोशनी फीकी और धूसर हो गई। रात के पहले तारे टिमटिमाने लगे।

एक उल्लू की आवाज ने सन्नाटे को चीर दिया, और तभी मुझे यकीन हो गया कि कोई या कुछ वहां मौजूद है, उल्लू मुझे उनकी उपस्थिति के बारे में चेतावनी दे रहा था।

बिना कोई आवाज़ किए, मैंने धीरे से चाकू और धार लगाने वाला पत्थर ज़मीन पर रख दिया और अपने बैग से बंदूक निकालकर उसे हल्के से क्लिक की आवाज़ के साथ कॉक कर दिया। मैं टॉर्च जलाना चाहता था, लेकिन जोखिम लेने की हिम्मत नहीं की क्योंकि इससे मेरे ठिकाने का पता चल जाता।

मैं सावधानी से खड़ा था, मेरी हरकतें धीमी और सहज थीं। मैंने अपनी बाहें ऊपर उठाईं, कोहनियाँ मुड़ी हुई थीं और बंदूक तैयार थी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और कानों में धड़कन सुनाई दे रही थी, जैसे मुझे पहले भी ऐसा अनुभव हो चुका हो। मुझे पता था क्यों, लेकिन मैंने उस याद को अपने मन में आने नहीं दिया। मैंने उसे दूर धकेल दिया, ताकि किसी भी खतरे की स्थिति में मेरा दिमाग शांत रहे।

मैं काफी देर तक एक ही स्थिति में रहा होगा, क्योंकि मेरे पैर हिलने के लिए बेताब थे। मैंने अपनी आँखें और कान गड़ाकर हल्की सी भी आवाज़ या हलचल सुनने की कोशिश की, लेकिन रात सन्नाटे में मौत जैसी खामोशी छाई हुई थी।

फिर से उल्लू की आवाज आई और मैंने अपने पैर हिलाए, मेरे बूट के नीचे से आती चरमराहट की आवाज ने मेरी पोल खोल दी। बिना किसी चेतावनी के, मैं पीछे की ओर ज़ोर से गिरा, मेरा शरीर हवा में ऐसे उड़ गया जैसे कोई ट्रैपीज़ करतब दिखा रहा हो, सिवाय इसके कि शायद वह उतना आकर्षक नहीं था। मेरी बंदूक पर से मेरी पकड़ लगभग छूट गई थी, लेकिन ठंडी धातु को टटोलते हुए, मैंने आखिरी पल में उसे फिर से पकड़ लिया। मैं ज़मीन पर ज़ोर से गिरा, मेरी सांस फूल गई, और मेरे पास से कुछ तेज़ी से गुजरा, अंधेरे का एक धुंधला सा साया। मुझे पल भर में पता चल गया कि मैं एक बहुत ही अनुभवी पिशाच के साथ हूँ। लेकिन कैसे, यहाँ सुनसान जगह पर? और क्यों? मैं झट से उठकर लड़ने के लिए तैयार हो गया।

मुझे और सवाल सोचने का समय भी नहीं मिला था कि मुझ पर फिर से हमला हुआ, मेरा शरीर हवा में उछला और दर्दनाक तरीके से मुड़ा, फिर ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने चक्कर को झटक कर दूर किया, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। पिशाच मेरे साथ खेल रहा था, मुझे बेहोश करने की कोशिश कर रहा था। खून पीने से पहले वे यही करते थे, चूहे-बिल्ली का खेल। वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उनका शिकार पूरी तरह से कमज़ोर हो जाए, फिर वे उस पर हमला करते थे। बस कुछ ही समय की बात थी, मैं बेहोश हो जाता।

मैंने frowning किया। मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।

एक और धुंधली सी आकृति मेरे सामने से गुजरी और मैंने ट्रिगर दबा दिया, गोली की आवाज रेगिस्तान में रॉकेट की तरह गूंज उठी। मैंने अपनी सांस रोक ली और इंतजार किया...

मौन।

लेकिन इससे पहले कि मैं सोच पाता कि मैंने उसे मार गिराया है या नहीं, एक तेज़ हवा का झोंका मेरे पास से गुज़रा, जिससे पता चला कि मैंने उसे नहीं मारा था। वह कमीना अभी भी ज़िंदा और तंदुरुस्त था। मैं घुटनों के बल बैठ गया और बंदूक तैयार रखते हुए इधर-उधर देखने लगा। मैं एक बड़े पत्थर की ओर बढ़ा और अपनी पीठ उससे सटा ली। मैं उस खून चूसने वाले को पीछे से मुझ

पर हमला करने नहीं दूंगा।
मैंने ध्यान से सुना, लेकिन मुझे अपनी साँसों और दिल की धड़कन के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया, जो मेरे अंदर ढोल की तरह बज रही थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कोई पिशाच यहाँ अकेला क्यों आया होगा। वे आमतौर पर झुंड में चलते हैं और शहरों और गलियों की पवित्रता में रहते हैं जहाँ वे घुलमिल सकते हैं, न कि सुनसान जगह पर जहाँ खरगोश और बटेर के अलावा खाने को कुछ नहीं मिलता। मैं मन ही मन खुद पर हँसी। बेशक, उनके पास खाने के लिए कुछ तो था। मैं। लेकिन फिर भी यह बात समझ में नहीं आई कि यह दुष्ट पिशाच इतने निर्जन इलाके में कैसे पहुँच गया। क्या उसे रूबी का एहसास हो गया होगा? मेरे सीने में डर बैठ गया।
हल्की-हल्की हवा मेरे शरीर को छू गई। सन्नाटे में दूर से एक सियार की आवाज़ सुनाई दी। यह पिशाच किसी भी हालत में हमारे समूह का नहीं हो सकता था। अगर ऐसा होता तो वह खुद को मेरे सामने प्रकट कर देता। हमारे अलौकिक साथियों को अच्छी तनख्वाह मिलती थी और उनके साथ सख्त अनुबंध था कि अगर वे कभी नियम तोड़ते हैं, तो उन्हें उनके ही समूह के हवाले कर दिया जाएगा और देशद्रोही मानकर मार दिया जाएगा।
मैंने सिर हिलाया, यह सोचकर कि इसका कोई मतलब नहीं बनता। लेकिन शब्दों के अर्थ को छोड़ दें तो, वहाँ सिर्फ़ मैं और वो थे। अगर एक से ज़्यादा पिशाच होते, तो मेरे पास बचने का कोई मौका नहीं होता। लेकिन वो अकेला था और मैं अच्छी तरह से प्रशिक्षित था। अगर मैं सावधान रहूँ तो शायद मैं उसे मार गिरा सकता हूँ।
मैंने अपनी गर्दन एक तरफ घुमाई और कान लगाकर सुना कि जिस चट्टान के पीछे मैं छिपा था, उसके पास झाड़ियों में हल्की सरसराहट सुनाई दे रही है। मैं उछल पड़ा और उस जगह पर गोली चलाई जहाँ से आवाज़ आई थी, झटके हवा में गूंज रहे थे, मेरे हाथों में झनझनाहट हो रही थी। मैं बहुत धीमा था— शायद नींद की कमी या शरीर पर पड़े तनाव के कारण— लेकिन पिशाच फिर भी आगे बढ़ता रहा और मुझे ज़मीन पर गिरा दिया। इस बार वह मेरे साथ ही रहा, उसके नुकीले नाखून मेरी बांहों के मांस में धंस गए। हवा में उड़ते हुए मेरी बंदूक मेरे हाथ से गिर गई, उसकी काली निगाहें मुझ पर टिकी थीं, उसके नुकीले दांत बाहर निकले हुए थे। हम लुढ़कते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। मैं अपनी कमर पर लगी कील को पकड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसने मेरा हाथ झटक दिया और मुझे कसकर पकड़ लिया। उसकी आंखों के अंधेरे से मैं समझ गया कि यह पिशाच बूढ़ा और ताकतवर है।
उसने मुझे ज़मीन पर गिरा दिया और मेरे ऊपर झुक गया, कुछ नहीं बोला। उसकी साँसों से मौत और बासी खून की बदबू आ रही थी, और उसका मुँह मेरी गर्दन के और करीब आता जा रहा था। लेकिन मैं मुस्कुराई और एक पल बाद उसके चेहरे पर थूक दिया।
वह सदमे से पीछे हट गया, भौंहें ऊपर उठ गईं, और मैंने इस मौके का फायदा उठाते हुए अपना एक हाथ छुड़ाया और उसकी जबड़े की हड्डी पर ज़ोरदार मुक्का मारा। मुझे पता था कि इससे वह बेहोश नहीं होगा, लेकिन मुझे कुछ सेकंड मिल जाएंगे। वह दर्द से कराह उठा और एक तरफ गिर गया, तभी मैंने अपनी बेल्ट से नुकीली छड़ी निकाली और उसे ज़ोर से उसकी छाती में घुसा दिया। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं, उसका मुँह एक खामोश चीख में खुल गया। मैं जल्दी से खड़ा हुआ और हल्की चाँदनी में अपनी बंदूक ढूंढने लगा। लेकिन मैं जम गया जब उस पिशाच ने एक भयानक हंसी हंसी, एक ऐसी दयनीय आवाज़ जिससे मैं सिहर उठा। वह मरा नहीं था।
जैसे ही उसकी नज़र उसकी छाती में गड़ी हुई कील पर पड़ी, मैं घबरा गया। उसने उसे पकड़ा और खून से लथपथ होकर बाहर खींच लिया। मैं चूक गया। आखिर मैं कैसे चूक गया?
मुझे सोचने का भी समय नहीं मिला कि उसने मुझ पर दोबारा हमला कर दिया, इस बार उसके

नुकीले दांत मेरी गर्दन में गहरे धंस गए। मैंने अपनी पूरी ताकत से संघर्ष किया लेकिन मेरे प्रयास व्यर्थ थे। उसने अत्यंत तेज़ी से मेरा सारा खून चूस लिया और मैं कमजोर पड़ने लगी। मेरी दृष्टि धुंधली हो गई।

मुझे रूबी, मेरी आस्था, की याद आई और मैं उसके लिए चिंतित हो गया। वह इतनी छोटी और अनुभवहीन थी कि उसे अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था, और अगर उस पिशाच ने उसे ढूंढ लिया, तो वह शायद उसे मार ही डालेगा। वह उस दुष्ट शैतान के लिए खतरा होगी, न कि एक स्वागत योग्य साथी। आस्था। मुझे उसकी रक्षा करनी थी और उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना था। आस्था। वह बिल्कुल अकेली थी। आस्था...

ग्यारह: रूबी

मैं हांफते हुए जागा, मेरा शरीर आगे की ओर गिर पड़ा, अंधेरे में मेरी आंखें चौड़ी हो गईं।
यह हो गया था, मुझे इसका एहसास हो रहा था। और अब कोई दर्द नहीं था।
मेरा पुनर्जन्म उसी शरीर में हुआ, लेकिन एक अलग शरीर में। यह निश्चित रूप से वह शरीर नहीं था जो पिछले अठारह वर्षों से मेरे पास था। यह शरीर अधिक सघन था, लेकिन हल्का भी। अधिक मजबूत, फिर भी फुर्तीला। मेरी हड्डियाँ टाइटेनियम जैसी लग रही थीं। मेरी मांसपेशियाँ ठोस चट्टान जैसी, फिर भी लचीली थीं।
मुझे अपने शरीर के हर बाल का एहसास हो रहा था, हवा के हर झोंके का, जो मेरे पास से सरसराता हुआ गुजर रहा था। और मेरी आँखें... मैं महसूस कर सकती थी कि मेरी पुतलियाँ सिकुड़ रही हैं, बिल्ली जैसी तेज़, प्रकाश के हर कण को सोख रही हैं, कमरे में मौजूद वस्तुओं के हर आकार को स्पष्ट कर रही हैं, हर रेखा और रंग को तराश रही हैं। अंधेरे, बिना खिड़की वाले कमरे में सिर्फ एक मोमबत्ती जल रही थी, फिर भी मुझे ऐसा दिख रहा था जैसे दिन का उजाला हो।
मैंने गहरी सांस ली, मेरी फेफड़ों में नई, बढ़ी हुई क्षमता के कारण जलन हो रही थी। मैंने अपनी बाहों को अगल-बगल फैलाने की कोशिश की, ट्रायथलॉन के बाद होने वाली जलन जैसी पीड़ा मेरे पूरे शरीर में फैल रही थी, लेकिन हथकड़ियों ने मेरी कलाइयों को कसकर पकड़ रखा था और मैं निराशा में गुर्रा उठा।
मैं एकदम जम गया, एक अजीब सी आवाज़ से मेरा ध्यान क्षण भर के लिए अपनी बंदिशों से हट गया। मेरी सुनने की शक्ति इतनी तेज़ हो गई थी कि मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या सुन रहा हूँ। पहले तो मुझे लगा कि मैंने गरज सुनी है, मानसून आने से पहले रेगिस्तान में गूंजने वाली धीमी गड़गड़ाहट। लेकिन मैंने उस आवाज़ पर ध्यान केंद्रित किया और यह जानकर हैरान रह गया कि यह मेरे चारों ओर बने पुराने गिरजाघर की आवाज़ थी। मैं हर चरमराहट, हर दरार, हर खिंचाव और गड़गड़ाहट सुन सकता था, मानो वह पुरानी इमारत जीवित हो और साँस ले रही हो।
मैंने अपने कानों को हाथों से जकड़ लिया, सारी हलचल को शांत करने की कोशिश की, लेकिन हथकड़ियों के खिंचाव से मेरी कलाई छिल गई। चारों ओर के दृश्य, ध्वनियाँ, संवेदनाएँ और गंध मेरे मस्तिष्क को अत्यधिक उत्तेजित कर रहे थे और मैं मुश्किल से ही एक को दूसरे से अलग कर पा रहा था, यह तो दूर की बात है कि वे कहाँ से आ रहे थे।
वहाँ बहुत सी चीज़ें थीं, छोटी-छोटी चीज़ें जिन्होंने मेरा ध्यान खींचा—चर्च की महज़ खुशबू, जो एक साँस में ही मुझे अपना लंबा इतिहास समेट लेती थी, कृत्रिम रोशनी, मानो मेरी आँखों से ही आ रही हो, और दीवार में बनी दरारें, जो अपने आप में एक अनोखा पैटर्न बना रही थीं। यह सब कुछ कलाकृति की तरह सुंदर था।
हवा में तैरते धूल के कण भी अपनी अलग ही सुंदरता लिए हुए थे। मैंने उनमें से एक को छूने के लिए हाथ बढ़ाया, और वह मेरी उंगली से पंख की तरह हल्का होकर उछल पड़ा। मुझे हवा में एक विद्युत आवेश महसूस हुआ, ऊर्जा की एक गूंज मेरे भीतर प्रवाहित हो रही थी और मुझे एहसास हुआ कि मैं हर चीज से जुड़ा हुआ हूँ। यह अद्भुत था।
लेकिन इस सारी अफरा-तफरी और शोरगुल के बीच, कुछ तो गायब था, गाइ।

मैंने दरवाज़े का हैंडल पकड़ने की कोशिश की और उसे खोलने के चक्कर में उसे ज़ोर से तोड़ दिया। अपनी ताकत से बेखबर, मैं अपने हाथ में पकड़े लकड़ी के बल्ब को हैरानी से देखता रहा, तभी दरवाज़ा खुल गया और मोमबत्तियों से जगमगाता कैथोलिक चर्च दिखाई दिया। मेरा ध्यान तुरंत दूसरी तरफ चला गया और मैंने हैंडल ज़मीन पर गिरा दिया, चर्च में कदम रखते ही, मदर मैरी ने एक बार फिर अपनी उदास निगाहें मुझ पर टिका दीं। मैं कसम खा सकता था कि उनके गालों पर बने आँसू असली थे, गीले और तरल, और वे मेरी आत्मा के लिए शोक मनाते हुए उनके चेहरे पर बह रहे थे। मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मैं सोचने लगा कि मैं एक बिल्कुल नई दुनिया में आ गया हूँ— एक ऐसी दुनिया जहाँ असीम आनंद और शुद्ध पीड़ा है, वह पीड़ा जिसे मैंने अकेलेपन के रूप में परिभाषित किया। और मैं पहले ही समझ गया था कि मेरा अकेलापन मेरे नए बदले हुए शरीर और मेरे नए जन्मित जीवन में मेरा करीबी साथी होगा।

लेकिन मेरे धार्मिक चिंतन के अलावा, मुझे महसूस हो रहा था कि कुछ गड़बड़ है। बहुत ही भयानक गड़बड़। और यह इसलिए नहीं था कि मैं अब इंसान नहीं रहा था—दरअसल, यह बात तो किसी कारण से मुझे बिल्कुल सही लग रही थी। नहीं, यह कुछ बिल्कुल अलग था, और डर की वजह से मेरा दिल कांप उठा।

आस्था...

मेरे कान खड़े हो गए और मुझे लगा जैसे मैंने गाइ की आवाज़ सुनी हो। मैंने चर्च में पहला कदम रखने की कोशिश की, लेकिन अपने नए पैरों को आज़माते हुए मेरा शरीर ऐसे तेज़ी से आगे बढ़ा जैसे मेरी पीठ पर जेट पैक बंधा हो। तेज़ रोशनी और गति के साथ, मैं वेदी, मूर्तियों, बेंचों को पार करते हुए मिशन के दरवाज़े से बाहर निकल गया, टूटी हुई लकड़ी और टुकड़ों की बौछार के साथ। जैसे ही टुकड़े मुझ पर गिरने लगे, मैं अपनी गति और ताकत को देखकर अचंभित रह गया, यह सोचकर कि क्या सुपरमैन ने भी पहली बार उड़ते समय ऐसा ही महसूस किया होगा।

"ये क्या..." मैंने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि मैंने ठोस दरवाजे को उसके धातु के कब्जों से उखाड़ दिया था, वह हज़ार टुकड़ों में बिखर गया था। मुझे अपनी गलती का एहसास भी नहीं हुआ था कि मेरा ध्यान कहीं और चला गया। मुझे गाय को ढूंढना था।

मेरी आँखें उसी दृश्य से अभ्यस्त हो गईं जो मैंने पिछली रात देखा था - एक खूबसूरत रेगिस्तानी नज़ारा, जिसमें विशाल पहाड़ क्षितिज पर एक सोए हुए शेर की तरह फैले हुए थे। चाँद अभी-अभी उन पहाड़ों के ऊपर से निकल रहा था और रात के पहले तारे इतने स्पष्ट रूप से चमक रहे थे कि वे मानो मेरे कंधों पर टिके हुए थे, हवा में जमे हुए हीरों के गुच्छों की तरह लटके हुए थे। लेकिन मेरी इस नई जादुई दृष्टि के बावजूद, वहाँ गाय नहीं था।

घबराकर मैंने अपना सिर इधर-उधर घुमाया और जैसे सिर पर चोट लगी हो, उसकी गंध मेरे दिमाग में बस गई—गीली चमड़ी, ताज़ा कस्तूरी और जीवित रक्त। मेरी सूंघने की शक्ति अपने आप जागृत हो गई और मुझे सांस लेने के लिए खुद को कहना भी नहीं पड़ा।

मैं रेगिस्तान में तेज़ी से भागा, डर मेरे दिल में घर कर गया था और पल भर में मैं गाय के ठीक सामने आकर रुक गया। वह ज़मीन पर पड़ा था और एक काले बालों वाला आदमी—नहीं, आदमी नहीं, पिशाच— उसकी गर्दन से खून चूस रहा था। पिशाच भी घायल था और यह साफ़ था कि गाय ने ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी थी।

अचानक मुझे बहुत गुस्सा आया, मेरी रगों में क्रोध दौड़ उठा। बिना किसी झिझक के, और इससे पहले कि मेरा दिमाग प्रतिक्रिया कर पाता, मैंने पिशाच को कंधों से पकड़कर गाय से दूर फेंक दिया। वह हवा में उछलकर तीन बार घूमा, फिर ज़मीन पर गिरा और ज़ोरदार धमाके के साथ बर्फ की ऊपरी परत को चीरता हुआ नीचे आ गया।

गाय की धुंधली निगाहें आश्चर्य से मुझ पर पड़ीं और फिर मेरी कलाई पर टिक गईं। तभी हम दोनों को एहसास हुआ कि मेरे हाथों में हथकड़ी नहीं थी। मैंने नीचे ज़मीन पर देखा, टूटे हुए धातु और जंजीर के छोटे-छोटे टुकड़े मिट्टी पर बिखरे पड़े थे। मेरे अंदर उलझन और घबराहट उमड़ रही थी और पलक झपकते ही मैं गाय के बगल में घुटनों के बल बैठ गया।

"क्या तुम ठीक हो?" मैंने पूछा, मेरी अपनी आवाज़ किसी सिम्फनी से पहले अभ्यास कर रहे स्ट्रिंग चौकड़ी जैसी थी। यह अजीब, प्रवाहमय और दूर से आती हुई लग रही थी, मानो यह मेरी अपनी आवाज़ न हो।

"हाँ।" वह हिचकी लेते हुए बोला और मैं समझ गई कि वह झूठ बोल रहा है। उसकी गर्दन पर काटने के घाव से खून बह रहा था और वह पीला पड़ गया था, उसमें जरा भी ऊर्जा नहीं थी। उसकी आँखें मुझे घूर रही थीं, फिर बंद हो गईं और मैंने उसके कंधों को पकड़ लिया जैसे उसे होश में रखने के लिए। मैंने उसमें डर महसूस किया; यहाँ तक कि उसे वैसे ही सूंघा जैसे कोई शिकारी अपने शिकार को सूंघता है। वह न केवल उस पिशाच से डरा हुआ था जिसने उसे जकड़ लिया था, बल्कि मुझसे भी डरा हुआ था। मुझे नहीं पता था कि एक नए पिशाच को कैसा महसूस करना चाहिए, या पिशाचों में इंसानी भावनाएँ होती भी हैं या नहीं, लेकिन ठीक उसी क्षण, मेरा दिल दुख रहा था। यह दुख रहा था कि गाय मुझसे डर रहा था। अब मैं उसकी गंध और भी तीव्र रूप से महसूस कर सकती थी, उसकी कस्तूरी जैसी चमड़ी और उसकी नसों में बहता उसका लाल-गर्म खून। लेकिन मैं उसका खून नहीं पीना चाहती थी, किसी कारण से और यह विचार मुझे उलझन में डाल रहा था। यही तो असली बात थी, है ना? पिशाचों को इंसानी खून से कुछ लगाव होता है।

"तुम्हारे पीछे..." गाय ने कर्कश स्वर में कहा, उसकी आँखें अब थोड़ी खुली हुई थीं। मेरा शरीर ज़मीन से ऊपर उठा और जैसे धीमी गति में, मैं हवा में घूमकर दूसरे पिशाच से टकरा गया। उसकी आँखें मुझे घूर रही थीं, तीव्र और गुस्से से भरी हुई, और वह एक उड़ते हुए पागल की तरह मेरे पीछे आया। मैंने नीचे ज़मीन की ओर देखा और अपने और नीचे की चट्टानों के बीच की दूरी देखकर आश्चर्यचकित रह गया। धत् तेरे की। या तो मैं उड़ रहा था, या मैं बहुत ऊँचा कूद गया था और समय धीमी गति से चल रहा था। चाहे जो भी हो, मैं इस दुष्ट पिशाच से भिड़ने ही वाला था, और मेरे दिल में जल रही नफरत की आग की कसम, उसकी यह लड़ाई आसान नहीं होने वाली थी।

मैंने उसकी गर्दन की नस पर ध्यान केंद्रित किया। उसमें ठंडा खून बह रहा था और उसकी गंध... केले के हलवे जैसी थी? खैर, वह बेहद गुस्से में और बदसूरत दिख रहा था, लेकिन उससे ऐसी खुशबू आ रही थी जैसे मैंने अब तक का सबसे स्वादिष्ट खाना चखा हो।

ज़मीन पर उतरने से पहले ही, मेरे नुकीले दांत नीचे उतरे और उसकी गर्दन में धंस गए, उसके शरीर से मीठा मृत रस चूसने लगे। जब उसने विरोध करने की कोशिश की, अपनी लोहे जैसी मज़बूत भुजाओं से मुझे धक्का दिया, तो मैंने उसका सिर पकड़कर बाईं ओर झटक दिया, उसकी गर्दन की हड्डियाँ मेरे हाथों में चटक गईं। उसकी त्वचा फट गई और उसका बचा हुआ खून मेरे मुंह में फूट पड़ा, यह देखकर मैं हांफ उठी। मैं खून से लथपथ थी, मेरे खून से सने बाल मेरे रेशमी गाउन पर टपक रहे थे। मुझे एहसास ही नहीं हुआ था कि मैं कितनी भूखी थी, जब तक कि मैंने उस चिपचिपे रस की हर बूंद को चाट नहीं लिया।

उसका सारा रस निचोड़ लेने के बाद, मैंने घृणा से उसकी लाश को कूड़े के थैले की तरह एक तरफ फेंक दिया। मैं हांफते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा, मानो मुझे एक तृप्ति का अहसास हो रहा हो। मैं ज़िंदा था, जितना मैं इंसान होने पर कभी नहीं था, उससे कहीं ज़्यादा मज़बूत। मैंने अपने रक्षक की ओर देखा, उसकी छाती धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हो रही थी, और उसके हाथ उसके बगल में बेजान पड़े थे। उसकी आँखें बंद हो गईं और मैं समझ गया कि वह तेज़ी से मर रहा है। नहीं!

मैं झट से उसके पास गई और उसकी गर्दन पर लगे घाव को देखा, लेकिन वहाँ से खून बहना बंद हो गया था। उसने आँखें खोलीं, लेकिन फिर बंद हो गईं, मानो उन्हें खुला रखना उसके लिए बहुत मुश्किल हो। वह मर रहा था। मुझे पता था।

"हे भगवान!" मेरी सांसें तेज़ चल रही थीं, मैंने उसके ठंडे हाथ पर हाथ फेरा, मुझे पता था कि मुझे जल्दी कुछ करना होगा। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और दिमाग में तरह-तरह के विचार चल रहे थे, कोई हल ढूंढने की कोशिश कर रहा था। रात में एक उल्लू की आवाज़ आई जैसे सब कुछ सामान्य हो, लेकिन असलियत इससे बिल्कुल अलग थी।

मैंने अपनी उंगलियाँ अपने नुकीले दाँतों तक ले जाकर धीरे से उन्हें छुआ। मुझे विश्वास करना मुश्किल हो रहा था कि गाय ने मेरी जान बचाई थी, यह जानते हुए कि मैं अंततः किस रूप में बदल जाऊँगी। और अब वह मेरे सामने असहाय पड़ा था; मैं उसे कितनी आसानी से मार सकती थी। लेकिन... मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी।

मैंने उसे नीचे देखा और पिशाचों पर बनी फिल्मों और किताबों की याद आ गई। कहा जाता था कि पिशाच का खून पीने से घाव जल्दी भर जाते हैं और ताकत वापस आ जाती है। इन किताबों और फिल्मों में कही गई बातों का सच होना तो पागलपन था, और उससे भी बड़ा पागलपन यह मानना था कि मैं खुद एक पिशाच हूँ। लेकिन मेरे पास गहराई से सोचने का समय नहीं था। मुझे जल्दी कुछ करना था।

बिजली की तरह, मेरे अंदर कुछ हुआ, एक सहज प्रवृत्ति जागी और मैंने अपने नुकीले दांतों से अपनी कलाई को फाड़ दिया। मैंने अपना मांस गाय के मुंह से चिपका दिया, उम्मीद कर रही थी कि मैं सही हूँ, उम्मीद कर रही थी कि मेरा खून उसकी जान बचा लेगा।

बारह: लड़का

मुझे धुंधला-सा याद है कि पिशाच ने मेरे गले में अपने दांत गड़ा दिए थे और दुनिया धुंधली हो गई थी। मुझे धुंधला-सा याद है कि जब उसे मेरे शरीर से खींचा जा रहा था तो वह फुफकार रहा था। मुझे धुंधला-सा याद है कि मैंने रूबी को पीछे देखने की चेतावनी दी थी। और मुझे धुंधला-सा याद है कि एक गाढ़ा, धातु जैसा तरल मेरे गले से नीचे उतर रहा था, जिससे मेरा दम घुट रहा था, लेकिन फिर भी मैंने उसे निगल लिया।

फिर वह एक भयानक दृश्य की तरह मेरे ऊपर घुटनों के बल बैठी थी, सुंदर और क्रूर, और मेरा सुन्न शरीर संवेदना से भर उठा, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मेरा ठंडा खून फिर से गर्म हो गया और मेरे फेफड़ों ने ज़ोर से सांस ली। मेरी दृष्टि साफ़ हुई, उसकी बैंगनी आँखें, उसके कंधों पर लहराते हुए सुनहरे बाल और उसके चेहरे पर चिंता का भाव दिखाई दिया। उसने अपनी कलाई को देखा और घाव को भरते हुए देखा, अपने शरीर की प्रतिक्रिया देखकर वह हैरान थी। तब यह स्पष्ट हो गया कि उसने मुझे अपना खून पिलाकर मेरी जान बचाई थी, जैसे मैंने उसकी जान बचाई थी।

रूबी अब हथकड़ियों से मुक्त थी, हालांकि उसकी बाईं कलाई पर अभी भी धातु का कंगन और लटकती हुई चेन थी। बाकी टूटे हुए टुकड़े ज़मीन पर बिखरे पड़े थे, और उसकी आज़ादी देखकर मुझे एक पल के लिए घबराहट हुई। फिर भी, किसी अजीब कारण से, मेरा डर जल्दी ही शांत हो गया और मुझे पता चल गया कि वह मुझे नुकसान नहीं पहुँचाएगी। लेकिन यह सोचना बेतुका था, क्योंकि वह एक पिशाच थी—अगर मेरा अनुमान सही था तो एक बेहद ताकतवर पिशाच—और अपनी कम उम्र के बावजूद काफी नुकसान पहुँचा सकती थी। फिर भी, ज़्यादातर नवजात पिशाच कमज़ोर होते हैं और उसे चांदी की हथकड़ियों को तोड़ना नहीं चाहिए था, और न ही उस बूढ़े पिशाच को मारना चाहिए था जैसा उसने किया था।

जिस तरह से उसने मुझे देखा, वह न तो शिकारी जैसी थी और न ही द्वेषपूर्ण, जैसा कि होना चाहिए था, बल्कि इसके विपरीत, दयालु और स्नेहपूर्ण थी। वह चिंतित लग रही थी और मैंने अपना सिर हिलाया, रात की अजीब घटनाओं को समझने की कोशिश करते हुए, यह सोचते हुए कि यह कोई साधारण पिशाच नहीं था।

धीरे-धीरे मेरी ताकत लौट रही थी, मैं उठकर बैठ गई और हैरानी से उसका चेहरा देखने लगी। "तुमने... मेरी जान बचाई।" उसकी नज़रें मेरी आँखों से मिलीं। उसके बालों से खून टपक रहा था और लाल तरल उसके सफेद गाउन पर बह रहा था। उसने गाउन के लेस वाले किनारे को छुआ और अपनी नज़रें ज़मीन पर टिका दीं।

“कुछ भी नहीं था।”

मैंने अपना सिर हिलाया, मेरे विचार उलझन से भरे हुए थे। अगर मैंने अपनी आँखों से न देखा होता, मेरे सामने बैठे इस शांत नवजात पिशाच को देखकर, तो मैं कभी विश्वास नहीं करता। अगर कोई और पिशाच उन हथकड़ियों को तोड़कर अंदर आ जाता, और मेरी इस कमजोर हालत में, तो मैं कब का मर चुका होता। मेरा दिमाग उन सवालों से भरा हुआ था जिनका जवाब मुझे नहीं मिल रहा था। हालांकि मेरा उससे डर कम हो गया था, फिर भी मैं सतर्क था और मैंने ज़मीन से अपनी लकड़ी की डंडी उठाई और उसे अपनी गोद में रख लिया। उसकी उदास आँखें मेरी हर हरकत पर टिकी थीं,

मानो उसे पता हो कि मुझे उस पर भरोसा नहीं है, और मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि यह एक स्वाभाविक मानवीय प्रतिक्रिया है। यह सामान्य नहीं था।
मैंने ज़मीन पर पड़े खून से लथपथ मांस के ढेर की ओर इशारा किया। बस टुकड़े-टुकड़े ही बचे थे। "यह 'मामूली बात' नहीं थी। तुम मुझे भी वैसे ही जान से मार सकते थे जैसे उसने मारा।" मैंने सवालिया अंदाज़ में सिर झुकाया। "तुमने ऐसा क्यों किया?"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, मानो वह खुद ही जवाब ढूंढ रही हो। "मुझे पक्का नहीं पता। बस... एक सहज प्रवृत्ति थी। जैसे मेरा अपने शरीर पर कोई नियंत्रण नहीं था।" उसने कंधे उचकाए। "शायद इसलिए क्योंकि आपने मेरी जान बचाई थी और मैं आपकी एहसानमंद थी।"
मैं घबराकर हँस पड़ी। हालाँकि नवजात पिशाच शुरू में कमज़ोर होते हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वे भूखे नहीं होते, बल्कि बेहद लालची होते हैं। वे अपने नए जीवन में भूख से बेहाल होकर जागते हैं, भूख से अंधे हो जाते हैं, और जो भी उनके रास्ते में आता है, उसे बेरहमी से मार गिराते हैं। लेकिन रूबी... वह बस शांत और दयालु भाव से बैठी रही। मैं दंग रह गई।
"मुझे माफ कर दो," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
"किसलिए?" मैंने अपनी स्तब्धता में ही खुद से पूछा और देखा कि रूबी मुझे गौर से देख रही है। उसकी निगाहें मेरे पूरे शरीर पर घूम रही थीं और मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, यह सोचते हुए कि आखिर उसके मन में क्या चल रहा होगा।
"क्या मैंने तुम्हें अपना खून पिलाकर पिशाच बना दिया?" उसने आखिरकार पूछा, और मैंने हंसने की इच्छा को दबाते हुए अपना सिर हिलाया।
"यह एक पुरानी कहावत है। किसी पिशाच के लिए किसी को पिशाच में बदलने का एकमात्र तरीका है उसे काटना और अपना विष उसके रक्त में इंजेक्ट करना। यह एक सचेत निर्णय होता है, स्वचालित रूप से नहीं होता।"
रूबी के चेहरे पर एक पल के लिए थोड़ी राहत दिखी, लेकिन फिर डर से वह फिर से तनावग्रस्त हो गई। उसने भय भरी निगाहों से मेरी ओर देखा और मैं उसके मन की बात समझ गया, इसलिए उसके कुछ और कहने से पहले ही मैंने बोलना शुरू कर दिया।
और नहीं, उस दूसरे पिशाच ने मुझे संक्रमित नहीं किया। मैं तो बस उसका आधी रात का नाश्ता था।
उसने बेमन से हँसी तो सही, लेकिन उसकी नज़र ज़मीन पर टिक गई, मानो वह किसी और विचार में खो गई हो। "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैंने उसे मार डाला," उसने चिंता से नाक सिकोड़ते हुए कहा। "मैंने पहले कभी किसी को नहीं मारा। अब मेरा क्या होगा? क्या मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगी?"
हे भगवान! वो न सिर्फ दयालु पिशाच थी, बल्कि पश्चाताप करने वाली भी थी। ये सब पल-पल और अजीब होता जा रहा था। मेरा जबड़ा कस गया जब मुझे अपने अंदर एक अजीब सी भावना महसूस हुई—क्या थी वो— सहानुभूति? हा हा। एक पिशाच के लिए सहानुभूति। बिल्कुल।
"सुनो," मैंने लड़खड़ाते हुए खड़े होते हुए और अपनी पैंट से स्टिकर झाड़ते हुए कहा। "मैं फ्यूज़ के लिए काम करता हूँ, और जहाँ तक मेरा सवाल है, तुमने हम पर एहसान किया है। वैसे भी वह एक नीच और खून चूसने वाला ही था।"
उसके होंठ काँप उठे और मुझे एहसास हुआ कि मैंने क्या कह दिया है। अब वह भी उन्हीं में से एक थी और मैंने उसे अपमान का तड़का लगा दिया था। लेकिन मुझे इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि मैंने एक पिशाच की भावनाओं को ठेस पहुँचाई है। एक बार फिर, मैंने इस सब की बेतुकी बात पर अपना सिर हिलाया और अचंभित होकर आह भरी।

“क्या ये उस चिन्ह का प्रतीक है?” उसकी आवाज़ ने मुझे चौंकाते हुए वास्तविकता में वापस ला दिया और उसने मेरी कमीज़ की ओर इशारा किया। मैंने अपनी कमीज़ पर लगे पैच को देखा। “क्या ये फ्यूज़ का प्रतीक है?” उसने पूछा।

मैंने गहरी साँस ली और झुंझलाहट में अपने बालों में उंगलियाँ फिराईं। मैंने इस लड़की, मतलब वैम्पायर को पहले ही बहुत कुछ बता दिया था। लेकिन तब तो मुझे लगा था कि ये सब जल्दी ही खत्म हो जाएगा। ये तब की बात है जब मुझे ये एहसास नहीं था कि मुझे उसके साथ कितना समय बिताना पड़ेगा। तब तो वो इंसान थी। लेकिन अब ऐसा नहीं था, वो इंसान नहीं थी। अब वो पूरी तरह से वैम्पायर बन चुकी थी, मेरी दुश्मन।

“हाँ,” मैंने जवाब दिया। अब से संक्षिप्त उत्तर ही सबसे अच्छा रहेगा। मुझे किसी पिशाच से बात नहीं करनी चाहिए। हमें जल्दी करनी थी और समय कम था।

"यह एक अजीबोगरीब क्रॉस जैसा दिखता है," उसने सिर झुकाते हुए सोचा।

मैं घुटनों के बल बैठ गया और ज़मीन पर हाथ फेरते हुए अपना थैला ढूंढने लगा। मैंने टॉर्च निकाली और उसे जलाकर ज़मीन पर रोशनी डाली, अपनी बंदूक ढूंढने लगा। "यह एक अंख है।"

“ओह।” उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव उभर आया जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। मैं यह समझ ही नहीं पा रहा था कि वह किस दौर से गुज़र रही है। सच कहूँ तो, मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं समझना चाहता भी हूँ या नहीं। आख़िरकार, वह दुश्मन थी, और मैं इस पिशाचनी के प्रति कुछ ज़्यादा ही भावुक हो रहा था, और तो और मैंने अपने साथियों और FUSE के प्रति अपनी वफ़ादारी को धोखा देकर एक भयानक अपराध किया था। मैंने अपनी आवाज़ को स्थिर रखते हुए, जल्दी करने की कोशिश की। “अंख का इस्तेमाल मूल रूप से प्राचीन मिस्र में होता था। यह जीवन का प्रतीक है।”

उसने मेरी छाती पर लगे निशान को गौर से देखा। जैसा उसने कहा था, वैसा ही लाल रंग का एक छोटा सा क्रॉस था जिसके ऊपर एक लूप बना हुआ था। मैंने इसे इतने लंबे समय से पहन रखा था कि अब मुझे इसका एहसास भी नहीं होता था, लेकिन उसने इसे देखा और मानो इसी में खो गई हो, उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसकी आँखों में एक ऐसी चमक थी जिसे मैं जानता था, वही भाव जो ज्यादातर नवजात शिशुओं के चेहरे पर बदलने के बाद आता है; शुद्ध क्रोध।

“जीवन का प्रतीक,” उसने बर्फ़ जैसी ठंडी आवाज़ में दोहराया। उसकी नुकीली उंगलियाँ बगल की मिट्टी में धंस गईं। “किसके विपरीत? निर्जीवता के विपरीत?”

उसकी आवाज़ से मुझे बेचैनी हुई, हालांकि किसी तरह थोड़ी राहत भी मिली। शायद वह आखिरकार एक सामान्य पिशाच ही थी और उसकी मूल प्रवृत्ति को जागने में बस कुछ ही पल लगे थे। मैंने अपना हथियार ढूँढा, यह जानते हुए कि अगर वह और ज़्यादा अप्रत्याशित हो गई तो मुझे उसकी ज़रूरत पड़ सकती है। मेरी टॉर्च की रोशनी मेरी बंदूक पर पड़ी और मैंने राहत की साँस लेते हुए उसे वापस अपने होल्स्टर में रख लिया।

जब मैंने कोई जवाब नहीं दिया तो वह गुर्राई। मैंने अपना हाथ अपनी बंदूक पर ही रखा।

“क्या मैं सही कह रही हूँ?” उसने पूछा। “फ्यूज़ जीवन का प्रतीक है? और मैं क्या हूँ, मृत्यु? कोई अपवित्र जानवर जो रात में घूमता है और निर्दोष लोगों को खाता है?” उसके नुकीले दाँत ऊपर उठे और पलक झपकते ही वह मेरे बिल्कुल करीब आ खड़ी हुई, इतनी तेज़ी से कि मुझे उसकी हरकत का पता ही नहीं चला। उसके चेहरे के भाव से लग रहा था कि वह क्रोधित है, उसका चेहरा गुस्से से लाल है, और मैं सतर्क होकर अपनी जगह पर डटा रहा। मेरे विचार से, यह उस व्यक्ति की स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी जिसे अभी-अभी एहसास हुआ था कि वह हमेशा के लिए पिशाच बन जाएगा।

“बताओ!” उसकी चीखती हुई आवाज़ से मैं लगभग सहम गया, लेकिन मैंने खुद को संभाला और हमारी आँखें एक असहज जुड़ाव में मिलीं। मैं पहले नज़रें नहीं हटाऊंगा। यह प्रशिक्षण का पहला नियम था: कभी भी किसी दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के सामने अपनी कमजोरी मत दिखाओ— चाहे वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति अब तक देखी गई सबसे खूबसूरत लड़की ही क्यों न हो।

“आप पूरी तरह से जीवित हैं।” मैंने सावधानी से कहा, मानो मैं किसी दोषपूर्ण टाइम बम को संभाल रहा हूँ। “लेकिन पारंपरिक अर्थों में नहीं।”

उसने मुझे घूरकर देखा, उसकी बैंगनी आँखें गुस्से से चमक रही थीं। "आखिर मेरे साथ ये किसने किया?" उसकी मुट्ठियाँ भींच गईं, उसके नाखून उसकी हथेलियों में गड़ गए, जिससे खून निकलने लगा।

“मुझे नहीं पता।” मेरा जवाब वो नहीं था जो वो चाहती थी, लेकिन वो ईमानदार था।

“क्योंकि जब मुझे पता चलेगा कि मुझे इस हालत में किसने पहुँचाया है, तो मैं उसे जान से मार दूँगी।” उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी, जबड़े कसे हुए थे। वह मानसिक रूप से टूट चुकी थी।

मैंने अपनी हथेली ऊपर उठाई, मेरी शांत आवाज मेरी आशंका को झुठला रही थी।

"फेथ, तुम्हारा रचयिता तो मर चुका है। घात लगाकर किए गए हमले में मारा गया। तुम्हें आराम करना चाहिए। शांत हो जाओ। परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है।"

“मैं बहुत परेशान थी…” उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं, उसकी आवाज़ कांप रही थी, जिससे मुझे लगा कि वह अपना आपा खो बैठी है। “क्या तुम समझते हो कि मैं मर चुकी थी, या मरने वाली थी? और मैंने आखिरकार इस बात को स्वीकार कर लिया था? मैं स्वर्ग की ओर जा रही थी… या नरक की ओर… या जहाँ भी तुम लोग जाते हो। लेकिन उस कमीने ने मेरा रास्ता छीन लिया। उसने मेरी शांति छीन ली। यह मेरी मौत थी— मेरी! और उसने इसे मुझसे छीन लिया।”

मैं देख सकता था कि उस पर स्थिति का गहरा असर हो रहा था। वह भावनाओं का ज्वालामुखी थी, जो बेकाबू होकर फूट रहा था। उसने एक नादान बच्चे की तरह अपना पैर ज़मीन पर पटका, जिससे ज़मीन उसके एड़ी के नीचे टूट गई और उसका पैर एक छोटे से गड्ढे में फंस गया। उसने अपने बनाए गड्ढे को हैरानी से देखा, मानो उसने पहले कभी ऐसा कुछ देखा ही न हो—और मुझे लगता है कि शायद उसने सच में कभी नहीं देखा था।

रेगिस्तान में हवा का एक झोंका आया और एक छोटा सा झाड़ रूबी के पैरों से टकराया, लेकिन उसे इसका एहसास नहीं हुआ, वह एक गंभीर सच्चाई को महसूस कर रही थी। और फिर कुछ क्षणों बाद, उसका शरीर नरम पड़ गया, उसकी आँखों में अनकहे आँसू भर आए।

“मैं क्या बन गई हूँ?” उसने धीमी आवाज़ में कहा, उसकी निगाहें मुझ पर इस तरह टिक गईं मानो मेरे पास सारे जवाब हों। लेकिन ऐसा नहीं था। मुझे पिशाचों और वेयरवुल्फ को मारने के अलावा कुछ नहीं आता था। फिर भी, उसने अपनी आँखों से विनती की।

हे भगवान, फिर वही गहरी पीड़ादायक सहानुभूति मेरे मन में जाग उठी। यह किसी बीमारी की तरह मेरे शरीर में फैल गई। धिक्कार है, वह मुझे ऐसा क्यों महसूस करा रही थी? मैंने अपनी बंदूक पर से पकड़ ढीली कर दी, अपनी बाहों को बगल में लटका लिया और इस बात पर विचार करने लगा कि उसने मेरी उम्मीद के मुताबिक विस्फोट क्यों नहीं किया। उसने मुझ पर झपट्टा नहीं मारा, न ही मुझ पर हमला किया, और न ही किसी सामान्य नवजात पिशाच की तरह मुझे कोई खतरा दिखाया। इसके बजाय, वह अंदर ही अंदर टूट गई, दुख से उसका शरीर आगे की ओर झुक गया। वह घुटनों के बल गिर पड़ी और रोने लगी।

“मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? मैं ऐसा नहीं चाहती थी। यह मेरी मर्जी नहीं थी।” तेज बारिश के दौरान

नियाग्रा झरने की तरह उसके गालों पर आंसू बहने लगे।
मुझे एक भी ऐसा शब्द नहीं मिल रहा था जो उसके टूटे हुए दिल को तसल्ली दे सके, लेकिन मैं नाकाम रहा। उसे दिलासा देने की तीव्र इच्छा मुझ पर हावी हो गई और मैंने आगे बढ़कर उससे बात करने की ठान ली।
"तुम सही हो।" मेरी आवाज़ खोखली और दूर से आती हुई सी लग रही थी। "तुमने इसे नहीं चुना।" उसने मेरी तरफ नहीं देखा, लेकिन मुझे पता था कि वह सुन रही है। मैं अपने अंतरात्मा से जूझ रहा था, सोच रहा था कि उसे उस बूढ़े पिशाच के पास ले जाकर इस सब झंझट को खत्म कर दूं। लेकिन उसके साथ रहने की प्रबल इच्छा ने मुझे जकड़ लिया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा और समझ भी नहीं आया, लेकिन यही भावना थी। मैंने एक गहरी सांस ली, जिसका मुझे एहसास ही नहीं था कि मैं रोके हुए था, और उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया।
"तुम्हारा फायदा उठाया गया और तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध तुम्हें इस्तेमाल किया गया। यह अन्याय है। जीवन अन्यायपूर्ण है। लेकिन तुम इसके बारे में क्या करोगे? क्या तुम अपने गुस्से से दुनिया को तबाह कर दोगे? या फिर जो तुम्हारे साथ हुआ है, उसे स्वीकार करोगे, उस पर काबू पाओगे और उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करोगे?"
उसके कंधे कांप रहे थे और हवा के झोंके से उसके बालों की लटें उसके चेहरे से हट गईं। उसका गुस्सा गायब हो गया, उसकी जगह उदासी ने ले ली। मैं धीरे-धीरे उसके करीब गया।
"यह एक आशीर्वाद हो सकता है, फेथ।" ये शब्द मेरे मुँह से बिना सोचे-समझे निकल गए और मैंने खुद को उसके कंधे पर हाथ रखते हुए पाया। मैंने खुद से सवाल करना बंद कर दिया था, सही और गलत के बीच उलझना बंद कर दिया था, मैंने जो किया था उसके बारे में चिंता करना बंद कर दिया था। अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था। "यह तुम्हारे लिए हर गलती को सुधारने का रास्ता हो सकता है। सुनो, मैं पिशाचों के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ, लेकिन सब कुछ नहीं। यह तुम्हारा उद्धार हो सकता है।"
उसका शरीर नरम पड़ गया और वह मेरे करीब झुक गई, उसका सिर मेरे सीने पर टिका हुआ था। उसकी नज़दीकी से मेरा शरीर तनावग्रस्त हो गया। वह एक डरे हुए जानवर की तरह थी, जिसे मैं डराना नहीं चाहता था। पता नहीं क्यों, लेकिन उसने मुझ पर भरोसा किया— उसे नहीं करना चाहिए था, पर धिक्कार है अगर उसने किया। वह मेरी कमीज़ में और गहराई से सिमट गई, उसका शरीर किसी पिशाच की तरह ठंडा था, और मुझे अचानक उसे बाहों में भर लेने, उसकी ठंडी त्वचा को गर्म करने की तीव्र इच्छा हुई। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया।
"तुम क्या करोगे?" उसने फुसफुसाते हुए कहा, उसके शब्द हवा में लहराते हुए दूर जा गिरे।
उसके सवाल ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया और मैंने यह कल्पना करने की कोशिश की कि उसकी जगह पर होना कैसा होता। अगर एक दिन मैं जागूँ और खुद को हमेशा के लिए एक अभागी आत्मा के शरीर में फंसा हुआ पाऊँ, और मेरा सारा जीवन छिन जाए। मेरी सारी मेहनत हवा में गायब हो जाए। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि उसकी वजह से मेरी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल गई है। उसे बचाने के मेरे फैसले के बाद मैं कभी पहले जैसी नहीं रहूँगी। रूबी और मैं बहुत अलग नहीं थे।
लेकिन उसके सवाल का जवाब मेरे मन में अभी भी बाकी था। मैं क्या करता?
"मुझे नहीं पता," मैंने ईमानदारी से जवाब दिया। उसने मेरी ओर देखा, और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। "सवाल यह है कि तुम क्या करना चाहते हो?"
उसने मेरी बातों पर गौर किया और चुप हो गई। बादलों का एक टुकड़ा चांद के ऊपर से गुजरा, जिससे चांद का चेहरा अंधेरे में छिप गया।

“मैं खुश रहना चाहती हूँ,” उसने कहा। “लेकिन सबसे बढ़कर, मैं अब और अकेला नहीं रहना चाहती। मैं बहुत अकेलापन महसूस करती हूँ।”

मेरी मांसपेशियां ढीली पड़ गईं, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मैंने आह भरी और जेब से चाबी निकाली। मैंने उसका हाथ पकड़ा और सावधानी से बची हुई चांदी की हथकड़ी खोली, जो उसकी कलाई से फिसलकर ज़मीन पर गिर गई। उसकी नज़रें मेरी आँखों से मिलीं और मैंने हिम्मत बढ़ाने वाली मुस्कान देने की कोशिश की।

“तुम अकेली नहीं हो। और यकीन मानो, फेथ, एक बार जब हम सब कुछ सुलझा लेंगे और तुम्हारे लिए रहने की जगह ढूंढ लेंगे, तो तुम फिर कभी अकेली नहीं रहोगी।”

तेरह: रूबी

रात की पिछली घटनाएँ मेरे दिमाग में ऐसे छाई हुई थीं जैसे शुक्रवार की शाम को मछली की दावत में बैठे बुजुर्ग लोग। मुझे मुश्किल से यकीन हो रहा था कि मैंने उस पिशाच को मार डाला है, और इस विचार से मेरे अंदर अपराधबोध सा उमड़ रहा था। लेकिन गाय की जान खतरे में थी और मेरे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

मुझे वो गुस्सा भी याद आया जिसने मेरी नसों में उबाल ला दिया था, और जिसके चलते मैं गाय के सामने एक गुस्सैल बच्चे की तरह भड़क उठी थी, और कैसे उसने शांत रहकर मुझे मेरे गुस्से से बाहर निकाला था। उस शर्मनाक पल को याद करते ही मेरे गालों पर हल्की सी लाली छा गई। ऐसा लग रहा था मानो मेरा पिशाच रूप मेरे शरीर और मन पर अपना अधिकार जमाने के लिए संघर्ष कर रहा हो, और मैं अभी उसे छोड़ने को तैयार नहीं थी।

लेकिन उस रात मिशन से निकलते ही, उसकी क्षणिक गर्मजोशी गायब हो गई। उसने मुझे जो सुकून दिया था, वह पिघल गया, और उसकी जगह वही कठोर स्वभाव वाला व्यक्ति आ गया जिससे मैं पहली बार मिली थी। युद्ध की मुद्रा में लौटकर, उसकी हरकतें तेज और सतर्क हो गईं, मानो हम किसी भी क्षण पकड़े जाएँगे।

हम पैदल ही शहर की ओर बढ़े और हाईवे के एक सुनसान हिस्से पर एक अकेली दवा की दुकान के सामने रुक गए। मैं बिजली की तेज़ी से दरवाज़े से अंदर घुसी और गाइ के निर्देशानुसार उसका इंतज़ार करने के लिए बाथरूम में चली गई। अगर कोई मुझे मेरे सफ़ेद वेदी वाले चोगे में, खूनी पिशाच दुल्हन की तरह देख लेता, तो यह हमारे हित में नहीं होता। मैंने धीरे से दरवाज़ा बंद करने की कोशिश की, लेकिन मेरे हाथ के इशारे पर वह ज़ोर से बंद हो गया और मैं लगभग एक मील दूर उछल पड़ी। मेरी यह नई ताकत मुझे लगातार झकझोर रही थी। मैं शीशे के पास गई और ऊपर देखा, सामने का नज़ारा देखकर मैं चौंक गई और मेरी सांस अटक गई।

सबसे पहले मैंने अपनी आँखों पर ध्यान दिया; जहाँ वे कभी हल्के भूरे रंग की थीं, अब वे इतनी हल्की हो गई थीं कि बैंगनी रंग की दिख रही थीं, मेरी बैंगनी पुतलियाँ काले रंग के चारों ओर एक चमकदार घेरा बना रही थीं।

और मेरी त्वचा... पहले गोरी और झाइयों वाली थी, लेकिन अब मलाई जैसी सफेद और रेशम जैसी चिकनी, बेदाग थी— सिवाय उस घिनौने पिशाच को मारने से लगे सूखे खून के धब्बों के। मैंने अपने गाल को छुआ और वहाँ, मेरे हाथ के पिछले हिस्से को छूते हुए, मेरे बाल थे। पहले ये हल्के सुनहरे रंग के थे, लेकिन अब इतने पीले थे— सुनहरी चमक को छोड़कर— कि इन्हें शुद्ध सफेद समझा जा सकता था। मेरे लंबे बाल लहराते हुए मेरे कंधों पर लटक रहे थे, जो अड़तालीस घंटे पहले की तुलना में कहीं अधिक लंबे थे।

मैंने पानी चालू किया, मेरी नज़रें अपनी परछाई से हट ही नहीं रही थीं। ज़िंदगी में मैंने कभी खुद को बहुत आकर्षक नहीं समझा था और सच कहूँ तो, मैं दिखने में बिल्कुल साधारण थी। मुझमें कुछ भी खास नहीं था, कुछ भी अलग नहीं था। लेकिन अब, मुझे उसमें सुंदरता नज़र आ रही थी, मेरे वैम्पायर रूप के नीचे हर एक विशेषता निखर रही थी।

मेरी पलकें लंबी और गहरी हो गई थीं, मेरे होंठ चेरी जैसे लाल थे, और मेरी गाल की हड्डियाँ भी

पहले से ज़्यादा उभरी हुई लग रही थीं। मैंने अपने चेहरे पर पानी छिड़का, खून साफ किया, उम्मीद थी कि इससे मेरा अपराधबोध और शर्म भी धुल जाएगी। दरवाज़े पर हल्की सी दस्तक हुई और मैं उसे खोलने गई, लेकिन कोशिश में ही मेरे हाथ में चांदी का हैंडल टूट गया। धत् तेरे की! मैंने मुंह बनाया, मिशन पर भी मैंने यही गलती की थी, और मन ही मन ठान लिया कि अब से दरवाज़ों के हैंडल को संभाल कर रखूंगी।

दरवाजा अपने आप चरमराते हुए खुल गया, और मुझे हाथ में नॉब लिए देखकर गाय के चेहरे पर हैरानी का भाव आ गया, जबकि नॉब की जगह खाली छेद था। मैंने कंधे उचका दिए और गाय ने आह भरी, आँखें घुमाते हुए मानो कह रहा हो, "मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

उसने मुझसे दरवाज़े का हैंडल छीन लिया और बदले में मुझे कपड़ों का एक बंडल दे दिया। उसने घुंडी को वापस लगा दिया और दरवाज़ा बंद करने से पहले मुझे तिरछी नज़र से संदेह भरी निगाहों से देखा। मैं उसके चेहरे के हाव-भाव और उससे भी बढ़कर अपनी बेतुकी स्थिति पर हँस पड़ा।

मैं यहाँ एक दवा की दुकान के बाथरूम में खड़ी थी—एक खूंखार पिशाच की तरह—एक बड़ी सी एरिजोना टी-शर्ट, काली स्ट्रेच पैंट और तलवों पर धूप का चश्मा पहने छिपकलियों वाली चप्पलें पहन रही थी। मैं हास्यास्पद लग रही थी, लेकिन मैंने गहरी सांस ली और सोचा कि फिलहाल मुझे अपने पर्यटक वाले कपड़ों से ही काम चलाना पड़ेगा।

इस बार जब मैंने दरवाजा खोला, तो मैंने जानबूझकर धीरे से खोलने की कोशिश की। गाय बाहर दीवार से टेक लगाकर खड़ा था और, उसकी आकर्षक सूरत देखकर मैं दंग रह गई थी, फिर भी वह उदास और थका हुआ लग रहा था। उसकी आंखों के नीचे काले घेरे थे और उसके गाल पिचके हुए दिख रहे थे।

मैंने उसके पास जाकर पूछा, "क्या तुमने खाना खा लिया है?"

“मैं ठीक हूँ।” उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे आक्रामक ढंग से दुकान के अंदर ले जाने लगा, मानो वह किसी मिशन पर हो।

“तुम ठीक नहीं लग रहे।” मैंने उसे घूरकर कहा। “मुझे पता चल गया है। तुम्हें खाना चाहिए।”

गाइ ने मुझे ऐसी निगाहों से देखा जो सिर्फ उसी जैसे जिद्दी और अड़ियल आदमी की हो सकती हैं। "मुझे इससे भी ज़्यादा ज़रूरी काम हैं। तुम्हें किसी सुरक्षित जगह पहुँचाने के बाद मैं खाना खा लूँगा।"

“नहीं।” मैंने अपना हाथ उसकी पकड़ से छुड़ा लिया और वह रुक गया, उसके चेहरे पर हैरानी छा गई। “अगर तुम ठीक नहीं हो तो मेरी मदद कैसे कर सकती हो?” मैं उसके लिए कुछ खाना लेने के लिए फ्रिज वाले सेक्शन की तरफ बढ़ी, गाय मेरे पीछे-पीछे चल रहा था। मेरी चप्पलें टाइल वाले फर्श पर खटक रही थीं और मैंने कांच के दरवाजे के हैंडल पर हाथ रखा, लेकिन उसने मुझे मजबूती से पकड़कर रोक दिया।

“रुको,” वह गुर्राया और मैं हैरानी से उसकी तरफ देखने के लिए मुड़ी। उसके होंठों पर मुस्कान आ गई और मेरी बांह पर उसकी पकड़ ढीली हो गई। “इस बार धीरे से।”

जब उसकी उंगलियां मेरी बांह पर फिराईं तो मैं शर्म से लाल हो गई, मेरे पेट में एक अजीब सी गर्माहट दौड़ गई। घबराकर मैंने अपना ध्यान पहले से बने सैंडविचों पर लगाया, और ऐसा दिखावा किया जैसे मुझे गाय की मुस्कान से ज़्यादा प्रोसेस्ड मीट में दिलचस्पी हो। मैंने धीरे से कांच का दरवाज़ा खोला। "तुम्हें हैम पसंद है या टर्की?"

मेरी हठधर्मिता पर उसने अपना सिर हिलाया और मैं समझ गई कि वह अपनी आँखें घुमाने से खुद को रोक रहा था। वह हँसा। "टर्की।"

कैशियर ने हमारे सामान का बिल बनाया और मैंने कांच की दुकान से बाहर झाँका, तभी मुझे पुरुषों

का एक समूह पास आता हुआ दिखाई दिया। सैनिक। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा जब मैंने उनके कंधों पर वही बैज देखा जो गाइ के कंधे पर था। ओह माय गॉड! मेरा शरीर अकड़ गया और मैं अपने पैरों को घसीटने लगी, जिससे गाइ ने मेरी तरफ देखा और बाहर खड़े समूह को देखा। उन्हें देखते ही उसका जबड़ा कस गया।
कैशियर ने उसे उसका बकाया और एक बैग दिया। वह मेरी ओर झुका और बोला, "बस सामान्य व्यवहार करो।"
सामान्य? मैंने घबराहट भरी हंसी को मुश्किल से रोका। एक पिशाच जो मुश्किल से अपने शरीर पर नियंत्रण रख पाती है, और तो और जिसने अभी-अभी किसी को मारा है, वह अपने कट्टर दुश्मनों के सामने सामान्य व्यवहार कर रही है? बिलकुल आसान।
मैं गाय के पीछे-पीछे निकास द्वार की ओर बढ़ा, लेकिन जैसे ही सैनिक दुकान में दाखिल हुए, वे हमसे वहीं मिले। उसे देखते ही वे रुक गए और एक तरह का अभिवादन किया, उनकी तीन उंगलियां उनके बाएं कंधे पर स्थिर थीं। एक लंबा, दुबला-पतला सैनिक उससे बात करने लगा।
“कैप्टन स्टोन।”
गाइ ने सिर हिलाया। "आराम से।" उसकी तीखी आवाज़ सुनकर मेरा मन किया कि मैं ज़मीन पर लेट जाऊं और उसे बीस पुशअप्स करके दिखा दूं। उसकी बात सुनकर उन आदमियों ने अपने हाथ नीचे कर लिए।
गाइ ने मुझे पहले बताया था कि वह एक कप्तान है, लेकिन उसे नेतृत्व की अपनी स्वाभाविक भूमिका में देखकर मुझे जो सदमा लगा, वह कम नहीं हुआ। इतनी कम उम्र में भी उसने सैनिकों के सामने एक अनुभवी व्यक्ति की तरह कमान संभाली और अपनी उपस्थिति से सबको स्तब्ध कर दिया।
उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, लेकिन इससे पहले कि हम भाग पाते, उस लंबे आदमी ने फिर से बोलना शुरू किया। "क्या तुम..." उसकी निगाहें सतर्कता से मेरी ओर घूमीं, "पिछली रात की सभा में थे?"
गाय ने मेरी ओर मुड़ा, उसकी आवाज़ धीमी और कर्कश थी। "क्या आप हमें थोड़ी देर के लिए माफ़ करेंगे?"
मुझे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि वे मुझसे दूर, एकांत चाहते थे। "ओह, हाँ। बिल्कुल।" मैं झिझकते हुए ग्रीटिंग कार्ड्स की ओर बढ़ा और उन्हें पलटने का नाटक किया।
“क्या तुम कल रात पुराने गोदाम में निगरानी कर रहे थे?” सिपाही ने अपना सवाल जारी रखा, यह सोचकर कि मैं बहुत दूर हूँ और सुन नहीं पाऊँगा। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मेरी सुनने की शक्ति किसी पिशाच से भी कहीं ज़्यादा तेज़ थी और मैंने तिरछी नज़र से उन दोनों को देख लिया।
“हमने सुना था कि वहाँ खून-खराबा हुआ था,” एक और सैनिक ने कहा, मानो कोई शर्मनाक राज़ बता रहा हो। “लगभग तीस वैम्पायर और चार चुड़ैलें, सब के टुकड़े-टुकड़े हो गए।”
उसके शब्दों से मेरे शरीर में एक भयानक गर्मी दौड़ गई, मेरी उंगलियां और पैर की उंगलियां बेचैनी से जलने लगीं। मैं उस रात में वापस नहीं जाना चाहती थी, उस यातना को याद नहीं करना चाहती थी जो मैंने झेली थी। और मैं उन सभी लोगों के बारे में भी नहीं सोचना चाहती थी जिन्होंने इतना कष्ट सहा था।
लंबे कद के सिपाही ने अपनी निगाहें मुझ पर टिका दीं, उसकी आँखें मुझे सिर से पैर तक देखती हुई मेरी पीठ पर आकर रुक गईं, फिर वह हँस पड़ा। "लोग कहते हैं कि आग लगने पर वे दुष्ट सूअर मरते हुए सूअरों की तरह चीखते हैं।"
शायद डर या गुस्सा मेरे शरीर को प्रतिक्रिया करने के लिए उकसा रहा था, लेकिन किसी भी तरह से

मेरी पिशाच जैसी इंद्रियां तीस मंजिला इमारत में लिफ्ट की तरह मेरे शरीर पर चढ़ गईं। मैं सैनिकों के खून की गंध उनकी नसों में महसूस कर सकता था और मैंने उस लंबे आदमी की गर्दन में धड़कती हुई बड़ी बैंगनी नस की एक झलक देखी। उससे भयानक बदबू आ रही थी। मैंने अपनी मुट्ठियां भींच लीं मानो इससे मुझे शांत रहने में मदद मिलेगी, लेकिन वह बदतमीज़ आदमी बोलता रहा, उसकी आवाज घिनौनी थी, बिल्कुल उसके व्यक्तित्व की तरह।

"यह बहुत बुरा है कि ये नुकीले दांत फट जाते हैं, वरना इस समय तक मेरे पास कम से कम एक दर्जन मेरी दीवार पर लगे होते।"

और जैसे मेरी आँखों के सामने लाल पर्दा पड़ गया हो, मुझे गुस्सा आ गया। ऐसा नहीं था कि मुझे अपने जैसे लोगों से कोई लगाव था, क्योंकि मैं तो बस चौबीस घंटे से ही पिशाच बना था, लेकिन उस आदमी के बोलने का तरीका मुझे इतना क्रोधित कर गया कि मैं उसे चोट पहुँचाना चाहता था, उसे मार डालना चाहता था। मेरे मुँह से एक फुफकार निकली और इससे पहले कि मुझे पता चलता कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैं उस पर झपटा, मेरा शरीर अपने आप ही हरकत करने लगा।

उस बदमाश से बस कुछ ही कदम दूर, मेरे नुकीले दांत मुंह में बाहर निकले हुए थे, उसकी कोमल देह को चीरने के लिए तैयार। लेकिन गाय की फुर्तीली प्रतिक्रियाओं ने मुझे बीच में ही रोक दिया और मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने मुझे पीछे की ओर झुकाकर उत्तेजक आलिंगन किया, उसके होंठ मेरे होंठों से टकराए और मेरे नुकीले दांत छिप गए। सदमे से मेरी सांसें अटक गईं और मेरा गुस्सा गर्म फुटपाथ पर पिघलती बर्फ की तरह पिघल गया। उसके होंठों के स्पर्श से मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई। मेरे शरीर के हर बाल खड़े हो गए और चुंबन की तीव्रता से मेरी त्वचा पर दाने निकल आए। जब उसकी जीभ मेरे मुंह में आई तो मेरे नुकीले दांत अंदर चले गए, एक गर्म आनंद की लहर मेरे पूरे शरीर में दौड़ गई। उसने मुझे वहीं, उसके खुले हुए स्तनों के सामने, बेदम कर दिया था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस बारे में कैसा महसूस करूं।

“शाबाश कप्तान!” सैनिकों ने उनका उत्साहवर्धन किया और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उसके होंठ मेरे होंठों से अलग हुए, जिससे मेरी सांस फूलने लगी और मेरे होंठ सूज गए और उनमें झुनझुनी होने लगी। उसने मेरे कान में फुसफुसाया, "शांत रहो और अपना मुंह बंद रखो, वरना हम दोनों इस दुकान से निकलने से पहले ही मर जाएंगे।" उसने मुझे खड़ा किया और घूर रहे आदमियों की तरफ मुड़ गया।

“हम जा रहे हैं,” उसने तीखे और आदेशात्मक लहजे में कहा। सैनिकों ने फिर से सलामी दी और उसने मुझे उनके चारों ओर घुमाकर दरवाजे से बाहर निकाल दिया। ठंडी रात की हवा मेरे चेहरे पर लगी, जिससे मेरी लाल त्वचा को आराम मिला, और तभी मुझे एहसास होने लगा कि मैंने कितनी बड़ी गलती कर दी है। और गाइ निश्चित रूप से मुझसे नाराज़ लग रहा था क्योंकि मैंने लगभग हमारा भेद खोल दिया था। माहौल को हल्का करने की इच्छा को दबा न पाने के कारण, मैं उसकी ओर मुड़ी और मीठी मुस्कान दी।

"कैप्टन स्टोन, आपको पता है, मैं आमतौर पर पहली डेट पर किस नहीं करती।"

गाइ जम गया, उसके कान लाल हो गए, और एक पल के लिए मुझे लगा कि वह गुस्से, शर्मिंदगी या दोनों के मिश्रण से फट पड़ेगा। लेकिन इसके बजाय, उसने मुझे घूरकर देखा और घुरघुराया। उसने मुझे कंक्रीट से खींचकर मिट्टी पर गिरा दिया और उस सुनसान इलाके की ओर चल पड़ा।

हाँ, रोमांटिक पहले चुंबन की तो बात ही छोड़ो।

“इसीलिए तुम्हें मेरी बात माननी होगी।” गाय ने मेरे सामने सैंडविच का थैला हिलाया, उसकी भौंहें तनकर एक सीधी रेखा में खिंची हुई थीं। “बाल-बाल बच गए।”

उस बदतमीज़ सिपाही के प्रति अपनी आवेगपूर्ण प्रतिक्रिया पर शर्मिंदा होकर मैं शर्म से लाल हो

गई। और फिर यह एहसास होने पर मेरी शर्म और भी बढ़ गई कि पिशाच भी शरमा सकते हैं और गाइ शायद मेरे गालों पर शरमाहट का निशान देख सकता था। लेकिन मैं अपनी शर्म को रोक नहीं पाई। दवा की दुकान में मेरे साथ जो हुआ था, वह मिशन पर मेरे गुस्से से कुछ ज़्यादा अलग नहीं था, मेरे अंदर का एक अनियंत्रित, उग्र रूप सामने आ गया था।

और मुझे लगा कि गाय ने मुझे सिर्फ मेरे नुकीले दांत छिपाने के लिए चूमा था। लेकिन मैंने अपने सूजे हुए होंठों को छुआ, यह सोचते हुए कि कहीं इसके पीछे कोई और वजह तो नहीं है। मैं उसके चुंबन से अभी भी अपने अंदर दौड़ रही गर्म खुशी को नज़रअंदाज़ नहीं कर पा रही थी और मेरे मन का एक हिस्सा सोच रहा था कि शायद उसे भी ऐसा ही महसूस हो रहा हो। चाहे उसे हो या न हो, वह बहुत बेचैन था, चांद की हल्की रोशनी में उसके कंधे तन गए थे। मैंने अपना सिर हिलाया, मानो उसके लिए अपने अंदर उमड़ रही वासना को दूर भगाने की कोशिश कर रही हो, लेकिन इससे कोई खास फायदा नहीं हुआ।

हम रेगिस्तान में पैदल चलते रहे, हमारे सामने उगते चाँद की रोशनी के अलावा और कोई मार्गदर्शक नहीं था। मैंने देखा कि छोटे-छोटे जीव छिपते-छिपते इधर-उधर भाग रहे थे, ऐसा कुछ जो गाय नहीं देख सकता था।

मैंने पूछा, "हम दोबारा कार से क्यों नहीं जा सकते?"

“कल रात की लड़ाई के कारण कई चेक प्वाइंट होंगे। हम जोखिम नहीं ले सकते। अभी नहीं।”

झींगुरों की तीखी आवाज़ मेरे कानों में चुभ रही थी, लेकिन मेरी सुनने की क्षमता अब पहले से ज़्यादा बढ़ चुकी थी। मैंने बगल में देखा और चलते हुए गाय के कपड़ों के नीचे उसकी मांसपेशियों को हिलते हुए देखा। एक बार फिर शर्म से लाल होकर, मैंने जल्दी से अपनी नज़रें उसके चेहरे पर उठाईं।

"हम कहाँ जा रहे हैं?"

“यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक ब्लड बैंक है। आपको जल्द ही भोजन की आवश्यकता होगी।”

गाइ के शब्दों से मेरा पेट मरोड़ उठा और पल भर के लिए उसके प्रति मेरा आकर्षण मिट गया। खून पीने का ख्याल आते ही मुझे उल्टी आने लगी। लेकिन मैं अपने अंदर बढ़ती भूख को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी। गाइ सही कह रहा था; मुझे आखिरकार खून पीना ही पड़ेगा। हम एक पुराने, सूखे नदी के किनारे से गुज़रे, जहाँ एक लावारिस कार पड़ी थी। गाइ ने टॉर्च निकाली और अंदर झाँका। उसने सिर हिलाया और आगे बढ़ गया।

मैं उसके बारे में सोच रही थी और यह जानने की कोशिश कर रही थी कि हमारी इस मुश्किल स्थिति में वह मेरे बारे में क्या सोच रहा होगा। उसके चेहरे पर जो डर मैंने पहले महसूस किया था, वह अब नहीं था। और चूंकि चांदी की हथकड़ियां मुझ पर पहले काम नहीं कर पाई थीं, इसलिए उसने मुझे उस पर हमला करने से रोकने के लिए कोई सावधानी नहीं बरती थी। मुझे पता था कि मैं उसे कभी चोट नहीं पहुंचाऊंगी, लेकिन क्या उसे यह पता था? हम बैरल कैक्टस के एक झुंड से बचते हुए मुड़ गए।

मैंने मन ही मन सोचा, "अब तुम मुझसे क्यों नहीं डरते?"

उसकी ठुड्डी थोड़ी फड़क उठी, मानो वह सोच रहा हो कि क्या मैं उसके मन की बात पढ़ रहा हूँ, लेकिन पल भर में ही उसका आश्चर्य गायब हो गया और वह फिर से अपने सामान्य, कठोर भाव में लौट आया। "अगर तुम मुझे मारना चाहते, तो अब तक मार चुके होते।"

उसके ठंडे जवाब पर मैंने अपना सिर झुका लिया, यह सोचते हुए कि शायद मेरे प्रति उसकी हालिया सहजता का कारण यह था कि मैंने अभी तक उसे मारा नहीं था, लेकिन जाहिर तौर पर ऐसा नहीं था। मैंने अपनी नज़रें सामने के पथरीले इलाके पर टिकाए रखीं और कुछ क्षणों बाद, मुझे

गाय की नज़रें अपने ऊपर महसूस हुईं। उसने एक गहरी साँस छोड़ी और लगभग फुसफुसाते हुए बोला।

“और… तुमने मेरी जान बचाई।” मैं मुस्कुराई, यह जानते हुए कि उसके लिए यह स्वीकार करना मुश्किल था कि एक पिशाच ने उसकी जान बचाई थी— वह भी एक किशोरी पिशाच।

“क्या?” मैंने पूछा, मानो मैंने उसे सुना ही न हो। मुझे अंदाज़ा था कि वह और ज़्यादा प्रतिक्रिया देगा, इसलिए मैं उसके और करीब झुक गई। “तुमने क्या कहा? मैंने सुना ही नहीं।”

उसने मुझे चिढ़ भरी नज़रों से देखा, उसे अच्छी तरह पता था कि मैंने उसकी बातें सुन ली हैं। "तुमने मेरी जान बचाई," उसने फिर से धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन इस बार थोड़ी साफ़। उसने ज़ोर से साँस छोड़ी और अपनी उंगलियों से अपने काले बालों को सहलाया। "मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं किसी पिशाच के बारे में ऐसा कहूँगा, लेकिन मुझे लगता है कि मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ। मुझे पता है, यह अजीब लगता है।"

मैं मुस्कुराई, यह सोचकर कि शायद कैप्टन इम्पॉसिबल आखिरकार अपने खोल से बाहर आ ही रहा है। जैसे ही हम नाले के किनारे से होते हुए एक चौड़े मेस्क्वाइट पेड़ के पास से गुजरे, मैंने उसे एक नज़र देखा। "यह पागलपन नहीं है। और तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो। वैसे भी, मुझे तुम्हारी गंध अच्छी नहीं लगती।" उसने मुझे तीखी नज़र से देखा।

मैं हंसते हुए पीछे हट गई। "मेरा मतलब है, आपकी खुशबू बहुत अच्छी है। सच में, बहुत अच्छी है। बस... खाने जैसी नहीं।"

उसने नाक सिकोड़ी। पर यह सच था। उसकी गंध इतनी मोहक थी, जैसे किसी पुरुष की गंध किसी स्त्री को मोह लेती है; एक कस्तूरी जैसी, चमड़े की महक से भरी खुरदरी सी गंध, जिससे मेरे पेट में गुदगुदी होने लगी और मेरे पैर कांपने लगे। पर उसकी गंध उस दूसरे पिशाच जैसी नहीं थी, जो कल रात मुंह में पानी ला देने वाली और तृप्त करने वाली थी। अचानक, गाय जोर से हंस पड़ा, मानो किसी निजी मजाक पर हंस रहा हो।

“क्या?” मैंने मुस्कुराते हुए पूछा।

“कुछ नहीं।” उसने अपना सिर हिलाया और मुझे एक नीची शाखा के नीचे ले जाने के लिए मेरी पीठ पर हाथ रखा। उसकी हथेली मेरी कमर के निचले हिस्से के उभार पर फिसल गई और उसके स्पर्श से मेरी त्वचा में झुनझुनी सी महसूस हुई।

“नहीं, क्या बात है?” मैंने पूछा, यह सोचते हुए कि उसे किस बात पर इतनी हंसी आ रही है। मैंने अपनी नज़रें ज़मीन पर टिकाए रखीं, उसके लिए अपने अंदर उमड़ रही चाहत को छिपाने की कोशिश करते हुए।

गाय ने अपनी पीठ पर रखा बैग ठीक किया। “तुम… फेथ, कुछ अलग ही हो। तुम बाकियों से अलग हो।”

मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ीं, सोच रही थी कि यह तारीफ थी या महज़ एक टिप्पणी। चाहे जो भी हो, इससे मुझे एक गर्माहट महसूस हुई, उसकी नज़दीकी से मेरी त्वचा में एक सुखद झनझनाहट हुई। मुझे पता था, भले ही कुछ पल के लिए ही सही, मेरा कोमल हृदय फिर से जागृत हो गया था, और मैंने अपना हाथ उसके हाथ में डालने की इच्छा को दबा लिया, हमारी उंगलियों को आपस में मिलाने की चाहत को भी। मुझे तुरंत दुकान में उसके द्वारा दिए गए अचानक चुंबन की याद आ गई और चाहे वह सिर्फ़ दिखावा ही क्यों न हो, मेरे शरीर में ऐसी गर्माहट फैल गई मानो वह सब फिर से हो रहा हो। मैंने अपने होंठों को सिकोड़कर एक गहरी साँस ली, मानो अपने अंदर उमड़ रहे विचारों को दूर भगा रही हो।

हम लगभग पूरी रात पैदल चलते रहे, और मैं गाय की अदम्य सहनशक्ति देखकर दंग रह गया। वह

मर्दानगी का साक्षात उदाहरण था, और अगर मैं असाधारण शक्ति वाला पिशाच न होता, तो मेरे लिए उसके साथ चलना मुश्किल होता।
कुछ ही देर में हम एक विशाल, निर्मल दिखने वाली इमारत के पास पहुँचे, जो ऊँची जालीदार बाड़ से घिरी हुई थी, जिसके ऊपर कांटेदार तार लगे हुए थे। हम ताले लगे गेट पर रुके और गाय ने अपना बैग और हथियार ज़मीन पर रख दिए। उसने मेरी तरफ देखा, चाँदनी में उसकी स्लेटी रंग की आँखें चमक रही थीं।
"याद है जब तुमने अपनी हथकड़ी तोड़ दी थी और मिशन का दरवाजा तोड़ दिया था?"
मैंने सिर हिलाया, यह सोचते हुए कि मैं कैसे भूल सकता हूँ।
“मुझे अभी इसी वक्त आपसे यह काम करवाना है।” उसने हमारे सामने लगी बाड़ की ओर देखा।
मैंने प्रवेश द्वार के चारों ओर स्टील के सांप की तरह लिपटी हुई जंजीर का भी निरीक्षण किया। दोनों फाटकों को एक साथ जोड़ने के लिए बेसबॉल के आकार का एक ताला लगा हुआ था।
“ठीक है...” मैंने हिचकिचाते हुए कहा। हाँ, मैंने अपनी शक्ति साबित कर दी थी, लेकिन क्या मैं अपनी उस शक्ति को इच्छानुसार केंद्रित कर सकती थी? मुझे यकीन नहीं था।
मुझे शक था, फिर भी मैंने ताले के दोनों ओर लगी चेन को पकड़ा और खींचा। मैं उसमें तनाव महसूस कर सकता था, उसके छोटे-छोटे पुर्जे खिंच रहे थे, फिर भी वह नहीं टूटी। मैंने और ज़ोर से खींचा, पर भी वह नहीं टूटी। हताशा में मैंने अपने हाथ नीचे कर लिए और एक गहरी आह भरी।
मैं यह नहीं कर सकता।
“हाँ, तुम कर सकते हो।” गाय हमारे करीब आया और मेरे कंधे पर हाथ रख दिया। उसके स्पर्श से मेरी साँस अटक गई और वह मेरे और करीब झुक गया। “मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है। कल रात जब तुमने उस पिशाच को मारा, तो तुम्हें कैसा महसूस हुआ?”
मैंने उसकी तूफानी आँखों में देखा और मुझे वहाँ अपना ही प्रतिबिंब दिखाई दिया। मैं खुद को पहचान ही नहीं पा रही थी; बर्फ जैसे हल्के बाल और बैंगनी आँखें। लेकिन मेरा ध्यान फिर से गाय पर केंद्रित हो गया, मेरी अपनी परछाईं धीरे-धीरे गायब हो रही थी। “मैं... मैं डरी हुई थी। और गुस्से में भी।”
“अच्छा।” गाय के होंठों पर मुस्कान फैल गई। “और इसी वजह से तुम आसानी से अपनी हथकड़ी तोड़ पाए, है ना?”
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
“ज़ाहिर है, भावना ही तुम्हें प्रेरित करती है।” उसने अपनी उंगली से ताले पर टैप किया। “अपनी उस भावना को यहीं केंद्रित करो।”
गाय पीछे हट गया और मैंने गहरी सांस ली, अपने हाथों को वहीं रखा जहां वे पहले थे। मैंने पिछले कुछ हफ्तों की हर भावना को अपने अंदर आने दिया— डर, गुस्सा, अपराधबोध, प्यार, नफरत और सबसे बढ़कर, बदला। एक बार जब मैंने उन भावनाओं को महसूस किया, तो वे शक्तिशाली भावनाएं बिजली की गति से और हजारों सूर्यों की आग की तरह मेरे अंदर दौड़ गईं।
और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती, दोनों द्वार पलक झपकते ही खुल गए, धातु और जंजीर के टुकड़े ज़मीन पर बिखर गए। मैं चौंक गई, गाय की सहमति के लिए उसकी ओर देखा और मुझे खुशी हुई कि उसने सिर हिलाया और मुस्कुराया।
“अब चलो अंदर चलते हैं और जल्दी बाहर आते हैं।” उन्होंने मेरी ओर हाथ बढ़ाया और जिस कोमल तरीके से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, वह देखकर मैं दंग रह गई, जबकि वे अक्सर ऐसा करते थे। हमारे स्पर्श से लेकर पूरे शरीर में एक सुखद गर्माहट दौड़ गई।
एक आँख मारकर, जिससे यह ज़ाहिर हो गया कि वह जितना दिखा रहा था उससे कहीं ज़्यादा मुझे

पसंद करता था, गाय ने मुझे गेट से होते हुए इमारत के दरवाज़े तक जाने के लिए कहा। उसने एक पतला सा कार्ड दरवाज़े के बीच में सरका दिया और उसे हिलाया-डुलाया। दरवाज़ा आसानी से खुल गया और हम दोनों ने राहत की मुस्कान बिखेरी।

“वाह, यह तो आसान था।” मैं सुविधा केंद्र में दाखिल हुआ, गाय मेरे ठीक पीछे था।

"मुझे आश्चर्य है कि यहाँ कोई अलार्म नहीं है," उसने जगह का जायजा लेते हुए सोचा। "यहाँ बहुत शांति है।"

अचानक, इमारत में एक तेज हॉर्न की आवाज गूंजी, मानो वह हमारी मूर्खता का मजाक उड़ा रही हो।

"या नहीं।" लगातार बज रहे चेतावनी संकेत से मेरे अंदर दहशत दौड़ गई।

“धत् तेरे की।” गाय का जबड़ा कस गया। “इधर।”

हम दरवाजों के एक और सेट से तेजी से निकले और एक लंबे, ठंडे गलियारे में आगे बढ़े, गाय दाएं-बाएं दरवाजे खोलता हुआ अपना सिर अंदर झाँक रहा था।

“यहाँ।” वह बाईं ओर के आखिरी दरवाजे से अंदर घुस गया और मैं उसके पीछे-पीछे चल दिया। एक बड़ा सा धातु का रेफ्रिजरेटर पूरी दीवार को घेरे हुए था और जब गाय ने उसे खोला, तो उसमें संरक्षित रक्त से भरी थैलियाँ थीं। उसने पास ही रखा एक गद्देदार कूलर उठाया और उसमें मुट्ठी भर थैलियाँ भर दीं।

जैसे ही वह जगह भर गई, हम दरवाज़े से अंदर गलियारे में घुस गए, जहाँ एक सुरक्षा गार्ड हमारा इंतज़ार कर रहा था। वह हमें देखकर उतना ही हैरान था जितना हम उसे देखकर। उस आदमी ने उसके चेहरे पर एक ज़ोरदार मुक्का मारा और गार्ड धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा, ऐसा लगा जैसे वह बेहोश हो गया हो। जैसे ही हम उस जगह से भागे, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और मैं उस एहसास के बारे में सोच रहा था। वाह, पिशाचों के पास भी दिल होता है। थोड़ा फिल्मी है, मुझे पता है, लेकिन एक सच्ची अनुभूति है।

लेकिन मेरा चिंतन ज़्यादा देर तक नहीं चला, तभी एक हाथ बढ़ा और मेरी कमीज़ के पीछे से पकड़कर मुझे वहीं रोक दिया। मैं मुड़ा और मेरी नज़र एक दूसरे सुरक्षा गार्ड से मिली, जिसकी गर्दन गुस्से से कांप रही थी। मैंने उसे बांहों से पकड़कर अपने ऊपर से फेंक दिया, उसका शरीर सामने के दरवाज़ों से टकराया और दरवाज़े ऐसे टूट गए जैसे चांदनी में बर्फ के टुकड़े बिखर रहे हों। अलार्म की आवाज़ के साथ एक तेज़ लाल बत्ती जली, जिससे गाय का हैरान चेहरा साफ दिखाई दिया, जो मैंने किया था। मैंने नाक सिकोड़ी। "ऊप्स।"

गाइ ने मुझे ऐसे देखा जैसे मुझमें सींग उग आए हों, और मैं उसे दोष नहीं दे सकता था। मेरी तरह, उसे भी अब जाकर मेरी ताकत का एहसास हो रहा था। एक पल के सदमे के बाद, वह हँस पड़ा। "चलो यहाँ से निकल चलते हैं।"

मैंने सहमति में सिर हिलाया। "चलो।"

चौदह: रूबी

ब्लड बैंक से भागते समय मेरा दिमाग चकरा रहा था। जैसे-जैसे हम रेगिस्तान में आगे बढ़ते गए, अलार्म की आवाज़ धीमी होती गई। यह समझना मुश्किल था कि हमने अभी क्या किया है, मैंने अभी क्या किया है। मैं न केवल एक डकैती में सहयोगी था, बल्कि जिस आसानी से मैंने गार्ड को कांच के दरवाजों से बाहर फेंक दिया था, वह मेरे लिए अविश्वसनीय था, फिर भी मैं यही उम्मीद कर रहा था कि मैंने कोई बड़ा नुकसान न पहुंचाया हो।

मेरा दिमाग तेज़ी से सोचने लगा, वैसे ही मेरे पैर भी मुझे अंधेरे में दूर ले गए, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। पलक झपकते ही गाय गायब हो गया और मैंने खुद को एक पथरीली पहाड़ी पर अकेला और हांफता हुआ पाया। मैं उलझन में चारों ओर देखने लगा।

धत् तेरे की! मैं अभी अपनी ही रफ़्तार का आदी नहीं हो रहा था और जल्दबाज़ी में कम से कम तीस गज आगे निकल गया था। मुझे अचानक गाइ की याद आई और मैंने अपनी रफ़्तार धीमी कर ली ताकि उसके साथ चल सकूँ।

“तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो?” उसने नाटकीय अंदाज़ में अपनी छाती पर हाथ रखते हुए धीमी आवाज़ में पूछा। “मुझे दिल का दौरा दिलाना चाहते हो?”

उसकी प्रतिक्रिया देखकर मुझे हल्की सी हंसी आ गई। बाल-बाल बचने का सदमा धीरे-धीरे कम होने लगा, तो हम कम से कम एक घंटे तक चुपचाप साथ चलते रहे, विचारों में डूबे हुए। चांद आसमान से निकलकर रेगिस्तान के क्षितिज के करीब आ रहा था, जो भोर होने का संकेत दे रहा था। लेकिन सूरज उगने के उस खूबसूरत नज़ारे से नज़रें हटाने की इच्छा ने मुझे रोक दिया। गाय मुझे छोड़कर आगे बढ़ गया।

"चलो राजकुमारी।"

मैं उसकी टिप्पणी से अचंभित होकर अपना चेहरा सिकोड़ लिया।

“राजकुमारी?” मैंने अपमान भरे स्वर में दोहराया, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे यह विचार कैसे आया कि मैं इस नाम की हकदार हूँ।

गाइ एक पल के लिए रुका और पीछे मुड़कर देखा, बेचैनी से उसका जबड़ा फड़क रहा था। "बस... चलो जल्दी चलते हैं।" वह आगे बढ़ गया।

“नहीं।” मैं दृढ़ता से खड़ी रही, जिससे वह फिर रुक गया। मेरे गाल लाल-गरम धातु की तरह लाल हो गए। “आपने मुझे राजकुमारी क्यों कहा?”

उसने मुझे जिस नाम से पुकारा, उससे मैं उलझन में पड़ गई। हमारे साथ बिताए समय में, मैं कई तरह से पेश आ चुकी थी, लेकिन एक राजकुमारी होना तो आखिरी बात थी जो मेरे दिमाग में आई।

गाइ ने गहरी सांस ली और अपने थके हुए चेहरे पर उंगलियां फेरते हुए कहा, "कुछ नहीं था। चलो चलते हैं।"

मैंने अपना सिर हिलाया, गुस्सा मेरे शांत मुखौटे को भेदने की कोशिश कर रहा था। "यह मामूली बात नहीं है। मैं जानना चाहता हूँ कि तुमने मुझे ऐसा क्यों कहा?"

गाय हांफते हुए मेरे पास वापस आया। "मेरा मतलब बुरे इरादे से नहीं था। बस... मरने से पहले तुम मुझे उन लड़कियों जैसी लग रही थीं..."

मेरा चेहरा सदमे से सिकुड़ गया, मानो किसी ने मेरे पेट में छुरा घोंप दिया हो। "उन लड़कियों में से एक? और तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
"तुम इसे गलत समझ रही हो, फेथ। चलो, हमें आज कहीं जाना है।" उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, लेकिन मैंने चिढ़कर अपना हाथ उसकी पकड़ से छुड़ा लिया।
"मुझे ऐसा नहीं लगता। जब तक तुम अपनी बात स्पष्ट नहीं कर देते, मैं तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाऊंगी। 'राजकुमारी' से तुम्हारा क्या मतलब था?"
गाय ने सिर हिलाया और धीरे से सांस ली। "तुम मुझे एक सुख-सुविधाओं से भरी लड़की लगी। एक आदर्श परिवार। तुम्हारे माता-पिता दोनों जीवित थे। तुम कॉलेज में पढ़ रही थी। जब मैंने तुम्हें देखा, तब तुम्हारे नाखून भी बिल्कुल सलीके से बने हुए थे। मेरा मतलब बस इतना था कि तुम हर तरह से सफल और व्यवस्थित लग रही थी। यह एक तारीफ से ज्यादा कुछ नहीं है।"
आक्रोश मेरे सीने में कोड़े की तरह चुभ उठा और मैंने अपने हाथों को कमर पर कसकर पकड़ लिया, कंधे सीधे करके उसकी ओर देखा। "ओह, और इसी वजह से, तुम्हें लगता है कि तुम मुझे जानते हो? तुम्हें लगता है कि तुम मेरे बारे में कुछ भी जानते हो? खैर, कैप्टन, तुम गलत सोच रहे हो, क्योंकि तुम मेरे आरामदेह जीवन के बारे में कुछ नहीं जानते। तुम मेरे परिपूर्ण परिवार के बारे में कुछ नहीं जानते। इसलिए जानने का दिखावा मत करो।" रेगिस्तान में तेज़ हवा चली, जिससे मेरे गर्म चेहरे के बारीक बाल उड़ने लगे। "क्या तुम्हें पता भी है कि मैं क्यों मरी? इसके पीछे का कारण क्या था?"
गाइ ने अपना सिर हिलाया, मानो उसके चेहरे पर शर्मिंदगी झलक रही हो। लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। मैं गुस्से से आग बबूला होकर आगे बढ़ता रहा।
"मेरे पिता ने मेरी माँ को तब छोड़ दिया था जब वह मुझसे चार महीने की गर्भवती थीं। और मेरे माता-पिता ने यह छोटी सी बात मुझसे पूरी ज़िंदगी छुपाई। उन्होंने मुझसे झूठ बोला। आखिरकार उन्होंने मुझे मेरे अठारहवें जन्मदिन से एक दिन पहले बताया। और आपको क्या लगता है कि उसके बाद क्या हुआ?" मैंने गुस्से भरी निगाहों से उसे घूरते हुए पूछा।
गाइ ने कंधे उचकाए और अपने जूते की एड़ी मिट्टी में गाड़ दी। गुस्से से मेरे दांत भींच गए और मैंने बोलना जारी रखा। "एक घंटे के अंदर ही मेरे बॉयफ्रेंड ने मुझसे रिश्ता तोड़ दिया, मेरी सबसे अच्छी दोस्त से। वो इंसान जिसे मेरा साथ देना चाहिए था। और फिर हद तो तब हो गई जब मैं मर गई। मैंने बारिश में गाड़ी चलाने की बेवकूफी भरी गलती की और मेरी कार एक पेड़ से टकरा गई। और मैं मर गई। और ये सब मेरी गलती थी। मेरी मौत का कारण मैं ही हूँ। मैं ही उस शापित पिशाच में बदलने के लिए ज़िम्मेदार हूँ। मैं परफेक्ट नहीं हूँ और मैं राजकुमारी से कोसों दूर हूँ, कैप्टन स्टोन।"
मैंने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए, मेरे हाथ कांप रहे थे। मुझे लगभग इस बात का बुरा लग रहा था कि मैं उससे इस तरह बात कर रही थी। लेकिन वह मुझे नहीं जानता था, और मैं उसे यह मानने नहीं दूंगी कि वह मुझे जानता है। मैंने अपने गुस्से को काबू में करने की कोशिश में अपनी बाहों को अपनी छाती पर बांध लिया।
गाइ ने पछतावे से अपने पैरों की ओर देखते हुए भौंहें सिकोड़ीं। "मैं... मुझे पता नहीं था..."
मैंने भी नीचे देखा, दवा की दुकान से खरीदी अपनी चप्पलों को घूरते हुए, जिन पर मिट्टी जमी हुई थी। शर्मिंदगी ने मुझे घेर लिया, और मेरा गुस्सा दब गया, यह सोचकर कि गाय ने मेरे लिए पहले ही कितना कुछ किया था, और यह सोचकर कि वह मेरे जीवन के बारे में नहीं जानता होगा। वह नहीं जानता होगा कि इस मुकाम तक पहुँचने के लिए मुझे किन-किन मुश्किलों से गुज़रना पड़ा था। मेरी ही तरह, उसके अतीत के बारे में बस थोड़ी-बहुत जानकारी होने के कारण, मैं उसे पूरी तरह नहीं जानती थी। मैंने एक गहरी साँस ली, और अपनी सारी भड़ास को साँस के साथ बाहर निकाल

दिया। मैंने उसकी आँखों में देखा।
“बेशक आपको पता नहीं था। मैंने आपको कभी बताया ही नहीं।”
“देखो, फेथ…” सावधानी से गाइ मेरे करीब आया। “मुझे माफ़ करना। मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।” उसने धीरे से अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा, जैसे किसी घायल जानवर को रखते हैं। उसकी खुरदरी उंगलियों के स्पर्श से मेरी त्वचा में गर्माहट दौड़ गई और मैंने मुस्कुराते हुए उसका हाथ थाम लिया।
कोई बात नहीं। मैंने जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दे दी। बस... ये सब कुछ...
“पागलपन,” हम दोनों ने एक साथ कहा। हमारी नज़रें मिलीं और हम हँस पड़े। गाय ने अपनी बांह मेरी कमर में डाली और मुझे अपनी तरफ खींच लिया। उसकी सांसें मेरे कानों को गुदगुदा रही थीं।
"क्या कहते हो, हम कोई ऐसी जगह ढूंढें जहाँ तुम वैम्पायर पोटैटो चिप्स में न बदल जाओ?"
“अच्छा लगा।” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। “लेकिन अगर मैं चिप्स बन जाऊं, तो उम्मीद है कि वो बारबेक्यू चिप्स हों। मुझे बारबेक्यू चिप्स सबसे ज्यादा पसंद हैं।”
गाय ने नाक सिकोड़ी और हम दोनों हाथ में हाथ डालकर उस जगमगाते क्षितिज से दूर पहाड़ों की ओर चल पड़े। मैंने बगल में देखते हुए सोचा कि उससे बिछड़ने से पहले मेरे पास उसके साथ कितना समय होगा—क्योंकि मुझे पता था कि ऐसा होना तो तय था। लेकिन मेरे लिए, कोई भी समय बहुत जल्दी था।

पंद्रह: रूबी

एक घंटे के भीतर, गाय और मैं एक जर्जर एक मंजिला इमारत तक पहुँच गए। और यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि सूरज पहाड़ों के ऊपर से निकलने ही वाला था। हमारे सामने एक टिमटिमाती हुई नियॉन साइनबोर्ड खड़ी थी। उस पर चमक रहा था, 'द लेज़ी मोटेल'।

"यहीं रुको।" गाय इमारत के अंदर चला गया, मुझे पार्किंग में अकेला छोड़कर। पूरब की ओर, आसमान गुलाबी और बैंगनी रंग का हो गया था, मानो रात के झटकों से घायल हो गया हो, और यह स्पष्ट था कि हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा था।

मैं सोच रही थी कि अगर मैं अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को अनसुना करके सूर्योदय देखने के लिए रुक जाऊं तो क्या होगा। क्या तेज़ धूप से मेरी त्वचा पिघल जाएगी? क्या मैं तुरंत आग की लपटों में जल जाऊंगी? मुझे यह जानने की एक अजीब सी तीव्र इच्छा हो रही थी, शायद इसलिए कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। अपने मानवीय जीवन में, मैंने हमेशा वही किया था जो मुझसे करने को कहा गया था, नियमों का पालन किया था। लेकिन तब से मैं बदल गई थी, अब ज़्यादा साहसी हो गई थी। शायद मृत्यु इंसान को ऐसा ही बना देती है।

गाय चाबी लेकर फिर प्रकट हुआ और मेरे परेशान करने वाले विचारों से मुझे बाहर निकाला। उसने मुझे संपत्ति के उत्तरी छोर पर स्थित हमारे कमरे तक पहुँचाया, जो एक पुराने ज़माने की सोडा वेंडिंग मशीन के बगल में था।

अंदर घुसते ही उसने ब्लैकआउट पर्दे खींच दिए और दरवाज़ा बंद कर दिया। कमरे के बीचोंबीच एक बड़ा सा बिस्तर था, जिसके बगल में एक डेस्क और कुर्सी रखी थी। एक छोटी सी अलमारी के ऊपर एक पुराना सा टीवी रखा था और कमरे के कोने में एक पीतल का लैंप लटका था, जिसकी पीली रोशनी गाय के चेहरे पर पड़ रही थी। कमरे में ग्रिल्ड चीज़ और कपूर की महक आ रही थी। वाह!

"मैं नहाने जा रहा हूँ।" गाय ने अपना बैग और हथियार मेज पर रख दिए। जैसे ही उसने बाथरूम में खुद को बंद किया, मैं भी ऊबड़-खाबड़ बिस्तर पर बैठ गया। मैं लेट गया और पॉपकॉर्न डिज़ाइन वाली छत को निहारने लगा, यह सोचकर कि आखिर मैं इस मुसीबत में कैसे फंस गया।

महज दो रातों में मैंने अपना परिवार, अपना प्रेमी और अपनी ज़िंदगी खो दी थी। और सबसे बुरी बात ये थी कि मुझे पता था कि मैं अब वापस नहीं लौट सकती। दुख मुझमें ऐसे उमड़ रहा था जैसे कोई पका हुआ फल। एक याद कौंध गई, मेरे पूर्व प्रेमी जॉन की आवाज़ धुंध को चीरती हुई सुनाई दी। मैं तुरंत उस रात में पहुँच गई, मेरी मौत की रात...

"रूब्स..." जॉन ने आह भरी, उसकी सांसों की आवाज फोन के स्पीकर से सुनाई दे रही थी। "मुझे एएसयू में दाखिला मिल गया है। मैं कल हॉस्टल देखने जा रहा हूँ।"

मेरा दिल बैठ गया। "लेकिन..."

"यह मेरे लिए बेहतर है। यह एक बेहतर छात्रवृत्ति है। कुछ बेहतरीन पेशेवर फुटबॉल खिलाड़ी एएसयू से भर्ती होते हैं। मैं बस... इसे ठुकरा नहीं सकता।"

मैंने फोन को इतनी जोर से पकड़ा कि मेरी उंगलियों के जोड़ दुखने लगे। मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था, लेकिन मैंने गहरी सांस ली और खुद को संभाला। मुझे धुंधला-सा याद है कि मैंने कोई हल

निकालने की कोशिश की थी। और मुझे धुंधला-सा याद है कि जॉन ने मेरी कोशिश को नाकाम कर दिया था।

मुझे माफ करना रूबी। मैं नहीं चाहता था कि इसका अंत इस तरह हो।

हमारी तीखी बहस का बाकी हिस्सा धुंधला सा हो गया था। वह दुख, आक्रोश और विश्वासघात के सैलाब में दब गया था। जॉन मेरा सबसे अच्छा दोस्त था, हम साथ पले-बढ़े थे, और अब वह सब कुछ बर्बाद कर रहा था। खासकर तब जब मुझे उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी।

मुझे बस इतना याद है कि मैंने पार्क में अपना फोन ज़मीन पर फेंक दिया था और दौड़कर अपने घर, अपनी कार तक गई थी। मुझे धुंधला-सा याद है कि मैं कार में बैठी और तेज़ हवा में गाड़ी चला रही थी, मोटी-मोटी बारिश की बूँदें विंडशील्ड पर पड़ रही थीं। रेडियो चल रहा था, संगीत ज़ोर से बज रहा था। मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे।

मुझे धुंधला-सा याद है कि तेज हवाओं के कारण कार कैसे डगमगा रही थी और बारिश के कारण मेरे सामने वाली गाड़ी की लाल टेललाइट्स मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।

मुझे धुंधला-सा याद है कि मैं सुन्न पड़ गई थी और खुद से अलग महसूस कर रही थी, जैसे कि उस कार में मैं नहीं थी, जैसे कि वह सब मेरे साथ नहीं हो रहा था। मेरी जिंदगी खत्म हो गई थी, वह आदर्श जिंदगी जिसका मैंने हमेशा सपना देखा था। मैं हमेशा से जानती थी कि जॉन कभी-कभी थोड़ा स्वार्थी होता है, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह मुझे इतना दुख पहुंचा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे मेरे माता-पिता ने पहुंचाया था। सारे संकेत तो हमेशा से मौजूद थे और मैं कितनी बेवकूफ थी कि मैंने पहले उन्हें नहीं देखा। और मेरे माता-पिता... मैं तो उनके द्वारा मुझ पर किए गए अत्याचारों और दिए गए दर्द के बारे में सोचना भी नहीं चाहती थी।

रेडियो पर बज रहे संगीत की धमक मेरे धड़कते दिल की धड़कन को दर्शा रही थी। दिल बहुत तेज़ धड़क रहा था, हद से ज़्यादा तेज़। मैंने आँखों से आँसू पोंछे और नीचे देखकर दरवाज़े का हैंडल घुमाया।

मुझे धुंधला-सा याद है कि मैंने ऊपर की ओर देखा, धुंधला अंधेरा और रंगों के धब्बे मेरी ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे। करीब... करीब...

डर मुझ पर हावी हो गया और तूफान के शोर में मेरी चीख मुश्किल से सुनाई दी। मैं संभलकर गाड़ी चला रही थी, सांस रोके हुए थी। गाड़ी धीरे-धीरे हिल रही थी, जैसे पानी पर नाव धीरे-धीरे डगमगा रही हो। ऐसा लग रहा था मानो समय थम गया हो, एक पल के लिए रुक गया हो। पेड़ अब बहुत करीब आ गए थे, डालियाँ गाड़ी के बोनट को खरोंच रही थीं। गाड़ी पथरीले इलाके पर उछलती-कूदती और गड़गड़ाती हुई आगे बढ़ रही थी। अंधेरा करीब आता जा रहा था... और करीब...

"यहाँ तो ग्रिल्ड चीज़ सैंडविच जैसी महक आ रही है।" गाय की गहरी आवाज़ ने मुझे उस भयानक याद से जगा दिया—या यूँ कहूँ कि एक बुरे सपने से। मैं एकदम सीधा बैठ गया, साँस लेने के लिए हाँफ रहा था। क्या मैं अपनी साँस रोके हुए था?

"क्या तुम ठीक हो?" उसने पूछा, उसके चेहरे पर चिंता के भाव थे। उसने अब दाढ़ी बना ली थी, उसकी नुकीली ठुड्डी एकदम चिकनी और बेदाग लग रही थी। वह हिला और उसकी खुशबू हवा के झोंके की तरह मुझ पर छा गई— ताज़ा आफ्टरशेव और शैम्पू की महक, कपूर और ग्रिल्ड चीज़ की तीखी गंध से बिलकुल अलग। और तभी मुझे एहसास हुआ कि उसने मुझसे एक सवाल पूछा था।

मैंने सिर हिलाया और एक गहरी साँस छोड़ी। "मैं ठीक हूँ।" लेकिन मेरी आवाज़ लड़खड़ा गई, जिससे संकेत मिला कि मैं वास्तव में ठीक नहीं था। मेरी याददाश्त अब साफ़ हो रही थी, मेरी मृत्यु का विवरण स्पष्ट और सजीव था। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, मैं आगे क्या हुआ, यह याद नहीं कर पा रहा था। मैं अपनी याददाश्त से गायब समय के उस हिस्से को याद नहीं कर पा रहा

था। वह समय जब मुझे दुर्घटनास्थल से उस युद्धस्थल तक ले जाया गया जहाँ मुझे पिशाच बनाया गया था। और इससे भी महत्वपूर्ण बात, मुझे याद नहीं आ रहा था कि मुझे पिशाच किसने बनाया था।

मैंने ज़ोर से साँस छोड़ी, पुरानी यादों की संक्रामक लहर मेरे अंदर मचल उठी। मुझे अस्वस्थ महसूस हो रहा था। उस याद ने मुझे बुरी तरह जकड़ लिया था, पर मैं गाइ को यह बताना नहीं चाहती थी। उसने तिरछी नज़रों से मुझे देखा, मानो उसे शक हो रहा हो।

"मैं ठीक हूँ। सचमुच।" मैंने ज़बरदस्ती हँसी और कमरे का जायज़ा लेने का नाटक करते हुए अपना सिर घुमाया। मैंने अपनी कसकर भींची मुट्ठियाँ खोलीं, और जब वह दूर चला गया, तो मैंने राहत की साँस लेने की इच्छा को दबा लिया। यह सिर्फ़ एक याद थी, लेकिन इसने मुझे इतना गहरा आघात पहुँचाया था, इतना गहरा असर डाला था कि मुझे लगा जैसे दुर्घटना फिर से घटित हो गई हो। मैंने अपने काँपते हाथों को देखा और उन्हें अपनी गोद में छिपा लिया।

मैंने एक बार फिर गाय की ओर देखा, उसकी दमदार मौजूदगी ने मेरी स्पष्ट याददाश्त को धुंधला कर दिया था। वह तौलिए से अपने बाल सुखा रहा था, ऐसा करते समय उसकी नंगी छाती की मांसपेशियां उभर रही थीं। उसकी पैंट का पट्टा उसके कूल्हों के ठीक नीचे था, जिससे उसके पेट की मांसपेशियां और उसके नीचे छिपा हुआ V आकार साफ दिख रहा था। मैंने तुरंत अपनी नज़रें हटा लीं, मेरे गाल शर्म से लाल हो गए। मैंने अपना सिर हिलाया, खुद को संभालने की कोशिश की, अपने कमरे में मौजूद उस आकर्षक व्यक्ति और उसके कारण मुझे महसूस हो रही भावनाओं को भूलने की कोशिश की—और भी कई बातें जो इस समय अजीब तरह से अनुचित लग रही थीं।

मैंने बेडस्टैंड से टीवी का रिमोट उठाया और उसे चालू कर दिया, जिससे मेरा ध्यान उस अधनंगे सैनिक और उस भयानक घटना से हट गया जो मुझे याद आ रही थी। मुझे खुद को संभालना था।

सुबह-सुबह मौसम का पूर्वानुमान चल रहा था, जिसमें अगले हफ्ते भी तापमान 100 डिग्री से ऊपर रहने की संभावना थी। शायद एरिज़ोना में पिशाच होने का एक ही फायदा था कि मुझे अब भीषण गर्मी सहन नहीं करनी पड़ेगी। मैं बस आराम से सोता रहूंगा।

"लो।" गाय ने मुझे खून से भरा गिलास दिया। मैंने उसे हाथ में लिया, मुँह बनाते हुए, लेकिन उसने मुझे आगे बढ़ने के लिए उकसाया। "तुम्हें अपनी ताकत बनाए रखनी होगी। तुम्हें खून पीना होगा।" मैंने गहरी साँस ली और उसे होठों से लगाया।

यह पहली बार होगा जब मैं किसी इंसान का खून पीऊँगी। यह सोचकर ही मुझे उल्टी आने लगी, पर मुझे पता था कि यह होना ही है। आखिर मैं एक पिशाच थी। और पिशाच खून पीते हैं।

"पीते रहो," गाय ने आग्रह किया। मैंने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं और पीना शुरू कर दिया। लेकिन गाढ़ा, ठंडा तरल पदार्थ मेरी जीभ से नीचे उतरने से पहले ही मैंने उसे वापस कप में थूक दिया, और गले तक आने वाली उल्टी को रोक लिया।

"मैं नहीं कर सकती। मैं बस... नहीं कर सकती।" मैंने कंबल से अपना मुंह पोंछा।

लेकिन आपको ऐसा करना ही होगा। इसके बिना आप कमजोर हो जाएंगे।

मैंने अपने कप में रखे तरल को सूंघा और नाक सिकोड़ी। मेरी जीभ पर उसका स्वाद धातु जैसा और बासी था। मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उसे गाय को वापस देते हुए कहा, "मुझे माफ़ करना। मैं... मैं इसे नहीं पी सकती। मैं पीना नहीं चाहती।"

गाइ ने मुझसे प्याला वापस लेते हुए frowning किया। उसने आह भरी। "तुम्हें कभी न कभी तो खाना ही पड़ेगा। तुम भूख से मर नहीं सकते।"

सच कहूं तो मुझे भूख नहीं है। और इंसानी खून पीने का ख्याल ही... ये बिल्कुल गलत है।

गाइ ने एक मिनट तक मेरी ओर देखा, मानो उसे हंसी आ रही हो। "एक पिशाच इंसानों का खून

लेने से इनकार कर रहा है। अब तो मैंने सब कुछ देख लिया।"
मैंने अपनी आँखें घुमाने की इच्छा को दबाया और गाय सिंक में पानी की हल्की-हल्की आवाज़ के साथ बाथरूम में वापस चला गया। तभी टीवी पर एक संक्षिप्त समाचार आया, जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया।
"अभी-अभी खबर मिली है।" एक सांवली सी दिखने वाली न्यूज़ एंकर एक लंबी डेस्क के पीछे बैठी थी। "कल रात बिस्बी सिटी ब्लड बैंक में चोरी हुई है, जहां दो सुरक्षा गार्डों ने एक पुरुष और एक महिला को संरक्षित रक्त से भरे बैग चुराते हुए देखा। लेकिन एक गवाह के अनुसार, यह कोई साधारण रक्त बैंक की लूट नहीं थी।"
"हे भगवान!" चिंता से मेरा सीना कांप उठा। "गाइ! इधर आओ!"
गाइ जल्दी से बाथरूम से बाहर भागा और अपनी मैली सफेद टी-शर्ट पहन ली। वह बिस्तर के पास खड़ा हो गया और उस दृश्य को घूरने लगा जिसे हमने थोड़ी देर पहले देखा था, उसके चेहरे पर भी वही भाव थे जो मेरे चेहरे पर थे।
एक महिला पत्रकार इमारत के सामने, एक सुरक्षा गार्ड के बगल में खड़ी होकर पोज़ दे रही थी। मैंने उसे पहचान लिया, वही गार्ड था जिसे मैंने कांच के दरवाजों से धक्का देकर अंदर घुसाया था।
"जी बिल," महिला मुस्कुराते हुए बोली, "और ब्लड बैंक की डकैती से ज़्यादा अजीब क्या हो सकता है? मैं आपको बताती हूँ; पिशाचों द्वारा ब्लड बैंक की डकैती।" वह सहमे हुए गार्ड की ओर मुड़ी। "कोई ब्लड बैंक से खून क्यों चुराना चाहेगा?" उसने माइक उसकी ओर बढ़ाया।
"मुझे लगता है कि अगर वे पिशाच होते तो उन्हें पीने के लिए खून की ज़रूरत होती।" वह आदमी एक डरे हुए खरगोश जैसा लग रहा था, उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं और गर्दन की त्वचा काँप रही थी।
महिला हंस पड़ी। "आप पिशाचों की बात कर रहे हैं? और उनमें से कितने पिशाच थे?"
"एक पुरुष और एक महिला," उसने स्पष्टवादिता से उत्तर दिया, उसे महिला की हंसी का एहसास नहीं था।
रिपोर्टर ने कैमरे की ओर संदेह भरी नजर से देखा। "क्या उनके नुकीले दांत थे?"
"हाँ। खैर, उस महिला ने तो ऐसा किया ही था। ठीक उससे पहले जब उसने मुझे उन कांच के दरवाजों से धक्का दिया।" उसने अपने पीछे बिखरे कांच की ओर इशारा किया।
"तो एक महिला पिशाच ने तुम्हें वहीं उन दरवाजों से बाहर फेंक दिया?" महिला साक्षात्कार में स्पष्ट रूप से आनंदित थी।
जी हां, महोदया। उन्होंने बिल्कुल ऐसा किया।
रिपोर्टर मुस्कुराई। यह स्पष्ट था कि न तो वह और न ही कोई और उस पर विश्वास कर रहा था। मुझे उस आदमी के लिए थोड़ी दया आ रही थी।
महिला ने फिर कैमरे की ओर मुड़कर कहा, "हैलोवीन आने में अब सिर्फ साठ दिन बचे हैं। हो सकता है कि इस साल पिशाच जल्दी तैयारी शुरू कर रहे हों।"
पुरुष और महिला समाचार एंकर हंसते-हंसते लोटपोट हो गए, लेकिन सुरक्षा गार्ड के चेहरे पर गुस्सा साफ दिखाई दे रहा था।
"धत् तेरे की!" गाय ने मुझसे रिमोट छीनकर टीवी बंद कर दिया और मुझे चौंका दिया। उसने रिमोट कमरे में दूर तक फेंक दिया। "समझदारी दिखाने का सारा श्रेय धराशायी हो गया।" वह गुस्से में इधर-उधर घूमने लगा और अपने गीले बालों में उंगलियां फेरने लगा। उसकी भौंहें गुस्से से तन गईं।
"कोई बात नहीं..." मैंने हाथ से इशारा करके बात टाल दी। "वैसे भी उन्हें उस पर विश्वास नहीं था।"

"मुझे उनकी चिंता नहीं है।" उसने कोने में रखा लैंप बुझा दिया, यह पूछे बिना कि मैं सोने के लिए तैयार हूँ या नहीं। कमरा एकदम अंधेरा था, हालाँकि मुझे सब कुछ साफ़ दिखाई दे रहा था। "अब सो जाओ," उसने गुस्से में कहा। उसका नरम स्वभाव तो गायब ही हो गया। कैप्टन इम्पॉसिबल फिर से लौट आया था।

मैं कुछ देर अंधेरे में वहीं बैठा रहा जबकि गाय ने बिस्तर से एक तकिया उठाया और फर्श पर खुद को ठीक से समायोजित किया।

मैं बिस्तर के किनारे झुक गई। "क्या तुम्हें मेरी मदद करने के लिए डांट पड़ेगी?" उसने अपने ऊपर एक कंबल ओढ़ लिया और अपनी लकड़ी की डंडी पास ही ज़मीन पर रख दी। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह अब भी मुझसे डरा हुआ था।

उसने हल्की सी आह भरी। इंसानी कानों से तो वह आवाज सुनाई नहीं देती, लेकिन मेरी नई इंद्रियों से वह बिल्कुल साफ सुनाई दी।

"अगर मैं कुछ दिनों के भीतर मुख्यालय वापस पहुँच जाऊं तो कोई समस्या नहीं होगी। मैं कोई न कोई उपाय निकाल लूंगा। लेकिन अगर इससे ज्यादा समय लगा तो मुझे परेशानी होगी। सवाल उठेंगे..."

मुझे एहसास हुआ कि गाय मेरे लिए कितना बड़ा दांव लगा रहा था। वह मेरे लिए अपना करियर, अपनी जान जोखिम में डाल रहा था। लेकिन क्यों? मुझे पता था कि इसका कुछ संबंध लिली से था, उस लड़की से जिसे उसने पिशाचों से बचाने की कोशिश की थी। क्या उसे इसमें कोई जुड़ाव नज़र आ रहा था? क्या मैं उसके मन में कोई याद, उसके जीवन का कोई अविस्मरणीय पल जगा रही थी?

"आज सुबह उठकर हम क्या करेंगे?" मैं बिस्तर में दुबक गई और पर्दों के किनारे से छनकर आती सूरज की एक छोटी सी किरण को देखने लगी। अगर गाय को मेरी परवाह न होती, तो वो उन पर्दों को फाड़कर मुझे जिंदा जला सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया था।

"मैं तुम्हें ऐसे व्यक्ति के पास ले जा रहा हूँ जो तुम्हारी मदद कर सकता है।" उसकी आवाज़ में अभी भी थोड़ी झुंझलाहट थी।

"क्या वे मुझे ठीक कर सकते हैं?" मैंने पतले कंबल को अपनी ठुड्डी तक खींचा और एक मक्खी को दीवार पर रेंगते हुए देखा।

गाय कराह उठा और मैंने उसे फर्श पर करवट बदलते सुना। "पिशाचवाद का कोई इलाज नहीं है। लेकिन मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो शायद तुम्हारे लिए एक सुरक्षित ठिकाना ढूंढ सके, एक ऐसी जगह जहाँ तुम खुद को पहचानना सीख सको।"

निराशा मुझ पर हावी हो गई, और मेरे मानवीय स्वरूप में लौटने की उम्मीद चकनाचूर हो गई। उसने यही कहा था; मैं जो बन गया था, उसका कोई इलाज नहीं था। और हालाँकि मुझे शुरू से ही इसका शक था, फिर भी मुझे किसी चमत्कार की उम्मीद थी।

मैंने गहरी सांस ली और मक्खी को उड़कर कमरे के दूसरे कोने में गायब होते देखा। मेरा मन नहाने का कर रहा था, पर थकान के कारण ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और जल्दी ही गहरी नींद में डूब गई। मैं बहुत थकी हुई थी और कई दिनों में पहली बार मुझे इतनी गहरी नींद आई। बेहोशी के धुंध ने मुझे धुंधले सपनों और यादों में जकड़ लिया। समय का पता ही नहीं चला। मुझे बारिश और विशाल पेड़ दिखाई दिए। मैंने जॉन को उसकी फुटबॉल की वर्दी में देखा। मैंने अपने माता-पिता के रोते हुए चेहरे देखे।

वे बहुत उदास दिख रहे थे, लेकिन उनकी काल्पनिक उपस्थिति में, मुझे एक ऐसी गर्माहट महसूस हुई जिसे मैं लगभग भूल ही चुकी थी। मेरा दिल उनके लिए तड़प रहा था। मेरे दिल को इस बात का

दुख था कि मैंने अपने जैविक पिता की खबर पर कैसी प्रतिक्रिया दी थी। इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी। मैं अपने पिता को गले लगाना चाहती थी और उनसे माफी मांगना चाहती थी। मैं उन्हें बताना चाहती थी कि मैं उनसे अब भी कितना भी प्यार करूं, चाहे कुछ भी हो जाए, और वे हमेशा मेरे पिता रहेंगे। मैंने उनके उदास चेहरों की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन वे धीरे-धीरे धुंधले पड़ने लगे, अब बहुत देर हो चुकी थी। मैंने अपने पिता को पुकारा। उनकी हरी आँखें चमक उठीं और उनके काले बाल, जो मेरे बालों से बिल्कुल अलग थे, उनके माथे पर फैले हुए थे। लेकिन वे धूल में मिल गए, सपने के टुकड़े हवा में उड़ गए।

मैंने अपनी पलकें उठाईं, दुख के बोझ तले मेरे ऊपर पत्थर लुढ़क रहे थे। मुझे उस सपने की पूरी याद थी जिसने मुझे अंदर से खोखला कर दिया था। लेकिन मैं लेटी रही, गाय की धीमी साँसों को सुनती रही। वह अभी भी सो रहा था, उसका शरीर ज़मीन पर फैला हुआ था और एक हाथ तकिए पर रखा था। मैंने पर्दों की तरफ देखा जहाँ से थोड़ी सी रोशनी आ रही थी। अब वहाँ अँधेरा छा गया था, रात होने का संकेत। हम घंटों से सो रहे होंगे, हालाँकि ऐसा लग रहा था जैसे बस कुछ ही सेकंड हुए हों।

मैं बिस्तर से उठी और जूते पहने। मैं सोच रही थी कि क्या मुझे अपने परिवार से मिलने जाने की अपनी अंदरूनी इच्छा को दबा देना चाहिए। जब से गाय ने मुझे पाया था, तब से यह बात मेरे मन में थी और अब मैं इसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी। यह सोचकर कि वे अभी भी कहीं बाहर हैं, मेरे जाने का शोक मना रहे हैं, जबकि मैं वास्तव में गई नहीं थी, मेरा दिल दुख से भर गया था।

खुद पर संदेह करने के लिए पर्याप्त समय दिए बिना, मैं मोटल के कमरे से निकलकर रात के शुरुआती घंटों में चला गया।

सोलह: लड़का

दिनभर करवटें बदलते-बदलते मैं सो नहीं पा रहा था। उस खून बैंक की लूट की चिंता मेरे दिमाग पर हावी थी। मुझे नहीं पता था कि सुरक्षा कैमरों में क्या फुटेज कैद हुआ है और न ही यह पता था कि FUSE को पता चलने और मुझे ढूंढने आने से पहले मेरे पास कितना समय है। लेकिन सबसे डरावना विचार बाकी सभी विचारों से ऊपर था, पिशाच से मेरा रिश्ता।

हालांकि उस समय मुझे इसका एहसास नहीं था, रूबी का खून पीकर मैं उससे जुड़ गया था। लेकिन कैसे? यह विचार मुझे स्तब्ध कर गया।

मैं मोटल के फर्श पर बेचैनी से लेटा हुआ था, बंधन के विषय में मैंने जो भी जानकारी जुटाई थी, उसे याद करने की कोशिश कर रहा था। आमतौर पर, यह दो पिशाचों के बीच होता था। किसी इंसान और किसी दुर्भाग्यशाली पिशाच के बीच बंधन होना बहुत ही असंभव था, हालांकि कभी-कभार ऐसा हुआ भी था। और पिशाचों के लिए, यह एक गंभीर निर्णय था। इसमें न केवल खून का आदान-प्रदान शामिल था, बल्कि एक भावनात्मक बंधन भी था, जैसे कोई समझौता। वे हमेशा एक गहरे स्तर पर जुड़े रहेंगे। इसमें प्यार शामिल था। हालांकि इससे पहले, मैं हमेशा इसे मूर्खतापूर्ण समझता था। कोई किसी दुर्भाग्यशाली पिशाच से कैसे प्यार कर सकता है, यहां तक कि खुद पिशाच भी? वे क्रूर और दुष्ट थे, रात के हत्यारे थे। वे अमानवीय थे और मानवीय भावनाओं से रहित थे—या कम से कम मुझे यही सिखाया गया था।

इसीलिए जब मैंने रूबी की ओर वो अचूक खिंचाव महसूस किया, जैसे चुंबक खींचता है, तो मैं दंग रह गया। शुरुआत में यह एक हल्की हवा के झोंके की तरह धीरे-धीरे हुआ, उसकी नाराज़गी और उदासी को महसूस करते हुए। लेकिन जब यह पूरी तरह से मुझ पर हावी हुआ, तो ऐसा लगा जैसे भावनाओं का एक बवंडर मुझ पर टूट पड़ा हो, मानो मैं उसे पूरी ज़िंदगी से जानता हूँ।

और जब उसने मुझे अपनी मृत्यु से पहले के पलों के बारे में बताया, जिस क्षण उसे अपने पिता के बारे में पता चला, तो दुख मुझ पर एक तूफान की तरह टूट पड़ा और मैंने उसे ठीक वैसे ही महसूस किया जैसे उसने किया था। मैं न केवल उसके दुख को महसूस कर सकती थी, बल्कि मैं उसके मेरे प्रति भावों को भी समझ सकती थी। मैं महसूस कर सकती थी कि वह मुझ पर कितना भरोसा करती थी। हे भगवान, मुझे नहीं पता क्यों। उसे मुझ पर भरोसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन उसने किया।

मुझे भी ठीक से पता नहीं था कि ये बंधन कैसे बना। ज़ाहिर है, मैं ऐसा नहीं चाहता था और सच कहूँ तो, किसी पिशाच से जुड़ने का ख्याल भी मेरे मन में कभी नहीं आया था। इसकी संभावना लाखों में एक थी। लेकिन अपनी सफाई में कहूँ तो, मेरा सारा खून निकल चुका था और मैं उस समय मौत के करीब था। किसी पिशाच से हमेशा के लिए जुड़ जाने की चिंता मेरी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर नहीं थी। मुझे कैसे पता चलता कि उसका खून पीने से मैं हमेशा के लिए उससे जुड़ जाऊँगा? यह अजीब और पूरी तरह से विडंबनापूर्ण था। मैं, कैप्टन गाय स्टोन, प्रसिद्ध पिशाच शिकारी और FUSE का प्रतिष्ठित नेता, वास्तव में एक पिशाच से जुड़ गया था।

जब मुझे अपने बंधन का एहसास हुआ, तो होटल के कमरे के फर्श पर लेटे हुए मुझे ज़ोर-ज़ोर से हंसने की इच्छा को रोकना पड़ा। घंटों तक मैं लेटा रहा और सोचता रहा कि आखिर हुआ क्या है।

मुझे यह बात हास्यास्पद लगी कि मैंने पहले अपनी स्थिति को कठिन समझा था। लेकिन अब यह नामुमकिन था। मैं अपने पुराने जीवन में कैसे लौट सकता था और अपने उन्हीं नैतिक मूल्यों और आदर्शों को कैसे कायम रख सकता था? मैं अपने साथियों के सामने दोबारा कैसे जा सकता था? अपने जनरल के सामने?

मुझे झूठ बोलना ही पड़ता। यही एकमात्र उपाय था।

और हां, मैंने रूबी को अपने रिश्ते के बारे में नहीं बताया था और मुझे लगता था कि मैं कभी नहीं बताऊंगी। हां, मेरा उससे रिश्ता था, लेकिन उसका मुझसे नहीं, और मैं उसे अपने इस रिश्ते के बारे में पता नहीं चलने दे सकती थी। हम दोनों के लिए यही सबसे अच्छा था।

हे भगवान! काश मैंने उस लड़की को बचाने का फैसला ही न किया होता, लेकिन अब जब मैं उसे जान चुकी थी, तो मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मैं वापस जाकर कुछ और प्रतिक्रिया देती। और अब मुझे जीवन भर उस पिशाच लड़की के भूत का साया सताता रहेगा।

दोपहर ढलते-ढलते, थकान से असहनीय पीड़ा के कारण अंततः मुझे नींद आने लगी। मैं अपने मन के अंधकार में डूब गया, लेकिन अपनी स्थिति का अहसास मुझे पूरी तरह से नहीं भूला।

रूबी का नाम मेरे मन में बादलों में बहने वाली हवा की तरह तैर रहा था। वह अब हर समय मेरे साथ थी और मैं उसे महसूस कर सकता था, उसका आभास कर सकता था और उसके होठों का स्वाद चख सकता था, मानो वह मेरे ठीक सामने खड़ी हो।

रूबी...

सेकंड मिनटों में बदल गए, मिनट घंटों में बदल गए, और मेरी बेचैन नींद में समय का पता ही नहीं चला।

मैंने जम्हाई ली और अंधेरे में अपनी बाहें फैलाईं, आंखें खोलने से पहले ही मुझे पता चल गया था कि कुछ गड़बड़ है, ठीक वैसे ही जैसे बुरे सपने के दौरान होने वाली घबराहट।

रूबी...

मैं उठकर बैठ गया और अंधेरे मोटल के कमरे में चारों ओर देखा, मेरा पेट डर से सिकुड़ गया था। वह जा चुकी थी, खाली बिस्तर पर कंबल अस्त-व्यस्त और बिखरे पड़े थे।

मैंने अपनी आंखों से धूल के कण रगड़कर हटाए और फिर से देखा।

"फेथ?" मैंने आवाज़ लगाई, कहीं वो बाथरूम में तो नहीं है? "फेथ? तुम यहाँ हो?" मैं उछलकर बाथरूम की तरफ भागा। हाँ, वो वहाँ नहीं थी। धत् तेरे की!

मैंने अपने जूते पहने और अपना सामान समेटा, कमरे की चाबी मेज पर ही छोड़ दी। मुझे उसे जल्दी से ढूंढना था, इससे पहले कि कोई और उसे ढूंढ ले। इससे पहले कि कोई और पिशाच उससे या, भगवान न करे, फ्यूज़ से खतरा महसूस करे।

अगर मैं इतना चिंतित न होता, तो शायद इस स्थिति को हास्यास्पद ही समझता। विडंबना चाहे जो भी हो, मैं एक ऐसी यात्रा पर निकलने वाला था जैसी मैंने वर्षों पहले की थी। बस इस बार मैं उस पिशाच की तलाश नहीं कर रहा था जिसने एक लड़की को अगवा किया था, बल्कि मैं उस लड़की की तलाश कर रहा था जो अब पिशाच बन चुकी थी।

सत्रह: रूबी

सूर्यास्त की धुंध दूर पहाड़ों पर छाई हुई थी, आसमान धुंधला सा भूरा था। हवा गर्म और शुष्क थी, जैसा कि अगस्त के अंत में होना चाहिए। मैं मोटल की पार्किंग से निकलकर मुख्य सड़क पर आ गई, तली हुई चिकनाई की गंध हवा में घुल रही थी। मुझे गाय को वहाँ सोते हुए छोड़कर जाने में बुरा लग रहा था, उसे मेरे जाने का पता भी नहीं था। जब वह जागेगा और मुझे वहाँ नहीं पाएगा तो शायद वह घबरा जाएगा, लेकिन मुझे अपने परिवार से मिलना था। मुझे यह जानना था कि मेरे माता-पिता ठीक हैं या नहीं। मुझे नहीं पता था कि वहाँ पहुँचकर मैं क्या करूँगी या उन्हें अपने बारे में बताऊँगी या नहीं। गाय ने मुझे साफ मना किया था, लेकिन मुझे जाना ही था, यह देखने के लिए कि वे ठीक हैं या नहीं।

मैंने अपनी मूर्खता पर सिर हिलाया। बेशक, वे सब सही थे। मेरी माँ मेरी जान-पहचान की सबसे मजबूत महिलाओं में से एक थीं और मेरे पिता भी एक सख्त इंसान थे। वे ठीक ही रहेंगे।

शायद मैं उनके लिए नहीं जा रहा था। शायद मैं खुद के लिए जा रहा था। अपने कार्यों के अपराधबोध से मुक्ति पाने के लिए। अपने आप को खोने के गम को मिटाने के लिए। अपनी स्थिति से कुछ हद तक राहत पाने के लिए।

मुझे वहां पहुंचने की चिंता नहीं थी। मेरा शरीर पहले ही तेज़ गति से चलने वाली मशीन साबित हो चुका था और हमारा मोटल बिस्बी से ज़्यादा दूर नहीं था। मैं अपने गृहनगर को अच्छी तरह जानता था और वह छोटा शहर पैदल घूमने के लिए आसान था। मैं अपने पूर्वी मोहल्ले की ओर तेज़ी से चल पड़ा, जहाँ मैंने अपने जीवन के सत्रह—नहीं, अठारह साल बिताए थे। मुझे हंसी आ गई, यह सोचकर कि मेरा जन्मदिन आ चुका है और बीत भी गया, वैम्पायर बनने के पलों में ही। हा हा। मुझे जन्मदिन मुबारक हो!

मैंने उस अप्रिय विचार को मन से निकाल दिया और घर की ओर चल पड़ा। शहर से भागते हुए मेरे सामने रंगों की धुंधली सी आकृतियाँ तेज़ी से गुज़र रही थीं, मेरा ध्यान केवल एक ही बात पर केंद्रित था— मेरा परिवार। लेकिन किसी के मदद के लिए चिल्लाने की आवाज़ सुनकर मैं अचानक रुक गया। मैंने उस आवाज़ का अनुसरण किया और इतनी ज़ोर से रुका कि मेरी गति के कारण मैं गिर पड़ा। बिजली की तरह तेज़ चलने की इस आदत को अपनाने में थोड़ा समय लगेगा।

मैं सीधा होकर उठा और आसपास की स्थिति समझने के लिए पलकें झपकाईं। मैं शहर के बीचोंबीच एक अंधेरी गली में था। तीन मंजिला विक्टोरियन इमारतें मेरे ऊपर छाई हुई थीं, जिससे गली में गहरा अंधेरा छाया हुआ था। ज़मीन पर एक औरत रो रही थी, और एक आदमी उसके ऊपर था। मेरा कस्बा हमेशा से शांत रहा था और मात्र 5,000 की आबादी के लिए अपराध दर न के बराबर थी। इसलिए मैं यह देखकर दंग रह गया कि उस आदमी ने चाकू निकाला और औरत के गले पर रखकर उससे पैसे माँगने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे उसे पता ही नहीं था कि मैं वहाँ हूँ।

डर मेरे अंदर पेट के पित्त की तरह उमड़ पड़ा और मेरा दिमाग चकरा गया, कोई हल निकालने की कोशिश में। शायद आस-पास कोई पुलिसवाला हो और मैं मदद के लिए फोन कर सकूँ। लेकिन तब तक वह औरत घायल हो सकती थी, या इससे भी बुरा हो सकता था। कुछ करना मेरी ज़िम्मेदारी थी। मुझे इसे रोकना ही था। लेकिन कैसे?

आखिरकार, उस स्थिति पर, उस आदमी पर जिसने उस औरत का फायदा उठाने की सोची, मेरा गुस्सा फूट पड़ा। मेरे नुकीले दांत बाहर निकल आए और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मुझे एहसास हुआ कि मैं सिर्फ एक लड़की नहीं हूँ। मैं एक वैम्पायर हूँ और आसानी से उस आदमी का गला फाड़ सकती हूँ। लेकिन मैं हत्यारी नहीं हूँ, भले ही वह आदमी कितना भी नीच और घटिया क्यों न हो। हाँ, मैंने एक वैम्पायर को तब मारा था जब गाय की जान खतरे में थी। लेकिन एक इंसान को मारना?

"उसे अकेला छोड़ दो," मैंने अनजाने में ही खुद से यह कहा।

वह आदमी सहम गया और घुटनों के बल से मेरी तरफ मुड़ा। वह दुबला-पतला और मैला-कुचैला था। उसकी आँखों में कुछ गहरा, अंधकारमय और द्वेषपूर्ण भाव था। निर्दयी। यह महज़ कोई बेघर बेबस इंसान नहीं था जिसे खाने के लिए पैसों की ज़रूरत हो। यह वह आदमी था जो बिना किसी पछतावे के उस औरत की जान ले लेता। वह दुष्ट था।

वह मुस्कुराया, उसके दांत काले थे और जगह-जगह से गायब थे। "ब्लॉन्डी, तुम वही करो जो तुम्हारे लिए सबसे अच्छा हो, और अपने काम से मतलब रखो।"

वह स्त्री उसके नीचे छटपटा रही थी, उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। चाकू उसके गले पर टिका हुआ था और हमारी आँखें मिलीं।

“मुझे ऐसा नहीं लगता।” मैंने अपनी निगाहें उस आदमी पर टिका दीं, मेरी मुट्ठियाँ मेरी बगल में कस गईं। मेरे अंदर उमड़ रहे गुस्से को रोकना मेरे लिए बहुत मुश्किल था।

वह आदमी हँसा, उसकी आवाज़ कर्कश और खुरदरी थी। दूर कहीं से कार का अलार्म बज उठा। “क्या? क्या तुम भी इसमें शामिल होना चाहती हो, ब्लोंडी? क्या तुम इस आवारा की जगह लेना चाहती हो?” उसने चाकू को उसकी गर्दन में और गहराई तक दबा दिया, जिससे खून की एक बूँद निकल आई।

मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने अपने दांत भींच लिए, मेरे नुकीले दांत मेरे निचले होंठ को काट रहे थे। "अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो ऐसा नहीं करता।" वह आदमी मुझ पर हंस पड़ा।

“मैं तुम्हें एक विकल्प देता हूँ,” उसने काँपते हाथों से कहा। मुझे डर सताने लगा कि कहीं वह अनजाने में ही उसे चोट न पहुँचा दे। उसने कर्कश स्वर में कहा, “तुम अभी यहाँ से जा सकती हो और दिखावा कर सकती हो कि तुमने कुछ देखा ही नहीं। या फिर तुम हमारे साथ आ जाओ और मैं तुम्हें और उस आवारा को मार डालूँगा। क्या कहती हो?”

हथियार के दबाव से महिला सिसक उठी। उसकी निगाहें मुझसे विनती कर रही थीं कि मैं उसे छोड़कर न जाऊं। मैंने उसे आश्वस्त करने के लिए सिर हिलाया, यह जताते हुए कि वह ठीक हो जाएगी।

“नहीं।” मैं एक कदम और करीब गई। “मैं तुम्हें एक विकल्प देती हूँ।” गली में हवा चली और मेरे बाल मेरे चेहरे पर उड़ने लगे। मेरे अंदर ऐसी बहादुरी उमड़ी जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी, और मेरे इरादों को और मजबूत कर दिया। “तुम उसे जाने दो और खुद को पुलिस के हवाले कर दो। या फिर, मैं तुम्हें अपने हाथों से मार डालूँगी।”

मेरी धमकी सुनकर अपराधी की भौंहें तन गईं और एक लंबे क्षण के बाद वह पागलों की तरह हंसने लगा। "क्या करने वाली हो रैपुन्ज़ेल, मुझे अपने बालों से गला घोंट दोगी?" उसकी यह बात मेरे दिल को झकझोर गई, लेकिन वह मुझसे मुंह फेरकर उस औरत के ऊपर झुक गया और उसके कान के पास अपना मुंह रखकर बोला, "चिंता मत करो, जान। यह दर्द बस एक मिनट के लिए ही होगा।"

पलक झपकते ही, और उस आदमी के एक और साँस लेने से पहले ही, मैंने उसे दीवार पर पटक दिया और उसकी गर्दन पकड़कर उसे ज़मीन से ऊपर उठा लिया। अपने गुस्से के बावजूद, मैंने

मुस्कुराकर उसे अपने नुकीले दाँत दिखाए। उसकी आँखें डर से बड़ी हो गईं और साँस लेने की कोशिश में उसका सीना काँपने लगा।
वह महिला गर्दन पर हाथ रखे ज़मीन पर रेंगने लगी। मैंने उससे शांत स्वर में कहा, "किसी सुरक्षित जगह पर जाओ। और पुलिस स्टेशन को फोन करो। उन्हें बता दो कि कोई बहुत जल्द आने वाला है।"
उसने अपनी निगाहें बार-बार मुझ पर और उस आदमी पर घुमाईं। मैंने उसके डर को महसूस किया। वह डर पानी में स्याही की लहरों की तरह उससे फूट रहा था।
"जाओ!" मैंने चिल्लाकर कहा। उसने सिर हिलाया और लड़खड़ाते हुए गली से बाहर निकल गई, मिस्टर चार्मिंग और मुझे अकेला छोड़कर। मैंने अपना ध्यान उसकी ओर मोड़ा क्योंकि वह हांफ रहा था और सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। मैंने अपनी आवाज़ धीमी करके फुसफुसाते हुए कहा।
"नहीं, मैं तुम्हें अपने बालों से गला नहीं घोंटूँगा। लेकिन मैं अपने नुकीले दांत तुम्हारी गर्दन में गाड़कर तुम्हारा सारा खून चूस सकता हूँ। पर पूरा नहीं, नहीं। बस इतना कि तुम्हें अपने शरीर के धीरे-धीरे बंद होने का एहसास रहे। मौत का एहसास रहे, जैसे वो तुम्हें अपने करीब ला रही हो। और फिर मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूँगा, ताकि तुम अपने जीवन पर विचार करो। उन सभी तकलीफों के बारे में सोचो जो तुमने दूसरों को पहुँचाई हैं।" वह आदमी सिसक उठा, उसका मुंह पानी से बाहर निकली मछली की तरह खुला हुआ था। उसकी गर्दन की नस फड़क रही थी।
"क्या तुम्हें पता है मरने का दर्द कैसा होता है?" मैंने गुस्से से भरी आवाज़ में पूछा। लेकिन मेरी आवाज़ शांत और स्थिर निकली, मानो मेरा गुस्सा छिपा हुआ हो। मरने के अपने अनुभव के कारण, मुझे लगता था कि मैं कभी किसी दूसरे इंसान के लिए मौत की कामना नहीं करूँगी। लेकिन उस पल, मैं इतना आश्वस्त नहीं थी।
उसने अपना सिर हिलाया। मैंने खुद को बड़ी मुश्किल से रोका कि मैं उसे वहीं मार न डालूँ, गुस्से से मेरे हाथ काँप रहे थे। लेकिन मैं हत्यारा नहीं था और मैं अपनी पिशाच प्रवृत्ति को हावी नहीं होने दे सकता था। मैंने खुद पर काबू रखने के लिए संघर्ष किया।
"अच्छा।" मुझे ज़मीन पर रस्सी का एक फटा हुआ टुकड़ा दिखाई दिया। "क्योंकि अगर तुम्हारी गंध से तुम्हारे स्वाद का अंदाज़ा लगाया जाए, तो मैं इसे चखना भी नहीं चाहूँगा।"
मैंने उसकी गर्दन छोड़ दी और रस्सी झट से पकड़ ली, फिर उसे कंधों से कसकर पकड़ लिया। वह हांफने लगा और खांसने लगा। "उम्मीद है तुम्हें जेल का खाना पसंद आएगा।"
मैं हम दोनों को शहर से होते हुए बिस्बी पुलिस स्टेशन ले गया। सड़क खाली थी और हमेशा की तरह वहाँ कुछ भी नहीं हो रहा था। मुझे राहत मिली। मैं किसी को भी इस हालत में नहीं देख सकता था। और भगवान न करे कि मैं किसी परिचित को देख लूँ— इतने छोटे शहर में ऐसा होने की बहुत संभावना थी।
मैंने उस बदमाश को ज़मीन पर गिरा दिया और स्टेशन की सीढ़ियों पर उसके ऊपर खड़ा हो गया। एक बार फिर, मैंने अपने दाँत उसके सामने दिखाए और वह चीख पड़ा। उसकी प्रतिक्रिया देखकर मैं मुस्कुराया, अपनी इस हिम्मत पर खुद हैरान था। मैं नीचे झुका और उसे घसीटकर सामने खड़े एक झंडे के खंभे तक ले गया। मैंने उसकी दोनों भुजाएँ पकड़ीं और रस्सी से उन्हें स्टील के खंभे से बाँध दिया। उसने पीछे हटने की कोशिश की, लेकिन मैंने उसे थामे रखा।
मैं तुम्हें भागते हुए नहीं देख सकता, है ना?
"प्लीज़," उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "प्लीज़। नहीं।"
"चिंता मत करो, डार्लिंग।" मैंने रस्सी को खींचकर यह सुनिश्चित किया कि मैंने सही से काम किया है और फिर उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई। "इससे बस एक मिनट का दर्द होगा।"

मैंने उसे ज़ोर से घूंसा मारा, जिससे वह बेहोश हो गया। सदमे से मेरी आँखें फटी रह गईं। मैंने उसे इरादे से ज़्यादा ज़ोर से मार दिया था। सौभाग्य से, वह अभी भी साँस ले रहा था। मैंने उसे घृणा भरी एक आखिरी नज़र से देखा और अंधेरे में भाग गया।

मैं अंधेरे में छिपकर इंतज़ार कर रहा था, उम्मीद कर रहा था कि उस औरत ने थाने में फोन कर दिया होगा। कुछ ही सेकंड बाद, तीन पुलिसवाले दरवाज़े से अंदर आए और उन्होंने उस आदमी को ज़मीन पर बेजान पड़ा पाया। उन्होंने चारों ओर नज़र घुमाई और मैं और पीछे हट गया। कुछ न देखकर उन्होंने रस्सी खोली और उसे हथकड़ी पहना दी, फिर उसे घसीटकर अंदर ले गए। मैंने अपने हाथों को अपनी पैंट पर पोंछा, मानो उस अपराधी की गंदगी मिटा रहा हो। मेरी बांहें कांप रही थीं और मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैंने अभी क्या किया है। मुझे अपनी ताकत और उसके साथ उमड़ रहे गुस्से पर विश्वास नहीं हो रहा था। यह मेरे लिए बिल्कुल नया था। मैं खुद को पहचान नहीं पा रहा था। लेकिन मैं वही था। बस एक ज़्यादा ताकतवर, ज़्यादा डरावना रूप।

मैं हांफते हुए एक इमारत की दीवार से टिक गई। हे भगवान, मैं बेकाबू हो गई थी। हां, मैंने उस औरत की जान बचा ली थी, लेकिन उस आदमी को जान से मारने के इतने करीब आकर मैं डर गई थी। मुझे एहसास हो रहा था कि मैं किसी को भी, कभी भी, बड़ी आसानी से मार सकती हूं। मैं एक राक्षस बन गई थी। मैं सोच रही थी कि अब मम्मी-पापा मेरे बारे में क्या सोचेंगे— उनकी प्यारी सी छोटी बेटी, जिसके दांत और पंजे हैं और जो एक क्रोधित बैल की तरह गुस्से में है।

लेकिन इस विचार ने मुझे फिर से अपने सामने मौजूद काम की ओर खींच दिया— मेरा परिवार। मैं उनके पास दोबारा जाने की हिम्मत कैसे कर सकता था? मैं पहले ही एक पिशाच को मार चुका था और अब एक इंसान को भी मारने के बेहद करीब आ गया था। मुझे यकीन नहीं था कि मैं अपने परिवार को इस तरह खतरे में डालने को जायज़ ठहरा सकता हूँ।

मेरा दिमाग आपस में जूझ रहा था, मेरा अंतरात्मा मुझे घर जाने से रोकने की कोशिश कर रहा था। मैं सोच रहा था कि क्या मैं खुद पर काबू रख पाऊंगा। बेशक, मैं यह मानना चाहूंगा कि मैं अपने परिवार को कभी नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा। लेकिन मुझे कैसे यकीन होगा कि मेरी मूल प्रवृत्ति अपना घिनौना रूप नहीं दिखाएगी और मुझे उनके साथ भयानक काम करने पर मजबूर नहीं करेगी? मैंने अपना सिर हिलाया, अनिश्चितता मेरे अंदर दौड़ रही थी।

कहीं पास में एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई और हवा तेज़ हो गई। नहीं, मुझे जाना ही था। मुझे खुद देखना था कि वे सुरक्षित और ठीक हैं, भले ही इसके लिए मुझे सुरक्षित दूरी पर छिपकर देखना पड़े। मैंने गहरी साँस ली और हिम्मत जुटाकर शहर से होते हुए पूरब की ओर दौड़ पड़ी।

मैं सड़कों और गलियों से टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुज़रा, हवा मेरी त्वचा को चुभ रही थी, ठंडी हवा मेरे हाथों और चेहरे पर झनझना रही थी। आखिरकार अपनी गली के अंत तक पहुँचकर मैं अचानक रुक गया। स्ट्रीटलाइट्स की धुंधली रोशनी नीचे की चिकनी डामर सड़क को दिखा रही थी।

वहाँ वापस जाना एक अजीब सा एहसास था। एक झुनझुनी सी मेरे शरीर में दौड़ गई, जिसे मैं ठीक से समझ नहीं पा रही थी। सब कुछ वैसा ही था। सड़कों के किनारे झाड़ियों की वही कतारें थीं। उनके घरों के सामने वही गाड़ियाँ खड़ी थीं। हवा में संतरे के पेड़ों की वही खुशबू फैली हुई थी। लेकिन फिर भी कुछ अलग सा था, मानो मेरे बिना भी ज़िंदगी हमेशा की तरह चलती रही हो। लेकिन अजीब बात यह थी कि इतनी दूरी से भी मुझे अपने माता-पिता का दर्द अपने सीने में गहराई तक महसूस हो रहा था। वे अब कभी पहले जैसे नहीं रहेंगे। मैं भी अब कभी पहले जैसी नहीं रहूँगी।

दो मंजिला छोटे मकानों की बत्तियाँ टिमटिमा उठीं, अंदर बैठे लोग रात की खबरें देखने या अपना नाश्ता करने में मशगूल हो गए। एक कार धीरे-धीरे गुजरी, उसकी आवाज़ इतनी तेज़ थी जितनी

मैंने पहले कभी किसी कार की नहीं सुनी थी। मुझे रबर के नीचे हर कंकड़, हर कण की चरमराहट सुनाई दे रही थी। अंदर बैठे व्यक्ति ने खिड़की से मेरी तरफ देखा, उसका चेहरा अजीब तरह से बिगड़ गया। उसकी आँखें ऐसे चौड़ी हो गईं जैसे उसने कोई भूत देख लिया हो।
मेरा दिल बैठ गया।
वह मेरे पिता थे।

अठारह: लड़का

मैं मोटल की अंधेरी पार्किंग में चहलकदमी कर रहा था और अपनी घड़ी देखी; उसमें रात के ग्यारह बज रहे थे। सूरज उगने में लगभग छह घंटे बाकी थे। मुझे रूबी को पिशाचों का शिकार बनने से पहले ढूंढना था, और उससे पहले वह कितनी मुसीबत में पड़ सकती थी, यह भी ध्यान रखना था। अगर फ्यूज़ ने उसे मुझसे पहले ढूंढ लिया, तो मुझे बहुत कुछ समझाना पड़ेगा। इसका मतलब होगा मेरी नौकरी, और शायद मेरी जान भी।

मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और अपना फोन निकाला। मैंने खाली स्क्रीन को देखा और फोन चालू किया। रूबी को मिशन पर ले जाने के बाद मैंने इसे बंद कर दिया था, क्योंकि मुझे पता था कि मेरी गतिविधियों का पता लगाया जा सकता है, लेकिन अब मुझे इसकी ज़रूरत थी। यह जोखिम भरा था, लेकिन मुझे रूबी को ढूंढना ही था और मुझे लग रहा था कि मुझे पता है कि वह कहाँ है। मैंने गहरी सांस ली और नंबर डायल किया।

दूसरी तरफ से सैनिक ने कहा, "यह केम्प है।"

मैंने राहत की सांस ली। यह मेरा खुफिया अधिकारी टॉड केम्प था। वह मेरे लिए सबसे करीबी दोस्त था। अगर कोई मेरी मदद कर सकता था, तो वह वही था।

“टॉड, मुझे तुमसे कुछ काम करवाना है।” ऊपर एक नियॉन लाइट टिमटिमा रही थी, जिससे दृश्य अवास्तविक और स्वप्निल सा लग रहा था। कुछ पल सन्नाटा छा गया।

“कैप्टन स्टोन? शुक्र है आप ठीक हैं। मुख्यालय में किसी ने आपको कई दिनों से नहीं देखा था। हमें तो लगने लगा था कि आप लापता हो गए हैं।”

मैंने एक गहरी सांस ली और खुद को उस झूठ के लिए तैयार किया जो मैं बोलने वाली थी। "मैं ठीक हूँ। बस कुछ दिनों की छुट्टी चाहिए। पारिवारिक मामला है।"

एक तेज आवाज करती मोटरसाइकिल मोटल के पार्किंग स्थल में आकर रुकी, जिससे मुझे कुछ भी सुनने में कठिनाई हुई।

यह बात समझकर टॉड ने पूछा, "सर, आप कहाँ हैं?"

“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।” मोटरसाइकिल सवार ने अपनी गाड़ी कुछ दूरी पर खड़ी की और इंजन बंद कर दिया। वह नशे में लड़खड़ाते हुए लगभग अपनी बाइक से गिर पड़ा। वह लड़खड़ाते हुए मोटल के बार में घुस गया। मेरी निगाहें उस पर टिकी रहीं। “जरूरी बात यह है कि मुझे आपकी मदद चाहिए।”

मैंने जो कहा था उसे समझने के लिए टॉड एक पल के लिए चुप हो गया। "अह... बिल्कुल, कैप्टन। आपको क्या चाहिए?"

“मुझे एरिज़ोना के बिस्बी में इस नाम की किसी महिला का पता चाहिए। रूबी कार्टर। महिला। लगभग अठारह वर्ष की।”

"डटे रहो।"

स्पीकर से कंप्यूटर की कुंजियों की क्लिक करने की आवाज़ आई। फिर एक विराम।

“ये रही। उम… रूबी कार्टर। बिस्बी, एरिज़ोना। उम्र सत्रह साल।”

मेरा दिल खुश हो गया। "बस यही है।"

“उम… कैप्टन…” टॉड हिचकिचाया। “यहाँ लिखा है कि संबंधित व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी है।”
मैं चौंक गया, लेकिन क्षण भर के लिए। ज़्यादातर इंसान जो पिशाच बन जाते थे, उन्हें मृत घोषित नहीं किया जाता था। उनमें से कई, खासकर किशोर, लापता या भगोड़े के रूप में दर्ज होते थे। लेकिन रूबी तो मर चुकी थी। उसने मुझे कार दुर्घटना के बारे में बताया था। अब बात समझ में आई। लेकिन इससे मेरे मन में एक और सवाल खड़ा हो गया।
क्या उस नाम से संबंधित कोई पुलिस रिपोर्ट दर्ज है?
फोन पर और क्लिक करते हुए। “नहीं। बस एक कोरोनर की रिपोर्ट और मृत्यु प्रमाण पत्र है। रिपोर्ट में लिखा है कि उसकी मौत कार दुर्घटना के प्रभाव और विस्फोट की गर्मी से हुई। शव पूरी तरह जल जाने के कारण पोस्टमार्टम नहीं किया जा सका।”
मुझे यह जानकारी अजीब लगी, इसलिए मैंने भौंहें चढ़ा लीं। "क्या वहां कोई स्मारक था?"
“मुझे तो यहाँ ऐसा कुछ नहीं दिख रहा। लेकिन मैं आपके लिए इस बारे में और जानकारी जुटा सकता हूँ।”
"नहीं वह ठीक है।"
मैंने पहले कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया था। टॉड के अनुसार, सभी रिपोर्टें बिल्कुल स्पष्ट थीं। दुर्घटना में जलकर राख हो जाने से उसकी मृत्यु हो गई थी। लेकिन मैं जानता था कि ऐसा नहीं था, क्योंकि मैंने उसे अपनी आँखों से देखा था, उसके शरीर को अपने हाथों से छुआ था। मुझे लगता है कि जब पुलिस को उसके अवशेष नहीं मिले, तो वे शायद इसी नतीजे पर सहमत हुए होंगे...
लेकिन इससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि उसका निर्माता बहुत चालाक और फुर्तीला था, शायद विस्फोट होने से पहले ही उसने चुपके से उसके शरीर को मलबे से दूर कर दिया था। यह महज़ कोई आकस्मिक निर्णय या बाद का विचार नहीं था, इसमें बहुत सारी बारीकियाँ शामिल थीं। यह बिल्कुल सटीक समय और स्थान पर किया गया था। मैंने इस विचार को झटक दिया। मैं कोई निजी जासूस नहीं था। मैं FUSE का कैप्टन था, और अगर मैंने अपनी गलती नहीं सुधारी तो मेरी नौकरी और जान दोनों जा सकती थी।
“और पता?” मैंने पूछा।
“ठीक है। पता है 8344 ईस्ट सनब्रुक लेन। मुख्य चौराहे हाइलैंड और पार्क हैं।”
मुझे उस इलाके की पूरी जानकारी थी। वह एक बहुत छोटा कस्बा था, और बिस्बी में FUSE का अस्थायी मुख्यालय स्थापित करने के बाद से मैंने उसका गहन अध्ययन किया था। मैं उसे अच्छी तरह जानता था।
"उत्तम।"
मैंने फोन रखने ही वाला था कि टॉड ने मुझे रोक दिया। "रुको, सर। क्या आप ठीक हैं?"
मैंने अपने चेहरे को हाथ से रगड़ा। “हाँ। जैसा मैंने कहा, परिवार मायने रखता है।” मेरे ऊपर लगी नियॉन लाइट बजने लगी, जिससे मेरे पेट में बढ़ती घबराहट और बढ़ गई। मेरे पास ज्यादा समय नहीं था। “सुनो, केम्प…”
“हाँ?” टॉड ने जवाब दिया।
“अगर जनरल ब्रांट का फोन आए, तो उन्हें बता देना कि मुझे कुछ दिनों की निजी छुट्टी चाहिए थी। बस इतना ही। इस बातचीत को अपने तक ही रखना। यह गोपनीय है।”
"से यकीन।"
“बहुत खूब।” मैंने अपना सेल फोन ज़मीन पर गिरा दिया और उसे अपने जूते से कुचल दिया। ये सब खत्म होने के बाद मैं नया फोन ले लूंगा। मैं पकड़े जाने का जोखिम नहीं उठा सकता था।

खासकर अब, जो मैंने किया था। अपने सैनिकों को छोड़ दिया। एक बदकिस्मत को भागने में मदद की। डकैती की। मुझे अपने देशद्रोही फैसलों पर पछतावा करने का भी समय नहीं मिला था कि मेरी नज़र मेरे बगल में खड़ी अकेली मोटरसाइकिल पर पड़ी। ये मेरे आपराधिक कामों की सूची में एक और निशान होगा। मैंने कंधे उचकाए और अपनी नई बाइक की ओर चल पड़ा।

दुर्भाग्य से, बाइक का मालिक इतना नशे में नहीं था कि चाबी इग्निशन में ही छोड़ दे। मैंने अपनी नज़र उस गंदे से मोटल पर घुमाई और मुझे जो चाहिए था वो मिल गया। मैं दीवार के पास गया और मिट्टी की दीवार से एक बत्ती उखाड़ दी, जिससे वहाँ एक बड़ा छेद हो गया, जो रूबी की घुंडी तोड़ने की कला की याद दिलाता था। इमारत से चिंगारियाँ निकलीं और मेरे हाथ में पकड़ी बत्ती से तार लटक रहे थे। मैंने अपनी जेब से चाकू निकाला और तार का एक छोटा सा टुकड़ा काट दिया।

"अब बारी है पहिए लगाने की।" मैं हार्ले पर चढ़ गया। बड़ी आसानी से मैंने अपने तारों को बाइक के कनेक्टर से जोड़ दिया। मैंने इग्निशन स्विच ऑन किया और इंजन की तेज़ आवाज़ सुनकर मुस्कुरा उठा। लगता है मेरी हॉटवायर ट्रेनिंग बेकार नहीं गई।

मैंने अपना बैग साइकिल के पीछे बांधा और स्टैंड उठाया। हेलमेट न होने का एहसास होने पर मैंने धूप से बचने के लिए गहरे रंग के चश्मे पहन लिए। मुझे पहले से ही पता चल गया था कि यह रात लंबी होने वाली है।

~*~

मैं तेज़ी से हाईवे पर गाड़ी चला रहा था, रूबी के घर की ओर पूरब दिशा में। मुझे उसे ढूंढने की चिंता नहीं थी। वह वहीं होगी। सभी नवजात शिशु वहीं जाते थे। घर।

यह वाकई बहुत दुखद था, क्योंकि वे समझ नहीं पा रहे थे। वे यह समझ ही नहीं पा रहे थे कि उनके परिवार वाले उन्हें अब और नहीं चाहेंगे। उनके बदले हुए रूप को देखकर तो बिल्कुल नहीं। मैंने ऐसा कई बार देखा था, और ज़्यादातर हम उन्हें तब तक संभाल लेते थे जब तक वे अपने भोले-भाले परिवारों को बुरी तरह डरा नहीं देते थे। लेकिन, कभी-कभार जब वे घर पहुँचकर अपने प्रियजनों के सामने अपना नया रूप प्रकट करते थे, तो हमें स्थिति को संभालने के लिए काफ़ी मशक्कत करनी पड़ती थी।

हम अपने साथियों, यानी उन बदनसीब लोगों को बुलाते थे जो हमारे लिए काम करते थे, ताकि वे आकर उनकी यादें मिटा दें। कुछ पिशाचों के पास यह खास क्षमता होती थी और वही हमारे लिए सबसे ज़्यादा उपयोगी होते थे। लेकिन फ्यूज़ के साथ काम करना किसी कैदी की तरह था। मैं भगवान से प्रार्थना करता था कि रूबी के साथ ऐसा न हो। फिर भी मैं सोचता रहता था कि मुझे उसकी परवाह क्यों है।

लेकिन उसमें कुछ तो खास था, कुछ ऐसा जो मुझे उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करता था—नहीं, मुझे उसकी रक्षा करने की ज़रूरत महसूस होती थी। और वह खास बात ज़रूर बहुत बड़ी रही होगी, तभी तो मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी बदल दी।

कुछ ही दिनों में, मैं फ्यूज़ सेना में एक निष्ठावान कप्तान से, अपने बदले के प्रति पूरी तरह वफादार, एक गद्दार बन गया था। मैंने अपने नैतिक मूल्यों और वफादारी पर सवाल उठाना शुरू कर दिया था। और अब, रूबी को मारने के बजाय, जैसा कि मुझे करना चाहिए था, मैं उसकी मदद करने जा रहा था। मैंने एक व्यंग्यात्मक हंसी हंसी। खैर, अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है।

मैंने सड़क के एक तीखे मोड़ पर गाड़ी मोड़ी और लाल बत्ती पार कर दी। रेगिस्तानी झाड़ियाँ और कैक्टस तेज़ी से मेरे सामने से गुज़रे, जिससे मेरा ध्यान अपनी स्थिति की ओर गया। जब मुझे पूर्वी इलाका मिला, जो स्पेनिश शैली के दो मंजिला घरों से भरा एक छोटा सा शांत उपनगरीय इलाका था, तो मैंने मोटरसाइकिल की गति धीमी कर दी। सड़क की बत्तियों की हल्की रोशनी फुटपाथ पर

पड़ रही थी और मैंने गाड़ी को एक पर्यटक पार्किंग क्षेत्र में रोक दिया।
मैं जल्दबाजी में रूबी के बहुत करीब नहीं जाना चाहता था, कहीं ऐसा न हो कि मैं उसे या उसके परिवार को डरा दूं। मुझे इस स्थिति को बहुत सावधानी से संभालना था। मुझे रूबी को वापस लाना था और उसे किसी सुरक्षित जगह पर ले जाना था। ऐसी जगह जहां वह अपने जैसी दूसरी लड़कियों के साथ रह सके और अपनी जान का खतरा महसूस न करे। फिर मैं हमेशा की तरह काम पर लौट सकता था और इस पूरे मामले को भूलने की कोशिश कर सकता था।
मैं एक गली से गुज़रा और फिर दूसरी गली से। मैंने घरों के नंबर देखे, मुझे रूबी का वो पता याद आ रहा था जो मेरे खुफिया अधिकारी ने मुझे दिया था। लेकिन मैं वहीं रुक गया। वहाँ, लगभग छह घर आगे, मैंने रूबी को देखा। वह टायर वाले झूले वाले घर के सामने फुटपाथ पर खड़ी थी।
मैंने उसके आकर्षण को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन उसकी सुंदरता देखकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह पूर्णता की साक्षात मूर्ति थी। उसने अपने हाथों में कुछ पकड़ रखा था और उसे लालसा भरी निगाहों से निहार रही थी। उसके सुनहरे बाल लंबे घुंघराले होकर उसकी पीठ पर लटक रहे थे और ठंडी रात की हवा में लहरा रहे थे। उसकी कोमल भुजाएँ काँप रही थीं।
और उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि मैं उसकी ओर कितना आकर्षित था, लेकिन मेरा पुराना रूप इस विचार पर हँसता कि एक इंसान को पिशाच आकर्षक लग सकता है। हाँ, वह अभी भी एक स्त्री थी और मैं एक पुरुष, लेकिन 'मैं तुम्हारा खून चूस लूँगी' वाली बात ने स्थिति को काफी जटिल बना दिया था।
मैं क्या सोच रहा था? ज़ाहिर है, यह पेचीदा होता। बहुत पेचीदा। नामुमकिन। अगर मैं कोई आम आदमी होता, कोई स्कूल टीचर या कुछ और, तो बात अलग होती। लेकिन मैं बदकिस्मत आत्माओं के खात्मा के गुट का सबसे प्रभावशाली अधिकारी था। मैं उसका दुश्मन था। सरकार ने मुझ पर भरोसा जताया था और मैंने उनके मकसद के प्रति अपनी अटूट वफ़ादारी की कसम खाई थी। मेरा मकसद।
मैंने अपने मन में उठ रहे इन बेतुके विचारों को झटक दिया और एक कदम आगे बढ़ाया। मुझे अपना मिशन पूरा करना ही होगा, और फिर मुख्यालय लौटना होगा। लेकिन इससे पहले कि मैं यह सोच पूरी कर पाता, रूबी ज़मीन पर गिर पड़ी, उसके कंधे चुपचाप कांप रहे थे।
मेरा दिल सहानुभूति से भर उठा, सांस लेना मुश्किल हो गया और मैं इस भावना से जूझती रही। मैंने कई बदकिस्मत लोगों को यह एहसास होते देखा था कि उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई है और मैंने कभी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी। लेकिन अब, मैं अपने भीतर करुणा महसूस कर रही थी और हे भगवान, इस लड़की को गले लगाने की तीव्र इच्छा हो रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं भी उसके साथ अंदर से मर रही हूँ, उसका दुख किसी तूफानी बादल की तरह सूरज को ढक रहा हो।
मैं उसके नाजुक शरीर के और करीब गया, जो गीले कंबल की तरह सिकुड़ा हुआ था, उसका सिर नीचे झुका हुआ था, उसके बाल पतले पर्दों की तरह उसके चेहरे को ढके हुए थे।
मैं खुद को रोक नहीं पाया। रूबी कार्टर, मेरी वैम्पायर फेथ, ने मेरे साथ कुछ ऐसा किया था जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। उसने मुझे फिर से महसूस करने की शक्ति दी थी।

उन्नीस: रूबी

अपने पिता का चेहरा उनकी कार की खिड़की से देखते ही मेरे सीने में गहरा दुख छा गया। अपराधबोध ने मुझे अंदर तक चकनाचूर कर दिया। मैं वहीं खड़ी अपने पिता की आँखों में देख रही थी और सोच रही थी कि मैंने उनके साथ जो बुरा बर्ताव किया था, उसकी भरपाई मैं कैसे करूँगी। वही पिता जिनके साथ मैंने इतनी बेरहमी बरती थी। वही पिता जिन्हें मैं अपने खून के रिश्ते न होने के लिए कोसती थी, जबकि उन्होंने मुझे अपनी पूरी क्षमता से पाला-पोसा था। मैं वहीं खाली मन से उस गली में खड़ी थी जहाँ मैं पली-बढ़ी थी। मेरा पुराना घर। मैं अब कभी वहाँ नहीं रहूँगी।

दिल का दर्द और घर की याद मुझ पर मानो एक साथ टूट पड़ी, जब हमारी नज़रें मिलीं तो मेरी सांसें थम गईं। मैंने देखा कि मुझे देखते ही उनके दिमाग में क्या चल रहा था। मुझे पता था कि सफेद बालों और बैंगनी आंखों के साथ मैं बिल्कुल अलग इंसान लग रही थी, लेकिन फिर भी, मेरे पिताजी के चेहरे पर पहचान का दर्द साफ झलक रहा था। वे उलझन में थे। उन्हें पता था कि मैं मर चुकी हूं। और सच में, मैं मर चुकी थी।

लेकिन अब मुझे देखकर शायद उसके मन में संदेह पैदा हो गया होगा। हो सकता है उसने मुझे भूत या अपनी कल्पना की उपज समझा हो।

मैं दौड़कर उनके पास जाना चाहती थी। मैं कार का पीछा करना चाहती थी, दरवाजा खोलकर उनके गले लग जाना चाहती थी। मैं उन्हें बताना चाहती थी कि वो मेरे पापा हैं— मेरे इकलौते पापा— और मैं उनसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं चाहती थी कि मेरे पापा मुझे अपनी बाहों में वैसे ही थाम लें जैसे वो कई रातों को मुझे थामते थे जब मैं डरी हुई या उदास होती थी। मुझे उनकी कितनी याद आ रही थी, इस एहसास ने मुझे ज़ोर का झटका दिया, जैसे किसी ट्रक ने मुझे जकड़ लिया हो।

उसे देखते ही मेरी आँखों में आँसू आ गए। मुझे देखकर वह डरा हुआ लग रहा था। वह भयभीत, दुखी और आहत दिख रहा था। मैं ऐसा नहीं चाहती थी। मैं उसे चोट नहीं पहुँचाना चाहती थी।

हाँ, मैं अपने माता-पिता के दरवाजे पर जाकर उन्हें कुछ पल की राहत और ऐसी खुशी दे सकती थी जिसकी उन्होंने कभी उम्मीद नहीं की थी। लेकिन यह तो एक भयानक निराशा की शुरुआत ही होती जब उन्हें पता चलता कि मैं एक राक्षस बन चुकी हूँ। मैं अब उनकी प्यारी बच्ची नहीं थी। सच कहूँ तो, मैं इंसान भी नहीं थी। मैं कुछ बिल्कुल अलग थी। और मैं उन्हें पलक झपकते ही मार सकती थी।

हालांकि यह सब कुछ ही सेकंडों में हुआ, लेकिन मुझे लगा जैसे कार मेरे सामने से धीमी गति से गुज़र रही हो। मेरे पिता की हरी आँखें मेरी आँखों से मिलीं और कार अचानक ब्रेक लगाकर रुक गई। इससे पहले कि मेरा मन कुछ सोच पाता, मैं अँधेरे में गायब हो गया। मैंने दूर से देखा कि मेरे पिताजी कार से बाहर निकले और चारों ओर देखने लगे।

उसे आह भरते और सिर हिलाते देख मुझे गहरा दुख हुआ। उसने मुझे देखा तो था, पर पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था। शायद उसे लगा कि उसका दिमाग उसे धोखा दे रहा है। अनिच्छा से वह कार में बैठा और चला गया।

मैं घंटों तक झाड़ियों में दुबका रहा, जैसे सुन्न होकर सो रहा हो। पिता को देखने का दुख असहनीय था। मैं अपने पुराने जीवन और नए जीवन के बारे में सोच रहा था। मैं अपनी मृत्यु के बारे में सोच

रहा था, और इस सब के दौरान मैं झींगुरों की तेज़ आवाज़ और अपने दिल की धड़कन सुन रहा था। जब मुझे यकीन हो गया कि मोहल्ले के सभी लोग सो गए हैं, तो मैं लड़खड़ाते हुए बड़ी मुश्किल से अपनी पुरानी गली से होते हुए घर की ओर चल पड़ा। अंधेरा छा गया था, चाँद की नीली रोशनी के अलावा कोई रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी जो छोटे से घर को ढक रही थी। छत की टाइलें चमक रही थीं और सफेद खिड़कियों के शटर हल्के से जगमगा रहे थे। लॉन की घास नहीं कटी थी और खरपतवार घनी और उगी हुई थीं।

मैंने सामने के आंगन में लगे मेस्क्वाइट के पेड़ से लटकते टायर वाले झूले को देखा। मुझे खुद की झलक दिखाई दी, जब मैं छोटी बच्ची थी, पैर हिलाकर खुशी से हंस रही थी। मुझे याद आया कि मेरी माँ और पिताजी बरामदे में बैठे नींबू पानी पी रहे थे, जबकि मैं गर्मी की सुबह पड़ोस के बच्चों के साथ खेल रही थी। मुझे पेड़ के तने के चारों ओर ईंटों की कतार दिखाई दी, जहाँ मैं ठोकर खाकर गिर गई थी और मेरा पैर टूट गया था। मुझे घास का मैदान याद आया, जहाँ मैं अपनी माँ के साथ देर रात तक लेटी रहती थी और बिजली के तूफानों को आते हुए देखती थी। मुझे अपना पूरा जीवन ईंटों, लकड़ी और भूली हुई यादों के एक बंडल में लिपटा हुआ दिखाई दिया…

मेरे पिताजी कहा करते थे, "मेरी प्यारी बेटी, एक दिन यह घर तुम्हारा होगा। फिर तुम्हारे बच्चों का। और फिर उनके बच्चों का।"

"बिल्कुल, पापा," मैं जवाब देती। "मुझे यह घर बहुत पसंद है। आप चाहकर भी मुझे इससे बाहर नहीं रख सकते।"

मुझे उनकी हंसी याद आ गई, गहरी और जानी-पहचानी। इसे सुनकर मेरे चेहरे पर हमेशा मुस्कान आ जाती थी।

लेकिन पल भर में सब कुछ खत्म हो गया। यह कभी मेरा घर नहीं बन पाएगा और मेरा अपना परिवार भी कभी नहीं होगा...

भावनाओं से अभिभूत होकर, मैं सड़क पार करके, पीछे की दीवार फांदकर, घर के पिछले दरवाजे से अंदर घुस गया, जो कभी बंद नहीं होता था। अपने माता-पिता को जगाने के डर से, मैंने खुद को केवल इतना ही समय दिया कि दीवार से एक तस्वीर उतार सकूँ, जिसमें मेरे माता-पिता मुस्कुराते और खुश दिख रहे थे। मैंने फ्रेम फेंक दिया और उस पतली सी तस्वीर को अपने हाथों में थामे रखा। मैं घबराकर वापस सड़क पर भागी, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने तस्वीर को देखा, उनके चेहरों को देखा, और मुझे कहीं न कहीं यह एहसास था कि उन्होंने मुझे माफ़ कर दिया है। मुझे पता था कि मेरी माँ ने मुझे गुस्से में घर से बाहर निकल जाने के लिए माफ़ कर दिया था, जबकि वह बस मुझे सच बताना चाहती थीं। और मुझे यह भी पता था कि मेरे पिता ने मुझे उस तिरस्कार भरी नज़र से देखने के लिए माफ़ कर दिया था जब मुझे पता चला कि वह मेरे असली पिता नहीं हैं।

लेकिन मुझे इस बात का यकीन नहीं था कि क्या उन्होंने मुझे मरने के लिए माफ़ किया था। उन्हें हमेशा के लिए छोड़कर चले जाने के लिए। मुझे उम्मीद थी कि वे मेरी मौत के लिए खुद को दोषी नहीं ठहराएंगे। मुझे उम्मीद थी कि वह रात उन्हें ज़िंदगी भर परेशान नहीं करेगी। यह सोच मेरे लिए असहनीय थी। मैंने सामने के आंगन में झूलते हुए टायर वाले झूले को देखा और जान गई कि मुझे क्या करना है।

मैं उस बड़े पेड़ की ओर बढ़ा, लेकिन वहीं रुक गया, गाइ की चेतावनी मेरे दिमाग में कौंध गई। उसने मुड़कर कहा था, "दुर्भाग्यशाली लोग अपने परिवार को फिर कभी नहीं देख पाएंगे।" मैंने इस विचार को मन में उतरने दिया, लेकिन एक पल बाद, मैंने अपना सिर हिलाया और पेड़ के नीचे ईंटों के घेरे पर बैठ गया— वही जगह जहाँ सालों पहले मेरा पैर टूटा था। गाइ ने कहा था कि मैं अपने परिवार

को फोन नहीं कर सकता या उनसे मिल नहीं सकता। लेकिन उसने यह नहीं कहा था कि मैं उनके लिए कोई संदेश नहीं छोड़ सकता।

मैंने अपने माता-पिता की तस्वीर अपनी गोद में रखी और ज़मीन से कंकड़-पत्थर इकट्ठा करने लगी। जब मेरे पास योजना के अनुसार पर्याप्त कंकड़-पत्थर हो गए, तो मैंने उन्हें एक खास पैटर्न में अपने बगल में रखना शुरू कर दिया। काम पूरा होने पर, मैं खड़ी होकर अपने काम की प्रशंसा करने लगी। ईंटों पर मैंने 'मैं ठीक हूँ' लिखा था, और उनके बगल में रूबी के लिए एक छोटा सा 'R' भी लिखा था।

मुझे पता था कि यह कुछ खास नहीं था और मेरे माता-पिता के सवालों का जवाब देने की शुरुआत भी नहीं कर पाएगा—पीछे मुड़कर देखने पर, शायद इससे और भी सवाल उठेंगे—लेकिन उनके मन में कहीं न कहीं, यह कम से कम उन्हें थोड़ी राहत तो दे ही सकता था।

मैं वापस फुटपाथ पर आ गई और माँ-बाप की तस्वीर को निहारने लगी। मैंने उसे अपने सीने से ऐसे लगा लिया मानो वह मेरे ज़ख्मों पर मरहम हो। मैं अपने परिवार को फिर कभी नहीं देख पाऊँगी, लेकिन उन्हें कभी नहीं भूलूँगी। मेरे हाथ में यह तस्वीर मुझे उस चीज़ की मीठी याद दिलाती रहेगी जिसे मैं मजबूरी में पीछे छोड़ आई थी।

मैंने सूंघा और घर को एक पल के लिए टकटकी लगाकर देखा, फिर जाने के लिए मुड़ गई। लेकिन बरामदे में मेरी नज़र एक चीज़ पर पड़ी, झूले पर पड़ा हुआ बुना हुआ कपड़ा। यह मेरी माँ का स्वेटर था। शायद गलती से ही वहाँ छूट गया होगा। इतनी दूरी से भी मुझे उसमें उनकी खुशबू महसूस हो रही थी— लैवेंडर और वेनिला की। ठीक वैसी ही खुशबू जैसी वो मुझे रात को सोने से पहले चूमते समय देती थीं। मैं अब और खुद को रोक नहीं पाई।

मैं अपने घर के सामने फुटपाथ पर गिर पड़ा और शोक के आँसू बेरोक-टोक बहने लगे। ज़ोर-ज़ोर से सिसकियाँ मेरे सीने को हिला रही थीं और मेरी काँपती साँसें एक धीमी, उदास सिसकी के साथ निकल रही थीं।

मेरे कंधे पर गाय के हाथ का स्पर्श मुझे चौंकाया नहीं। संदेश लिखने के बाद से ही मुझे उसका आभास हो रहा था। लेकिन इस समय मैं इतनी दुखी थी कि मुझे किसी बात की परवाह नहीं थी। मुझे किसी बात की परवाह नहीं थी, परिवार खोने का दर्द मेरे अंदर एक भारी बोझ की तरह धंसा हुआ था।

“कोई बात नहीं।” वह मेरे बगल में ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गया। उसने मुझे अपनी बाहों में उठा लिया और मेरा सिर अपने सीने से लगा लिया। “अब जाने देने का समय आ गया है।”

बीस: रूबी

अपने पिता को उस हालत में, भ्रमित और दुखी देखना, मेरे जीवन के सबसे कठिन पलों में से एक था— शायद कार दुर्घटना में मरने और पिशाच बनने के अलावा। फिर भी, इसने मुझे अंदर से तोड़ दिया। ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरी पसलियों को पिंजरे की तरह खोल दिया हो, मेरा दिल निकाल लिया हो और उसे तब तक निचोड़ा हो जब तक वह फट न गया हो। मेरा सीना दर्द से भरा और खाली रह गया था।

बस यही था। अब वो समय आ गया था जब मुझे अपनी हर जानी-पहचानी चीज़ को अलविदा कहना था। मेरे पापा। मेरी मम्मी। मेरा घर। मेरी ज़िंदगी। गाय ने मुझे पहले ही बता दिया था कि ऐसा ही होगा, लेकिन उस पल तक मुझे हालात की गंभीरता का एहसास नहीं हुआ था। ये मानो एक तेज़ रफ्तार ट्रेन की तरह था जो मुझे बार-बार टक्कर मार रही थी, हर बार मेरी सांसें रुक रही थीं। ये कहना कि मैं पूरी तरह टूट गई थी, बहुत कम होगा।

सब कुछ खत्म हो गया। सब कुछ। और बदले में मुझे क्या मिला? बस दो नुकीले दांत और सुपरवुमन की तरह शहर में तेज़ी से दौड़ने की एक अजीब सी क्षमता। मेरे हिसाब से यह कोई अच्छा सौदा नहीं था।

मुझे घंटों तक रोने देने के बाद, गाय ने मुझे अपनी बाहों में उठाया और मेरे घर से दूर ले गया। मेरा पुराना घर। हम सड़क पर चले, एक लॉन पार किया और एक स्थानीय स्कूल की पार्किंग में पहुँच गए। मैं शायद खुद चलने में सक्षम थी, लेकिन मैंने उसे मेरी मदद करने दी। मेरी मानसिक स्थिति ने मुझे शारीरिक रूप से पूरी तरह थका दिया था।

उन्होंने मुझे पैरों पर खड़ा किया और मेरी ठुड्डी को अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़कर मेरी आँखों को ऊपर की ओर उठाया ताकि मैं उनकी आँखों से मिल सकूँ। "तुम ठीक हो?"

मैंने कांपती हुई सांस ली, लेकिन सिर हिलाया। उस पल मैं ठीक नहीं थी। लेकिन यह जानकर कि मैंने अपने माता-पिता के लिए संदेश छोड़ा है, मुझे कुछ राहत मिली। मुझे पता था कि एक दिन मैं ठीक हो जाऊंगी और वे भी।

गाइ ने मेरे हाथों में मौजूद तस्वीर पर एक नज़र डाली और मुझे लगा कि शायद उसे पता है कि मैंने क्या किया है। लेकिन अगर उसे पता भी था, तो उसने कुछ नहीं कहा। उसने पार्किंग में खड़ी एक मोटरसाइकिल से अपना बैग निकाला।

“हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। मुझे आपको किसी ऐसे व्यक्ति के पास ले जाना होगा जो आपकी मदद कर सके। और हमें यह काम जल्दी करना होगा।”

“क्या यह तुम्हारी है?” मैंने हार्ले की ओर इशारा करते हुए अपने आंसू पोंछे।

“नहीं। और यह भी नहीं।” वह बगल में खड़े बड़े नीले ट्रक के पास गया और अपने बैग से कुछ औजार निकाले।

उसने औजारों को खनखनाते हुए देखा और मुझे अचानक एहसास हुआ। "तुम ट्रक चुरा रहे हो?" मेरी आवाज एक नन्हे बच्चे की चीख जैसी तीखी हो गई।

हाथ में लोहे की छड़ लिए गाय ने उसे ट्रक और खिड़की के बीच की दरार में फंसा दिया। वह रुका और मेरी तरफ देखते हुए बोला, "यह तो उधार लेने जैसा है।"

मैंने गहरी साँस ली—जब मैं तीव्र भावनाओं से घिर जाता था, तो अक्सर ऐसा ही करता था। न केवल मैं अपने घर को छोड़ने से निराश था, बल्कि अब मैं गाय के साथ मिलकर एक वाहन चुराने वाला था। मेरा जीवन किसी घातक इंजेक्शन के लिए रोगाणु रहित सुई का उपयोग करने से अधिक अर्थहीन लग रहा था। मैं उसे काम करते हुए देखता रहा।

“हाँ। तो काम खत्म होने पर हम इसे लौटा देंगे?”

उसने अपनी आँखें घुमाईं और फिर रुक गया। "हाँ।"

ट्रक का यात्री वाला दरवाज़ा खुल गया। गाय ने मुझे बैठने का इशारा किया, मानो किसी औपचारिक समारोह में हों, उसने झुककर मुझे बैठने को कहा। मैंने फिर से नाक सिकोड़ी, लेकिन संशय के बावजूद अंदर बैठ गई। ट्रक से ताज़ा धुलाई की खुशबू आ रही थी, लटकते पेड़ के आकार के एयर फ्रेशनर की तीखी गंध मेरी नाक में भर गई। सीट का चमड़ा मेरे घुटनों से चिपक रहा था और मैं असहज महसूस कर रही थी। गाय ड्राइवर की सीट पर कूद गया और डैशबोर्ड के नीचे कुछ टटोलने लगा और मुझे तिरछी नज़र से देखा।

मुझे पता है कि यह आपके लिए कितना मुश्किल होगा। लेकिन यह आपके भले के लिए है। मैं वादा करता हूँ।

मैंने अपने हाथों को जोड़कर अपने परिवार की तस्वीर को अपने नीचे दबा लिया। ज़ाहिर है, यह बहुत मुश्किल था। यह अब तक की सबसे भयानक बात थी। मैंने अपना परिवार खो दिया था और अब मेरे पास सिर्फ़ गाय ही बचा था। हालाँकि मुझे उस पर भरोसा था, फिर भी मुझे यकीन नहीं था कि मुझे उस पर भरोसा करना चाहिए या नहीं। मेरा मतलब है, उसने कहा था कि वह यह काम बहुत समय से कर रहा है और पिशाचों के बारे में बहुत कुछ जानता है, लेकिन वह तो मेरा कथित दुश्मन था। क्या मुझे उसे अपने साथ ले जाने देना चाहिए? क्या मुझे अपने परिवार को यूँ ही छोड़ देना चाहिए? गाय के औजारों की खनक ने मेरे सारे सवालों को दबा दिया और मैं रुककर उसे काम करते हुए देखने लगी।

“ये कौन है जिसके पास तुम मुझे ले जा रहे हो?” मैं गाय के संकोच भरे रवैये से तंग आ चुकी थी और बस सच जानना चाहती थी। अगर मुझे अपने परिवार से दूर जाने के लिए मजबूर किया जा रहा था, तो कम से कम मुझे ये जानने का हक तो था कि मेरे साथ क्या होने वाला है।

“उसका नाम विल्सन है।” गाय ने अपना सिर थोड़ा नीचे और एक तरफ झुकाया। “और शायद वह मुझे देखकर खुश नहीं होगा।”

ट्रक का इंजन एक पल के लिए लड़खड़ाया और फिर गाय के एक्सीलरेटर पैडल दबाते ही रफ्तार पकड़ ली। वह सीधा बैठ गया और अपनी उपलब्धि पर गर्व से मुस्कुराते हुए मेरी ओर देखा। दिल में दर्द होने के बावजूद, मैं उसके बचकाने व्यवहार पर हंस पड़ी।

"और मेरा मानना है कि पिशाचों को मारने वाले लोग अपने बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपको कारों को हॉटवायर करना सिखाते हैं?"

“हां।” मेरी बात सुनकर उन्हें हंसी आ गई और उन्होंने मेरी तरफ देखा। “मैं लगभग किसी भी परिस्थिति से खुद को निकाल सकता हूं।”

"एक पिशाच द्वारा खून चूस लिए जाने के अलावा?" मैंने मुस्कुराते हुए अपनी आंखों से नमी पोंछी। एक पल के लिए वह नाराज़ दिखे, मानो मैंने उनके अहंकार को थोड़ा ठेस पहुँचाई हो। लेकिन फिर उनकी वही स्लेटी-धूसर निगाहें आत्मविश्वास से भरी और सहजता से मेरी ओर देखने लगीं। "वह एक असामान्य परिस्थिति थी।"

“ठीक है।” मैं खिलखिलाकर हंस पड़ी। मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि मैंने सचमुच कुछ रात पहले उसकी जान बचाई थी। अठारह साल की एक लड़की ने एक तगड़े फौजी कप्तान की

जान बचाई थी। अगर मुझे पंख लग जाते और मैं आसमान में उड़ने लगती, तो भी इससे अजीब कुछ नहीं हो सकता था।

गाइ ने गियर को पहले गियर में डाला और हमें रात के अंधेरे में हाईवे 80 पर उत्तर-पश्चिम दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ा दिया। मैं काफी देर तक पीछे की खिड़की से बाहर अपने कस्बे की छोटी-छोटी रोशनी को दूर होते हुए देखता रहा। मैंने अपने घर, अपने परिवार को छोड़ने के दर्द को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की। मैंने दर्द को झटक दिया और आह भरी, सीट पर आगे की ओर झुक गया।

"आखिर ये विल्सन रहता कहाँ है?" मैंने अपने बालों को सहलाते हुए पीछे देखने वाले शीशे में देखा। खिड़की की दरार से आती हवा ने मेरे नए, घने बालों को लहरा दिया।

उस आदमी ने तिरछी नज़र से मेरी तरफ देखा। "लगभग एक घंटे की दूरी पर, टक्सन के पास। हालांकि, वह शहर की सीमा से बाहर है। एक एकांत जगह है।"

मेरी जिज्ञासा मुझ पर हावी हो गई और मैं वापस बैठ गया। "वह तुम्हें देखकर खुश क्यों नहीं होगा?"

"हमारा एक समझौता हुआ था। और मैं अब उसे तोड़ने वाला हूँ।"

हम रेगिस्तानी राजमार्ग पर तेज़ी से गाड़ी चला रहे थे और मैं सोच रही थी कि उसका क्या मतलब है। लेकिन मैंने यह बात अपने तक ही रखी, यह सोचकर कि मुझे जल्द ही पता चल जाएगा।

कुछ ही देर में हम एक लंबी, ऊबड़-खाबड़ कच्ची सड़क पर आ गए, झटकों से मेरे दांत किटकिटाने लगे। मंज़िल तक पहुँचने से पहले हम उस लंबी सड़क पर कम से कम तीस एकड़ बंजर ज़मीन पार कर चुके होंगे।

यह एक सामान्य सा घर था, जैसा कि मैं रेगिस्तान में अक्सर देखता था— रेंच शैली का, लंबी, सपाट छतों वाला, सफेदी की हुई ईंटों से बना और खिड़कियों-दरवाजों पर लाल मेहराबदार दरवाजे। लेकिन यह घर अस्त-व्यस्त और जर्जर था, मानो कम से कम पचास वर्षों से इसकी कोई देखभाल न हुई हो। हम एक गोलाकार कच्ची सड़क पर आगे बढ़े, जिसके बीच में एक खराब फव्वारा था— एक उदास दिखने वाला देवदूत, जो वर्षों की भीषण गर्मी और कठोर मौसम से विकृत हो गया था। हम सामने के दरवाजे पर पहुँचे, जिस पर गुलाबी रंग की परत चढ़ी हुई थी, और जो लोहे के सुरक्षा द्वार के पीछे छिपा हुआ था।

गाइ ने मेरी तरफ देखा। "मुझे बोलने दो।"

मैंने उसकी ज़िद पर अपनी आँखें न घुमाने की कोशिश की।

वह कूदकर बाहर आया और मेरे लिए दरवाजा खोला, मुझे कोमल स्पर्श से बाहर ले गया जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। उसकी उंगलियों से आग की एक लकीर मेरे पेट की गहराई तक दौड़ गई और मैंने गहरी सांस ली, उसके प्रभाव को नजरअंदाज करने की कोशिश करते हुए।

लोहे की जाली से झांकते हुए उस आदमी को देखकर मैं चौंककर दरवाजे की ओर मुड़ा। उसने सुरक्षा दरवाजा खोलने से पहले गाय को बेहद नाराज़गी भरी नज़र से देखा।

वह आदमी, या कहें कि पिशाच—जिसकी पहचान मुझे केले के हलवे की उस तीखी गंध से हुई— औसत कद का था, बल्कि थोड़ा दुबला-पतला था। उसके चेहरे की बनावट और भूरे बाल भी सामान्य थे। वह लगभग तीस वर्ष का लग रहा था। उसकी गहरी आँखें जवानी की तरह चमक रही थीं, लेकिन वह अपनी उम्र से कहीं अधिक परिपक्व था, उसकी बुद्धिमत्ता स्पष्ट और गहरी थी। उसके कपड़े मुझे मेरे दादाजी के कपड़ों की याद दिला रहे थे—भूरे रंग की बुनी हुई पैंट, गुलाबी बटन वाली आधी बाजू की कमीज़ और कॉलर को बांधने वाली बोलो टाई, जिसकी दो गुंथी हुई डोरियाँ चाँदी के ब्रोच से लटक रही थीं। उसका पहनावा उसकी युवा छवि से मेल नहीं खा रहा था, और वह हमें संदेह भरी निगाहों से देख रहा था। मैंने उसे विल्सन समझा।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। "हमारा एक समझौता हुआ

था।"
"मुझे पता है।" गाय ने अपने हाथ जेब में डाल लिए। "लेकिन हमें आपकी मदद की ज़रूरत है।"
विल्सन ने मेरी ओर ध्यान दिया और मुझे एक लंबी, विस्तृत नज़र से देखा। "लगता है तुम्हारा एक नवजात बच्चा है।" गाय ने सहमति में सिर हिलाया और पिशाच ने आह भरी। "क्या कोई तुम्हारे पीछे आया था?"
गाय ने अपना सिर हिलाया।
"ट्रैकिंग डिवाइस?"
"चकनाचूर हो गया।"
विल्सन का सिर कांटों से भरे उस खेत में इधर-उधर घूम रहा था, मानो कोई हमें देख रहा हो, लेकिन मीलों तक कुछ भी नहीं था। वह संतुष्ट लग रहा था और उसने सिर हिलाया। "अंदर आ जाओ। जल्दी करो।" मैं गाय के पीछे-पीछे घर में चला गया।
हमारे पीछे, उस अजनबी ने दरवाज़ा बंद कर दिया और कम से कम दस कुंडी और ताले लगा दिए, मानो वह फोर्ट नॉक्स जैसी किसी चीज़ की सुरक्षा कर रहा हो। मैंने एक कदम आगे बढ़ाया, लेकिन मेरे पैर ज़मीन पर घिसट गए। मैंने नीचे देखा तो पुरानी स्पेनिश टाइलें मेरे पैरों के नीचे चटक रही थीं। मैं समझ गया था कि ये कभी खूबसूरत रही होंगी, पीले और भूरे रंग के डिज़ाइनों से सजी हुई, जो एक के बाद एक चलती हुई फर्श पर घुमावदार पैटर्न बना रही थीं। हमारे ऊपर लकड़ी की नीची बीमों वाली छतें थीं, जिनकी मोटी तख्तियाँ उम्र के साथ सड़ रही थीं।
हम गोल ईंटों से बनी चिमनी के सामने एक पुराने सोफे पर बैठ गए, जिसकी लपटें अंधेरे कमरे में एकमात्र रोशनी बिखेर रही थीं। विल्सन हमारे सामने एक गहरे रंग की चमड़े की रिक्लाइनर कुर्सी पर बैठा और पीछे झुककर हम दोनों को गौर से देखने लगा। उसने अपना गला साफ किया और गाय पर ध्यान केंद्रित करते हुए बोला, "मुझे लगता है कि तुम किसी मुसीबत में हो, क्योंकि तुम्हारे साथ एक ज़िंदा पिशाच है।"
स्पष्ट रूप से पीड़ित दिख रहे गाय ने अपने बालों में हाथ फेरा, आग की रोशनी ने उनके चेहरे की कठोर रेखाओं को और भी उभार दिया।
"जब मैंने उसे पाया तब वह वैम्पायर नहीं बनी थी।"
"उसका निर्माता कहाँ है?" विल्सन ने पूछा, लेकिन गाय ने बस कंधे उचका दिए।
"हम्म।" विल्सन ने खड़े होने से पहले मेरी ओर देखा। "मेरे पास काफी समय से मानव रक्त का भंडार नहीं भरा है। क्या बकरी का खून ठीक रहेगा?"
मुझे इस बात से बहुत राहत मिली कि मुझे इंसानी खून नहीं पीना पड़ेगा। "जी हाँ, धन्यवाद।"
उसने गाय की ओर मुड़कर पूछा, "पानी?"
गाइ पुराने दमिश्क सोफे पर ठीक से बैठ गया। "ज़रूर।"
जब हमें अपना 'जलपान' मिल गया, तो विल्सन फिर से बैठ गया और गाय की ओर झुकते हुए बोला, "क्या मैं सही अनुमान लगा रहा हूँ कि तुम दोनों का ब्लड बैंक डकैती में कुछ हाथ था?"
मैंने और गाय ने एक-दूसरे की ओर देखा। उसने धीरे से सिर हिलाया।
विल्सन ने गुस्से में कहा, "मुझे बताओ। तुम एक नवजात पिशाच को लेकर कैसे भाग निकले?"
"सबसे पहले..." गाय ने चिढ़ते हुए अपने जबड़े भींच लिए। "जब मैंने उसे पाया था तब वह पिशाच नहीं थी। और दूसरी बात, यह मुद्दा नहीं है। लेकिन आपके सवाल का जवाब यह है कि बिस्बी गोदाम में मौजूद पिशाचों के समूह ने उसे नष्ट कर दिया है।"
विल्सन कुर्सी पर पीछे झुक गया, उसकी कुर्सी चरमरा उठी। "हाँ। मैंने देखा।" उसने अपना गिलास होठों तक लाया और गहरे रंग के तरल को घूंट-घूंट करके पिया, जानकारी से अप्रभावित। उसने

गिलास को एक पतली सी कॉफी टेबल पर रखा और गाय को घूरकर देखा। "तुम मुझसे क्या चाहते हो?"
बाहर तेज़ हवा चल रही थी और चिमनी के पास की पुरानी खिड़कियाँ हिल रही थीं। गाय ने अपनी नज़र विल्सन की ओर घुमाई। “मुझे तुम्हारी मदद चाहिए ताकि हम उसके लिए एक सुरक्षित ठिकाना ढूंढ सकें। ऐसी जगह जहाँ वह बिना किसी खतरे के खुद को खुलकर जीना सीख सके।”
मुझे इस बात से चिढ़ हो रही थी कि गाय मेरे बारे में ऐसे बात कर रहा था जैसे मैं वहीं बैठा ही न हूँ। एक बच्चे की तरह। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं एक अनाथ, पिशाच-जैसी बच्ची हूँ। लेकिन शायद मैं सच में वही थी...
“कोई न कोई ऐसी जगह तो होनी ही चाहिए जहाँ मैं उसे ले जा सकूँ और उसे स्वीकार किया जाए,” गाय ने बूढ़े पिशाच को हमारी अहमियत का यकीन दिलाने की कोशिश करते हुए कहा। “ऐसी जगह जहाँ उसे उसी जैसे दूसरे लोग सिखा सकें। वरना उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है।”
विल्सन हँस पड़ा। “तो आप—फ्यूज सेना के कैप्टन स्टोन—मुझसे बदकिस्मत लोगों के सबसे गुप्त समुदाय का पता बताने को कह रहे हैं?” उसने अपना गिलास फिर से उठाया और होठों के पास रोक लिया। “मुझे नहीं लगता।”
गाइ ने गुस्से से कहा, “इसका मुझसे या फ्यूज़ से कोई लेना-देना नहीं है। ये सब फेथ के बारे में है।” गाइ ने मेरी तरफ इशारा किया और मेरे नए उपनाम के इस्तेमाल पर मैंने मुंह बनाने की इच्छा को मुश्किल से रोका।
विल्सन ने बकरी का खून पिया और उसकी नज़रें मुझ पर टिक गईं। मैं अपनी कुर्सी पर सीधा बैठ गया, उसकी पैनी निगाहों के नीचे मेरा पेट घबराहट से मरोड़ उठा। उस बूढ़े आदमी के होंठों पर एक शरारती मुस्कान आ गई। "तो, फेथ, वैम्पायर, है ना?"
“असल में मेरा नाम रूबी है।” मैंने अपनी उंगलियों को आपस में उलझा लिया।
विल्सन ने एक ही घूंट में अपना सारा खून पी लिया और गिलास वापस रख दिया। आग की लपटों की रोशनी उसके भूरे बालों पर पड़कर उन्हें लालिमा लिए हुए चमक दे रही थी। उसकी गहरी निगाहें गाय पर टिक गईं। “अगर मैं तुम्हारी बात मान भी लूँ, तो तुम्हें क्यों लगता है कि मुझे जगह का पता होगा? मैं अब दूसरों के साथ नहीं रहता। तुम भी जानते हो और मैं भी, मैंने बहुत पहले ही यह सब छोड़ दिया था। मुझे यहाँ अकेले रहना अच्छा लगता है।”
गाइ ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा, “तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। तुम इस महाद्वीप के सबसे बुद्धिमान पिशाच हो और हमेशा हर बात से वाकिफ रहते हो। और तुम पर मेरा एक एहसान है।” उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए, लगभग धमकी भरे लहजे में कहा, “साथ ही, मैं तुम्हें पल भर में पुलिस के हवाले कर सकता हूँ।”
विल्सन ने गाय की व्यंग्यात्मक मुस्कान का जवाब दिया, लेकिन यह भाव उसके चेहरे पर अधिक सहज लग रहा था। "मैं बेहतर जानता हूँ। अब जब तुम एक नवजात शिशु के साथ मिले हुए हो, तो तुम मुझे पुलिस के हवाले करने का जोखिम नहीं उठाओगे। मुझे खेद है। मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता।"
“यह तो बहुत बुरा हुआ।” गाय ने अपने थैले में हाथ डाला और खून की एक थैली निकाली। उसने उसे विल्सन को दिखाने के लिए ऊपर उठाया। “मैं यह तुम्हारे लिए लाया हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि अब तुम्हें इंसानी खून पसंद नहीं आ रहा होगा, क्योंकि तुम मुर्गियों और बकरियों का खून पीने के आदी हो गए हो।”
विल्सन ने भौंहें चढ़ाकर गाय के हाथ में लगे खून को देखा। उसने हताशा में आह भरी और हाथ झट

से हटा लिया। गाय मुस्कुराया और मैंने इसे एक तरह की अनकही सहमति मान लिया।
"अगर आपको वह इस हालत में मिली है," विल्सन ने थैले को अपनी उंगलियों के बीच ऐसे घुमाया जैसे वह चिकना सोना हो, "तो संभावना है कि उसे बनाने वाला मर चुका है।"
उनकी बातों से मेरे मन में थोड़ी निराशा उमड़ पड़ी। अगर मेरे रचयिता मर चुके हैं, तो मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि वे कौन थे या उन्होंने मुझे क्यों बदला—यह जानना मेरे लिए बहुत ज़रूरी था। यह सोचकर कि मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि मुझे किसने बनाया, मेरा खून खौल उठा। लेकिन विल्सन के बोलते रहने पर वह गुस्से वाला विचार गायब हो गया।
"उसे दूसरों के साथ शामिल होने से पहले कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी, अन्यथा उसके सफल होने की कोई संभावना नहीं होगी।"
गाय ने सिर हिलाया, उसकी आँखों में चिंता थी। "क्या आप मदद कर सकते हैं?"
विल्सन ने चिढ़कर एक आवाज़ निकाली और अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ। वह घर के पीछे वाले अंधेरे गलियारे की ओर बढ़ा, लेकिन रुककर पीछे मुड़कर देखा। "कई सालों से कोई मेहमान नहीं आया, इसलिए धूल के लिए माफ़ करना।" वह दरवाज़े से अंदर चला गया और पीछे मुड़कर हमसे पूछा, "तो, क्या तुम आ रहे हो?"
गाय और मैंने एक-दूसरे को प्रसन्नता भरी नज़रों से देखा और उछल पड़े। हम उस बूढ़े पिशाच के पीछे-पीछे अंधेरे गलियारे से होते हुए एक पिछले कमरे में गए। हमारे सिर के ऊपर एक पुराना झूमर टिमटिमा रहा था, जिससे कमरे का नज़ारा दिखाई दे रहा था। फर्नीचर में अलग-अलग शैलियों का मिश्रण था और फर्श पर बेतरतीब ढंग से सामान बिखरा पड़ा था। दीवारों पर खरोंचें थीं जहाँ सफेद रंग के नीचे से लाल मिट्टी की ईंटें दिखाई दे रही थीं।
“अगले एक हफ्ते तक यह आपका कमरा रहेगा।” विल्सन ने हाथ घुमाते हुए एक गोल इशारा किया।
गाइ ने frowning करते हुए कहा, "हमारे पास इतना समय नहीं है।"
विल्सन ने अविश्वास से भौंहें सिकोड़ते हुए हमारी ओर देखा। "एक सप्ताह में रूबी को थोड़ा-बहुत नियंत्रण सिखाना भी मुश्किल है। उसे पूरी तरह से प्रशिक्षित करने में महीनों लग जाएंगे, ताकि उसके सफल होने की कोई उम्मीद भी हो।"
“मुख्यालय में मेरी ज़रूरत पड़ने से पहले मेरे पास ज़्यादा से ज़्यादा चार दिन हैं।” गाय अनमने ढंग से दीवार पर एक जगह को कुरेदने लगा। “और मुझे नहीं लगता कि आप उसे उसके नए समूह तक छोड़ने के लिए तैयार होंगे?”
विल्सन ने कोई जवाब नहीं दिया। जाहिर है, वह पिशाच कभी अपने घर से बाहर नहीं निकला।
“मुझे लगा ही था।” गाय ने अपना हाथ बगल में लटका लिया और ईंटों पर बेपरवाही से झुक गया। उसने मेरी तरफ देखा, उसका चेहरा कुछ शरारती सा था, मानो आँखों से मुझे छेड़ रहा हो। कसम से, जब भी वह मुझे ऐसे देखता, मेरे अंदर एक अजीब सी खुशी उमड़ आती। उसकी निगाहों से मेरा चेहरा लाल हो गया, लेकिन जैसे ही वो नज़र आई, गाय की शरारती नज़र गायब हो गई। वह फिर से गंभीर और सख्त होकर विल्सन की तरफ मुड़ा। “चार दिन, बस।”
“मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा,” विल्सन ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। “लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है। और हमें आज रात से ही शुरुआत करनी होगी।”
गाइ ने सिर हिलाया और हमारा सामान फर्श पर ढेर सारे फर्नीचर और बिखरे हुए सजावटी सामानों के बीच फेंक दिया। उस बदबूदार गंध ने मेरी नाक में गुदगुदी पैदा कर दी।
“मेहमानों का बाथरूम आपके बाईं ओर है। और मैं कुछ नए तौलिए टांग देता हूँ।” विल्सन ने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए कहा, हालाँकि उनकी मुस्कान चेहरे पर एक अजीब सी शिकन जैसी लग रही

थी। “थोड़ा समय आराम से बैठने में लगाइए, फिर हम शुरू करेंगे।”
“ठीक है,” मैंने सहमति जताई। बूढ़ा पिशाच दरवाजा बंद करके चला गया।
“तो बस यही है?” मैंने बिना किसी जवाब की उम्मीद किए पूछा। “मैं आधिकारिक तौर पर एक वैम्पायर बनने की ट्रेनिंग ले रहा हूँ?” इस अजीबोगरीब स्थिति पर मेरे मुँह से हँसी फूट पड़ी।
उस आदमी ने मुझे तीखी निगाहों से देखा, मुझे लगा जैसे वह फिर से युद्ध के मूड में आ गया हो। "बेहतर होगा कि तुम साफ-सफाई कर लो। यह रात बहुत लंबी होने वाली है।"
इतना कहकर मैं धीरे-धीरे बाथरूम की ओर चल पड़ी, और गाइ की काम के अलावा किसी और चीज़ के प्रति असहिष्णुता पर अपनी आँखें घुमाने से खुद को रोकने की कोशिश कर रही थी। ऐसा लगता था जैसे ही उसे मज़ा आने लगता, वो उसे एकदम बंद कर देता था। जिस रात मैं बदली थी, जिस रात उसने अपने अतीत के बारे में मुझसे खुलकर बात की थी, उसके अलावा मैंने उसमें भावनाओं की झलकियाँ ही देखी थीं। और अब वो फिर से रोबोट बन गया था, ठंडा और रूखा। बहुत खूब।
लेकिन उनके ठंडे व्यवहार के बावजूद, उनकी मौजूदगी से मुझे एक गर्माहट महसूस हो रही थी। इस नई और अनजानी दुनिया में वही एक सहारा थे और मैं उन्हें जाने नहीं देना चाहती थी। कुछ ही दिनों में उनसे अलग होने के ख्याल से ही मेरा पेट मचलने लगा। यह बहुत डरावना था। मैं शॉवर में गई और गर्म पानी चालू कर दिया। मैंने उसे अपने सिर और शरीर पर बहने दिया, गर्म पानी से मेरी ठंडी त्वचा को सुकून मिला। साबुन के झाग वाले कपड़े से हर बार पोंछते हुए, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपने अतीत को धो रही हूँ, उसे नाली में बहा रही हूँ। काश, यह मेरे डर को भी धो देता।

इक्कीस: लड़का

रूबी को पाकर मुझे जो राहत मिली, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। हालांकि उसे वापस अपनी देखरेख में पाकर मेरी चिंता कुछ कम हुई, फिर भी मुझे उस पर तरस आ रहा था। जिस तरह वह अपने बचपन के घर के सामने फुटपाथ पर गिर पड़ी थी, मानो सब कुछ खो चुकी हो, उस दृश्य ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया था। वह मानो एक पहाड़ की तरह थी जो ढह रहा हो, उसकी ताकत एक छोटी सी दरार से कमजोर पड़ गई थी। उसके दिल में एक दरार, पत्थर ज़मीन पर गिर रहे थे, उसकी आत्मा चकनाचूर हो रही थी।

मैंने उसे अपने सीने से लगाकर रोने दिया और उसे अपनी बाहों में थाम लिया। मैं यह बात मानना नहीं चाहती थी, लेकिन मैं उसकी परवाह करती थी और उसे दुखी नहीं देखना चाहती थी। मैं कुछ भी करना चाहती थी, कुछ भी, जिससे उसका दर्द कम हो सके। लेकिन मुझे पता था कि वह मजबूत है और इस दर्द से उबर जाएगी।

रूबी के लिए यह तो बस शुरुआत थी, उसके सामने अनंत जीवन और असीम संभावनाएं थीं। सच कहूँ तो, पिशाचों के बारे में मुझे हमेशा से यही बात नापसंद थी; इतने लंबे समय तक जीना अमानवीय था। लेकिन अब, मैं उसके लिए यही चाहती थी। मैं चाहती थी कि उसे अपनी खुशी मिले और वह वैसा जीवन जिए जैसा मैं कभी नहीं जी सकी। उसने बहुत दुख झेला था, लेकिन अब... अब उसे एक और मौका मिला था। उसके पास कुछ ऐसा खास था जिसे कोई इंसान कभी नहीं जान सकता था।

लेकिन अब मेरे पास जो एक चीज़ थी, वो थी उससे बना एक बंधन। एक ऐसा बंधन जो मेरी ज़िंदगी भर रहेगा। मैं हमेशा उसे महसूस कर पाऊँगा और उसके मिजाज को समझ पाऊँगा। और चाहे हमारे बीच कितनी भी दूरी हो, मैं हमेशा जानता रहूँगा कि वो मेरे मन में बसी है। एक ऐसी तड़प जिसे मैं कभी शांत नहीं कर पाऊँगा, एक अतृप्त भूख। मैं इसे अभी भी महसूस कर सकता हूँ, पहले की तरह ही मज़बूत। मुझे न सिर्फ उसके पास रहने की ज़रूरत थी, बल्कि उसकी रक्षा करने का भी मुझे ज़बरदस्त दायित्व महसूस हो रहा था। लेकिन एक बार जब मैं उसे प्रशिक्षण के बाद सौंप दूँगा, तो मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा। ये मीठा-कड़वा ख्याल मेरे मन से निकल गया और मैंने खुद को अपने सहयोगी दुश्मन विल्सन डी लेब्लैंक के बैठक कक्ष में खड़ा पाया।

विल्सन एक पिशाच था जिससे मेरी कई बार मुलाकात हुई थी और हमारा रिश्ता कुछ खास अच्छा नहीं था। उसके पास जाने का फैसला भी मेरे लिए बहुत जोखिम भरा था। लेकिन क्या मेरे पास कोई और विकल्प था?

“तुम,” वह गुस्से से उबल पड़ा और मेरी तरफ घूरते हुए बोला। वह मुझसे दूर मुड़ा और कमरे के दूसरी तरफ चला गया।

देखने में भले ही विल्सन जवान लग रहे थे, लेकिन उनकी उम्र काफी थी। मेरी जानकारी के अनुसार, कम से कम डेढ़ सदी। उन्होंने किताबों की अलमारी पलटी और एक किताब निकालकर हाथों में दबा ली। आग की रोशनी में उनका दुबला-पतला शरीर चमक रहा था और उनकी टाई गर्दन पर ढीली लटक रही थी। उनकी नज़र किताब से ऊपर उठी। "क्या तुम्हारा दिमाग पूरी तरह खराब हो गया है?"

मैंने झुंझलाहट भरी सांस छोड़ी, मैं बहुत परेशान थी। पिशाच और मैं कभी एक-दूसरे से सहमत नहीं थे। हमारा अतीत बहुत उलझा हुआ था। मेरी जबड़ा कस गया। "तुम मुझसे क्या करवाना चाहते थे? उसे मार डालूँ? वह तो बस एक लड़की थी।"
उसकी भूरी आँखें मेरी आँखों से मिलीं। "एक लड़की जो पिशाचवाद से संक्रमित है।"
मैंने झुंझलाहट से सिर हिलाया। हाँ, वह संक्रमित हो गई थी, लेकिन इससे यह बात नहीं बदलती कि जब मैंने उसे पाया था तब वह इंसान ही थी। मुझे खुशी थी कि रूबी इस बातचीत को सुन नहीं पा रही थी। विल्सन और मैंने उसके नहाने जाने तक इंतज़ार किया ताकि हम अपने मतभेदों को सुलझा सकें।
“क्या तुमने कुछ नहीं सीखा?” वह हाथ में किताब लिए इधर-उधर टहल रहा था। “मुझे लगा था कि अब तक तुम्हें कुछ तो ज्ञान प्राप्त हो गया होगा। प्रकृति को अपना काम करने देना। जो चीजें तुम्हारे नियंत्रण से बाहर हैं, उनमें दखल न देना।”
उसकी अपमानजनक भाषा सुनकर मेरा चेहरा लाल हो गया। आखिर वही तो मुझे नैतिकता का उपदेश देने वाला है? मैंने अपनी हंसी रोकी।
“और तुम तो दखलंदाज़ी करने की बात कर रहे हो? हा हा।” मैंने अविश्वास से अपने हाथों से अपना चेहरा पोंछा और फिर ऊपर देखा। “विल्सन डी लेब्लैंक, महान पिशाच नेता। सेना के नेता और समुदाय के अत्यंत सम्मानित सदस्य। यही तो तुम थे, है ना? लेकिन अब? जब तुम्हारा नाम लिया जाता है तो दुर्भाग्यशाली लोग क्या सोचते हैं? यह तो पक्का सम्मान नहीं है। वे तुम्हें अपने शिकंजे में लेने और धूप में भूनने के लिए कुछ भी दे देंगे।”
विल्सन की आँखों में गुस्से की चमक आ गई। अच्छा हुआ, आखिरकार उसे समझ आ गया। हम दोनों में से कोई भी परिपूर्ण नहीं था। यही तो हमारी दोस्ती की शुरुआत थी, सालों पहले। हमारी गलतियाँ ही हमारा बंधन थीं। उसने अपनी किताब कॉफी टेबल पर पटक दी और मुझे घूरने लगा। उसके दाँत, नुकीले सफेद बिंदु, उसके होंठों के नीचे से बाहर निकल आए।
“सुनो, बेटा। मैंने तुम्हें यहाँ आने के लिए नहीं कहा था। मैंने तुम्हें किसी नवजात शिशु की देखभाल करने के लिए नहीं कहा था। लेकिन तुम मेरे लिए यही लाए हो, है ना? एक नवजात पिशाच लड़की के रूप में मुसीबत... चाहे वो कितनी भी प्यारी क्यों न हो।”
उसने झुककर खून से भरी थैली उठा ली, जो मैंने उसे पहले रिश्वत के तौर पर दी थी। उसने उसे हाथ में हिलाते हुए कहा, "मुझे तुम्हारी भेंटों की ज़रूरत नहीं है। और मैं तुम्हारे झंझटों में दोबारा फँसना भी नहीं चाहता।"
गुस्से से मेरा सीना कस गया, कंधे इतने तन गए कि उनमें दर्द होने लगा। वो मुझे बुरा कैसे साबित कर सकता है? मैं उसे झकझोर देना चाहता था। मैं उसके पास जाकर उसके पिशाच जैसे शरीर को बुरी तरह हिला देना चाहता था। लेकिन मैंने उंगली उठाकर इशारा किया।
“तुम।” मैंने अपने दांत भींच लिए, अपने गुस्से को काबू में रखने की कोशिश करते हुए। “तुम ही थे जिसने पहले मेरी मुसीबत में दखल दिया था। मैंने तुमसे कभी मदद नहीं मांगी थी। तुमने ही मुझे ढूंढा था, याद है?” मैं देख सकती थी कि विल्सन का गुस्सा एक बार फिर भड़क उठा था, लेकिन मैं बोलती रही। वह भी मेरी तरह सच जानता था। “और जब तुम मुसीबत में फंस गए, तो तुम्हारी मदद किसने की?” मैंने कुछ पल चुप रहने दिए, लेकिन विल्सन ने कुछ नहीं कहा। बिल्कुल सही। “मैंने ही तुम्हें FUSE से बाहर निकाला था। मैंने ही तुम्हें मौत के मुंह से बचाया था। मैंने ही तुम्हें यहां सुनसान जगह पर पहुंचाया था, जहां तुम्हें कोई ढूंढ नहीं सकता था।”
विल्सन ने खून से लथपथ थैला नीचे फेंक दिया और अपने कंधे सीधे कर लिए। उसकी भूरी आँखों में बेबसी की आग भड़क उठी। "मैं तुम्हारा गला यहीं, अभी के अभी फाड़ सकता हूँ, गाइ स्टोन।"

“हाँ,” मैंने शरारती अंदाज़ में सहमति जताई। “लेकिन तुम नहीं करोगे।”
हमारी निगाहें मिलीं, गर्म सांसों से सीने ऊपर-नीचे हो रहे थे। मैं पीछे नहीं हटूंगी। मैं उसके अहंकारी रवैये को खुद से दूर नहीं होने दूंगी। खासकर तब जब रूबी को मेरी ज़रूरत थी। उसे उसकी ज़रूरत थी। मैंने उसे तब तक घूरा जब तक कि उसने नज़रें नहीं हटा लीं और आह भरी। बूढ़ा वैम्पायर एक बार फिर अपनी रिक्लाइनर कुर्सी पर बैठ गया और हताशा से आग की लपटों को घूरने लगा।
“जब मैंने तुम्हें पाया था, तब तुम एक छोटे बच्चे थे,” उसने धीरे से कहा। “तुम्हारी ठुड्डी पर बाल भी नहीं उग रहे थे। तुम्हारी हालत बहुत खराब थी। और मुझे लगा कि लिली को ढूंढने के लिए तुम्हें वहाँ ले जाकर मैं सही काम कर रहा हूँ। मुझे लगा कि मैं एक गलती सुधार सकता हूँ।”
उसकी उदासी देखकर मेरा दिल नरम पड़ गया, क्योंकि मुझे पता था कि उसका इरादा अच्छा था। मुझे एहसास हुआ कि उसने क्या-क्या झेला था, लेकिन अब तक मैंने इस बात को गंभीरता से नहीं लिया था। आखिर वह एक पिशाच था।
“लेकिन मैं तुम नहीं थी।” मैंने एक कदम आगे बढ़ाया। “और तुम कुछ भी कर सकती थीं, नोरा को वापस नहीं ला सकती थीं।”
विल्सन ने अपनी पूर्व प्रेमिका का नाम सुनकर सिर हिलाया। उसने अपनी भूरी बूटों की ओर देखा, उसके चेहरे पर दिल का दर्द साफ झलक रहा था। “मुझे अब इस बात का एहसास है। और मुझे डर है कि तुमने भी वही किया है, बेटा। इस फैसले में अपने अतीत को अपना मार्गदर्शक बनने दो। बस उम्मीद करते हैं कि नवजात शिशु को स्वीकार कर लिया जाएगा, वरना यह सब तुम्हारे लिए मुसीबत बन सकता है।”
मैं उसके बगल में सोफे पर बैठ गई और अपने बालों में उंगलियां फेरने लगी, मेरा गुस्सा कुछ पल के लिए शांत हो गया। वह बिल्कुल सही था। इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि मेरी योजना मेरी उम्मीदों पर खरी उतरेगी। लेकिन मुझे कोशिश तो करनी ही थी।
“अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है, विल्सन। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।” मैंने अगला शब्द बड़ी मुश्किल से कहा, लेकिन आखिरकार वो मेरे होंठों से निकल ही गया। “प्लीज़।”
उसने अपनी निगाहें मुझ पर टिका दीं और मुझे ध्यान से देखने लगा। "मैंने पहले ही कहा था कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा। लेकिन मैं यह वादा नहीं कर सकता कि यह कारगर होगा।"
मैंने शांत होकर कहा, "धन्यवाद।" विल्सन खड़ा रहा और मुझे घूरता रहा।
लेकिन इसके बाद, मैं चाहता हूँ कि सब कुछ पहले जैसा सामान्य हो जाए। तुम मेरी ज़मीन पर कभी कदम नहीं रखोगे। मेरा नाम कभी नहीं लोगे। क्या यह बात स्पष्ट है?
मैंने राहत की सांस ली। और हालांकि मुझे यकीन नहीं था कि मेरी योजना कामयाब होगी, फिर भी मुझे उम्मीद तो रखनी ही थी। रूबी की जिंदगी, और मेरी भी, इसी पर निर्भर थी।
मैंने जवाब दिया, "फिर कभी नहीं।"

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि विल्सन नाम के पिशाच के बारे में क्या सोचूँ। मिशन के सामने मैंने जिस राक्षस को मारा था, उसके अलावा वो पहला पिशाच था जिससे मैं कभी मिला था। शायद मैं किसी अलग ही इंसान की उम्मीद कर रहा था। शायद कोई ऐसा जिसके काले बाल हों और सामने से नुकीले हों, जैसे काउंट ड्रैकुला के। या शायद कोई रेशमी लबादा पहने, जैसे किसी पुरानी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म में होता है। खैर, मुझे पता नहीं था कि मैं क्या उम्मीद कर रहा था, लेकिन ये तो पक्का था कि वो कोई बीस-पच्चीस साल का लड़का नहीं था जो दादाजी के कपड़े पहने हो, मानो वो 1950 के दशक से आगे ही न बढ़ा हो। वो अपने तरीके से अनोखा और थोड़ा अटपटा था और मैं समझ गया था कि वो बहुत बुद्धिमान है। उसका युवा चेहरा उसकी असली उम्र को छुपा रहा था, लेकिन उसकी गहरी आँखें ज्ञान और परिपक्वता की कहानी कह रही थीं।

मुझे लगता है कि वो काफी अच्छा लग रहा था, लेकिन मैं गाइ और उसके बीच तनाव को साफ महसूस कर सकती थी। मैं इसे उनकी बॉडी लैंग्वेज में देख सकती थी। और गाइ ने मुझे विल्सन के बारे में कभी नहीं बताया था, हमेशा मेरे सवालों से बचता रहा। मैं सोच रही थी कि उनके बीच ऐसा क्या हुआ होगा जिससे इतना झगड़ा हुआ, लेकिन अभी अतीत को कुरेदने का समय नहीं था। यह समय था खुद को भविष्य के लिए तैयार करने का। एक ऐसा भविष्य जो, सच कहूँ तो, मुझे बुरी तरह डरा रहा था।

मैं, रूबी कार्टर, नवजात पिशाच, बहुत जल्द पिशाचों, वेयरवुल्फों और चुड़ैलों के बीच रहने वाली थी। मेरा शरीर भय से कांप उठा। "अब, अपने नुकीले दांत अंदर खींच लो।" विल्सन की आवाज़ ने मुझे वापस अपने प्रशिक्षण की ओर खींच लिया।

मैंने अपने उलझे हुए विचारों को किनारे कर दिया और अपना ध्यान अपने मुँह पर केंद्रित किया। मेरे नुकीले दाँतों के सिरे मेरे निचले होंठ को छू रहे थे। वे बहुत तेज़ थे, बेहद तेज़, और अगर मैं सावधान नहीं रहती, तो आसानी से किसी को मार सकती थी— और खुद को भी गंभीर चोट पहुँचा सकती थी। मैंने ध्यान से आँखें सिकोड़ीं और उन्हें पीछे खींचने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ। मैंने निराशा में आह भरी।

एक पुराने शेड के किनारे पर लटकी हल्की पीली रोशनी में विल्सन चहलकदमी कर रहा था, उसकी रस्सी से बंधी बोलो टाई हिल रही थी। आसमान घोर काला था, कहीं तारे दिखाई नहीं दे रहे थे। आज रात तो चाँद भी छिप गया था।

हम उसके पिछवाड़े में खड़े थे— एक विशाल रेगिस्तानी इलाके से पहले धूल का एक बड़ा खुला मैदान। दूर से एक कोयोट की आवाज़ आई।

“ऐसे भी मौके आएंगे जब आपको इंसानियत दिखानी होगी।” विल्सन रात के अंधेरे में ऐसे घूर रहा था मानो कुछ सुन रहा हो जिसे मैं सुन नहीं सकता था। “यही जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर होगा।”

“लेकिन क्या मैं पहले से ही मर नहीं चुका हूँ?” मुझे अभी भी ठीक से समझ नहीं आया था कि पिशाचवाद क्या होता है और यह कैसे काम करता है। मुझे बस इतना पता था कि मेरा मानवीय रूप मर चुका था, या यूँ कहें कि लगभग मर चुका था, ठीक से याद नहीं, और मेरा इस प्राणी के रूप में

पुनर्जन्म हुआ था।
“तुम एक अभागी आत्मा हो, हालाँकि मुझे यह शब्द पसंद नहीं है,” विल्सन ने घृणा से कहा और मेरी ओर मुड़ गया। “इसका मतलब है कि तुम अब इंसान नहीं रहे। लेकिन अमरता प्राप्त करने का यह अर्थ नहीं है कि तुम्हें मारा नहीं जा सकता।”
उसके शब्दों की गहरी समझ से मेरा पेट सिहर उठा, लेकिन विल्सन ने मेरे माथे पर थपथपाया और उस दखलंदाजी भरे स्पर्श पर मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं।
"सिर पर चांदी की गोली से एक वार, या फिर दिल में लकड़ी का खंजर घोंपना भी काफी होगा। मैंने तो यह भी सुना है कि FUSE कुछ वैज्ञानिकों के साथ मिलकर यूवी किरणों का उपयोग करके पिशाचों को मारने का एक नया तरीका विकसित कर रहा है।"
“अरे बाप रे,” मैंने जवाब दिया। “मैं सनस्क्रीन लगाना न भूलेंगी।”
मेरी चुटकी पर विल्सन ने भौंहें चढ़ा लीं, और मैंने मन ही मन ठान लिया कि अब से मैं ऐसे घटिया मज़ाक नहीं करूंगा। उसने गला साफ़ किया और बोलना जारी रखा।
“अब सुनो। यह सब नियंत्रण के बारे में है। अपनी आँखें बंद करो और गहरी साँस लो। अपने हर विचार, भावना और स्मृति को एक छोटे से डिब्बे में समेट लो। फिर उस डिब्बे को अपने दिमाग से निकाल दो, मानो सब कुछ खाली हो गया हो। अपने दिमाग में कुछ और आने ही मत दो।”
मैंने सिर हिलाया और गहरी सांस लेते हुए आंखें बंद कर लीं। हल्की हवा ने मेरे चेहरे के बिखरे बालों को छू लिया, जिससे मुझे सुकून मिला।
“तुम अपनी सारी ऊर्जा अपने नुकीले दांतों पर केंद्रित करोगे,” उसने निर्देश दिया।
खुद को शांत करते हुए, मैंने अपने दिल की धड़कन को धीमा होने दिया। मेरा खून मेरी नसों में दौड़ रहा था, मेरे शरीर की हर मांसपेशी और नस तक पहुँच रहा था। मैं वहाँ खड़े होने के प्रति पूरी तरह सचेत था, उस विशाल खुले रेगिस्तान में इतना छोटा सा। मेरा शरीर जितना दिखता था उससे कहीं अधिक था। यह पहले जैसा ही था, लेकिन नहीं भी। मैं पहले से ज़्यादा ताकतवर और तेज़ था, अमानवीय क्षमताओं से लैस। मैं अब इंसान नहीं था। मैं एक पिशाच था।
“अपना दिमाग शांत करो। मैं समझ सकता हूँ कि तुम सोच रहे हो,” विल्सन ने कहा।
मुझे शर्मिंदगी का एक झटका लगा, मानो उसे पता हो कि मैं क्या सोच रही हूँ। लेकिन मैंने अपना सिर हिलाया और फिर से अपना ध्यान अंधेरे पर केंद्रित किया। अपनी त्वचा पर ठंडी हवा का स्पर्श महसूस करते हुए, मैंने अपने मन में उमड़ रहे विचारों और यादों पर ध्यान केंद्रित किया। मैंने उन्हें मानसिक रूप से समेट लिया, एक छोटे से डिब्बे में बंद कर दिया। मैंने कल्पना की कि वह डिब्बा फिर से गायब हो गया, और मेरा मन खाली हो गया। मैं विस्मृति में लटकी रही। मेरे चारों ओर कुछ भी नहीं था, मानो मैं तैर रही हूँ।
जब मुझे पूरा भरोसा हो गया, तो मैंने अपना ध्यान अपने नुकीले दांतों पर केंद्रित किया और वे तेज़ी से अंदर चले गए। मेरी आँखें खुल गईं और मैं हांफने लगा।
“शाबाश, रूबी! वाकई बहुत बढ़िया!” विल्सन की आँखों में चमक आ गई।
मैंने हाथ बढ़ाकर अपने दांतों की चिकनाई को छुआ, दो पंक्तियों में सजे हुए एकदम सफेद मोती जैसे दांत। मैं मुस्कुराई, अपनी इस उपलब्धि पर गर्व महसूस कर रही थी, चाहे वह छोटी ही क्यों न हो। शायद मैं आखिरकार इस पिशाच बनने की कला को सीख ही जाऊं।
विल्सन ने हौसला बढ़ाते हुए मेरी पीठ थपथपाई। मुस्कुराते हुए मैं मुड़ी और घर के अंदर से हमें देखते हुए गाय को देखकर लड़खड़ा गई। वह स्लाइडिंग कांच के दरवाजे पर खड़ा था, उसका मजबूत शरीर स्थिर था, उसके चेहरे के भाव समझ से परे थे। हमारी निगाहें मिलीं और मेरा दिल भावनाओं से भर गया।

विल्सन ने उस मौन बातचीत को महसूस किया, लेकिन ऐसे बात करता रहा जैसे उसने कुछ देखा ही न हो। "अब मैं तुम्हारी गति परखना चाहता हूँ। क्या तुम वहाँ उस सगुआरो कैक्टस को देख रहे हो? वह लंबा वाला, जिसकी दो शाखाएँ हैं?"
मैंने अपने रक्षक की ओर अंतिम दृष्टि डाली, लेकिन वह दरवाजे से गायब हो चुका था। मैंने अपनी निगाहें दूर तक घुमाईं, कैक्टस को देखने की कोशिश की, लेकिन केवल अंधेरा ही दिखाई दिया। मैंने अपनी विफलता पर निराशा व्यक्त की और आह भरी।
"मुझे माफ करना, विल्सन।" शर्मिंदा होकर मैंने अपने पैरों की तरफ देखा। "लगता है मैं इसमें अच्छा नहीं हूँ।"
विल्सन मेरी ओर मुड़ा और अपने दोनों हाथ मेरे कंधों पर रख दिए। "मेरी तरफ देखो।"
मैंने अपनी निगाहें उठाकर उसकी गहरी भूरी आँखों पर डालीं, जो लगभग काली थीं, लेकिन करुणा से भरी हुई थीं।
“तुम इसमें माहिर हो। और मुझे यकीन है कि तुम जल्द ही इसमें और भी निपुण हो जाओगे। आज रात मैंने तुम्हारी जो तरक्की देखी है, उसे हासिल करने में ज़्यादातर नवजात शिशुओं को हफ़्तों, यहाँ तक कि महीनों लग जाते हैं। मैं सचमुच दंग रह गया हूँ। मैंने इतनी ताकत और सहनशक्ति पहले कभी नहीं देखी। ऐसा लगता है मानो तुम कभी इंसान बनने के लिए ही नहीं बने थे। मानो तुम हमेशा से ही पिशाच बनने के लिए बने थे।”
मेरे गालों पर शर्म की लाली फैल गई। मुझे यह बात भी अजीब लगी कि मुझे यह सुनकर संतोष हुआ कि मैं एक अच्छी वैम्पायर हूँ। ठीक वैसे ही जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक की गेंद वापस लाता है।
विल्सन ने कहा, "असल में, दृष्टि को नियंत्रित करना सबसे आसान इंद्रियों में से एक है। यह शेर की तरह है। कल्पना कीजिए कि आपकी पुतलियाँ सिकुड़ रही हैं, जिससे आपकी दृष्टि और दूर तक फैल जाएगी। ठीक है? चलिए इसे आजमा कर देखते हैं।"
उसने मुझे उत्तर दिशा की ओर घुमाया, स्पॉटलाइट की पीली रोशनी कुछ ही फीट दूर जाकर खत्म हो गई। बाकी रेगिस्तान अंधेरे में डूबा हुआ था। मैंने नाक से गहरी सांस ली और अपनी दृष्टि केंद्रित की। मैंने कल्पना की कि मेरी दृष्टि संकुचित हो रही है, प्रकाश से परे दूर तक फैल रही है। और पल भर में, मानो मेरी आँखों के सामने दूरबीन रख दी गई हो, मेरी दृष्टि सुरंग की तरह लंबी हो गई और मेरी नज़र अकेले खड़े सगुआरो कैक्टस पर टिक गई।
“मुझे दिख गया!” मैंने हैरानी से कहा। मुझे खुद पर हंसी आ रही थी कि मैं एक कैक्टस को घूरते हुए इतनी उत्साहित क्यों थी। लेकिन फिर भी मैं मंत्रमुग्ध थी।
विल्सन ने अपनी टाई ठीक की। "अच्छा। अब जितनी तेज़ी से हो सके, वहाँ जाकर वापस आ जाओ। तैयार हो?"
मैंने सिर हिलाया और विल्सन ने अपनी घड़ी पर नजर डाली।
"जाना!"
अमानवीय गति से, मैं पलक झपकते ही कैक्टस तक गया और वापस आ गया, मेरी यह फुर्तीली चाल मुझे रोमांचित कर रही थी। मेरे पैर इतने तेज़ थे कि ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने ज़मीन को छुआ ही न हो। मेरे पीछे पीली रोशनी में धूल का बादल उठ रहा था। मैंने विल्सन के चेहरे के भावों को गौर से देखा जब वह मेरा समय देख रहा था।
“वाह, भगवान कसम,” उसने बड़े मजे से कहा। “तुम तो वाकई बहुत तेज हो, छोटी लड़की। और अगर मैं सही हूँ, तो मुझे लगता है कि अब तक के रिकॉर्ड में तुम सबसे तेज पिशाच हो।”
“सच में?” मेरा दिल खुशी से भर गया। मैंने अपने होठों पर चिपकी मूर्खतापूर्ण मुस्कान को दबाने

की कोशिश की, लेकिन नहीं कर पाई। मैं? अब तक की सबसे तेज़ वैम्पायर? यह तो अविश्वसनीय था। मैं ज़िंदगी में कभी भी बहुत फुर्तीली नहीं रही थी और यह जानकर कि मैं अब हवा की तरह उड़ सकती हूँ, मुझे बहुत रोमांच हो रहा था।
विल्सन दिल खोलकर हँसा। "हाँ, प्रिय। हाँ। जब सेना देखेगी कि तुम क्या कर सकती हो, तो वे अपनी कब्रों में करवटें बदल लेंगे!"
"वह सेना?" मैंने अचानक सतर्क होते हुए पूछा।
विल्सन ने मेरी तरफ देखा। "इंसानों की तरह ही, पिशाच भी संगठित प्राणी होते हैं। उनकी एक पूरी राजनीतिक व्यवस्था है। लेजियन सर्वोच्च सरकारी इकाई है, जो मरे हुओं के सभी गुटों से निपटती है। उनके अपने सैनिक, जासूस, रक्षक होते हैं। और भी कई जिम्मेदारियां होती हैं।"
"ओह।" मैंने नाक सिकोड़ी। मुझे पिशाचों की सेना या इस तरह की किसी भी चीज़ में शामिल होने का विचार पसंद नहीं था।
"लेकिन ये बात मायने नहीं रखती।" विल्सन ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया। "ये तो साफ है कि हमें तुम्हारी वैम्पायर वाली क्षमताओं पर उतना काम करने की ज़रूरत नहीं है जितना तुम्हारी इंसानी क्षमताओं पर काम करने की ज़रूरत है।"
"मानवीय कौशल?" मैंने उलझन में पूछा। मेरे बालों की एक लट झट से छूटकर मेरे होंठ से चिपक गई।
विल्सन ने अपना रुख बदल दिया। "हाँ, रूबी। अजीब बात है, एक अच्छा पिशाच बनने की कुंजी एक इंसान की तरह दिखने की क्षमता है। अगर तुम खुद को इंसानों से घिरा हुआ पाओ, तो बचाव का सबसे अच्छा तरीका है उनमें घुलमिल जाना, उनमें से एक बन जाना।"
मैंने मुंह से बाल हटाते हुए सिर हिलाया। मैं पूरी तरह से पाठ में मग्न थी। मैं इतने लंबे समय से इंसान थी कि दोबारा इंसान होने का तरीका सीखना अजीब लग रहा था। क्या यह संभव भी था?
विल्सन ने अपनी ठुड्डी से रेगिस्तान की ओर इशारा करते हुए कहा, "अब मैं चाहता हूँ कि तुम कैक्टस तक जाकर वापस आओ। लेकिन इस बार, एक इंसान की तरह दौड़ो। जॉगिंग करो, धीरे-धीरे।"
मैंने सिर हिलाया। "काफी आसान लगता है।"
विल्सन ने अपनी घड़ी दोबारा देखी। "ठीक है। जाओ।"
मैंने कुछ दिन पहले की बात याद की, जब मैं इंसान नहीं बना था। मुझे याद आया कि इंसान होना कैसा होता था। मैंने दौड़ना शुरू किया और बेफिक्री से कैक्टस तक गया और वापस आ गया।
विल्सन ने स्पॉटलाइट के नीचे से रात की हवा में उठती धूल के बादल को देखा और भौंहें सिकोड़ीं। "फिर भी, मेरी जानकारी में जितने भी पिशाच हैं, उनसे तेज़ हो तुम," उसने मुझे घूरते हुए कहा।
मैं हैरानी से चौंक गया। "लेकिन मैं तो बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मुझे अनंत समय लग गया हो।"
"सुनो," विल्सन ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "क्यों न आज रात का काम यहीं खत्म कर दें? तुमने बहुत मेहनत की है और मैंने काफी प्रगति देखी है। अब जब मुझे पता चल गया है कि मुझे किस तरह के छात्र के साथ काम करना है, तो मैं कल रात के पाठों को तुम्हारी ज़रूरतों के हिसाब से ढाल सकता हूँ। लेकिन मुझे यह कहना ही होगा कि तुम बिल्कुल अनोखे हो। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि तुम एक अलग ही तरह के पिशाच हो। कुछ असाधारण। कुछ ऐसा जो पहले कभी नहीं देखा गया।"
मैंने उसकी मुस्कान पर प्रतिक्रिया दी—क्या वो तारीफ थी? खैर, मैंने मुस्कुराकर उसे घर के अंदर ले जाने दिया, और साथ ही साथ मैं यह सोचने की कोशिश करती रही कि कैसे फिर से सामान्य

दिखूँ। यह सफर वाकई दिलचस्प होने वाला था।

थकी-हारी मैं रसोई के काउंटर पर झुक गई और अपने गिलास से बकरी के खून का एक घूंट पिया। घिनौनी आशंका से मेरा मुंह सिकुड़ गया, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि मुझे उल्टी नहीं आई। मेरा स्वाद उस गाढ़े लाल सिरप का आदी हो रहा था, और सच कहूँ तो, इससे मुझे अच्छा महसूस हुआ। मुझे नहीं पता था कि जब इंसानी खून पीने का समय आएगा—जब वही मेरा एकमात्र विकल्प होगा—तो मैं क्या करूँगी। मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा था कि मुझे इससे इतनी नफरत क्यों है। चाहे नैतिक कारणों से हो या फिर स्वाद के लिहाज से—मुझे इससे नफरत थी।

मैंने विल्सन की रसोई की खिड़की से बाहर, एक पुराने पर्दे के पार देखा। हम घंटों से अभ्यास कर रहे थे और राहत की बात यह थी कि अपनी सीमाओं के कारण हमें रुकना पड़ा। सूरज निकलने ही वाला था और मुझे जल्द ही सोना था। मैंने अपनी बांह की दुखती मांसपेशियों को सहलाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन तभी मुझे अपनी गर्दन पर एक अजीब सी अनुभूति हुई, किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। बिना पीछे मुड़े ही मैं समझ गया कि वह कौन है।

“आज रात तुमने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।” गाय की आवाज़ मेरे अंदर हल्की गड़गड़ाहट की तरह गूंज उठी। मैं धीरे से मुड़ा, विल्सन द्वारा सिखाई गई गति को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा था।

मैं यह स्वीकार करता हूँ; मैं सबसे कमज़ोर पिशाचों में से नहीं था। मुझे वे दरवाजे, फाटक, बाड़ और जंजीरें याद हैं जिन्हें मैंने पिछले कुछ दिनों में तोड़ दिया था, इससे पहले कि मुझे अपनी ताकत का अंदाज़ा हो। लेकिन मैं बेहतर हो रहा था।

मैंने उनकी प्रेरणा से प्रसन्न होकर कहा, "धन्यवाद।"

गाय की आंखों के नीचे काले घेरे थे। वह जितनी नींद लेनी चाहिए थी, उतनी नहीं ले रहा था। हमारी निगाहें मिलीं और मेरे अंदर घबराहट की लहर दौड़ गई। आखिर इस आदमी ने मुझे ऐसा क्यों महसूस कराया? मैंने एक गहरी सांस ली, इस विचार को नजरअंदाज करते हुए, और गाय एक कदम आगे बढ़ा।

विल्सन का कहना है कि आप अपने नए शरीर के साथ तालमेल बिठा रही हैं। आपकी हरकतें और भी ज्यादा…सुंदर हो गई हैं।

विडंबना यह थी कि जैसे ही उसके मुंह से ये शब्द निकले, मैंने अपना कप काउंटर पर पटक दिया, जिससे सारा पेय छलक कर मेरे चेहरे पर फैल गया। मैं जम गया, मेरी नाक से खून टपक रहा था... बड़ी खूबसूरती से।

हम एक पल के लिए चुप हो गए, फिर अचानक जोर से हंसने लगे। मैं इतना हंसा कि मेरे पेट में दर्द होने लगा।

“मैं किसे बेवकूफ बना रहा हूँ, फेथ?” गाय ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखते हुए हँसते हुए कहा।

“तुम दुनिया की सबसे अनाड़ी वैम्पायर हो।” मैंने उसे शरारती अंदाज़ में होंठ फुलाकर देखा। “लेकिन तुम सीख जाओगे। बस थोड़ा समय लगेगा।”

हमारी हंसी तब फीकी पड़ गई जब गाय ने तौलिया उठाया और धीरे से मेरी नाक और ठोड़ी पोंछी, उसका हाथ मेरे चेहरे के किनारे को छू गया। उसके स्पर्श से मेरे अंदर एक चिंगारी सी दौड़ गई और

मैंने उसकी स्लेटी रंग की धूसर निगाहों में खो जाने से बचने की कोशिश की, पर खुद को रोक नहीं पाई। हम रसोई में चुपचाप खड़े रहे, आंखें एक-दूसरे से मिली हुई थीं, हमारे बीच एक अनकही बिजली दौड़ रही थी। मैं बस उसे अपनी बाहों में भर लेना चाहती थी और हमेशा के लिए थामे रखना चाहती थी। लेकिन एक पल—या शायद दस पल—के बाद उसने अपना हाथ झटक लिया और नज़रें दूसरी तरफ कर लीं। मैं घबराकर अपने हाथों को आपस में मलने लगी।

"मुझे लगता है अब सोने का समय हो गया है," उसने तर्क दिया।

मैं शर्मिंदा होकर मुंह फेर लिया। "शायद ऐसा ही है।"

हम दोनों जानते थे कि पिछले कुछ दिनों की तरह आज भी हमें एक ही कमरे में सोना पड़ेगा। लेकिन इस बार बात अलग थी, थोड़ी अजीब सी। शायद इसलिए क्योंकि मेरे मन में गाय के लिए भावनाएँ पनप रही थीं। मुझे महसूस हो रहा था कि शायद उसके मन में भी मेरे लिए वैसी ही भावनाएँ हों।

“तुम बिस्तर ले लो,” उसने सुझाव दिया। “मैं फर्श पर एक गद्दी बना लूंगा।”

विल्सन अपने कमरे में जा चुका था और मैं अंधेरे घर से होते हुए गाय के पीछे-पीछे पिछले गलियारे में गया। कमरे में प्रवेश करते ही उसने लैंप जला दिया। मैंने उसका चेहरा देखा, उसकी आँखें बेजान और थकी हुई थीं। गाय भी मेरी ही तरह रात भर जागता था और दिन में सोता था, हालाँकि मुझे लगता है कि उसकी नींद अच्छी नहीं होती थी। मेरे लिए उसने जो बलिदान दिए थे, उन्हें याद करके मेरा दिल भर आया और मैं अपनी कृतज्ञता को रोक नहीं पाया।

“मुझे पता है मैंने ये पहले भी कहा है...” मैंने अपनी नज़रें उससे हटा लीं। “लेकिन शुक्रिया।” उसने खाली तस्वीरों के फ्रेमों का ढेर बगल की दीवार की तरफ धकेल दिया। उसने कोई जवाब नहीं दिया और फर्श पर अपने लिए जगह बनाने के लिए फर्नीचर और सामान को इधर-उधर करता रहा।

“मैं समझ भी नहीं सकती कि आपने मेरे लिए कितना त्याग किया है।” मैंने दीवार के एक खुरदुरे हिस्से पर अपनी उंगलियां फिराईं। “मैं आपकी सदा ऋणी रहूंगी।”

गाय ने एक लुढ़की हुई चटाई खोली और उसे पत्थर के फर्श पर बिछा दिया। मेरी बातें सुनकर उसके चेहरे पर प्रशंसा का भाव आया, लेकिन वह तुरंत ही ठंडेपन में बदल गया। वही उदासीन भाव जो मैंने पहले भी उसके चेहरे पर देखा था।

मैं यह काम किसी के लिए भी कर देता।

मेरा दिल बैठ गया, लेकिन मैंने सोचा कि चूंकि मैंने ही इस विषय को उठाया है, इसलिए मुझे कुछ कहना ही होगा।

"बिल्कुल।"

उसकी बात चुभ गई। मुझे लगने लगा था कि वह मुझे पसंद करता है, या कम से कम मेरे लिए कुछ भावनाएँ रखता है। लेकिन जब उसने इस तरह बात की, तो मुझे फिर से अकेलापन और उदासी महसूस हुई। शायद मैं गलत थी। शायद उसकी हरकतें सिर्फ़ एक स्वार्थी, नैतिक कर्तव्य थीं, जिसे उसे अपनी पिछली प्रेमिका के साथ हुए हादसे की वजह से निभाना पड़ रहा था। जितना मैंने समझा था, उसके मन में कई दबी हुई बातें थीं और मैं उसे दूर रहने के लिए दोष नहीं दे सकती थी। लेकिन फिर भी मुझे यह अच्छा नहीं लगा।

मेरे पास बदलने के लिए कुछ था ही नहीं, इसलिए मैंने कपड़े बदले बिना ही डबल बेड पर चढ़कर रजाई ओढ़ ली। मैंने ऊपर देखा तो पाया कि सूरज की रोशनी रोकने के लिए सभी खिड़कियों के अंदरूनी हिस्से पर एल्युमिनियम फॉयल की परत चढ़ाई गई थी। लकड़ी के पर्दों से छनकर एल्युमिनियम फॉयल की चांदी जैसी चमक दिखाई दे रही थी।

गाय ने लैंप बंद किया और अपनी चटाई पर लेट गया। कुछ ही पलों में उसकी साँसें धीमी हो गईं

और नींद ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। मैं करवट बदलकर अंधेरे में खाली निगाहों से देखता रहा। मेरा दिमाग उलझनों में घिरा हुआ था, यह समझने की कोशिश कर रहा था कि दूसरे पिशाचों के पास ले जाए जाने के बाद मेरी ज़िंदगी कैसी होगी।

गाय नींद में कराह उठा और मैं सिकुड़कर एक गेंद की तरह हो गई। पिछले तीन दिनों से— एक पिशाच के रूप में अपने पूरे जीवन में— मैं अपनी सुरक्षा के लिए इस आदमी पर निर्भर थी। मैं एक साथी के रूप में उस पर निर्भर थी। सच कहूँ तो, मैं हर चीज़ के लिए उस पर निर्भर थी। और इस जुड़ाव ने हमें और करीब ला दिया था। लेकिन मैं अपनी भावनाओं को खुद पर हावी नहीं होने दे सकती थी। मुझे उसकी तरह मजबूत रहना था। मैं गाय से बहुत ज्यादा लगाव नहीं रख सकती थी। आखिर वह एक इंसान था और मैं एक अभागी आत्मा।

नींद ने मेरे थके हुए शरीर को जल्दी ही अपनी गिरफ्त में ले लिया, और मेरा मन उलझे हुए विचारों से दूर होता चला गया। फिर एक बार फिर, मैं एक याद में डूब गया, बीते दिनों की यादें हर बार लौटकर और भी स्पष्ट होती गईं...

चीखें मेरे कानों में गूंज उठीं, गाड़ी पर से मेरा नियंत्रण छूटने के कारण मेरी आवाज़ भी तेज़ हो गई। चिकनी सड़क से उतरकर गाड़ी उछलने-कूदने लगी, मेरा शरीर इधर-उधर धक्के खा रहा था। हेडलाइट्स की तेज़ रोशनी से घने पेड़ों की एक कतार रोशन हो रही थी। करीब आ रहे हैं... और करीब।

मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मेरी उंगलियाँ स्टीयरिंग व्हील पर कसकर जकड़ी हुई थीं, जिससे दिल से हाथों तक खून का प्रवाह रुक गया था और उंगलियाँ सुन्न हो गई थीं। पानी विंडशील्ड पर बह रहा था, रंग बिखरे हुए पेंट की तरह कांच पर फैल रहा था। मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मेरा सीना जकड़ गया, मैं घबरा गया था। मैंने ब्रेक पर पैर मारा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ और गाड़ी उबड़-खाबड़ रास्ते पर इधर-उधर डगमगाने लगी, चटकने और घिसने की आवाज़ें आ रही थीं। मेरी साँस अटक गई। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

प्रभाव।

अचानक मेरी सांसें थम गईं। धातु के टूटने की आवाज़ हड्डियों के चटकने जैसी और कांच के टुकड़े बर्फ के बिखरने जैसे। पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ गई।

और सब कुछ अंधेरा होने से ठीक पहले, मुझे याद आया कि क्या यही वो पल होगा जब मेरी मृत्यु होगी। वो पल जब मैं अपने ईश्वर से मिलूंगा...

चौबीस: लड़का

मैं फर्श पर बिछी अपनी चटाई से उठा और चुपचाप अपना बिस्तर ठीक किया। रूबी को सोते हुए देखकर मेरे दिल में दुख की एक लहर तीर की तरह चुभ उठी, क्योंकि मैं जानता था कि यह आखिरी बार होगा जब मैं उसे इस तरह देखूंगा। शाम ढल रही थी और सैद्धांतिक रूप से उसे सूर्यास्त के बाद ही जागना चाहिए था। मेरे पास शहर जाकर अपनी यात्रा के लिए कुछ सामान इकट्ठा करने के लिए कुछ घंटे थे। समय कम होता जा रहा था और मुझे यह सुनिश्चित करना था कि सब कुछ ठीक-ठाक हो। मैं इतनी दूर आ चुका था कि अपने निशान मिटाना संभव नहीं था और मैं किसी भी तरह की चूक बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

मैंने विल्सन को बैठक में जागते हुए, किताब पढ़ते हुए पाया। सभी पर्दे लगे हुए थे और कुछ जलती हुई मोमबत्तियों को छोड़कर पूरा घर अंधेरे में डूबा हुआ था। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह पिशाच कभी सोता भी है।

मैं आगे बढ़ा। "मैं शहर जा रहा हूँ। मुझे यात्रा के लिए कुछ सामान खरीदना है।"

विल्सन ने पलक भी नहीं झपकाई और न ही ऊपर देखा, बल्कि अपनी निगाहें किताब पर टिकाए रखीं। "क्या आपको यकीन है कि यह बुद्धिमानी है?"

फिर वही बात। मैंने झुंझलाहट से अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

"सुनो। मैंने अपना ट्रैकर नष्ट कर दिया है और जहाँ तक मुझे पता है, मेरे कोई भी सैनिक टक्सन में तैनात नहीं हैं। कोई समस्या नहीं होगी।" एक लंबा क्षण बीत गया जब मैं वहाँ खड़ा उसे घूरता रहा। कभी-कभी मुझे लगता है कि उसने जानबूझकर मेरी सहनशीलता की परीक्षा ली। लेकिन मैं चुपचाप उसके जवाब का इंतजार करता रहा।

"मेरे पास जीने के लिए ज़रूरी सब कुछ है," उसने पन्ने पर नज़र रखते हुए समझाया। "आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। बाहर जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

गर्म हवा के झोंके से एक मोमबत्ती बुझ गई, लेकिन लौ तेज़ जलती रही। मैंने अपने हाथ सीने पर बाँध लिए। "अगर आपके पास महिलाओं के कपड़ों से भरी अलमारी नहीं है, तो मुझे शहर जाना होगा। रूबी को कभी न कभी कपड़े बदलने ही पड़ेंगे। हम नहीं चाहते कि वो जादूगरों के समूह में एक पर्यटक की तरह आए।"

विल्सन ने एक कंधा उचकाया, लेकिन ऊपर नहीं देखा। "जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन जल्दी करो। मुझे यह आना-जाना पसंद नहीं है। यह सुरक्षित नहीं है।"

मैंने कुछ नहीं कहा, बस ज़रूरत से ज़्यादा नाटकीय अंदाज़ में झुककर प्रणाम किया। जब मैं अपने राजा के सामने दिखावटी अधीनता दिखाते हुए पीछे हटी, तो विल्सन ने मुझे तिरछी नज़रों से देखा। उसने नाराज़गी से सिर हिलाया, और मैं मुस्कुराई और सामने के दरवाज़े से बाहर निकल गई। उस बूढ़े पिशाच को नाराज़ करने से बढ़कर और कोई संतुष्टि नहीं थी।

मैंने 'उधार' लिए ट्रक का इंजन तेज़ किया और उसके स्टार्ट होते ही मुझे तसल्ली मिली। मैं दोपहर की धूप में पश्चिम की ओर तेज़ी से बढ़ा और अपनी आँखों को धूप से बचाने के लिए विज़र नीचे कर लिया। हाँ, यह सच था कि रूबी को कुछ नए कपड़ों की ज़रूरत होगी, लेकिन मैंने उसे एक और ज़रूरी काम के बारे में नहीं बताया था। रूबी ने मेरे लिए जो कुछ भी किया था, वह बस इतना था कि

उसने मुझे दिखाया कि ज़िंदगी छोटी है और कुछ भी हो सकता है। और मेरे कुछ अधूरे काम थे जिन्हें पूरा करना ज़रूरी था।

मैं रैंप पर तेज़ी से चढ़ा और सिएरा विस्टा की ओर जाने वाले फ़्रीवे पर पहुँच गया। मेरा मन भटक रहा था, मुझे उस समय में ले जा रहा था जिसे मैं भूलने की कोशिश कर रहा था। मेरे जीवन का वह समय जिसने मुझे लगभग तोड़ दिया था...

तेज़ आवाज़ में बजते कार के हॉर्न ने मुझे मेरी तंद्रा से जगाकर हकीकत में वापस ला दिया। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं खोया हुआ था। ज़ोर से साँस छोड़ते हुए, मैंने स्टीयरिंग व्हील को संभाला और खिड़की से हाथ हिलाकर अपनी लापरवाही के लिए माफ़ी माँगी। ज़ाहिर है, मैं दूसरी लेन में चला गया था। खुद को संभालो। मैंने अपनी हथेली से अपनी आँखें मलीं। मैं दिन में कुछ ही घंटे सो पा रहा था और इसका असर मुझ पर पड़ने लगा था।

कुछ ही देर में, मैंने उस रास्ते से बाहर निकलने का फैसला किया जो मुझे मेरे अतीत की ओर ले जाता, एक ऐसा अतीत जिसे मैं कुरेदना नहीं चाहता था। लेकिन समय आ गया था और मुझे वहाँ जाना ही था। लिली के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए। जैसे ही मैंने गाड़ी पार्क की और छोटे से कब्रिस्तान में प्रवेश किया, मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

मैं कब्रों के बीच चक्कर लगा रहा था, मेरी निगाहें एक से दूसरी कब्र पर टिकी हुई थीं, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। आसमान में धूसर बादल छाए हुए थे और चारों ओर तेज़ हवा चल रही थी। मानसून आ रहा था। कब्रिस्तान में मौजूद कुछ लोग आने वाले तूफान के डर से जल्दी-जल्दी चले गए, मुझे अकेला छोड़कर। मैंने गहरी सांस ली और सोचने लगा कि मरने से पहले लिली क्या सोच रही होगी। क्या वह अपनी मौत के लिए मुझे दोषी ठहरा रही थी?

मुझे वह कब्र मिल गई जिसकी मैं तलाश कर रहा था। यह छोटी और सादी थी। कोई तामझाम नहीं, न ही चमकीला संगमरमर। आसपास की बड़ी कब्रों की तरह कोई अलंकृत सजावट नहीं। बस एक चौकोर पत्थर की पटिया, जिस पर सादे अक्षरों में लिली ब्राइटन का नाम खुदा हुआ था। यह एक विशाल ओक के पेड़ के नीचे थी, जिसकी पतली शाखाएँ आकाश की ओर मुड़ी हुई थीं। पत्थर के सहारे मुरझाए गुलाबों का एक गुलदस्ता रखा था। ये गुलाब किसी ऐसे व्यक्ति ने दिए थे जो उससे प्यार करता था और आज भी उसके चले जाने के दर्द से तड़प रहा है।

मैं घुटनों के बल बैठ गया और उदास मन से अपनी उंगलियों से उसका नाम छुआ। "लिली," मैंने फुसफुसाया।

दो साल पहले उसकी लाश मिलने के बाद, मैं कभी उसकी कब्र पर नहीं गया। न ही उसके अंतिम संस्कार में। डर और दर्द ने मुझे दूर रखा था। FUSE ने झूठी कहानी बनाकर सारी बात संभाल ली थी। यहाँ तक कि जनरल ब्रांट ने भी मुझे जाने और शोक मनाने के लिए कहा था। लेकिन उस समय, मैं उसे खोने के सदमे को दोबारा जीना नहीं चाहता था। यह मेरी गलती थी कि मैंने उसे लंबे समय तक, पूरी लगन से नहीं खोजा। यह मेरी गलती थी कि मैंने उसे अपने जीवन में आने दिया। मैं ही उसकी मौत का कारण था।

मैंने खुद को लिली की समाधि से इस तरह बात करते हुए पाया मानो वह मुझे सुन सकती हो, मेरी आवाज पछतावे से भरी हुई थी।

“मुझे तुम्हें अकेले बाहर नहीं जाने देना चाहिए था। मुझे तुम्हारे साथ रहना चाहिए था। तुम्हारी रक्षा करनी चाहिए थी।” हवा में सूखी पत्तियाँ मेरे पैरों के पास से ऐसे गुज़रीं मानो जवाब दे रही हों। मैंने मुश्किल से अपनी बात कही, “मुझे माफ़ कर दो।”

मेरा पेट अंदर से फट गया, पैरों के तलवों तक जलन फैल गई। एक ऐसा दर्द जिसे मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। मैंने हमेशा अपनी भावनाओं को दबाकर रखा था, कभी उस तरह शोक नहीं

मनाया जैसा मुझे मनाना चाहिए था। और अब जब मैंने अपनी भावनाओं को बाहर आने दिया, तो वर्षों के दर्द की तीव्रता से मेरा पूरा शरीर कांप उठा। मैं अनजाने में ही थरथरा उठी।

"और अब मुझे नहीं पता कि क्या करूं।" मैंने गिरी हुई सूखी गुलाब की पंखुड़ी को सहलाया। वह मेरी उंगलियों के नीचे चूर-चूर हो गई। "मैंने किसी और के जीवन में दखल दिया है। उनकी मृत्यु में। मुझे डर है कि मैंने गलती कर दी है। लेकिन मुझे लगता है... मुझे लगता है कि मैं उससे प्यार करता हूं।"

मुझे याद नहीं कि कब, पहली बार मेरी आँखों से एक आँसू बह निकला और ठुड्डी से टपकने लगा। हवा का झोंका आया और विशाल ओक का पेड़ चरमरा उठा। तेज़ हवा मेरी गर्दन को छू गई। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं दोबारा प्यार कर पाऊँगी। क्या यह मुमकिन भी था? मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

मैंने खाली हवा से कहा, "मुझे बताओ। क्या उसकी मदद करने की कोशिश करना मेरी गलती थी? क्या मुझे उसे मरने देना चाहिए था?"

रूबी की मुस्कान मेरे मन में बस गई, उसकी बैंगनी आँखें गर्मजोशी से चमक रही थीं और उसकी हँसी मेरे दिल को छू रही थी। नहीं, मैं उसे मरने नहीं दे सकता था, खासकर अब। अब जब मुझे पता चल गया था कि मैं क्या खो देता।

"मैं..." मेरा गला सूख गया, हिचकिचाहट से मेरी साँसें रुक गईं। नहीं, मुझे यह करना ही था। मुझे उसे बताना ही था। मैंने गले में अटके हुए आँसू को किसी तरह निगला और फिर से बोलना शुरू किया। "इतने लंबे समय तक, मैं सबसे अलग-थलग रही। हर चीज़ से और हर किसी से। तुम्हारे साथ जो हुआ, उसका दुख मुझे सताता रहा, लिली। इसने मुझे बदल दिया। मैं प्रतिशोधी और द्वेषी बन गई। मैं एक राक्षस बन गई।"

फूलों की खुशबू हवा में तैर रही थी और मैंने उस सुगंध को महसूस करते हुए सोचा कि क्या मैं अब भी वही राक्षस हूँ जो कभी था। मैंने सोचा कि क्या लिली चाहती थी कि मैं ऐसा बन जाऊँ— एक निर्दयी और बेरहम हत्यारा। शायद नहीं।

और फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं बदल गया था। रूबी ने मुझे बदल दिया था, ठीक वैसे ही जैसे लिली ने। लेकिन इस बार बात अलग थी— जैसे किसी बुरे सपने से जागना और अपनी त्वचा पर सूरज की गर्माहट महसूस करना। मैं अब प्रतिशोधी दरिंदा नहीं था, जो शिकार के रोमांच के लिए जीता था, और दुर्भाग्यशाली लोगों का निर्दयतापूर्वक शिकार करता था जैसे कि वे कीड़े-मकोड़े हों। मैं फिर से इंसान बन गया था, आखिरकार मैंने अपने अंदर की दीवार तोड़ दी थी। लेकिन मैं सोच रहा था कि इसका उस जीवन पर क्या असर पड़ेगा जिसके लिए मैंने खुद को समर्पित किया था। वह जीवन जिसमें मैं उन लोगों का नेतृत्व करता था जो किसी ऐसी चीज के खिलाफ युद्ध लड़ते थे जिसके बारे में मुझे बहुत कम जानकारी थी।

मेरी दुनिया उलट-पुलट हो रही थी, मेरा दिमाग सवालों और शंकाओं के बवंडर में उलझा हुआ था। लेकिन मेरे ऊपर उमड़ते हुए इस संघर्ष के बावजूद, रूबी की परवाह करना मुझे गलत नहीं लग रहा था। बल्कि, मुझे यही सही लग रहा था।

एक काला कौआ समाधि पर आकर बैठ गया, उसकी चमकीली आँखें मेरी ओर झपक रही थीं, यह देखकर मैं चौंक उठा। पक्षी डरा हुआ नहीं था, बल्कि मुझे ऐसे देख रहा था मानो मेरे बोलने का इंतज़ार कर रहा हो। हमारी खामोश बातचीत के दौरान मैं आश्चर्य से स्तब्ध रह गया, मानो यह कोई संकेत हो, मानो लिली प्रकृति के माध्यम से मुझसे बात कर रही हो। गुलाब की पंखुड़ियों का एक गुच्छा गुलदस्ते से गिरकर मेरे घुटनों पर आ गिरा। पक्षी ने उड़ जाने से पहले अपना सिर थोड़ा झुकाया। बारिश की बूँदें मेरे कंधों पर पड़ने लगीं।

मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और वो चाकू निकाला जो लिली ने मुझे बहुत पहले दिया था। मैंने उसके हैंडल पर खुदे अपने उपनाम को रगड़ा। पत्थर जैसा। मैंने अपने सूखे होंठों को चाटा और उस हथियार को उसकी समाधि के आधार पर रख दिया। एक शांति का प्रतीक। अंत का प्रतीक। एक नई शुरुआत। मैंने कब्र को फिर से छुआ और फुसफुसाया।

"धन्यवाद।"

हालांकि वह बहुत पहले गुजर चुकी थी, लेकिन उसने मुझे वे जवाब दे दिए थे जिनकी मुझे जरूरत थी।

और शायद मैंने सही ही किया था। शायद यह कोई गलती नहीं, बल्कि एक छिपा हुआ आशीर्वाद था। वैम्पायर फेथ के मेरे जीवन में आने के बाद मुझे नहीं पता था कि मेरा भविष्य क्या होगा। लेकिन मेरे पास उसकी मदद करने के अलावा कोई चारा नहीं था। रूबी की मदद। मैं उसके लिए उसके जैसे लोगों के बीच एक जगह ढूंढूंगा, जहां वह मुझ जैसे लोगों से सुरक्षित रहेगी।

मैं उठ खड़ा हुआ और मुड़ने से पहले उस पत्थर पर आखिरी नज़र डाली। कब्रिस्तान से निकलते समय मेरे अंदर एक नया जोश था, शांति ने मेरे शरीर को सुकून दिया। मैंने जीवन के प्रति अपने नए दृष्टिकोण को स्वीकार कर लिया, आखिरकार लिली को भुला दिया। आखिरकार अपने अतीत को भी भुला दिया।

अब मुझे एक लड़की की मदद करने जाना था। एक ऐसी लड़की जिसके साथ मेरा हमेशा के लिए एक गहरा रिश्ता रहेगा। चाहे हमारा साथ होना तय था या नहीं, चाहे कितनी भी दूरी हो, रूबी के लिए मेरे दिल में हमेशा एक खास जगह रहेगी। मैं हमेशा उससे जुड़ा रहूंगा, मेरी प्यारी वैम्पायर फेथ से। मौत के पार से मिला एक तोहफा।

पच्चीस: रूबी

मैं एकदम सीधा बैठ गया, हांफते हुए सांस ले रहा था। मेरे दिल की धड़कन इतनी तेज़ थी कि कानों में सुनाई दे रही थी, और मैंने उसे धीमा करने की उम्मीद में अपने हाथों को अपनी छाती पर रख लिया।

“गाइ?” मैं बेडरूम से लड़खड़ाते हुए बाहर निकला, एक और सपने के टुकड़े आखिरकार बिखर गए, और मुझे अंदर से अंधेरा और बेचैन छोड़ गए। मेरे माथे पर पसीना आ रहा था।

गलियारे में धीरे-धीरे चलते हुए मेरी धड़कन आखिरकार धीमी हो गई, और मैंने खुद को याद दिलाया कि यह बस एक और सपना था, एक और याद - मेरी मृत्यु की याद। जागते समय मेरी याददाश्त से गायब समय के टुकड़े को सुलझाने में कोई प्रगति न होने के कारण, मुझे उम्मीद थी कि यह मुझे नींद में मिल जाएगा। लेकिन किसी कारण से जब मेरे सपने उस निर्णायक मोड़ पर पहुँचे जिसकी मैं तलाश कर रहा था - मुझे इस हालत में किसने पहुँचाया, इसका सुराग - तो वे अचानक रुक गए। मानो कोई चीज़ उन्हें आगे बढ़ने नहीं दे रही थी।

मैंने खुद को शांत करने के लिए एक लंबी सांस छोड़ी और फिर से अपने उद्धारकर्ता को पुकारा।

"लड़का?"

मैं अंधेरे में जागा और खुद को अकेला पाया। गाय का बिस्तर लुढ़काकर एक तरफ रख दिया गया था, उसके कंबल तह करके उसके तकिए के ऊपर करीने से रखे हुए थे।

घर में अंधेरा छाया हुआ था, बस कुछ मोमबत्तियाँ और कम रोशनी वाले लैंप हल्की-हल्की रोशनी बिखेर रहे थे। मैं गलियारे में धीरे-धीरे आगे बढ़ा, रास्ते में एक बंद लाल दरवाजा और कुछ खुले दरवाजे दिखाई दिए। कमरों में सामान बिखरा पड़ा था और पुरानी वस्तुएँ रखी थीं, लेकिन मुझे कोई नज़र नहीं आया।

“हेलो?” मैंने संशय से पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। “विल्सन?”

मैं बैठक कक्ष से होते हुए रसोई में गया, जहाँ मुझे आधा खाली खून से भरा गिलास और टोस्ट के टुकड़ों से भरी एक प्लेट मिली। वापस गलियारे से लौटते समय, मैं लाल दरवाजे के पास रुका और अंदर से धीमी फुसफुसाहट सुनी।

मैंने पीतल के दरवाज़े के हैंडल को सावधानी से पकड़ा और दरवाज़ा थोड़ा सा खोला। कमरे से एक नीली इलेक्ट्रॉनिक रोशनी निकली और मुझे अंदर विल्सन के बड़बड़ाने की आवाज़ सुनाई दी।

"बहुत करीब। बहुत करीब।"

“विल्सन?” मैंने हिचकिचाहट के साथ पूछा। मैंने इस कमरे पर पहले कभी ध्यान नहीं दिया था और मैं विल्सन की निजता में दखल नहीं देना चाहता था। लेकिन जिज्ञासा मुझ पर हावी हो गई और मैंने दरवाजा थोड़ा और खोल दिया।

एक भयानक दहाड़ मेरे कानों में गूंजी और मैंने खुद को गलियारे में पटकते हुए पाया, मेरी गर्दन मेरे शरीर के नीचे दबी हुई थी। विल्सन की काली आँखें मुझ पर चमक रही थीं, उसके चेहरे पर क्रोध और भय के भाव साफ झलक रहे थे, जिससे मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसकी साँसें मेरे गालों पर पड़ रही थीं और अगर मुझे पहले से पता न होता, तो मैं सोचती कि वह मुझे वहीं मार डालेगा।

मैंने अपना मुंह खोला, लेकिन गर्दन पर पड़े तनाव के कारण बोल नहीं पाया। मेरे दांत बाहर निकल आए और मेरी सहज प्रवृत्ति लड़ने, जान से मारने की थी। लेकिन मैंने अनिच्छा से खुद को रोका, विल्सन को चोट नहीं पहुंचाना चाहता था, और सोच रहा था कि आखिर उसके साथ क्या हुआ होगा।

उसकी आँखों में जंगली जानवर जैसा क्रोध जल रहा था, लेकिन मैंने वहाँ अचानक एक बदलाव देखा। एक अहसास। उसने मुझे ज़मीन पर गिरा दिया और हाँफते हुए पीछे की ओर लड़खड़ा गया।

“मैं... मैं...” वह दीवार के सहारे झुकते हुए हकलाया। उसने अपनी गर्दन के चारों ओर बंधी टाई को ठीक किया और अपना माथा रगड़ा। “मुझे नहीं पता कि मुझे क्या हो गया था। क्या... क्या आप ठीक हैं?”

मैंने अपनी गर्दन पर हाथ फेरा, और हैरानी की बात यह थी कि मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ। "हाँ, मैं ठीक हूँ।" उसने हाथ बढ़ाकर मुझे ज़मीन से उठने में मदद की, उसके चेहरे पर पछतावा साफ झलक रहा था।

मुझे खेद है। मुझे लगता है कि बुढ़ापे में मैं थोड़ा बेचैन हो गया हूँ।

एक बार फिर, मेरे दिल की धड़कन धीमी हो गई, लेकिन एड्रेनालाईन के कारण मेरे हाथ अभी भी कांप रहे थे। मैंने अपने सामने खड़े उस बूढ़े पिशाच को देखा। वह थका हुआ और कमजोर लग रहा था, मानो उसने बिल्कुल भी नींद न ली हो।

मैंने अपने नुकीले दांतों पर ध्यान केंद्रित किया, जैसा कि विल्सन ने मुझे पिछली रात सिखाया था, और मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि वे बड़ी आसानी से अंदर चले गए। लेकिन विल्सन के चेहरे पर राहत का भाव देखकर मेरी उपलब्धि पर गर्व गायब हो गया और मैं सोचने लगा कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया होगा।

जैसे मेरे सवाल सुन लिए हों, विल्सन ने धीरे से मेरे कंधे पर हाथ रखा। “मैंने तुमसे पूरी सच्चाई नहीं बताई। मैंने अपनी मर्जी से अनफॉर्चुनेट सोल्स को नहीं छोड़ा।” उसने एक लंबी साँस छोड़ी। “मैं भाग निकला।”

मैंने बिना कुछ कहे सवालिया अंदाज में अपनी भौंहें सिकोड़ लीं।

विल्सन ने अपने शब्दों को तौलते हुए अपनी हथेलियों को आपस में रगड़ा। "ज्यादा विस्तार में जाए बिना, मैं बस इतना कह सकता हूँ कि मैंने नियमों का उल्लंघन किया। मैंने अपने जैसे लोगों के लिए एक अक्षम्य काम किया है।"

"क्या तुमने किसी को मार डाला?" मैंने पूछा, मुझे तुरंत उस पुराने मिशन की घटना याद आ गई जब मैंने पिशाच को मारा था।

उसने सिर हिलाया। “नहीं। मैंने कुछ ऐसा किया है जो उनकी राय में हत्या से भी कहीं ज्यादा जघन्य है।”

मैंने यह पूछने के लिए अपना मुंह खोला कि हत्या से भी बदतर क्या हो सकता है, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाता, विल्सन ने मुझे लाल दरवाजे की ओर ले जाकर विषय बदल दिया।

“और इसीलिए मैं यहाँ अकेला रहता हूँ। हालाँकि मैं यह बात मानना नहीं चाहता, लेकिन कैप्टन स्टोन ने ही मुझे यहाँ ऐसी जगह पहुँचाने में मदद की जहाँ मुझे कोई ढूँढ़ न सके। और इसीलिए जब मैंने तुम्हें दरवाज़े पर देखा, तो मैं घबरा गया। मैं हमेशा सशंकित रहता हूँ, इस डर से कि कहीं एक दिन वे मुझे ढूँढ़ न लें और मुझे हमेशा के लिए मौत की सज़ा न दे दें।”

मैंने सिर हिलाया, यह समझते हुए कि विल्सन के बारे में मेरी समझ से कहीं अधिक बातें थीं। मैं एक और सवाल पूछने ही वाला था कि उसने लाल दरवाजा खोला, जिसके अंदर एक नियंत्रण केंद्र जैसा कुछ दिखाई दिया।

"हल्के-फुल्के अंदाज में कहूँ तो... मेरे पास आपको दिखाने के लिए कुछ है।"
हम गुप्त कमरे में दाखिल हुए और मैं आश्चर्य से चारों ओर देखने लगा। दीवारों पर पीला पड़ा वॉलपेपर उखड़ रहा था और उन पर सुरक्षा जाल और पुराने फोटो फ्रेम लगे हुए थे। फ्रेम में उन लोगों के काले-सफेद चित्र लगे थे जो अब इस दुनिया में नहीं थे। मैं अपने परिवार की तस्वीर के बारे में सोचने लगा। मुझे लगा कि कुछ ही सालों में वह भी पुरानी चीज़ बन जाएगी। मैं धुंधली काली-सफेद यादों को निहार रहा था, जिनका रंग फीका पड़ चुका था, उनकी चमक गायब हो चुकी थी।
विल्सन तीन डेस्क में से एक पर झुक गया, जो चमकते हुए कंप्यूटरों और लैपटॉपों से भरा हुआ था, तारों का जाल इधर-उधर फैला हुआ था। लंबी अलमारियां पुरानी किताबों से लबालब भरी थीं और फर्श पर लुढ़के हुए नक्शे और अन्य मुड़े हुए दस्तावेजों से भरी टोकरियां रखी थीं। यह नए और पुराने का एक अजीब और विविध संग्रह था, फिर भी मुझे इसमें सुकून मिला।
"बैठ जाइए।" विल्सन ने एक पहियों वाली कंप्यूटर कुर्सी की ओर इशारा किया और मैं बैठ गया, विस्मय से टेलीविजन मॉनिटरों को देखने लगा।
"यह क्या है, विल्सन?"
“मेरा कार्यालय।” उसने मुझे एक फीकी मुस्कान दी और मेरी बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया।
“हाँ।” उसके सीधे-सादे जवाब पर मैं हँस पड़ी। “मुझे यही तो पता था। लेकिन ये सारे कंप्यूटर और टीवी स्क्रीन क्यों? ये सब क्या है? आप क्या करते हैं?”
“ये एक बूढ़े, पागल पिशाच के विचार हैं,” उसने कर्कश और नींद भरी आवाज़ में कहा। उसने अपनी हथेलियों के पिछले हिस्से से अपनी आँखें मलीं। “कुछ लोग मुझे सनकी कहेंगे, लेकिन मैं खुद को जानकार मानता हूँ।”
मैंने एक स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित किया जिसमें पिछली रात के प्रशिक्षण क्षेत्र का दृश्य दिख रहा था। पीली रोशनी शेड के किनारे और नीचे की मिट्टी को उजागर कर रही थी।
“आपको यहां काफी सुरक्षित महसूस होता होगा।” आश्चर्यचकित होकर मैंने उन सभी स्थानों पर ध्यान दिया जिनकी रिकॉर्डिंग हो रही थी। “क्या पूरी संपत्ति के चारों ओर सुरक्षा कैमरे लगे हुए हैं?”
“और शहर के आसपास की दूसरी जगहों पर भी,” विल्सन ने मुस्कुराते हुए कहा। मेरी भौंहें सवालिया निगाहों से तन गईं, और उन्होंने आगे कहा, “मुझे किसी भी समाचार रिपोर्टर से घंटों पहले ब्लड बैंक की डकैती के बारे में पता चल गया था। आपको क्या लगता है ऐसा क्यों हुआ?” यह एक व्यंग्यात्मक प्रश्न था।
“वाह,” मैंने उनकी व्यापक तकनीक को देखकर आश्चर्यचकित होते हुए कहा।
“वैसे भी, मैंने सोचा था कि आज रात तुम्हें यहाँ ले आऊँगा।” विल्सन ने अपनी कुर्सी को हमारे सामने वाली मेज के पास सरकाया, पहिए चरमराए। “अब जब तुम हमारे साथ हो, तो कुछ बातें तुम्हें जाननी चाहिए।” वह थोड़ा झुककर मेज पर पड़े एक पुराने हाथ से बने नक्शे पर एक जगह की ओर इशारा किया, पिशाचों की तेज़ गंध मेरी नाक में आई। “समय आने पर कैप्टन स्टोन तुम्हें यहीं ले जाएगा।”
मैंने नक्शे की रेखाओं और वक्रों का अध्ययन किया, और अपने घर से कुछ ही दूरी पर स्थित एक जगह को पहचानते ही मेरी आँखें चौड़ी हो गईं। “यह टॉम्बस्टोन कस्बा है। लेकिन वह मुझे वहाँ क्यों ले जा रहा है? यह तो बस एक पुराना, वीरान, वीरान कस्बा है।”
“वे यही तो चाहते हैं कि आप ऐसा ही सोचें।” विल्सन ने शरारती अंदाज़ में आँख मारी। “टॉम्बस्टोन को भले ही वर्षों पहले पर्यटकों के लिए प्रतिबंधित घोषित कर दिया गया हो, लेकिन इसे वीरान कहना गलत होगा।”

मैं आश्चर्यचकित होकर झुक गया और पीले पड़ चुके नक्शे को और गौर से देखने लगा। मैंने सोचा कि अगर मैं ध्यान से देखूं, तो शायद मुझे उन छोटे-छोटे चित्रों के अंदर कुछ दिखाई दे जाए, जो मुझे उस रहस्यमयी शहर के रहस्य को सुलझाने में मदद करेंगे।

विल्सन ने कागज़ पर धीरे से हाथ फेरा। "टॉम्बस्टोन दुर्भाग्यशाली आत्माओं का सबसे बड़ा दक्षिण-पश्चिमी केंद्र है, जिसमें वेयरवुल्फ, वैम्पायर, चुड़ैल और इसी तरह के अन्य जीवों का अपना समुदाय है।"

नई जानकारी सुनकर मेरा मुंह खुला रह गया और दिमाग चकरा गया। अभी-अभी तो मुझे यकीन होने लगा था कि पिशाच सच में होते हैं— और तो और, मैं खुद भी एक पिशाच बन चुका था। लेकिन अब ये सब? सच में? ये तो एक अविश्वसनीय विचार था; दूसरी दुनिया के जीवों की पूरी आबादी, सब एक साथ रहते हुए। दिमाग चकरा देने वाला!

“सचमुच यह एक प्यारा सा छोटा शहर है,” विल्सन ने मेरी सोच को तोड़ते हुए कहा। “और ज्यादातर मामलों में, यहाँ का प्रशासन निष्पक्ष है और कभी-कभी शांति भी रहती है। या कम से कम पहले तो ऐसा ही था।”

मैंने भौंहें चढ़ा लीं, यह सोचते हुए कि 'कभी-कभी शांतिपूर्ण' से उसका क्या मतलब था। बाकी समय क्या होता होगा? मैं कल्पना भी नहीं करना चाहती थी।

"क्या तुम कभी वहाँ रहे हो, विल्सन?" मेरा दिल उत्साह और थोड़े से डर से धड़क रहा था।

बूढ़े पिशाच ने भौंहें सिकोड़कर गुस्से से भर लिया। वह नक्शे के किनारे से खेलने लगा, उसे बार-बार मोड़ता और खोलता रहा। "हाँ। वास्तव में, मैं एक अत्यंत सम्मानित नेता था। मैं पिशाच सेना का प्रमुख था जब तक कि..."

उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी। क्या? उसने ऐसा क्या बुरा किया था कि उसे अपनी जान बचाकर भागना पड़ा? यह सस्पेंस मुझे जकड़ रहा था। मैंने अपना सिर एक तरफ झुकाया, उसके बोलने का इंतज़ार करते हुए। लेकिन मेरी निराशा तब और बढ़ गई जब उसने हाथ हिलाकर इस विचार को खारिज कर दिया।

कोई बात नहीं। जब आप वहां पहुंचेंगे, तो आपको पैंडोरा नाम की एक महिला से मिलना होगा। वह नए रंगरूटों की प्रमुख हैं। वह आपको व्यवस्थित होने में मदद करेंगी और आपके कौशल का योगदान देने के लिए एक उपयुक्त स्थान ढूंढेंगी।

हम्म... मेरी काबिलियत। मुझे एक ऐसे कस्बे की कल्पना करने में मुश्किल हो रही थी जहाँ पिशाच और वेयरवोल्फ एक साथ मिलकर काम करते हों और अपनी-अपनी काबिलियत का योगदान देते हों। लेकिन जितना मैंने इस बारे में सोचा, उतना ही यह संभव लगने लगा। मेरा मतलब है, देखा जाए तो हम इंसानों से इतने अलग नहीं थे... या थे?

मैंने सुरक्षा स्क्रीनों का फिर से जायजा लिया, उनमें से एक ने मेरा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। "क्या वह टॉम्बस्टोन है?"

मैंने तस्वीरों में देखे गए पुराने, टूटे-फूटे बोर्ड जैसा ही बोर्ड देखा, लेकिन इस पर 'अस्वीकृत' लिखा था। यह पुराना वीरान कस्बा कभी जनता के लिए खुला हुआ था। लेकिन मेरे जन्म से कुछ समय पहले, नीचे स्थित सोने की खानों के कारण एक भयानक भूस्खलन हुआ था, जिससे यह रहने लायक नहीं रहा। दक्षिणी एरिजोना के अधिकांश लोग इस विनाशकारी कहानी को जानते थे, जो पुराने पश्चिमी इतिहास का एक हिस्सा थी।

“जी हां, बिल्कुल,” विल्सन ने सिर हिलाया। “मैं यह तो देख सकता हूं कि कौन आता है और कौन जाता है, लेकिन शहर के अंदर क्या चल रहा है, यह नहीं देख सकता।”

मैंने स्क्रीन को दोबारा गौर से देखा, लेकिन बंद पड़े कस्बे की ओर जाने वाली पुरानी सड़क पर कोई

हलचल नहीं दिखी। मैं उस बूढ़े पिशाच और उसकी तकनीक को देखकर अचंभित रह गया। ऐसी तकनीक जो लगभग दो घंटे दूर के स्थान का सर्वेक्षण कर सकती थी।

विल्सन जम गया, उसकी निगाहें चमकती हुई स्क्रीन में से एक पर टिकी थीं। मैंने उसकी नज़र का पीछा किया तो देखा कि गाय हमारी 'उधार ली हुई' ट्रक में सामने वाले ड्राइववे में आ रहा था। मुझे हंसी आ रही थी, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया, क्योंकि मुझे याद आया कि गाय ने हॉटवायरिंग के अपने हुनर पर कितना गर्व दिखाया था।

"अब ताला लगाने का समय हो गया है।" विल्सन अपनी सीट से उछलकर उठा और मुझे कमरे से बाहर निकाल दिया, फिर हमारे पीछे लाल दरवाजा बंद कर दिया। उसने अपनी जेब से चाबी निकाली और दरवाजा बंद कर दिया।

"रूबी।" उन्होंने मेरे कंधों को पकड़कर मुझे स्थिर किया, उनकी निगाहें गंभीर और अटल थीं। "मैंने यह सब तुम्हें भरोसे में दिखाया है, इस उम्मीद में कि तुम मेरा राज़ रखोगी। जो भी जानकारी तुमने देखी है, वह किसी को भी मत बताना—चाहे वह जीवित हो या मृत।"

"हां," मैंने पूरी ईमानदारी से सहमति जताई। "बिल्कुल।"

विल्सन ने मुझे छोड़ दिया, लेकिन मेरे करीब आकर बोला, उसकी आवाज़ गहरी और डरावनी थी। "तुम्हें समझना होगा कि अगर FUSE या खुद उन बदकिस्मत लोगों को भी मेरे बारे में पता चल गया, तो मेरा घर तबाह हो जाएगा और शायद मैं मारा भी जाऊँगा— इसके अलावा, उन्हें जो भी जानकारी मिल सकती है, वो सब भी हाथ से निकल जाएगी। इससे बहुत से बदकिस्मत लोगों का अंत हो सकता है। इससे भारी तबाही मच सकती है।"

मेरे पेट में अजीब सी घबराहट होने लगी, विल्सन के रहस्य की गंभीरता अब स्पष्ट हो गई थी। और मुझे वह बूढ़ा पिशाच पसंद था। मैं उसे कभी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। "मैं समझता हूँ, विल्सन। मैं किसी को नहीं बताऊँगा।"

विल्सन मुझे लिविंग रूम में ले गया जहाँ गाय ढेर सारे शॉपिंग बैग और बक्से लेकर हमारा इंतजार कर रहा था। उसने उन्हें मेरे सामने ज़मीन पर रख दिया।

मैंने पूछा, "यह सब क्या है?"

"हाँ।" विल्सन ने अपना सिर एक तरफ झुकाया, मानो उसे कोई दिलचस्पी न हो। "यह सब क्या है?"

गाइ ने विल्सन को संदेह भरी निगाहों से देखा, फिर अपना ध्यान मेरी ओर मोड़ा। वह मुस्कुराया, जिससे मेरे पेट में गुदगुदी सी होने लगी। उसकी मुस्कान में कुछ अलग ही बात थी। क्या वह पहले से हल्की थी? या ज़्यादा खुश थी? मैं ठीक से बता नहीं सकती थी। लेकिन मुझे परवाह नहीं थी, उसकी निगाहों से मेरे पूरे शरीर में गर्माहट फैल रही थी।

"मैंने तुम्हारे लिए कुछ नए कपड़े खरीदे हैं।" वह आगे बढ़ा, अब हमारे शरीर एक-दूसरे के करीब आ गए थे। "मुझे लगा कि जब तुम दूसरों के साथ जाओगी तो तुम्हें कुछ अलग पहनने की इच्छा होगी।"

मेरा दिल खुशी से भर गया और चेहरे पर लाली छा गई। गाय मुझे हमेशा आश्चर्यचकित करता रहता था। उसके सख्त बाहरी रूप और गंभीर स्वभाव के पीछे एक संवेदनशील और दयालु आत्मा छिपी थी। मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। हालात वाकई बेहतर होते जा रहे थे।

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" मैंने गाय को गले लगा लिया और वो पहले तो थोड़ा झिझका, फिर धीरे से गले लग गया। उसका साथ बहुत अच्छा लग रहा था। इतना अच्छा कि मैं उसे छोड़ना ही नहीं चाहती थी। उसकी मज़बूत उंगलियों ने मेरी पीठ को थाम लिया और उसकी गर्म सांसें मेरे बालों को गुदगुदा रही थीं। लेकिन मैंने खुद को उससे अलग किया और ज़मीन पर बैठकर बैग और बक्से

उठाने लगी।
विल्सन आगे बढ़ा। "लीजिए, मैं आपकी मदद करता हूँ।"
"धन्यवाद," मैंने कहा जब विल्सन ने अपने हाथों में एक बक्सा उठाया।
“नहीं।” गाय ने विल्सन से डिब्बा ले लिया और मैंने उसे हैरानी भरी नज़रों से देखा। “मैं उसकी मदद कर सकता हूँ।”
मैं खड़ा हो गया और पीछे हट गया, दोनों आदमियों को ध्यान से देखने लगा; उनके बीच तनाव स्पष्ट रूप से महसूस हो रहा था। यह साफ था कि उनके व्यक्तित्व आपस में मेल नहीं खाते थे।
“यह मेरा घर है और अगर मैं उस युवती की चीज़ों में मदद करना चाहूँ, तो मुझे ऐसा करने का पूरा अधिकार है।” विल्सन ने गाय से बक्सा छीन लिया।
कुछ देर के तनावपूर्ण क्षण के बाद, गाय ने विल्सन से पैकेज वापस छीन लिया और मुझे इस बेतुकेपन पर लगभग हंसी आ गई। लेकिन गाय ने भौंहें चढ़ा लीं, जाहिर तौर पर विल्सन के मुझ पर ध्यान देने से वह ईर्ष्या कर रहा था।
"आपको तो चेंजिंग रूम वाली महिला की घूरती निगाहों के बीच महिलाओं के अंडरवियर खंगालने की ज़रूरत नहीं पड़ी थी। मैं उसकी मदद कर दूंगी।"
दोनों व्यक्ति आमने-सामने खड़े थे, उनकी मुद्राएं अकड़ी हुई थीं और चेहरे पर आक्रोश के भाव थे। मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं और उस दृश्य को देखा जो स्कूल में दोस्तों के साथ होने वाली बिना पलक झपकाए देखने की प्रतियोगिता जैसा लग रहा था, लेकिन यह उससे भी कहीं ज़्यादा हास्यास्पद था। वे आदमी अपने व्यवहार में इतने क्रूर और शिकारी जैसे थे कि मानो जंगल के राजा बनने के लिए लड़ रहे दो शेर हों। तनाव से मेरी मांसपेशियां अकड़ गईं और मेरे अंदर गुस्सा उबलने लगा। और इससे पहले कि मुझे पता चलता, गुस्से में मेरे दांत बाहर निकल आए।
"सच में? क्या हम ये बहस बंद कर सकते हैं?"
विल्सन और गाय मुझे हैरानी से घूर रहे थे और मैंने कमर पर हाथ रखकर पैर पटकना शुरू कर दिया। मैंने उन्हें घूरकर देखा, मानो कह रही हो कि तुम्हें बेहतर पता होना चाहिए, लेकिन मुझे यकीन है कि मेरे गुस्से भरे चेहरे को देखकर शायद थोड़ा मज़ा भी आ रहा था। पर मुझे परवाह नहीं थी। मैं चुपचाप खड़े होकर इस लंबे समय से चले आ रहे झगड़े को जारी नहीं देख सकती थी। यह बेवकूफी थी।
“तुम दोनों के बीच ऐसा क्या हुआ कि इतनी अनबन हो गई? एक मिनट रुको, हाँ, सही कहा। किसी ने भी मुझे बताने की कृपा नहीं की। लेकिन जितना मैं समझ पा रहा हूँ, तुम दोनों को इसे भूल जाना चाहिए। अगर मुझे कुछ पता न होता, तो मुझे लगता कि दो स्कूली लड़के किसी लोकप्रिय लड़की का ध्यान खींचने के लिए लड़ रहे हैं। ये सब बेवकूफी है। तुम दोनों को देखो।” मैंने उनके इस बचकाने व्यवहार पर घृणा से इशारा किया। “यार, तुम एक बड़े आदमी हो, और वो भी कैप्टन। और विल्सन। क्या तुम... जैसे... जैसे दो सौ साल के हो?”
दोनों व्यक्ति शर्म से मुंह फेरने लगे।
“और मैंने जो सुना है, उसके हिसाब से मैं तुम दोनों की अभी-अभी पिटाई कर सकती हूँ, क्योंकि तुम इतने बेवकूफ हो। मुझे लगता है मैं दो बक्से संभाल सकती हूँ।” मैं नीचे झुकी, पार्सलों को बाहों में भर लिया और उन्हें लेकर खड़ी हो गई। मैं गलियारे में आगे बढ़ने लगी, और उन आदमियों की हैरान निगाहें मेरा पीछा कर रही थीं।
“अब मैं इन्हें अपने कमरे में रखूंगा और फिर मैं अपना प्रशिक्षण शुरू करना चाहूंगा, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो? हमारे पास सिर्फ तीन रातें और बची हैं।”
गलियारे से नीचे जाते हुए मैंने मन ही मन मुस्कुराया। किसने कहा था कि अठारह साल की नवजात

पिशाचनी दो ताकतवर मर्दों को सबक नहीं सिखा सकती?

छब्बीस: रूबी

"धत् तेरे की!" मैंने निराशा से दांत पीसते हुए कहा, मेरे दोनों हाथों में टूटे हुए चम्मच के दो-दो टुकड़े थे। मैं लगभग दो घंटे से चम्मच मोड़ने की कोशिश कर रहा था और बार-बार उन्हें तोड़ रहा था।
“ध्यान केंद्रित करो।” विल्सन लंबी डाइनिंग टेबल पर मेरे सामने बैठे थे, उनके हाथ सामने की ओर जुड़े हुए थे। “या फिर ध्यान केंद्रित न करो। अपनी शक्ति को कमजोर होने दो। खुद को आराम करने दो। ज्यादा मत सोचो। याद है मैंने तुम्हें कैसे सिखाया था?”
मेंने सिर हिलाया।
उन्होंने मुझे एक और चांदी का चम्मच दिया। “अच्छा। अब इसे मोड़ने की कोशिश करो। ध्यान से।”
मैंने गहरी साँस ली और चम्मच को दोनों हाथों में थाम लिया, मुट्ठियाँ अगल-बगल कसकर पकड़ लीं। मैंने आँखें बंद कर लीं और अपने विचारों में खो गया। मैंने अपने सारे विचारों को एक जगह इकट्ठा किया, उन्हें कसकर बांधे रखने पर ध्यान केंद्रित किया। मैंने विचारों को ऐसे गायब होने दिया जैसे चिड़ियों का झुंड पेड़ से बिखर जाता है। मैंने अपने हाथों को नीचे किया, कोशिश कर रहा था कि सामने के काम के बारे में न सोचूँ, लेकिन चम्मच फिर भी टूट गया और मैंने धातु के टुकड़े मेज पर गिरा दिए, झुंझलाहट भरी साँस छोड़ते हुए।
"यह बेहद मुश्किल है।"
“नहीं,” विल्सन ने चुनौती भरे लहजे में जवाब दिया। “तुम बस बहुत ताकतवर हो। इसके लिए और अभ्यास की जरूरत होगी।”
मैंने देखा कि गाइ भोजन कक्ष के प्रवेश द्वार पर खड़ा था, सोच में डूबा हुआ अपने काले बालों में उंगलियाँ फेर रहा था। मेरा पेट तुरंत गर्म हो गया और दिल ज़ोर से धड़कने लगा। यह बहुत अजीब था, जिस तरह से वह मुझे महसूस कराता था। मुझे यकीन नहीं था कि यह मेरी नई बढ़ी हुई वैम्पायर इंद्रियों का असर था या बस उसके द्वारा मुझ पर किए गए प्रभाव का, लेकिन कुछ तो था जो मेरे पैरों को गीले अनाज की तरह नरम बना रहा था। और अब, जब से वह मेरे लिए नए कपड़े लेकर लौटा था, मुझे उसमें भी यही महसूस होने लगा था। उसने अपना सख्त रवैया छोड़ दिया था और किसी तरह नरम, दयालु हो गया था। शहर की यात्रा पर क्या हुआ था? जो भी हुआ हो, उसने उसे बदल दिया था। गाइ आखिरकार खुद बन गया था और मुझे यह अच्छा लगा। वह मुस्कुराया और चला गया, मेरा शरीर एक तीव्र लालसा से जल रहा था।
विल्सन निर्देश देते रहे, लेकिन मुझे उनकी बातें सुनाई नहीं दे रही थीं। मैं घंटों से अथक परिश्रम कर रही थी, और मेरा ध्यान कहीं और था। मैं गाय और उसके निस्वार्थ भाव से मुझे सहारा देने के बारे में सोच रही थी। मैं सोच रही थी कि कैसे उसने मेरे पुराने घर के सामने मुझे गोद में उठाया और मुझे अपनी छाती पर सिर रखकर रोने दिया। मैं सोच रही थी कि आखिर उसे ऐसा करने की प्रेरणा कहाँ से मिली। मैं सोच रही थी कि आखिर उसने मुझ जैसे इंसान की जान क्यों बचाई। मुझे पता था कि इसका एक कारण वह प्यार था जिसे उसने खो दिया था, लेकिन कुछ और भी था। कुछ गहरा जो वह मुझसे छुपा रहा था।
“रूबी? क्या तुम सुन रही हो?” मैं अपनी तल्लीनता से बाहर निकली और विल्सन की ओर देखा। उसने सवालिया अंदाज़ में अपना सिर एक तरफ झुकाया।

"हं?" मैंने फिर पलकें झपकाईं। "ओह, हाँ। माफ़ कीजिए। आप मन की शक्ति के बारे में कुछ कह रहे थे?"
विल्सन का चेहरा नरम पड़ गया। "चलिए थोड़ी देर आराम करते हैं, ठीक है?" वह खड़ा हुआ और फ्रिज की ओर गया, जहाँ से उसने खून का एक पैकेट निकाला। "क्या गाय ने तुमसे बॉन्डिंग के बारे में बात की है?"
मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। "नहीं।"
विल्सन ने आह भरी और खून को एक लंबे, प्राचीन प्याले में डाला। वह मेज पर बैठ गया और अजीब तरह से अपने हाथों को आपस में जोड़ लिया। मुझे इस विषय पर उसकी बेचैनी का एहसास हुआ। "मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि हम अभी यौन शिक्षा के बारे में बात करने वाले हैं?"
वह हँसा, उसके पीले गाल लाल हो गए। मुझे ऐसा लग रहा था कि यह बातचीत उतनी ही असहज होने वाली है जितनी गर्मी के मौसम में शॉर्ट्स पहनकर चिलचिलाती चमड़े की सीटों पर बैठना। विल्सन ने बोलने से पहले गहरी साँस ली।
"बंधन दो सहमति प्राप्त पिशाचों के बीच किया जाने वाला एक ऐसा कार्य है, जिसमें वे अनंत काल तक एक-दूसरे के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं। या अपनी स्थायी मृत्यु तक।"
मैं बेचैनी से अपनी सीट पर हिलने-डुलने लगा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह बात मुझसे कैसे जुड़ी है—खासकर अभी। मैं अभी-अभी पिशाच बना था और मेरा इरादा किसी दूसरे खून चूसने वाले प्राणी के साथ हमेशा के लिए रहने का नहीं था।
"एक बार जब आप दोनों के बीच बंधन स्थापित हो जाता है," विल्सन ने गंभीर स्वर में कहा, "तो इसे कोई तोड़ नहीं सकता। आप हमेशा अपने साथी के प्रति सचेत रहेंगे और वह आपके प्रति, चाहे दूरी कितनी भी हो। आप एक-दूसरे की खुशियों और यहां तक कि उनके दर्द को भी महसूस करेंगे। यह एक गंभीर रिश्ता है। इतिहास में, ऐसा केवल पिशाचों के बीच ही होता था। किसी पिशाच द्वारा किसी इंसान के साथ बंधन स्थापित करना गलत माना जाता था। और अगर कभी ऐसा हो भी जाता और दोनों साथियों का भेद खुल जाता, तो पिशाच—इंसान के साथ—को पकड़कर मार दिया जाता था।"
और जैसे अंधेरे में कोई रोशनी टिमटिमाती है, मुझे समझ आ गया कि विल्सन ने ऐसा क्या किया था जिसके कारण उसके साथी पिशाचों ने उसे बहिष्कृत कर दिया था।
"रुको— विल्सन।" मैं खुद पर काबू न रख पाई और हांफने लगी। "तुम्हें एक इंसान से प्यार हो गया?"
उसने मुझे भावहीन निगाहों से देखा और एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं गलत थी। लेकिन अंत में उसने सिर हिलाया, उसके माथे पर उदासी छाई हुई थी। मुझे उस बूढ़े पिशाच पर तरस आया। दो ऐसे लोग जो एक-दूसरे से इतना प्यार करते थे, उनका इतनी बेरहमी से अलग होना कितना भयानक था!
"क्या हुआ?" मैंने अपनी गोद की तरफ देखा। आखिरकार मैंने वो स्ट्रेच पैंट और टैंक टॉप उतार दिए थे जो मैं कई दिनों से पहने हुए थी। अब मैंने आरामदायक जींस और टी-शर्ट पहनी हुई थी जो गाय ने मेरे लिए खरीदी थी। मैं अपनी शर्ट के किनारे से खेलने लगी और विल्सन को खाली जगह में घूरते हुए देखा। "तुम दोनों के बीच कोई रिश्ता बन गया था?" मैंने पूछा।
विल्सन ने हाथ बढ़ाकर अपनी बोलो टाई को ठीक किया, जिसकी रस्सियाँ उसकी पतली छाती के सामने झूल रही थीं। "हाँ। वह... मेरे जीवन का प्यार थी। मैंने अपनी भावनाओं को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन यह नामुमकिन था। नतीजतन, मैं उससे जुड़ गया।"
एक पल के लिए मुझे लगा कि उसकी आँखों में आंसू आ गए हैं, लेकिन विल्सन ने नज़रें फेर लीं।

“एकतरफा प्यार सबसे दर्दनाक स्थितियों में से एक है। यह ऐसा है जैसे आप किसी से अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करते हैं और बदले में आपको वह प्यार नहीं मिलता। यह सबसे अकेलापन और निराशा का एहसास है। इसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।”
“विल्सन, वो तुमसे घुलमिल क्यों नहीं पाई? क्या हुआ था?”
“उसके भागने से पहले ही हम पर हमला हो गया। मैं तो बच निकला लेकिन उसे पकड़ लिया गया।”
हे भगवान! मुझे बहुत खेद है।
“जब वे उसे यातना दे रहे थे, मैं उसे महसूस कर सकता था,” उसने आगे कहा। “मैंने उसकी पीड़ा को महसूस किया। लेकिन वह मेरी भेजी हुई ताकत को महसूस नहीं कर पा रही थी। वह मुझे वैसे महसूस नहीं कर पा रही थी जैसे मैं उसे महसूस कर रहा था। मैं उसे यह संकेत नहीं दे सका कि वह मेरे आने और बचाव करने का इंतज़ार करे। मेरे पहुँचने से पहले ही उसने हार मान ली और अंत में उसने अपनी जान दे दी। जो हुआ उसके लिए मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा। मैंने उसकी जान ले ली और अगर मैं उससे भावनात्मक रूप से जुड़ा न होता तो ऐसा कभी नहीं होता। मैंने उसे एक खतरनाक स्थिति में डाल दिया। यह मेरी अपनी गलती थी।”
विल्सन ने एक बेजान हंसी हंसी और हाथ हिलाकर मानो उस याद को मिटाने की कोशिश की। जब वह मुझे देख रहा था, मैंने खून का एक घूंट पिया।
मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ, क्योंकि आपको किसी इंसान से बंधने के परिणामों के बारे में पता होना चाहिए। यह नियमों के खिलाफ है।
तभी अचानक मुझे समझ आया और मुझे एहसास हुआ कि वह क्या इशारा कर रहा था। मैं लगभग अपने पेय में फंस ही गया।
“गाइ और मैं? तुम्हें लगता है कि हमारे बीच कोई गहरी दोस्ती हो गई है?” मैं असहज होकर हँसी।
“बिल्कुल नहीं। मैं उसे कुछ ही दिनों से जानती हूँ। और मुझे पूरा यकीन है कि हमने ऐसा कुछ नहीं किया है।”
विल्सन ने संदेह भरी नज़रों से अपनी भौंहें उठाईं। "क्या आप निश्चित हैं?"
मैंने उसकी तरफ देखा लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। मुझे बंधन के बारे में कुछ भी नहीं पता था और मुझे ठीक से यह भी नहीं पता था कि इसमें क्या-क्या शामिल होता है।
उन्होंने आगे कहा, "मैं इसलिए पूछ रहा हूं क्योंकि मुझे आपके और गाय के बीच कुछ होने का आभास हो रहा है।"
मैंने मेज की ओर देखा और लकड़ी पर अपना गिलास घुमाया। खैर, वह गलत नहीं था। हम दोनों ने साथ में बहुत कुछ झेला था और मुझे लगा कि एक जैसी स्थिति में फंसे दो लोगों के बीच किसी न किसी तरह का जुड़ाव तो होता ही है। मैंने इस बात को नजरअंदाज कर दिया कि मेरे मन में गाय के लिए भावनाएं पनप रही थीं। वे भावनाएं निराधार थीं और दुख की बात है कि उनका कोई भविष्य नहीं था। मैंने कंधे उचका दिए।
“उन्होंने मेरी जान बचाई, और मैंने उनकी। शायद इसी का आपके इस अहसास से कुछ संबंध हो।”
विल्सन ने अपने हाथ आपस में जोड़ लिए लेकिन वह आश्वस्त नहीं लग रहा था। "शायद।"
“विल्सन?” मैंने पूछा।
"हाँ?"
“किसी से रिश्ता कैसे बनता है? मतलब, ऐसा कैसे होता है?” मैंने कभी इसकी योजना नहीं बनाई थी। बस मुझे लगा कि अगर मुझे पिशाचों के समुदाय के बीच रहना है, तो शायद मुझे यह जानना ज़रूरी होगा।

“अच्छा,” विल्सन ने अपनी कुर्सी मेज से पीछे खींची और खड़ा हो गया। वह रसोई की खिड़की के पास गया और बाहर देखने लगा। “असल में, बंधन का मतलब है एक पिशाच से दूसरे पिशाच को खून का आदान-प्रदान। और दुर्लभ मामलों में, एक इंसान को भी।”

मैंने भौंहें चढ़ाईं और अपनी गोद की ओर देखा। "लेकिन फिर, अगर कोई पिशाच किसी इंसान का खून पीता है, तो क्या वह उससे जुड़ नहीं जाएगा?" मुझे फिर से एक बच्चे जैसा महसूस हुआ, जो अपने आसपास की नई दुनिया के बारे में लगातार सवाल पूछता रहता है। लेकिन विल्सन दयालु था और उसने हर सवाल का ध्यान से जवाब दिया।

विल्सन ने होंठ सिकोड़कर एक गहरी साँस ली, मानो वह जानकारी के लिए अपना दिमाग खपा रहा हो। “नहीं। यह उससे कहीं ज़्यादा जटिल है। एक पिशाच पोषण के लिए मनुष्य का खून पीता है। सैद्धांतिक रूप से, वहाँ कोई लगाव नहीं होता। इसलिए, कोई बंधन नहीं बनता। बंधन एक भावनात्मक जुड़ाव है जो शारीरिक जुड़ाव के साथ जुड़ा होता है। और यह एक सचेत निर्णय होता है। यह सिर्फ़ किसी और का खून पीने से नहीं हो जाता। अगर ऐसा होता, तो मुझे अपनी बकरियों से बेवजह लगाव हो जाता।”

विल्सन और उसकी बकरी के साथ एक अजीबोगरीब कैंडललाइट डिनर की कल्पना करके मैं जोर से हंस पड़ा।

"क्या हम विल्सन के बकरियों के प्रति प्रेम के बारे में बात कर रहे हैं?"

मैं बातचीत में इतना मग्न था कि मुझे पता ही नहीं चला कि गाय हमारे पीछे दरवाजे पर खड़ा है। उसकी गहरी आवाज़ सुनकर मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई और मैं एकदम से घूम गया, मेरा जबड़ा लगभग ज़मीन पर जा गिरा।

वह दरवाजे के फ्रेम से टिककर खड़ा था, हाथ ढीली जींस की जेबों में डाले हुए। वह हमेशा से ही आकर्षक था, मुझे गलत मत समझिए, लेकिन अब वह बस... सेक्सी लग रहा था। उसने वह पुरानी वर्दी नहीं पहनी थी जो मुझसे मिलने के बाद से वह पहने रहता था, बल्कि उसने एक टाइट सफेद टी-शर्ट और जींस पहनी थी। उसके भूरे बाल गीले थे, जैसे अभी-अभी धुले हों, और उसका चेहरा एकदम साफ शेव किया हुआ था, जिससे उसकी मासूम सी मुस्कान झलक रही थी। गाइ मुझे हमेशा से ही एक परिपक्व इंसान लगता था, इतना सख्त और नियंत्रणशील। लेकिन असल में, वह जवान था, मुझसे बस कुछ ही साल बड़ा। और उस पल उसकी जवानी साफ झलक रही थी।

विल्सन ने गाय की ओर होंठ सिकोड़कर, एक बनावटी आधी मुस्कान दी।

“क्या मैं किसी महत्वपूर्ण पाठ में बाधा डाल रहा हूँ?” गाय ने पूछा।

विल्सन ने बोलना शुरू किया, लेकिन इससे पहले कि वह एक शब्द भी कह पाता, मैं बीच में ही बोल पड़ा।

“नहीं। हम बस बातें कर रहे थे।” मैं अपनी कुर्सी से उठा और दोनों पुरुषों के बीच अपनी नज़रें घुमाईं।

गाय ने बूढ़े पिशाच की ओर देखा और मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, "विल्सन, क्या मैं आपकी छात्रा को थोड़ी देर के लिए अपने साथ ले जा सकता हूँ? ऐसा लगता है कि उसे आराम की ज़रूरत है।"

मुझे राहत मिली और मैंने मुस्कुराते हुए उत्साह से सिर हिलाया। मुझे इस घर से, अपनी ट्रेनिंग से, और विल्सन से थोड़ा आराम चाहिए था।

विल्सन ने मुंह बनाया, लेकिन यह उनके सामान्य चेहरे के भाव से कुछ खास अलग नहीं था। उन्होंने अपनी टाई ठीक की लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

मैंने अपना निचला होंठ बाहर निकालकर मुंह बनाया और आंखों से विल्सन से विनती की। "प्लीज़?

हम घंटों से यही कर रहे हैं। बस थोड़ी देर का ब्रेक ले लो?"
विल्सन ने कुछ देर तक गाय को गौर से देखा, फिर अपनी नजरें नीचे कर लीं। उसने आह भरी। "ठीक है।"
मैं खुशी से खिलखिला उठी। जिस रात मैं बदली थी, तब से सब कुछ भागदौड़ भरा ही था। बस काम ही काम। भागने और छिपने के अलावा किसी और चीज़ के लिए समय ही नहीं था। बस ज़िंदा रहना था। आख़िरकार मैं अभी भी किशोरी ही थी और मुझे थोड़ी मस्ती की ज़रूरत थी।
गाइ को हैरानी हुई जब मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे रसोई से खींचकर सामने के दरवाजे की ओर ले गई। लेकिन विल्सन ने हमारे पीछे से चिल्लाकर कहा, "एक घंटा!"
“ठीक है, विल्सन,” मैंने जवाब दिया। गाय ने सामने का दरवाजा खोला और रात की ठंडी और ताज़ी हवा अंदर आ गई।
“तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो?” मैंने उसकी उंगलियों में अपनी उंगलियाँ फंसाते हुए पूछा। हमारी हथेलियों के स्पर्श से एक गर्म लहर दौड़कर सीधे मेरे दिल तक पहुँच गई।
गाइ ने हमारे पीछे दरवाजा बंद किया और सामने की पर्वत श्रृंखला की ओर मुड़ गया। उसने शरारती मुस्कान के साथ मेरी ओर मुड़कर कहा, "देखते हैं क्या होता है।"

सत्ताईस: लड़का

लिली की समाधि पर जाने के बाद से, दुनिया को देखने का मेरा नज़रिया पूरी तरह बदल गया। मेरा मन हल्का और बेफिक्र हो गया, और जिन चीज़ों को मैं पहले बहुत अहमियत देता था, वे अब उतनी ज़रूरी नहीं लग रही थीं। शायद पहले मैं सब कुछ गलत समझ रहा था, यह नहीं समझ पा रहा था कि बदला लेने की भावना को दिल में इतना गहरा संजोकर रखने के लिए ज़िंदगी बहुत छोटी है, हर पल को संजोए बिना गुज़रने देने के लिए बहुत छोटी है। लिली की मौत एक भारी बोझ थी जिसे मैं बहुत लंबे समय से ढो रहा था। अब इसे छोड़ने का समय आ गया था।

और मैंने वही किया, जाने दिया।

मुझे अंततः मुख्यालय लौटकर अपने साथियों और अपने द्वारा सावधानीपूर्वक गढ़ी गई ज़िंदगी का सामना करना होगा, और एक बड़ा फैसला लेना होगा। मुझे पीछे हटकर अपने जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण करना होगा, यह देखना होगा कि मैंने पहले जो निर्णय लिए थे, क्या वे वास्तव में मेरी इच्छा के अनुरूप थे।

लेकिन अभी के लिए, मैं एक मिनट भी बर्बाद नहीं करना चाहता था, मैं रूबी को एक ऐसा उपहार देना चाहता था जो कोई और नहीं दे सकता था - एक रात की आज़ादी, इससे पहले कि उसे उसके होने वाले परिवार, उसके नए जादूगरों के समूह को सौंप दिया जाए, जहाँ वह अनंत काल बिताएगी।

"मुझे लगता है हम आइसक्रीम खाने नहीं जा रहे हैं।" रूबी ट्रक में मेरे बगल में बैठी थी, उसके हाथ उसकी गोद में मुड़े हुए थे। मैंने विल्सन के सामने कच्ची सड़क से गाड़ी निकाली, टायरों से धूल उड़ रही थी। मैंने रूबी से सड़क की ओर देखा, मेरे चेहरे पर आई बनावटी मुस्कान को मैं रोक नहीं पा रहा था, उसकी खूबसूरती से मेरी नज़रें हट ही नहीं रही थीं। "नहीं। आइसक्रीम नहीं।"

शहर में थोड़ी देर गाड़ी चलाने के बाद, हम टक्सन शहर के बीचोंबीच स्थित तारामंडल के सामने रुके। रूबी ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराते हुए कहा, मानो उसे कुछ समझ आ गया हो। मैं उसे जल्दी से अंदर ले गया, रात के आखिरी शो के लिए और हम अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। थिएटर में हम दोनों के अलावा कोई नहीं था।

हॉल की बत्तियाँ मंद पड़ गईं और गुंबद से पियानो की मधुर धुनें गूंजने लगीं। मैंने अपनी गर्दन पीछे की ओर झुकाई और अपनी नज़र ऊपर लगे गोल पर्दे पर डाली, रूबी ने भी मेरी ही तरह प्रतिक्रिया दी।

"आपके इस प्रयास की मैं सराहना करती हूँ," उसने विनम्रता दिखाने की कोशिश करते हुए कहा। "लेकिन आपको पता है कि मैं एक पिशाच हूँ, और मुझे तारों को निहारने के अवसरों की कोई कमी नहीं होगी? मुझे लगता है कि जीवन भर मैं केवल तारे ही देख पाऊँगी।" उसकी आवाज़ में छिपी व्यंग्यात्मकता को मैं समझ ही गई थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसे अपने घुटने पर रख दिया, उसकी ऊर्जा मुझमें समा गई। "मैं तुम्हें तारे दिखाने नहीं लाया।" मैंने उसे मुस्कुराते हुए कहा। "मैं तुम्हें सूर्योदय दिखाने लाया हूँ।"

कमरा अंधेरा हो गया; संगीत की मधुर ध्वनि ने हमें घेर लिया, और हमारे पैरों की उंगलियों तक कंपन पैदा कर दी।

मैंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, "आज रात को अपनी आज़ादी समझो। जब तुम आखिरकार जादूगरनियों के समूह में शामिल हो जाओगी, तो तुम्हारी ज़िंदगी बदल जाएगी। तुम्हें उनके नियमों के अनुसार जीना होगा। मैं यह नहीं कह रही कि तुम्हें इसकी आदत नहीं पड़ेगी और तुम इसका आनंद नहीं लोगी, मैं बस इतना कह रही हूँ कि जब तक हो सके अपनी आज़ादी का पूरा फ़ायदा उठाओ।"

उसने सिर घुमाकर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "धन्यवाद।"

तारे टिमटिमाते हुए प्रकट हुए और हमारे चारों ओर अंतरिक्ष का एक जगमगाता गोला बन गया। हम हवा में लटके हुए थे, आकाशगंगा में उड़ रहे थे। रूबी इस खूबसूरत नज़ारे को देखकर खुशी से खिलखिला उठी।

अपने रिश्ते के ज़रिए मैंने उसकी उमंग और मासूमियत को महसूस किया। वह अभी अठारह साल की ही हुई थी और उसके सामने पूरी ज़िंदगी पड़ी थी, भले ही वो ज़िंदगी पारंपरिक न हो। वो मुझसे बिलकुल अलग थी। जहाँ वो मासूम और भोली थी, एक सामान्य किशोर जीवन के आराम में जी रही थी, वहीं मुझे बहुत जल्दी बड़ा होना पड़ा। उसे अभी बहुत कुछ सीखना और देखना बाकी था और मैं उसके लिए दुनिया की सारी खुशियाँ चाहती थी।

रूबी अपनी सीट पर थोड़ी हिली, उसके बालों से वेनिला की खुशबू आ रही थी। उसके हाथ की त्वचा मेरी त्वचा से छू गई, चिकनी और उम्र से परे।

हम दोनों ही थे, आसमान में समाते हुए, बस चमकते हुए ग्रह और हम दोनों। मैंने अपनी वैम्पायर, फेथ की ओर देखा, स्क्रीन के अंधेरे और उजाले में उसका चेहरा झिलमिला रहा था, उसकी पलकें धीरे-धीरे झपक रही थीं, उसके भरे-भरे गालों पर पड़ रही थीं। मेरा दिल खुशी से झूम उठा जब उसके होंठों पर मुस्कान आई और उसकी बैंगनी आँखें तारों की तरह चमक उठीं, मेरा शरीर उसकी नज़दीकी से उत्तेजित हो गया। मेरी त्वचा लाल हो गई, मेरा खून गर्म हो गया, और मैं उस पल में हमेशा के लिए रहना चाहता था, उसके बारे में सब कुछ, हर वो एहसास जो उसने मुझे दिया। मैं इस बात पर गौर किए बिना नहीं रह सका कि उसकी पवित्रता और मिठास उसके बदले हुए रूप से कितनी अलग थी, मासूमियत और उग्रता का एक आदर्श संतुलन। वह बेदाग थी।

स्क्रीन पर चंद्रमा का दृश्य दिखाई देने लगा, और पृथ्वी हरे और नीले रंग के गोले के रूप में हमारे ऊपर उभरती हुई नज़र आई। फिर पृथ्वी गायब हो गई और सूर्योदय शुरू हो गया।

रूबी हांफ उठी। अंतरिक्ष के अंधकार में पीले प्रकाश का विशाल गोला उठा, इतनी दूरी से छोटा सा, लेकिन चांद पर हमारी छोटी सी जगह से कितना चमकीला दिख रहा था। उसने मेरा हाथ दबाया और उसके स्पर्श से मेरी रीढ़ में सिहरन दौड़ गई। मेरा ध्यान बार-बार उससे, छत से, आकाश से भटक रहा था। जैसे ही सूरज ऊपर चढ़ा, उसकी आंखें चौड़ी हो गईं, तारे उसके चारों ओर एक चक्रवात की तरह घूम रहे थे, चमक रहे थे और टिमटिमा रहे थे।

वह हँसी, हमारी निगाहें मिलीं और मेरी नज़रें उसके होठों पर टिक गईं। मैं उसे चूमना चाहता था। मैं उसे वैसे ही चूमना चाहता था जैसे मैंने दवा की दुकान पर चूमा था, लेकिन फिर मुझे याद आया कि मैंने तब ऐसा सिर्फ़ उसके नुकीले दांतों को छिपाने और खुद को बचाने के लिए किया था। लेकिन शायद यह हम दोनों की जान बचाने के लिए उठाया गया एक अचानक कदम मात्र नहीं था? उसके होठों का मेरे होठों से स्पर्श मुझे एक अजीब और गर्म, सुखद एहसास दे गया था, लेकिन मैंने उस एहसास को आते ही तुरंत भुला दिया था।

लेकिन अब, मुझे पता था कि अगर मैंने उसे चूमा, तो मैं कभी रुक नहीं पाऊंगा। वह मुझे अपनी मासूमियत में इस कदर खींच लेगी कि मैं कभी बाहर नहीं निकल पाऊंगा। मैं उसके साथ ऐसा नहीं कर सकता था और न ही अपने साथ। मैं उसका भला चाहता था, और हालांकि मेरी इच्छा थी कि मैं

ही उसके जीवन को बेहतर बनाऊं, पर ऐसा नहीं हो सकता था। मेरा दिल बैठ गया। उसका प्रशिक्षण समाप्त होने वाला था और ये उसके साथ बिताए मेरे आखिरी पलों में से एक होंगे। और कुछ ही दिनों में, ऐसा लगेगा जैसे हम कभी मिले ही नहीं थे, हम अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे।

"धन्यवाद," उसने धीमी आवाज़ में कहा और मुँह फेरकर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी। मैं उसे बताना चाहती थी कि ये कोई बड़ी बात नहीं है। मैं कहना चाहती थी कि मैं ये किसी के लिए भी कर देती। लेकिन मैं कह नहीं सकी, मेरा मुँह सूख गया था और दिल भर आया था।

हालांकि हमारा समय लगभग समाप्त हो चुका था, मैं उस पल को हमेशा याद रखूंगा। उसकी मुस्कान, उसकी हंसी, उसका आश्चर्य। जिस तरह उसने मुझे बदला और मुझे एक बेहतर इंसान बनाया, वह सब मुझे याद रहेगा। मैं अपनी वैम्पायर फेथ को हमेशा याद रखूंगा। मेरी रूबी को।

पीली रोशनी की चमक ने विल्सन के भूरे बालों को और भी खूबसूरत बना दिया, जिससे उनमें एक लालिमा छा गई। उसके होंठ हिल रहे थे, लेकिन मुझे एक शब्द भी सुनाई नहीं दिया, मानो मैं कोई मूक फिल्म देख रहा हूँ, मैं कहीं और खोया हुआ था।

लड़का।

उसके ख्याल मात्र से ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए और शरीर में गर्मी की लहर दौड़ गई। उस रात वह मुझे तारामंडल और सूर्योदय दिखाने तारामंडल ले गया था और जब मैं उससे पहली बार मिली थी तब वह इतना कठोर स्वभाव का था, लेकिन अब वह आश्चर्यजनक रूप से विचारशील लग रहा था। फिर भी, जब उसके बारे में ये कोमल, गर्म विचार मेरे मन में उठे, तो उनके साथ एक अंधेरा भी छा गया— मेरा भविष्य। गाय के बिना भविष्य पानी के बिना मछली जैसा था—निरर्थक। बस कुछ ही दिनों में, मैं किसी अलौकिक शहर में बिल्कुल अकेली हो जाऊंगी जहाँ मुझे सब कुछ फिर से सीखना होगा और पिशाचों और भेड़ियों के बीच रहकर उनके नियमों का पालन करना होगा। यह सोचकर ही मैं कांप उठी।

और हाँ, जैसा कि गाय ने मुझसे कहा था, यह मेरे जीवन का एक नया मौका था, एक नई शुरुआत। लेकिन मुझे अभी पूरी तरह से नए सिरे से शुरुआत करने का मन नहीं था। मैं अपने पुराने फार्महाउस में अपने दो सौ साल पुराने शिक्षक और अपने कैप्टन स्टोन के साथ काफी संतुष्ट था।

“रूबी। ध्यान लगाओ।” विल्सन की आवाज़ ने मुझे मेरी तंद्रा से जगा दिया और मैंने अपना सिर हिलाया, पलकें झपकाते हुए अपने गुरु का चेहरा फिर से देखने लगी। “मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे महसूस करने की कोशिश करो। मेरी भावनाओं और मेरे मिजाज को।” हम फिर से उसी पुराने तरीके पर लौट आए। वही पुराना वैम्पायर प्रशिक्षण।

गाइ और मेरी जल्द शुरू होने वाली नई ज़िंदगी के ख्याल गायब हो गए, और मेरे सामने एकाग्रता का कठिन काम आ गया। मैंने वही किया जो विल्सन ने मुझे सिखाया था, और अपने सारे विचारों और भावनाओं को एक छोटे से डिब्बे में बंद कर दिया। फिर मैंने उस डिब्बे को छोड़ दिया, मानो वह हवा में गायब हो गया हो, और मेरा दिमाग बिल्कुल खाली हो गया। मैंने विल्सन पर ध्यान केंद्रित किया और उसकी भावनाओं को समझने की कोशिश की, उसके मिजाज को महसूस करने की कोशिश की। लेकिन कुछ भी नहीं था। मैंने गहरी सांस ली और निराशा में अपने कंधे झुका लिए।

“सुनो, रूबी,” विल्सन ने सोचते हुए अपनी ठुड्डी सहलाते हुए कहा। “यह उतना मुश्किल नहीं है जितना लगता है। पिशाचों के पास एक तरह की छठी इंद्री होती है; दूसरों के मिजाज और भावनाओं को भांपने की क्षमता। शिकार करते समय और उनके डर को भांपते समय यह बहुत काम आती है। यह एक तरह का बंधन है, लेकिन बहुत कम समय के लिए।”

मैंने अपना संतुलन बदला और अपनी बाहों को अपनी छाती के चारों ओर लपेट लिया। मुझे ऐसा क्यों करना पड़ रहा था? इंसानी खून से मुझे इतनी नफरत है, वैसे तो मैं जल्द ही उनका पीछा करने वाला नहीं था। हिचकिचाहट में मैंने अपने नाखूनों को अपनी बाहों में गड़ा दिया। "मैं समझती हूँ, विल्सन। बस... मुझे... कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है।"

विल्सन मुड़ा और मेरे सामने सीधी रेखा में आगे-पीछे चलने लगा। उसने अपनी नारंगी रंग की

कमीज़ के बटन खोले और आस्तीनें मोड़ लीं ताकि वह आराम से रह सके। उसने अपनी बोलो टाई कमीज़ के नीचे दबा ली और मेरे सामने रुक गया। दूर कहीं से एक मेंढक की आवाज़ आई।
“मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या आपने अपने रूप बदलने के बाद से कभी कुछ महसूस नहीं किया? किसी और से भावनाओं या संवेदनाओं का जरा सा भी आभास?”
मैं सोच में डूबी हुई अपने होंठ चबा रही थी और हाथों को आपस में रगड़ रही थी। यह ट्रेनिंग मेरे अनुमान से कहीं ज़्यादा कठिन थी। "मुझे नहीं पता।"
विल्सन ने मेरी ओर देखा। “गहन सोचो। यह स्वाभाविक रूप से होता है। कम से कम एक बार तो तुमने कुछ महसूस किया होगा। डर? दर्द? उदासी?”
“हम्म।” मैंने विल्सन की बात समझने की बहुत कोशिश की। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था, लेकिन फिर अचानक मुझे याद आया और मैंने चुटकी बजाई। “दरअसल, मुझे लगता है कि शायद मैंने ऐसा महसूस किया था। जब गाय ने मुझे पहली बार देखा था, तब मुझे उसके चेहरे पर डर महसूस हुआ था। और लाल कमरे में तुम्हारे चेहरे पर भी डर था। लेकिन अब मुझे ऐसा कुछ महसूस नहीं हो रहा।”
विल्सन के चेहरे पर एक ऐसा भाव आया जिसे देखकर शायद उसे खुशी का आभास हो सकता था। "बहुत खूब! मैं बिल्कुल यही तो कहना चाह रहा था! यही आपके दिमाग का वो हिस्सा है जिसे आपको सक्रिय करना है। इसे भी वैसे ही हासिल किया जाता है जैसे किसी और चीज को, जैसे गति या दृष्टि को। बस फर्क इतना है कि इसमें आपको उस व्यक्ति से संपर्क करना होता है जिसे आप समझने की कोशिश कर रहे हैं।"
“ठीक है।” मैंने उत्सुकता से सिर हिलाया और अपनी आँखें बंद कर लीं। एक बार फिर, मैंने अपने विचारों को शांत किया।
"अब, अपने मन से मुझसे संपर्क करो," विल्सन ने कहा, मानो किसी लंबी सुरंग के अंत से, उनकी आवाज मेरे दिमाग में अलौकिक रूप से गूंज रही थी।
मैंने उसकी ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करते हुए उससे संपर्क साधा। मुझे वहाँ कुछ महसूस हुआ, लेकिन ऐसा लगा जैसे कोई अवरोध या दीवार हो। मैंने कुछ देर तक और अधिक प्रयास किया, मेरे माथे पर पसीना आ रहा था और प्रयास से मेरी साँसें फूल रही थीं। लेकिन मैं असफल रहा और अपनी विफलता के विचार मन में उमड़ पड़े।
मैंने हांफते हुए कहा, "मुझे माफ करना। मुझे वहां कुछ महसूस हुआ, लेकिन मैं उसे छू नहीं पाई।"
विल्सन ने एक पल के लिए मुझे गौर से देखा, मानो कोई प्रोफेसर वैज्ञानिक समीकरण को समझने की कोशिश कर रहा हो। "यहीं रुको," उसने कहा।
इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाती, वह पलक झपकते ही गायब हो गया, मुझे धूल के बादल में छोड़कर। मैं सोचने लगी थी कि यह पिशाच प्रशिक्षण मेरे बस की बात नहीं है, तभी वह घबराए हुए गाइ के साथ वापस आ गया। मेरे रक्षक के गीले बाल उसकी आँखों पर लटक रहे थे और उसकी नंगी छाती पर पानी की बूँदें थीं। वह अभी-अभी नहाकर निकला था और उसने शर्ट नहीं पहनी थी —मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं थी—लेकिन वह चिड़चिड़ा लग रहा था और उसने विल्सन की पकड़ से अपनी मजबूत बाइसेप्स छुड़ा ली।
“अरे बाप रे!” उसने विल्सन की उंगलियों से बने लाल निशानों को अपनी बांह पर रगड़ा। “अगली बार, थोड़ी चेतावनी दे देना अच्छा रहेगा।”
“उसे समझने की कोशिश करो।” विल्सन ने गाय की नाराज़गी भरी नज़रों को नज़रअंदाज़ करते हुए उसे मेरी तरफ धकेल दिया। “उसके मिजाज, उसकी भावनाओं को समझो। लेकिन उसे शारीरिक रूप से मत छुओ।”

मैंने शर्मिंदगी भरी नज़र से विल्सन की तरफ देखा, लेकिन उसने हाथ हिलाकर मुझे आगे बढ़ने का इशारा किया। मेरी नज़रें गाय की आँखों से मिलीं, मेरे घुटने काँप रहे थे। क्या मैं सच में जानना चाहती थी कि गाय क्या महसूस कर रहा है? उसके अंदरूनी भाव? यह बहुत दखलअंदाज़ी जैसा लग रहा था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे यह पसंद है या नहीं।

गाइ ने विल्सन के इरादों पर कोई सवाल नहीं उठाया, न ही उसने एक शब्द कहा। वह मेरे करीब आया, मानो अपनी आँखों से मुझे निहार रहा हो। हम इतने करीब थे कि मुझे उसके शरीर से निकलती गर्मी महसूस हो रही थी। इतना करीब कि मुझे उसके साँसों की गर्माहट अपने चेहरे पर महसूस हो रही थी, जैसे ताज़ी पुदीने की खुशबू और कॉफी की महक। हे भगवान, यह कितना बेचैन करने वाला था!

“आगे बढ़ो,” विल्सन ने आग्रह किया। “अगर कैप्टन स्टोन ही वह व्यक्ति हैं जिन्होंने पहले तुम्हें अपनी इंद्रियों का उपयोग करने में सक्षम बनाया था, तो निश्चित रूप से वे इसे फिर से कर सकते हैं।”

मैंने गहरी साँस लेते हुए सिर हिलाया। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने दिमाग को शांत कर लिया, खुद को काले सन्नाटे में तैरने दिया। रात की आवाज़ें भी मानो मंद पड़ गईं, मेंढकों की टर्राहट भी शांत हो गई। मैंने मन ही मन गाय की ओर हाथ बढ़ाया, मेरे दिमाग की उंगलियाँ उसमें समा गईं। और जैसे बिजली के सॉकेट में उंगली डाल दी जाती है, वैसे ही मैं उससे झकझोर खा गई, उसकी सारी ऊर्जा ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। चौंककर मैंने गहरी साँस ली।

“तुम्हें क्या आभास हो रहा है?” विल्सन की तीखी और निर्भीक आवाज ने मेरी एकाग्रता को ऐसे भंग कर दिया जैसे मेरी एड़ी में कांच का टुकड़ा चुभ गया हो। “वह क्या महसूस कर रहा है?”

“उसे लगता है कि तुम्हें नए कपड़ों की ज़रूरत है,” मैंने बिना खुद को रोके चुटकी ली। यह नज़दीकी और मनमुटाव कुछ ज़्यादा ही गर्म और उत्तेजक हो रहा था। गाय हँसा, जिससे मेरे चेहरे पर भी मुस्कान आ गई, लेकिन मैंने अपनी आँखें बंद ही रखीं।

विल्सन ने बनावटी हंसी हंसी और मुझे ऐसा लगा जैसे वह अपनी आंखें घुमा रहा हो। मुझे उसके पैरों की आहट सुनाई दी। "अच्छा प्रयास। लेकिन यह मन पढ़ना नहीं है। यह मनोदशा पढ़ना है। फिर से कोशिश करो।"

अनिच्छा से ही सही, मैंने गाइ की स्पंदित ऊर्जा पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। यह उसके चारों ओर फैली प्रकाश की किरण की तरह थी, गर्म और जीवंत।

“मैं… मुझे उसकी ताकत महसूस हो रही है।” मेरी आवाज़ फुसफुसाहट जैसी निकली, मेरी आँखें अभी भी कसकर बंद थीं। “उसका दबदबा।” वह स्पष्ट था, एकदम कठोर, उसका दबंग स्वभाव। लेकिन मुझे उसके नीचे कुछ और भी महसूस हो रहा था।

“अच्छा, अच्छा। यही उसका स्वभाव है। अब और क्या? आपको और गहराई में जाना होगा। वह इस समय क्या महसूस कर रहा है?”

हे भगवान! क्या मैं ये कर सकती हूँ? क्या मेरे पास कोशिश करने के अलावा कोई और चारा था? मैंने अपनी साँस धीमी की, उसे आराम से अंदर-बाहर लिया। मैंने अपना ध्यान गाय पर केंद्रित रखा, इस कोशिश से मेरे हाथ काँप रहे थे। मैंने और ज़ोर लगाया।

“मुझे… राहत महसूस हो रही है। जैसे कोई बोझ उतर गया हो।” मुझे समझ नहीं आ रहा था कि गाय ऐसा क्यों महसूस कर रहा है, लेकिन मैं आगे बढ़ता रहा, जैसे किसी चट्टान के नीचे छिपे कीड़े उसकी भावनाओं को खोज निकालते हैं। और फिर कुछ और मेरे होश में आया, जैसे त्वचा पर पंख का स्पर्श। “मुझे… डर नहीं, बल्कि… आशंका महसूस हो रही है?”

"आगे बढ़ो," विल्सन ने घोर अंधेरे में आग्रह किया।

उस पल मैं गाय के इतना करीब था कि ऐसा लग रहा था मानो उसकी आत्मा मुझमें समा रही हो, मुझे एक गाढ़े गर्म चॉकलेट के प्याले की तरह लबालब भर रही हो। लेकिन फिर...
मुझे एक आशंका सी महसूस हो रही है... एक तरह का डर?
"जाता रहना।"
“मुझे ऐसा लग रहा है...” और बस, मुझे वो मिल ही गया जिसका मुझे डर था— उसके मेरे प्रति भाव। ये भाव गर्मजोशी भरे, सुरक्षात्मक, दृढ़ और भावुक थे। उसकी ऊर्जा मुझमें समा गई, मुझे एक गर्म कंबल की तरह ढक लिया और मैं तुरंत समझ गई कि ये क्या है। ये प्यार था। मैं घबरा गई और मेरी आँखें खुल गईं।
"बस इतना ही," मैंने गाय से पीछे हटते हुए लड़खड़ाते हुए कहा।
“बस इतना ही?” विल्सन ने मुझसे पूछा, उनके चेहरे पर गहरी जिज्ञासा झलक रही थी।
गाइ की भावनाओं के सैलाब में उमड़ रहे उफान से मैंने खुद को संभाला। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि वो मेरे लिए ऐसा महसूस करता है। खासकर अब, जब हमें अलग होना ही था। मैंने खुद को शांत किया और आह भरी, शेड के उखड़े हुए पेंट पर ध्यान केंद्रित करते हुए बोली, "हाँ। बिल्कुल लाचार। अब मुझे कुछ और महसूस नहीं हो रहा।"
गाइ न मुस्कुरा रहा था, न ही उसका चेहरा उतरा हुआ था। वह बस मुझे गहरी निगाहों से देख रहा था, बहुत गहरी निगाहों से। हे भगवान, मुझे उसी पल पता चल गया, वह मुझसे प्यार करता था। और मैं भी उससे प्यार करती थी। एक वैम्पायर किलर और एक वैम्पायर एक-दूसरे से प्यार करते थे। हा हा, हम कैसी अजीबोगरीब दुनिया में रहते हैं!
विल्सन ने अपने सिर के पीछे खुजली की और आह भरी। "ठीक है, तो। मैं कुछ जलपान करने जा रहा हूँ। क्या आप भी आना चाहेंगे?" उसने मेरी और गाय की तरफ देखा।
गाइ ने अपना संतुलन बदला, चाँद की चमक उसकी नंगी, मांसल छाती पर पड़ रही थी। उसकी तीखी निगाहें एक पल के लिए मुझ पर टिकी रहीं। “मैं तुम दोनों को आगे जाने देता हूँ। मैं कपड़े पहन लेता हूँ।” उसने व्यंग्य भरे लहजे में विल्सन की ओर मुड़कर कहा, “अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो?”
विल्सन ने कुछ नहीं कहा, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
गाइ ने मेरी तरफ देखा और मैंने कंधे उचका दिए, हँसी रोकने की कोशिश करते हुए। अगर वो बिना शर्ट पहने हमारे साथ आ जाता, तो मुझे ज़रा भी आपत्ति नहीं होती। लेकिन मैं उसकी शर्म को अच्छी तरह समझती थी। गाइ ने मुझे वैसी ही मासूम मुस्कान दी, जैसी उसने मुझे 'डेट' पर ले जाते समय दी थी, और फिर घर की तरफ चल पड़ा।
मैं विल्सन के साथ चलने लगा, उसकी धीमी चाल से ताल मिलाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ऐसा करने में मैं खुद ही लड़खड़ा गया। विल्सन ने व्यंग्य भरी हंसी हंसी। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे घर के अंदर ले गया।
जब मैं विल्सन के पीछे-पीछे आंगन में चल रही थी, तो मेरे मन में यह सवाल उठ रहा था कि क्या मैं कभी अपने नए शरीर पर नियंत्रण पा सकूंगी। साथ ही, जब वो समय आएगा, तो क्या मैं गाय से अलग हो पाऊंगी?

उनतीस: रूबी

ट्रेनिंग के दौरान गाय से मिले एहसासों से मैं अब भी थोड़ी परेशान थी। वो एहसास एक बड़े, चमकीले, टिमटिमाते तीर की तरह थे जो इस बात की ओर इशारा कर रहे थे कि वो मुझसे प्यार करता है, और ये सोचकर ही मेरे चेहरे पर शर्म आ जाती थी। मैं झूठ नहीं बोलूंगी कि उस पल में अजीब सा महसूस नहीं हुआ था— वो पल जब मैंने सचमुच उसके दिल में जगह बना ली थी— लेकिन अब, ये जानकर कि वो भी मुझसे प्यार करता है, मुझे अंदर से बहुत अच्छा लग रहा था। मुझे कभी नहीं पता था कि ऐसा भी हो सकता है, किसी की इतनी परवाह करना कि पैर के अंगूठे में चोट लगने जैसा दर्द हो, लेकिन मेरे पास तुलना करने के लिए कुछ खास था भी नहीं। मुझे पहले ये एहसास नहीं हुआ था, लेकिन मेरे पुराने बॉयफ्रेंड जॉन ने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया था। और खासकर अब, गाय से मिलने और उसकी निस्वार्थता और परवाह को देखकर, मुझे पता चला कि सच में चाहा जाना और प्यार किया जाना कैसा लगता है।

लेकिन हमारे बीच जो भावनाएँ थीं, वे विशेष रूप से परेशान करने वाली थीं क्योंकि उनका कोई महत्व नहीं था। मुझे बहुत दुख हुआ कि गाय और मैं जल्द ही अलग होने वाले थे। हम फिर कभी एक-दूसरे को नहीं देख पाएंगे। इसीलिए मैंने अपने पेट में उठ रही बेचैनी को दबाने की पूरी कोशिश की, और आने वाली स्थिति के लिए खुद को तैयार किया। मैं जल्द ही अपने जैसे लोगों के साथ होने वाली थी और अपनी बचकानी, लड़कियों जैसी भावनाओं के बारे में चिंता नहीं कर सकती थी।

मैं रसोई में खड़ी खिड़की से बाहर देखती रही, जैसे कोई भाव ही न हो। विल्सन धूप से बचने के लिए पर्दे बंद कर रहा था। उसने दीवार पर लगी शेल्फ से दो प्याले उठाए और फ्रिज से खून की थैली निकाली—वही थैली जो इंसानी खून से भरी थी, जिसे मैंने और गाय ने चुराया था। उसने प्यालों में खून भरा और मुझे एक प्याला पकड़ा दिया। मैंने मुँह बनाया और मेज पर बैठ गई, सोच रही थी कि विल्सन को पता चले बिना इसे कैसे पीऊँ। बकरी का खून ही काफी बुरा था, लेकिन यह? उफ़!

उसने अपने पेय का एक घूंट लिया और संदेह भरी नज़रों से मेरी ओर तिरछी नज़र से देखा। "कुछ गड़बड़ है क्या?"

मैंने अपना सिर हिलाया लेकिन कुछ नहीं कहा, कप को अपनी उंगलियों से कसकर पकड़ लिया, चीनी मिट्टी के बर्तन के माध्यम से तरल की ठंडक को महसूस किया।

विल्सन ने गहरी सांस ली और अपनी उंगलियों से अपना माथा रगड़ा। "तुम्हें रूबी को खाना खिलाना होगा। मानव रक्त को मना करने से तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा। टॉम्बस्टोन में तुम्हारे पास बस यही उपलब्ध होगा।"

खैर, जाहिर तौर पर उसे मेरी नापसंदगी के बारे में पहले से ही पता था, इसलिए इसे छिपाने का कोई मतलब नहीं था। फिर भी, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस विषय पर उससे बात कैसे शुरू करूं ताकि वह मुझे सनकी न समझे, इसलिए मैं चुप रहा।

विल्सन ने एक और घूंट लिया और जब मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो उसने आगे कहा, "मुझे यह बात काफी अजीब लगती है कि तुम दूसरे पिशाचों की तरह लालसा नहीं करते। क्या इंसानों को देखकर तुम्हारे मुंह में पानी नहीं आता?"

मैंने अपने हाथों में पकड़े गाढ़े लाल रंग के प्याले पर नज़र डाली, मेरा पेट मचल रहा था। फिर मैंने दीवारों की ओर देखा, अनमने ढंग से वहाँ टंगी सभी तस्वीरों और अजीबोगरीब यादगार चीज़ों को निहारते हुए। इंसानी खून देखकर लार टपकाना मेरी पसंद का विषय नहीं था, लेकिन ज़ाहिर है मैं इससे बच नहीं सकती थी। "सच में नहीं। बस... यह गलत लगता है।"

“हम्म।” विल्सन रसोई में चहलकदमी कर रहा था, उसका पतला शरीर ऊपर लटके पुराने लैंप की रोशनी और छाया में आता-जाता रहा।

“लेकिन मुझे एक पिशाच की तीव्र इच्छा थी।” ये शब्द मेरे मुंह से निकलते ही मुझे एहसास हुआ कि मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है और मैंने अपना हाथ मुंह पर रख लिया। अपराधबोध तेजाब की तरह मेरे गले में जलन पैदा कर रहा था, लेकिन पिशाच को मारने के कारण नहीं— अगर उसे मौका मिलता तो वह गाय और मुझे मार डालता। नहीं, अपराधबोध इस बात से उपजा था कि दूसरे मेरे बारे में क्या सोचेंगे, विल्सन मेरे बारे में क्या सोचेगा।

विल्सन एकदम रुक गया। "तुम क्या कह रहे हो?"

शर्म से सिकुड़ते हुए, मैंने अपनी नज़रें नीचे कर लीं, उम्मीद कर रही थी कि वह मुझे पागल या उससे भी बुरा, हत्यारा न समझे। मैंने मन ही मन खुद को तैयार किया और अपनी बात जारी रखते हुए, मैंने जो किया था उसे समझाने की कोशिश की।

“गाइ से मिलने के कुछ ही समय बाद, उस पर एक पिशाच ने हमला कर दिया। वो लगभग मर ही गया था, विल्सन। और मुझे उस पिशाच की गंध आ रही थी। उसकी गंध... बहुत ही स्वादिष्ट थी। और मैंने उसका खून चूस लिया। मैंने... मैंने उसे मार डाला।”

मैंने शर्म से अपना सिर झुका लिया। क्या मैं सचमुच हत्यारा था? क्या आत्मरक्षा करना ऐसा अपराध माना जाता है? और मैंने न केवल किसी को मारा था, बल्कि अपने ही जैसे किसी को मार डाला था। मुझे उम्मीद थी कि मैं विल्सन पर भरोसा कर सकता हूँ। वह खुद भी समाज से बहिष्कृत था, और मुझे उम्मीद थी कि वह मेरी शिकायत नहीं करेगा। मैंने घबराकर अपने शिक्षक की बड़ी-बड़ी आँखों में देखा और उनके जवाब का इंतजार किया।

"तुमने एक और पिशाच को मार डाला?" उसने हैरानी भरे चेहरे से दोहराया।

“हां।” मैंने अपने निचले होंठ को दबाया। “लेकिन यह गाइ की जान बचाने के लिए था। वह मर रहा था।”

विल्सन ने आह भरी और रसोई के काउंटर से टिक गया। वह सोचते हुए भौंहें चढ़ाकर ग्रेनाइट पर उंगलियां थपथपाने लगा। मेरे गले में एक गांठ सी बन गई।

"क्या मुझे मुसीबत में पड़ना पड़ेगा, विल्सन? एक और पिशाच को मारने के लिए?"

“क्या इस घटना को देखने के लिए कोई और भी वहां मौजूद था?” उसने तनाव से अपनी गर्दन एक तरफ झुकाई।

"नहीं।"

उसने फूले हुए गालों से सांस छोड़ते हुए कहा, "हो सकता है कि तुम भाग्यशाली रहे हो कि तुम्हें फांसी की सजा से छुटकारा मिल गया।"

मैं घबरा गई, मेरे अंदर एक भयानक डर दौड़ गया। मौत की सज़ा? हे भगवान! मैं अभी-अभी मौत से बाल-बाल बची थी। दोबारा उस दर्द से गुज़रने का ख्याल ही मुझे डरा रहा था। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। मैं ऐसा होने नहीं दूंगी। मैंने उस पिशाच को एक कारण से मारा था, न कि द्वेष या गुस्से से। मैंने ऐसा आत्मरक्षा में किया था, गाय की जान बचाने के लिए। अपनी जान बचाने के लिए। नहीं, मैं बिना लड़े हार नहीं मानूंगी। मैंने दृढ़ता से अपना सिर उठाया।

लेकिन जैसा कि मैंने कहा, विल्सन, यह बचाव में किया गया था!

“कोई फर्क नहीं पड़ता,” विल्सन ने पलटवार किया। “तुमने न सिर्फ अपने ही समुदाय के एक सदस्य को मारा, बल्कि एक इंसान की रक्षा के लिए ऐसा किया। और वो कोई आम इंसान नहीं, बल्कि FUSE के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक इंसान। और अगर तुम्हें पता न हो, तो FUSE पिशाचों का सबसे बड़ा दुश्मन है। तुम्हें गद्दार माना जाएगा।”

मेरी नसें नियॉन लाइट की तरह चमक उठीं। मुझे इस नई ज़िंदगी में आए अभी कुछ ही दिन हुए थे और मैंने अपने तरह का सबसे बड़ा अपराध कर दिया था। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। "क्या तुम मुझे पुलिस के हवाले करने वाले हो, विल्सन?"

विल्सन अचानक हँस पड़ा और अपने हाथ आपस में जोड़ लिए। “अगर मैंने ऐसा किया, तो मैं खुद को दोषी ठहरा लूँगा। नहीं, मैं तुम्हें पुलिस के हवाले नहीं करूँगा।”

मैंने उसे गौर से देखा और महसूस किया कि मेरा अनुमान सही था। वह मुझ जैसा ही था, क्योंकि हम दोनों ही समाज से बहिष्कृत थे, और तब मुझे एहसास हुआ कि मैं उस पर भरोसा कर सकता हूँ। मेरा शरीर थोड़ा शांत हुआ, हालाँकि बहुत हल्का। मैं अब भी अपने कार्यों के संभावित परिणामों को सोचकर तनाव में था, और कल्पना कर रहा था कि भयानक दरिंदों का एक झुंड मशालें और त्रिशूल लिए मेरी ओर आ रहा है।

विल्सन मेरे बगल में बैठ गया, जिससे मैं अपने भयानक विचारों से बाहर आ गया। उसने अपना सारा ध्यान मुझ पर केंद्रित कर दिया, उसकी गहरी आँखें उस पल और भी गहरी लग रही थीं। "जानते हो, मैं सोच रहा था।" उसने अपनी उंगलियाँ आपस में घुमाईं, उसकी आवाज़ अजीब और अशुभ लग रही थी। मैंने सावधानी से अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "मैं इस बारे में बहुत सोच रहा था कि तुम मुझसे और अब तक मिले किसी भी पिशाच से कितने अलग हो।"

ओह? मुझे ज़ोर का झटका लगा। मैं तो सोच रही थी कि हम दोनों एक ही जैसे हैं, एक ही सांचे से बने दो प्राणी, लेकिन उसके शब्दों ने मेरे इस सुकून को झटक दिया। मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि मेरे अलग होने का उसका क्या मतलब था, इसलिए मैंने उस बूढ़े पिशाच को उत्सुकता से देखा, मानो उसके दिमाग में चल रही बातों को गौर से देख रही थी। उसने अविश्वास में सिर हिलाया, लेकिन बोलना जारी रखा। "लेकिन मुझे लगता है कि मेरा अनुमान सही है।"

“क्या अनुमान?” घबराहट भरी आशंका एक ठंडे सांप की तरह मेरे शरीर में फैल गई, और मुझे महसूस हुआ कि मेरे चेहरे का रंग उड़ रहा है।

“खैर...” विल्सन अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया और सोचते हुए अपनी ठुड्डी खुजलाने लगा। “मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बदलने के बाद भी तुममें मानवता का कितना स्तर बरकरार था — तुम्हारी बेजोड़ ताकत और गति का तो कहना ही क्या। लेकिन तुम्हारी करुणा, सहानुभूति और दया... तुम्हारे हृदय में मौजूद निःस्वार्थ दयालुता असाधारण है। और अब जब मुझे पता चला है कि तुमने किसी इंसान की जान बचाई है, न कि उसका खून चूस लिया है...”

मैं अपनी कुर्सी पर बेचैनी से छटपटाने लगा, मुझे यह बातचीत जिस दिशा में जा रही थी, वह पसंद नहीं आ रही थी। मैं अलग नहीं दिखना चाहता था। मैं भीड़ से अलग नहीं दिखना चाहता था। मैं बस सामान्य रहना चाहता था— खैर, इस स्थिति में एक पिशाच जितना सामान्य हो सकता है— लेकिन मुझे लग रहा था कि वह मुझे कुछ और ही बताने वाला है। गाय ने पहले भी ऐसा कहा था और अब विल्सन इस बात को और पुख्ता कर रहा था कि मैं अलग हूँ।

“जिस तरह तुम इंसानी खून की प्यास नहीं रखते,” वह उंगलियों पर आरोप गिनते हुए बोला। “तुम्हारी अद्भुत ताकत। तुम्हारी गति और फुर्ती।” उसने फिर सिर हिलाया, मानो अपने ही दिमाग से लड़ रहा हो। काश वह बस बात खत्म करके सब कुछ बता देता।

“विल्सन,” मैंने गहरी साँस लेते हुए कहा, मेरे अंदर हताशा उमड़ रही थी। “क्या मुझमें कुछ गड़बड़

है?" मैं लगभग हँस पड़ी। बेशक, मुझमें कुछ गड़बड़ थी, आखिर मैं एक पिशाच थी। लेकिन और क्या? और क्या हो सकता था?
"नहीं," विल्सन ने जवाब दिया। "गलत तो नहीं, बस अलग है। खास।"
और फिर वही शब्द मेरे सामने आ गए। वो शब्द जिन्हें मैं सुनना नहीं चाहती थी। अलग। खास। लेकिन इसका मतलब क्या था? मेरे गुरु के चेहरे को देखते ही मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा।
उन्होंने कहा, "इन सब बातों का एक ही निष्कर्ष निकलता है। मेरा मानना है कि आप वास्तव में एक हाइब्रिड हैं।"
"क्या?"
"एक संकर। मिश्रित नस्ल। एक मिश्रित नस्ल।"
मैंने अपना सिर हिलाया, मेरा मुंह खुला रह गया। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है।
विल्सन ने मेरे अचंभित चेहरे को देखा और झुककर अपनी उंगलियों को आपस में जोड़ते हुए बोला, "ध्यान से सुनो।" वह ऐसे बोल रहा था जैसे चौथी कक्षा के बच्चों से भरी क्लास को निर्देश दे रहा हो। "हाइब्रिड दो प्रजातियों का मिश्रण होता है। तुम्हारे मामले में, पिशाच और इंसान।"
उनके शब्द मेरे भ्रमित मस्तिष्क के शीर्ष तक मुश्किल से ही पहुंच पाए।
"आख़िर कैसे?"
विल्सन के होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। "सुनने में यह जटिल लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। वास्तव में यह काफी सरल है, हालांकि यह एक बहुत ही दुर्लभ मामला है।" वह खड़ा हुआ और गहरी सांस ली। वह छोटी सी रसोई में इधर-उधर घूमने लगा, उसकी निगाहें कहीं दूर तक भटक रही थीं, मानो वह किसी पुरानी किताब से भूली हुई जानकारी को याद करने की कोशिश कर रहा हो।
"हाँ, तुम पहले इंसान थे। और हाँ, तुम्हें एक पिशाच ने पिशाच बनाया। लेकिन फर्क ये है: तुम्हारे जैसे संकर के खून में एक अलग गुणसूत्र होता है, जो आनुवंशिक वंश वृक्ष से पीढ़ी दर पीढ़ी मिलता है।" वो तेज़ी से मेरी तरफ मुड़ा। "मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है। क्या तुम्हें बचपन से ही दूसरों से अलग समझा जाता था? ज़्यादा ताकतवर? ज़्यादा बुद्धिमान? छठी इंद्री वाला या कोई और ऐसी खासियत जो तुम्हें याद हो?" उसकी आँखें मुझे भेद रही थीं, उन सवालों के जवाब ढूंढ रही थीं जो मेरे पास नहीं थे।
"नहीं।" मैंने सिर हिलाया। "मुझे ऐसा नहीं लगता। मैं काफी सामान्य थी।"
विल्सन ने मुझे कुछ देर तक घूरा, फिर हाथ हिलाकर बात टाल दी। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हर हाइब्रिड अपने आप में अलग होता है। अब यहीं मेरे साथ रहो।" वह एक छोटा सा चक्कर लगाकर रुक गया। उसने अपनी ठुड्डी खुजलाई। "मैं इसे ऐसे समझाता हूँ। क्या तुम्हें कभी कोई टीका लगा है? मान लो, फ्लू का टीका?"
मैंने सिर हिलाया। बेशक, मैंने किया था। स्कूल जाने वाले सभी छात्रों के लिए यह अनिवार्य था। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि विल्सन बहुत बूढ़ा था और जब वह इंसान था, तब हालात शायद अलग रहे होंगे।
"अच्छा। अब उस इंजेक्शन के बारे में सोचो। यह एक मृत वायरस है जिसे तुम्हारे खून में डाला गया है, जो तुम्हें वास्तविक जीवन में इसके संपर्क में आने पर प्रतिरक्षा प्रदान करेगा। एक हाइब्रिड का खून इसी तरह काम करता है।" वह मेरे बगल वाली कुर्सी पर वापस बैठ गया, उसकी आँखों में उत्साह की चमक थी। "भले ही यह सुप्त और निष्क्रिय पड़ा रहा हो, रूबी, तुम्हारे खून में हमेशा से कुछ न कुछ रहा है। एक वैम्पायर क्रोमोसोम। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन तुम्हारे परिवार

के इतिहास में कहीं न कहीं, एक इंसान ने एक वैम्पायर के साथ संबंध बनाया, जिससे एक हाइब्रिड पैदा हुआ। आधा इंसान आधा वैम्पायर। और फिर उस हाइब्रिड ने प्रजनन किया। और इसी तरह। लेकिन संभव है कि पीढ़ियों के दौरान वह जीन दबा हुआ रहा हो। और वैम्पायर के खून के संपर्क में आने के कारण, जब तुम्हारे निर्माता ने तुम्हें वैम्पायर बनाया, तो अब यह तुम्हारे अंदर सक्रिय हो गया है।"

मैंने अविश्वास से मुंह खुला रखकर फिर से अपना सिर हिलाया। सारी जानकारी से मेरा सिर दर्द कर रहा था और दर्द से बचने के लिए मैंने अपनी आंखें सिकोड़ लीं।

"तो आप कह रहे हैं कि मेरी..." मैंने अपनी उंगलियों को कनपटी पर दबाते हुए सही शब्द खोजने की कोशिश की। "क्या यह स्थिति होगी? आप कह रहे हैं कि मेरी स्थिति दुर्लभ है?"

विल्सन ने सिर हिलाया और अपने होंठ चाटे। "तुम्हारे जैसे कुछ ही मामले सामने आए हैं। इसलिए दुर्भाग्यवश, हमारे पास ज्यादा जानकारी नहीं है।"

यह कहना कि मैं स्तब्ध रह गया था, बहुत कम होगा। विल्सन कह रहा था कि मैं पिशाच और इंसान का कोई अजीबोगरीब मिश्रण हूँ। मानो पिशाच होना ही काफी अजीब नहीं था, अब मैं और भी ज्यादा विचित्र हो गया था। हे भगवान! मैं इस बात को समझ ही नहीं पा रहा था। लेकिन मेरे मन में अभी भी बहुत सारे सवाल थे। मैंने उन्हें टूटे पाइप से पानी की तरह अपने मुँह से बहने दिया।

"क्या मैं अब भी अमर हूँ, या मैं एक इंसान की तरह मर सकता हूँ? क्या मैं खाना खा सकता हूँ? विल्सन, इसका मेरे लिए क्या मतलब है? क्या मैं अब भी योजना के अनुसार दूसरों के साथ मिल सकता हूँ? क्या उन्हें पता चलेगा कि मैं अलग हूँ? क्या वे मुझसे नफरत करेंगे?"

मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और सिर सुन्न होकर दर्द कर रहा था। घबराहट से मेरी साँसें तेज़ और उखड़ी हुई थीं। विल्सन ने मेरे काँपते कंधे पर हाथ रखा। "जल्दी मत सोचो। सब ठीक हो जाएगा।"

मैंने पलकें उठाकर उसकी ओर देखा। "क्या सच में? अगर मैं, जैसा कि आप कहते हैं, एक हाइब्रिड हूँ, और यह दुर्लभ है, तो आपको कैसे पता चलेगा कि सब ठीक रहेगा?"

उसने सिर हिलाया और गहरी सांस ली। "मुझे कुछ भी पक्का नहीं पता। कोई नियम-कानून नहीं है। पिशाच या संकर पिशाच होने के लिए कोई दिशा-निर्देश नहीं हैं। लेकिन मैं इतना कह सकता हूँ कि तुम शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत हो। तुम अपना रास्ता खुद ढूंढ लोगे और इसे संभाल लोगे। समय के साथ सब कुछ ठीक हो जाएगा और तुम कोई न कोई रास्ता निकाल लोगे।"

मेरा गला जैसे सूख रहा था और मेरी आवाज़ फटी हुई थी। "विल्सन, मैं... मैं अलग नहीं बनना चाहती। मैं पिशाच भी नहीं बनना चाहती। मैं बस... घर जाना चाहती हूँ।" मेरी आँखों में जलन हो रही थी, आँसू आने ही वाले थे।

विल्सन का सीना दबी हुई भावनाओं से फूल रहा था। उसने अपना सिर झुकाया। "बच्चे, कुछ चीजें हैं जिन्हें तुम बदल सकते हो, जैसे दुनिया को देखने का तुम्हारा नजरिया और यहाँ रहते हुए तुम क्या करते हो। लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें तुम नहीं बदल सकते। पिशाच होना उनमें से एक है। और टॉम्बस्टोन तुम्हारा घर होगा। बस इसे एक मौका दो। हो सकता है तुम्हें वहाँ अच्छा लगने लगे।"

हालांकि मैं यह मानना नहीं चाहती थी, लेकिन मन ही मन जानती थी कि वह सही कह रहा था। मैं खुद को वैसे ही नहीं बदल सकती थी जैसे उड़ने की चाह रखने वाली मुर्गी नहीं बदल सकती। फिर भी मेरा दिमाग लगातार उथल-पुथल मचा रहा था, मेरी भावनाएं एक गुब्बारे की तरह फटने को तैयार थीं। लेकिन मैंने एक गहरी सांस ली और खुद को संभाला, सीने में फूले गुब्बारे को पिचकने दिया। मैंने अपनी आंखों के आंसू पोंछे। मैं इतनी दूर आ चुकी थी कि इस नई जानकारी से टूट नहीं

सकती थी। विल्सन ने जैसा कहा था, मैं मजबूत थी और मैं कोई न कोई रास्ता जरूर ढूंढ लूंगी।
“लेकिन दूसरों को लेकर तुम्हारी आशंकाएं जायज़ हैं,” विल्सन ने मेरी बेचैन सोच को तोड़ते हुए कहा। उसके माथे पर गहरी लकीरें थीं, जिससे मुझे बेचैनी हुई। “अब जब मुझे पता चल गया है कि तुम क्या हो, तो बेहतर होगा कि तुम अपनी इस अनोखी बात को दूसरों को न बताओ। मुझे नहीं पता कि वे इसे कैसे संभालेंगे। जब तुम टॉम्बस्टोन पहुंचो, तो बेहतर होगा कि तुम चुपचाप रहो और किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न करो। मुझे उम्मीद है कि जब तक तुम यहां से जाओगे, तब तक तुम खुद पर पूरी तरह काबू पा लोगे और उन्हें कुछ भी पता नहीं चलेगा।”
मैंने सिर हिलाया, उम्मीद करते हुए कि मुझ पर उसका भरोसा सही था। मुझे भी उम्मीद थी कि मैं खुद पर काबू रख पाऊँगी।
“लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है,” उन्होंने मेरे खाली प्याले पर हाथ फेरते हुए कहा। “वहाँ पहुँचकर आपको मानव रक्त पीना होगा। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो उन्हें शक होगा कि आप अलग हैं। और इससे समस्या खड़ी हो सकती है।”
मैं बेचैनी से कांप उठा। मैं ऐसा कैसे कर सकता था? मैं खुद को इंसानी खून पीने के लिए कैसे मजबूर कर सकता था? यह कई मायनों में गलत था। और बेहद घिनौना भी। मैंने गहरी सांस ली, कोशिश कर रहा था कि गले से नीचे उतरते उस गाढ़े लाल तरल के बारे में न सोचूं।
मैंने अपना सिर हाथों में झुका लिया और दर्द से कराहते हुए सिर की मालिश की। मेरे दिमाग में नई जानकारियों का बवंडर सा उमड़ रहा था। यह सब कुछ बहुत ज़्यादा और बहुत जल्दी हो रहा था।
यह भांपते हुए विल्सन ने हाथ बढ़ाया और धीरे से मेरे कंधे को सहलाया।
“अभी छोटी-छोटी बातों की चिंता मत करो। समय आने पर ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। हर पिशाच को कहीं न कहीं से शुरुआत करनी पड़ती है।”
वह सही था। मुझे और भी बड़ी चिंताओं का सामना करना था, जैसे कि कुछ दिनों में जिस नए पिशाच समूह में मैं शामिल होने वाला था, उसमें खुद को स्वीकार्य बनाना। मुझे और प्रशिक्षण की ज़रूरत थी। मुझे अपने नए जीवन को स्वीकार करना था और उसमें घुलमिल जाने की पूरी कोशिश करनी थी।
दिमाग का तनाव भुलाकर, मैंने विल्सन की तरफ देखा और कंधे उचका दिए। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं इससे निपट लूंगी। मेरे पास कोई और चारा नहीं था। "विल्सन, क्या मैं दूसरा चम्मच इस्तेमाल करूँ?"
वह मुस्कुराया और मुझे एक और बर्तन पकड़ाते हुए बोला, "अच्छा विचार है।"

मैंने खिड़की से रूबी को देखा, उसके सुनहरे बाल रात के अंधेरे में एक अलग ही नज़ारा पेश कर रहे थे, उसका सुंदर शरीर नाज़ुक होते हुए भी बेहद मज़बूत था। उसे देखकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह पीछे के बरामदे की सीढ़ियों पर अकेली बैठी थी, ईंटों पर टूटे हुए चम्मचों का ढेर लगा था। वह बार-बार, अटूट एकाग्रता के साथ, दृढ़ निश्चय के साथ, अन्य दुर्भाग्यशाली लोगों के साथ शामिल होने से पहले इस आखिरी हुनर को पूरी तरह से सीखने की कोशिश कर रही थी।

मैंने अपने हाथ जेब में डाले और एक गहरी साँस छोड़ी। पिछले कुछ दिन बेहद तनावपूर्ण रहे थे। लिली की कब्र पर जाना और वहाँ मुझे जो अहसास हुआ, अपने अतीत को भुला पाना। रूबी को तारामंडल में सूर्योदय दिखाने ले जाना और उसकी खुशी देखना। उसके लिए मेरे दिल में जो भावनाएँ थीं, उनका सच्चा होना, और उससे मेरा गहरा रिश्ता, ये सब बातें मेरे लिए सबसे मुश्किल थीं। लेकिन जब विल्सन ने मुझे रूबी के सामने खड़ा करके उसे मेरे भावों को समझने के लिए कहा — वो पल अब तक का सबसे कठिन था।

जब उसने मेरी आँखों में देखा, तो उसके प्रति मेरा लगाव और गहरा हो गया, हमारा जुड़ाव मेरे शरीर में एक झनझनाहट पैदा कर गया। या यूँ कहूँ, मेरा उससे जुड़ाव। और वह हर बात में सही थी। मेरे नियंत्रण करने वाले स्वभाव, उसे छोड़ने में मेरी झिझक और अपने कर्तव्य के प्रति मेरी वफ़ादारी, सब कुछ सही था। लेकिन फिर वह लड़खड़ा गई, मुझसे दूर हट गई, मानो मैं कोई ज्वाला हूँ जो उसे जला देगी। मैं सोचने पर मजबूर हो गया कि उसने मुझमें क्या महसूस किया था और क्या यह उसे बचाने और उसकी देखभाल करने की मेरी गहरी ज़रूरत थी? या क्या उसने मेरे उन भावों को भांप लिया था जिन्हें मैं इतनी बेताबी से नकारने की कोशिश कर रहा था? मुझे नहीं पता था कि उसने क्या देखा या महसूस किया, और अब, जब हमारे पास समय कम बचा है, तो मुझे यकीन नहीं है कि मैं कभी इसका पता लगा पाऊँगा।

पिछले कुछ दिनों से मैं चुपचाप बैठा रहा, जब वो विल्सन के साथ ट्रेनिंग कर रही थी, खुद को बेकार महसूस कर रहा था। काश मैं उसके लिए कुछ और कर पाता, काश मैं उसके अंदर के दर्द को कम करने में मदद कर पाता। एक ऐसा दर्द जिसे सिर्फ वही समझ सकता है जिसने सब कुछ खो दिया हो। मेरे भीतर, उसका दर्द मेरी आत्मा का हिस्सा बन गया था।

लेकिन मुझे लगता है कि उसे यहाँ लाने और जीवन में उसकी जगह खोजने में मदद करने के लिए मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी। मैं उसे एक सच्ची योद्धा मानने से खुद को रोक नहीं पा रहा था, क्योंकि मैंने कभी किसी पिशाच को इतना शक्तिशाली नहीं देखा था, कभी किसी दुर्भाग्यशाली पिशाच को इतनी जल्दी अपने कौशल को निखारते नहीं देखा था, मानो वह हमेशा से ऐसी ही होने वाली थी। उसकी हरकतें, हालांकि अभी भी थोड़ी अटपटी थीं, लेकिन अधिक सहज होती जा रही थीं, उसकी ताकत अधिक नियंत्रित हो रही थी। वह जन्मजात प्रतिभाशाली थी। एक खूबसूरत, जन्मजात पिशाच। यह तो विरोधाभास ही था।

अगर किसी ने मुझसे कहा होता कि एक दिन मुझे किसी पिशाच से प्यार हो जाएगा, तो मैं उसका मज़ाक उड़ा देती। मैं, जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा नफ़रत करती थी, उसी की परवाह करने लगूँ और दुश्मन से प्यार कर बैठूँ, यह एक ऐसा विरोधाभास था जो मैंने कभी नहीं देखा था। और हालाँकि मैं

हमेशा उससे जुड़ी रहूँगी, हमेशा उसकी मौजूदगी को अपने मन के किसी कोने में एक भूत की तरह महसूस करती रहूँगी, हमारा समय समाप्त हो रहा था। और मुझे यह स्वीकार करने में बुरा लग रहा है, लेकिन यह मेरी इच्छा से थोड़ा ज़्यादा ही जल्दी हो रहा था।

यह सोचकर मेरा दिल सीमेंट की तरह भारी हो गया कि पुराने फार्महाउस में यह हमारी आखिरी रात है, आखिरी रात जब हम साथ होंगे, आखिरी रात जब मैं उसके बेदाग चेहरे को निहार सकूंगा और उसकी बाहों में कोमल आलिंगन महसूस कर सकूंगा। हमारा बिछड़ना ही बेहतर था, मैं यह बात हमेशा से जानता था, लेकिन फिर भी मैं इस चाहत को दबा नहीं पा रहा था कि काश सब कुछ अलग होता। शायद यह उससे मेरा जुड़ाव था, या शायद वह सब कुछ जो हमने साथ में झेला था। लेकिन इससे यह सच्चाई नहीं बदलती कि उसे जाने देना मेरे लिए सबसे मुश्किल काम होगा। रूबी ने एक और चम्मच तोड़ा और उसे अपने पास ज़मीन पर रख दिया, बेपरवाह। उसने एक डिब्बे से दूसरा चम्मच निकाला और अपनी उंगलियों से उसके दोनों सिरों को पकड़ लिया।

मैंने स्लाइडिंग कांच का दरवाजा खोला और उसके साथ सीढ़ियों पर बैठ गया। उसने मेरी तरफ नहीं देखा, बल्कि एकाग्रता से अपनी आँखें कसकर बंद रखीं। कुछ देर बाद चम्मच के टूटने की आवाज़ आई। उसने एक गहरी साँस छोड़ी और मेरी तरफ ध्यान दिया। मैंने मुस्कुराया, जिससे वह भी मुस्कुरा उठी।

मैंने कहा, "तुम्हें समझ आ जाएगा। बस थोड़ा समय लगेगा।"

उसने टूटे हुए टुकड़ों को ढेर में गिरा दिया और मेरे करीब सरक गई, हमारे शरीर एक-दूसरे से छू गए। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रखा और रात के अंधेरे में देखने लगी। एक बड़ा सा कंटीला पेड़ गर्म हवा के झोंके से हिल रहा था, चांदनी में उसकी छाया ज़मीन पर फैल रही थी। मैंने उसे बाहों में भरकर चूमने और उसके साथ बिताए आखिरी पलों को संजोने की इच्छा को दबा लिया। लेकिन अभी अपनी भावनाओं को हावी होने देने का समय नहीं था, और मैं अपने दिल में जानता था कि कभी भी सही समय नहीं आएगा।

“मुझे पता है।” रूबी ने गहरी सांस ली। “मैं इसे हासिल कर लूंगी। लेकिन मुझे लगता है कि मैं अभी तैयार नहीं हूं।”

“तुम तैयार हो।” मैंने अपना हाथ उसकी जांघ पर रखा और उसे तसल्ली देते हुए हल्के से दबाया।

“शायद।” उसने आह भरी और मेरे और करीब आ गई, मानो अपने ठंडे शरीर को गर्म कर रही हो। उसकी बाहें नंगी थीं और उसकी दाहिनी बाँह मेरी बाईं बाँह को छू गई, जिससे उसके प्रति मेरा बंधन और भी गहरा हो गया। मैं उसके स्नेह को गर्मी के झोंके की तरह महसूस कर सकता था और मैंने निराशा में सिर हिलाने की इच्छा को दबा लिया। मैंने उससे मिल रही भावनाओं को अनदेखा किया और उसके शारीरिक रूप को निहारने के लिए मुड़ गया।

उसने वही कपड़े पहने हुए थे जो मैंने शहर में उसके लिए खरीदे थे, एक जींस और एक गुलाबी टी-शर्ट। वह बहुत प्यारी लग रही थी। उसने अपना सिर मेरे कंधे से उठाया और अपनी बैंगनी निगाहें मुझ पर घुमाईं, मानो कोई सवाल पूछ रही हो।

“गाइ?” उसकी आवाज़ बारिश की पहली बूँद जैसी थी; संकोच से भरी। मैं उसकी ओर मुड़ा।

"हाँ।"

"क्या आपको लगता है कि मुझे कभी पता चलेगा कि मेरा रचयिता कौन है?"

उसकी आंखों में उम्मीद देखकर मैं झिझक गया।

मैंने अपने खुफिया अधिकारी टॉड केम्प द्वारा रूबी की मौत के बारे में दी गई जानकारी पर विचार किया। लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि कार दुर्घटना में उसकी मौत के बाद, किसी ने—निस्संदेह एक पिशाच ने— उसे कार के मलबे से उठा लिया था, संभवतः कार के विस्फोट से कुछ ही सेकंड

पहले, जिससे अधिकारियों ने मान लिया कि वह जलकर राख हो गई थी। मैंने बिस्बी गोदाम में हमने जिस कबीले को हराया था, उसके बारे में सोचा और कैसे मैंने उसे अकेले पाया था, उसके निर्माता के बिना। वह अकेली जीवित बची थी और इसका मतलब था कि उसका निर्माता उस रात के बाकी दुर्भाग्यशाली लोगों के साथ निश्चित रूप से मर चुका था। यह संभव था कि उसे कभी पता न चले कि उसे किसने पिशाच बनाया, लेकिन मैं उसकी उम्मीद पूरी तरह से छीनना नहीं चाहता था।
"मुझे नहीं पता।" मैंने देखा कि हवा उसकी चोटी से बालों की एक लट खींचकर उसके गाल पर लहरा रही है। उस लड़की ने जो कुछ सहा था, जो कुछ खोया था, उसे देखकर मेरे शरीर में सहानुभूति उमड़ पड़ी और मेरा दिल उसके लिए दुख से भर गया।
वह मेरे और करीब झुक गई। "बस... मैं सोच रही थी... विल्सन ने कहा था..." उसके शब्द हवा में ही गुम हो गए और उसने एक गहरी साँस ली। मैं उत्सुकता से उसके जवाब का इंतज़ार कर रही थी, जानती थी कि वह कुछ छिपा रही है। उसके साथ अपने बंधन के कारण मैं कुछ महसूस कर सकती थी, जैसे डर, लेकिन उसने हाथ हिलाकर उस विचार को मानो मिटा दिया हो, और डर की भावनाएँ गायब हो गईं। "छोड़ो।"
"क्या बात है?" मैंने अपना अंगूठा उसके कंधे पर फेरते हुए पूछा। मैं उसकी मदद करना चाहती थी, चाहती थी कि वह अपने मन की बात मुझसे खुलकर कह सके। रूबी ने मेरी आँखों में देखा, उसकी बैंगनी पुतलियाँ बरामदे की हल्की रोशनी में चमक रही थीं।
"बस... मुझे कुछ सपने आ रहे हैं।" उसने घबराहट में अपने हाथ आपस में मल लिए और मुझे लगा जैसे उसने बात बदल दी हो। लेकिन मैं उस विषय पर और बात नहीं करना चाहता था जिससे वह असहज महसूस कर रही थी।
"सपने?" मैंने उससे पूछा, और उसे आगे बोलने के लिए प्रोत्साहित किया।
"हाँ। खैर, यादें ही हैं। उस रात की जब मेरी मृत्यु हुई थी। लेकिन हर बार जब मैं सोचती हूँ कि मुझे याद आ जाएगा कि क्या हुआ था, किसने मुझे बनाया था, तो कुछ मुझे रोक देता है। मानो मुझे यह सब जानने की इजाज़त ही न हो।" उसके कंधे थोड़े झुक गए और मैंने उसे और करीब खींच लिया, उसका सिर मेरे कंधे पर टिका हुआ था।
"शायद," मैंने उसकी वेनिला खुशबू को महसूस करते हुए कहा, "तुम्हें आखिरकार याद आ जाएगा। शायद ऐसा तब होगा जब तुम्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होगी।"
उसने अपना सिर घुमाया और मेरी तरफ देखा, उसके गुलाबी होंठ मुस्कुराते हुए किनारों से ऊपर की ओर मुड़ गए।
"शायद।" रूबी की निगाहें आसमान में घूमने लगीं, मानो दूर कहीं जवाब ढूंढ रही हों, वो जवाब जो मैं उसे देना चाहती थी। मुझे लगा कि अभी भी कुछ ऐसा है जो वो मुझसे छुपा रही है, लेकिन फिर भी, मैं इस मुद्दे पर ज़ोर नहीं देना चाहती थी।
"क्या विल्सन ने आपको बताया कि मैं आपको कहाँ ले जा रहा हूँ?" मैंने सोचा कि अब विषय बदलने का समय आ गया है।
"हाँ।" उसने अपनी चिंतित निगाहें मुझ पर टिका दीं। "लेकिन क्या यह आपके लिए सुरक्षित होगा?"
सुरक्षित? यह शब्द प्रासंगिक था। लेकिन मुझे पता था कि मुझे यह करना ही होगा, चाहे यह सुरक्षित हो या नहीं। "मैं ठीक रहूँगी। बस बहुत पास न जाऊँ।"
कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर रूबी ने मेरी तरफ दोबारा देखा। "तो तुम अपने आदमियों के पास वापस जाकर फ्यूज़ को मेरे बारे में नहीं बताओगे? तुम उन्हें टॉम्बस्टोन या विल्सन के बारे में नहीं बताओगे?"

मैंने अपना शरीर उसकी ओर मोड़ा और उसके हाथों को अपने हाथों में ले लिया। उसकी आँखों में चमक थी, जिसने मेरे दिल में एक टीस पैदा कर दी। मुझे बहुत दुख हुआ कि उसने मुझसे ऐसे सवाल पूछे, कि वह मेरे इरादों पर शक भी कर रही थी। लेकिन वह भी मेरी तरह जानती थी कि हम दुश्मन हैं और मैं उसके डर को समझती थी। मैंने उसके होंठों की कोमलता और उसके चेहरे की बनावट को निहारा।

"मैं इतनी दूर तक आया हूँ, तुम्हारे लिए सब कुछ कुर्बान किया है, और फिर यूँ ही सब कुछ बर्बाद कर दूँ, ऐसा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे साथ ऐसा कभी नहीं करूँगा। और भले ही मैं यह मानना पसंद न करूँ, मैं विल्सन के साथ भी ऐसा कभी नहीं करूँगा। मुझे उस बूढ़े आदमी के लिए थोड़ी हमदर्दी है।"

रूबी खिलखिलाकर हंस पड़ी, राहत से उसका शरीर ढीला पड़ गया। उसने अपनी उंगलियाँ मेरी बांह पर फिराईं, जिससे मेरे शरीर पर रोंगटे खड़े हो गए। मैंने उसकी ठुड्डी को अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़कर उसका सिर अपनी ओर उठाया। "लेकिन तुम्हें भी यही वादा करना होगा, कि तुम मेरा या विल्सन का ज़िक्र कभी दूसरों से नहीं करोगी। इससे न सिर्फ विल्सन खतरे में पड़ेगा, बल्कि तुम भी खतरे में पड़ जाओगी। उन्हें कभी पता नहीं चलना चाहिए।"

उसने सिर हिलाया। "मैं वादा करती हूँ। मैं अपनी मृत्यु तक हमारा रहस्य गुप्त रखूँगी।" उसके वादे से संतुष्ट होकर मैंने अपनी उंगलियाँ उसके चेहरे से हटा लीं। लेकिन क्या मैं सचमुच संतुष्ट थी? क्या मैं हमारी यात्रा के इस मोड़ से खुश थी? मुझे पक्का यकीन नहीं था।

"लेकिन, गाइ," उसने फुसफुसाते हुए कहा, जिससे मेरा ध्यान वापस उसकी ओर गया। "मैं उन्हें क्या बताऊँ? मुझे यकीन है कि वे मेरे अतीत और मैं यहाँ कैसे पहुँची, इसके बारे में पूछेंगे।"

मैंने गुस्से में अपने जबड़े भींच लिए। मैं पहले ही इस सवाल पर सोचते-सोचते कई रातें बेचैनी में बिता चुका था और मुझे जो सबसे अच्छा उपाय सूझा था, वह था झूठ बोलना। यही एकमात्र रास्ता था।

"पहले तो तुम उन्हें सच बताओगे, कि कैसे तुम्हारी मौत दुर्घटना में हुई और लड़ाई के दौरान तुम पुराने गोदाम के सामने जागे। तुम अकेले और भ्रमित थे। लेकिन जिस बात के बदले कि मैंने तुम्हें पाया, तुम उन्हें बताओगे कि तुम भाग निकले। तुम एक खाई में रेंगकर गए और झाड़ियों के नीचे छिप गए और जब तुम्हें लगा कि अब सुरक्षित है, तो तुम उस पुराने मिशन में पहुँच गए जहाँ तुम्हारा रूपांतरण हुआ था। तुम खरगोशों और चूहों का खून पीकर जी रहे थे। और जब तुम्हें लगा कि तुम काफी मजबूत हो गए हो, तो तुम अपने जैसे दूसरे लोगों की तलाश में निकल पड़े। उन्हें बताओ कि तुम घर जाना चाहते थे लेकिन अपने परिवार के विचारों से डरते थे, और तभी तुम्हें जादूगरों का समूह मिला।"

मुझे बेईमानी कभी पसंद नहीं थी, लेकिन जब बात जीवन और मृत्यु की हो, तो झूठ बोलना ही पड़ता है। और चूंकि मैं सरकार के एक अति-गुप्त विभाग का कप्तान था, इसलिए झूठ और लीपापोती की मुझे आदत हो गई थी। यही एकमात्र तरीका था जो मुझे आता था। और अब रूबी भी यही जानती थी— बड़े हित के लिए झूठ बोलना।

रूबी ने धीरे से अपने निचले होंठ को दबाया, मेरी कही बात को समझने की कोशिश की। उसने सहमति में सिर हिलाया और अपना हाथ मेरे हाथ में डाल दिया। उसने अपनी उंगलियाँ मेरी उंगलियों में फंसा लीं, अंधेरे में देखती रही, और मुझे लगा कि वह बाहर एक ऐसी दुनिया देख सकती है जो मैं नहीं देख सकता। हमने पूरी रात चुपचाप बैठे बिताई, गुजरते पलों को महसूस करते हुए, उनका आनंद लेते हुए, मानो यह इस धरती पर हमारी आखिरी रात हो। यह मेरे जीवन का सबसे खुशी भरा और सबसे दुखद पल था। एक सुखद और दुखद अंत।

इकत्तीस: रूबी

मैं और गाय घंटों तक पीछे के बरामदे में बैठे रहे, ठंडी हवा की आवाज़ सुनते रहे और तारों को टिमटिमाते देखते रहे। नए घर ले जाने से पहले यह हमारी आखिरी रात थी। मैं उससे बहुत कुछ कहना चाहती थी, जैसे कि मैं एक हाइब्रिड हूँ, आधी इंसान और आधी वैम्पायर, एक अजीबोगरीब प्राणी।

लेकिन इससे क्या फायदा होता? मुझे खुद भी इसका मतलब नहीं पता था। और अगर मैं उसे बता भी देती, तो क्या वो अपना मन बदल लेता और मुझसे अलग होने के बजाय मुझे अपने साथ जाने देता? शायद नहीं। मैं अब भी आधी वैम्पायर थी और हमारे बीच कभी कुछ नहीं हो सकता था। उसे बताने का कोई मतलब नहीं था, सिवाय इसके कि शायद चीजें और मुश्किल हो जाएं।

मैं उसे अपने दिल की बात बताना चाहती थी, कि उसके बिना मैं जी नहीं सकती। लेकिन शब्द गले में अटक गए। फिर से, कुछ भी कहने से कोई फायदा नहीं होता, बल्कि उसे और ज़्यादा तकलीफ होती, जितनी मैंने उसे पहले ही दे दी थी। मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी। उसने मुझे बचाने के लिए पहले ही बहुत कुछ सहा था और मैं उसे और ज़्यादा दुख नहीं देना चाहती थी। इसलिए बहुत संघर्ष के बाद, मैंने रात को खामोशी से बीतने दिया, और साथ बिताए बचे हुए थोड़े से समय का आनंद लिया।

पीछे के बरामदे में घंटों बैठे रहने के बाद, आखिरकार हम दुखी मन से अंदर चले गए। गाय अगली रात की यात्रा के लिए ट्रक की हालत देखने के लिए बाहर चला गया। उसने मुझसे कहा था कि मैं उसका इंतज़ार न करूँ, क्योंकि मुझे आराम करना चाहिए। हालाँकि मैं उसकी बात अनसुनी करके उसके लिए जागना चाहती थी, उसके साथ हर पल का आनंद लेना चाहती थी, लेकिन मेरा शरीर और मन थक चुका था। मुझे न सिर्फ़ अपने अजीबोगरीब वैम्पायर म्यूटेशन के बारे में बहुत कुछ बताया गया था, बल्कि मैं कई दिनों से लगातार ट्रेनिंग भी कर रही थी और अब इस थकान से और लड़ नहीं सकती थी।

मैंने नहाया और अपने बालों की एक लंबी चोटी बनाई, फिर वापस हॉल में निकली। मुझे बैठक में धीमी फुसफुसाहट सुनाई दी, लेकिन विल्सन की तीखी आवाज सुनकर मैं एकदम रुक गई।

“तुम मुझसे इसे छुपा नहीं सकते, स्टोन। मुझे पता है तुमने क्या किया है।” मैं जम गया, मेरे हाथ दीवार पर कसकर टिक गए।

“और मैंने क्या किया है?” गाय ने धीमी और कठोर आवाज़ में जवाब दिया। मुझे उनके बीच का तनाव स्पष्ट रूप से महसूस हो रहा था।

“आप नवजात शिशु से भावनात्मक रूप से जुड़ गए हैं। रूबी के साथ आपका एक ऐसा जुड़ाव रहेगा जैसा किसी और के साथ नहीं हो सकता।”

मेरा दिल बैठ गया। हे भगवान, ये तो रिश्ता बन गया! गाय ने खुद को मुझसे जोड़ लिया था। लेकिन कैसे?

फिर मुझे वो एकमात्र समय याद आया जब ऐसा हो सकता था और मैंने अपना माथा पीटने की इच्छा को रोका। वो मिशन वाली रात थी, वो रात जब उस भयानक पिशाच ने उस पर हमला किया था और मैंने गाय को अपना खून पिलाया था। लेकिन विल्सन ने कहा था कि बंधन सिर्फ खून के

आदान-प्रदान से कहीं बढ़कर होता है। उसने कहा था कि इसमें एक गहरा भावनात्मक जुड़ाव होता है। मैंने सोचा कि क्या गाय ने हमेशा मेरी परवाह की है, क्या उसके मेरे प्रति प्रेम ने उसे मुझसे इस तरह का बंधन बनाने दिया? हालाँकि यह विचार अविश्वसनीय था, मुझे कोई और तार्किक स्पष्टीकरण नज़र नहीं आया।

गाय ने हताशा से आह भरी। "क्या मेरे पास कोई और विकल्प था, विल्सन?"

मुझे अपराधबोध सताने लगा। यह गाइ की मर्ज़ी नहीं थी, क्योंकि मैंने ही उसे ठीक करने का फैसला किया था। मैंने ही जबरदस्ती अपना खून उसके मुंह में डाला था और यह मेरी ही गलती थी कि अब वह मुझसे बंध गया था। लेकिन मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था। वह मर रहा था...

मैं दरवाजे के चौखट से और करीब झुक गया।

“मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं। आपके पास कोई विकल्प नहीं था।” विल्सन की आवाज़ में फिर आरोप का लहजा आ गया। “लेकिन आपने उसे अपने साथ ले जाने का फैसला किया था। उसे फ्यूज़ से बचाने का।”

“शायद मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था,” गाय ने कहा, और उसके शब्द मुझे बहुत चुभे, लेकिन मैं चुप रहा। “पर मैंने कर दिया। अब मैं पीछे नहीं हट सकता।”

“मैं सहमत हूँ,” बूढ़े पिशाच ने उत्तर दिया। “अब पीछे नहीं हट सकते। लेकिन मैं तुम्हारी अनिश्चितता और झिझक को महसूस कर सकता हूँ। अपने फैसलों पर अब पछतावा मत करो, लड़के, खासकर तब जब मैं तुम्हें फिर से पसंद करने लगा था।”

गाय ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा, "बात वो नहीं है। बात ये है... मुझे नहीं पता, विल्सन। मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं उसे अभी छोड़कर नहीं जा सकता। जैसे मुझे उसके साथ रहना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए।"

गाइ की बातें सुनकर मेरा दिल खुशी से झूम उठा। हाँ! मैं चीखना चाहती थी। मेरे साथ रहो! उस इकलौते इंसान से बिछड़ने का ख्याल ही डरावना था जिसने मुझे सुरक्षित महसूस कराया था। लेकिन मैं चुप रही, यह सुनने के लिए कि वह आगे क्या कहेगा।

“क्या तुम उससे प्यार करते हो?” विल्सन ने पूछा। मेरे शरीर में गर्मी सी दौड़ गई, मेरी सांसें अटक गईं। लेकिन गाय ने कोई जवाब नहीं दिया।

“सुनो,” विल्सन ने आगे कहा। “तुमने जो किया है वह एक नेक काम है। मैं यह स्वीकार करना पसंद नहीं करता, लेकिन मैं तुम्हारे फैसले का सम्मान करता हूँ। लेकिन अब तुम्हें उसे जाने देना होगा। उस पर वह ज़बरदस्ती मत करो जो मैंने कई साल पहले नोरा पर की थी।”

नोरा। मुझे विल्सन की वो कहानी याद आ गई जो उसने अपने इंसान के बारे में सुनाई थी। वो इंसान जिससे उसने बहुत पहले प्यार किया था और जिसके साथ उसका गहरा रिश्ता बन गया था। क्या हमारी मौजूदा स्थिति भी कुछ ऐसी ही है?

“मैंने एक ही रात में उसका भाग्य और उसकी मृत्यु तय कर दी,” विल्सन ने अपनी बात दोहराते हुए कहा। “रूबी के साथ ऐसा मत करो, वह इससे कहीं बेहतर की हकदार है। वह अपने जैसे लोगों के साथ एक अच्छा जीवन जीने की हकदार है। अगर वह तुमसे जुड़ गई, तो वह भागती-फिरती जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो जाएगी और हमेशा निशाने पर रहेगी। वह डर और उदासी भरी जिंदगी जिएगी। बस मुझसे वादा करो कि तुम उसे जाने दोगे।”

सन्नाटा गहरा छा गया और मुझे अपने ही दर्द भरे दिल की धड़कन अपने कानों में सुनाई देने लगी।

“विल्सन, आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है,” गाय ने मेरी निराशा के बीच जवाब दिया। “मैं उसे जाने दूंगा। मैं उसे कभी नुकसान नहीं पहुंचा सकता।”

विल्सन ने गला साफ किया। “मैं समझता हूँ, रूबी में कुछ तो खास बात है। मुझे भी ऐसा ही लगता

है। कुछ ऐसा है जो मुझे उसे अपनी शरण में लेने और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन हम सबके लिए यही बेहतर है कि हम अपने-अपने रास्ते जाएँ और इन सब बातों को भुला दें। हमें अतीत में उलझे नहीं रहना चाहिए, बल्कि भविष्य की ओर देखना चाहिए।"

मुझे यह बात मानने में बहुत बुरा लग रहा था, पर विल्सन सही था। हमें आगे बढ़ना था और अपने अतीत को पूरी तरह से भुला देना था, लेकिन फिर भी यह बात नहीं बदली कि मैं यहाँ अपना समय समाप्त नहीं करना चाहती थी। मेरे कांपते होंठों से एक कोमल, दुख भरी साँस निकली और दोनों आदमी मानो मेरी पीड़ा को सुन कर रुक गए, लेकिन मेरी राहत के लिए गाय ने बोलना शुरू किया।

"मैं वादा करता हूँ। सब कुछ योजना के अनुसार होगा। जब तक वह टॉम्बस्टोन के द्वार में प्रवेश नहीं कर लेती, मैं उसे अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दूँगा।"

"अच्छा। क्या आपको मेरे सभी निर्देश मिल गए हैं?"

"हाँ।"

"वहां पहुंचने के बाद, आपको इस बात का पूरा ध्यान रखना होगा कि कोई आपको देख न सके," विल्सन ने चेतावनी दी।

"बेशक।" गाय की आवाज में एक गंभीर उदासी थी, जो मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

मैंने विल्सन को अपनी सीट पर थोड़ा हिलते हुए सुना। "और क्या मैं आप पर भरोसा कर सकता हूँ कि आप हब का स्थान कभी प्रकट नहीं करेंगे? क्या मेरा यह मानना सही है कि आप इसे हमेशा अपने तक ही सीमित रखेंगे?"

"मेरी कसम," गाय ने गरजते हुए कहा।

"अच्छा। क्योंकि अगर तुमने कभी कोई बात लीक कर दी, तो न केवल हमारी प्यारी रूबी गंभीर खतरे में पड़ जाएगी, बल्कि एक ऐसा भयंकर युद्ध छिड़ जाएगा, जिसमें खून-खराबा बेहिसाब होगा। ऐसा युद्ध जैसा इस दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा होगा। और इसकी सारी ज़िम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर होगी।"

विल्सन के शब्दों की गंभीरता से मेरा गला सूख गया। अब तक मुझे यह एहसास नहीं था कि मेरी उपस्थिति मात्र से कितना बड़ा खतरा पैदा हो सकता है।

उन्होंने आगे कहा, "टॉम्बस्टोन एक ततैया के छत्ते की तरह है। और आप वह भालू नहीं बनना चाहेंगे जो इसे हिलाने के लिए जिम्मेदार हो।"

गाइ ने कराहते हुए खड़े होने की कोशिश की, उसके बूटों की जानी-पहचानी आवाज़ टूटी-फूटी स्पेनिश टाइलों पर गूंज उठी। "मैं समझता हूँ। आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं।"

मैं चुपचाप पीछे हट गई और उस कमरे में चली गई जिसे मैं और गाय साझा करते थे। मैं बिस्तर पर बैठ गई और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया, मेरी नसें बुरी तरह उलझी हुई थीं। मैंने अभी-अभी अपनी पिशाची शक्तियों और अपनी अलग पहचान को जाना था, और अब मुझसे एक ऐसे समूह में शामिल होने की उम्मीद की जा रही थी जो शायद सदियों पुराना था? डर मेरे दिल में घर कर गया क्योंकि मैं सोच रही थी कि क्या मुझे स्वीकार किया जाएगा।

मैं झुकी और बिस्तर के नीचे हाथ डालकर अपनी सबसे कीमती चीज़, अपने माता-पिता की तस्वीर निकाली। मैंने उन खुश चेहरों को देखा और सोचने लगी कि अगर मैं न मरी होती तो मेरी ज़िंदगी कैसी होती। मैंने सोचा कि अगर जॉन ने मुझसे कभी रिश्ता न तोड़ा होता और मैं तूफ़ान में गाड़ी न चलाती तो क्या होता। मैं खासकर यह सोच रही थी कि मैं आज रात क्या कर रही होती। मैं तो किसी पिशाच के गुप्त घर में वेयरवुल्फ और चुड़ैलों के समाज में शामिल होने की ट्रेनिंग तो बिल्कुल नहीं ले रही होती, यह पक्का था।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और कल्पना की कि मैं अपने माता-पिता के घर में हूँ, अपने पिता के

साथ बरामदे के झूले पर बैठी हूँ और मेरी माँ अपना मशहूर मीटलोफ पका रही हैं। मैंने कल्पना की कि मेरे पिता का हाथ मेरे कंधे पर है और ओवन में पक रहे खाने की खुशबू आ रही है, ठंडी रात की हवा चल रही है और मेरे पैर झूल रहे हैं, जो एरिजोना की चिलचिलाती धूप से राहत दे रही है, जिसकी मुझे आदत हो गई थी।

धूप।

मुझे ऐसा लग रहा था मानो सूरज की किरणें मेरी त्वचा को गर्म कर रही हों, और यह जानकर मेरा दिल बैठ गया कि अब मुझे यह एहसास कभी नहीं मिलेगा। मैं फिर कभी सूर्योदय या सूर्यास्त नहीं देख पाऊँगी। मैं फिर कभी अपनी माँ के हाथ का बना मीटलोफ नहीं खा पाऊँगी। मैं फिर कभी अपने पिता के साथ बरामदे में झूला नहीं झूल पाऊँगी। एक सिसकी मेरे गले से निकल आई, लेकिन दरवाजे पर दस्तक होने से पहले मैं उसे बोल नहीं पाई।

"रूबी?" विल्सन ने गहरी और विनम्र आवाज़ में पूछा। "क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

"बेशक।" विल्सन के दरवाजा खोलते ही मैं सीधा बैठ गया और अपनी भावनाओं को काबू में करने की कोशिश करने लगा।

"गाइ आपकी गाड़ी को यात्रा के लिए तैयार कर रहा है। उसने आपसे कहा है कि आप उसका इंतजार न करें।"

गाइ के बार-बार कहने पर मुझे अपनी आँखें घुमाने का मन तो हुआ, लेकिन मैंने सिर हिला दिया। विल्सन अंदर आया और मेरे बगल में बिस्तर पर बैठ गया। उसने मेरी गोद में रखी उस तस्वीर को देखा, जिस पर मैं अपने परिवार के प्यारे चेहरों को सहला रही थी। हम दोनों चुपचाप तस्वीर को देखते रहे, उस पल की उदासी गहरी और गंभीर थी। मैंने तस्वीर को पलटकर तकिए के नीचे रख दिया और विल्सन की ओर मुड़ गई।

"विल्सन, क्या तुम हमेशा यहीं अकेले रहोगे?" उम्मीद ने मेरे सीने को थाम लिया कि मैं उसे फिर कभी देख पाऊँगी। विल्सन मुस्कुराते हुए, सोचते हुए अपनी ठुड्डी सहलाने लगा।

"मेरी लाश को इस घर से घसीटकर ले जाना पड़ेगा। मैं कभी नहीं जाऊंगा। मैं सिर्फ लड़कर ही मरूंगा।" उसकी ज़िद पर मुझे हल्की सी मुस्कान आई और मेरा दिल खुशी से भर गया।

"मुझे नहीं पता तुम्हारे बिना मैं क्या करूँगी।" मैं अपनी कमीज़ के किनारे से खेलने लगी, मेरी उंगलियाँ काँप रही थीं।

"तुम अच्छा करोगी, रूबी।" विल्सन ने मेरी पीठ थपथपाई। "तुम एक ताकतवर वैम्पायर हो और जो भी रास्ता चुनोगी उसमें बहुत आगे जाओगी।"

लेकिन अगर वे मुझे स्वीकार नहीं करते तो? मैं कहाँ जाऊँगा?

विल्सन बिस्तर पर मेरी ओर सरक गया। "चिंता मत करो। तुम्हें स्वीकार कर लिया जाएगा। जैसा मैंने कहा, चुपचाप रहना और मेरी पुरानी दोस्त पैंडोरा से बात करना। वह तुम्हें तुम्हारे नए जीवन में मार्गदर्शन देगी और तुम्हारे सभी सवालों के जवाब देगी। लेकिन मेरे बारे में उसे बताने में सावधानी बरतनी होगी। टॉम्बस्टोन शहर में मुझे ज़्यादा पसंद नहीं किया जाता। तुम्हें कोई ऐसा गुप्त शब्द चाहिए जो सिर्फ़ वही समझ सके..." विल्सन ने अपनी कनपटी रगड़ी और कुछ देर बाद बोला, "नोरा।"

मैंने उसकी पूर्व प्रेमिका का नाम सुनकर प्रश्नवाचक भाव से अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

"हाँ।" उसने अपने विचारों की पुष्टि करते हुए सिर हिलाया। "बस इतना ही काफी है। नोरा को बता दो, वो समझ जाएगी।"

विल्सन के दयालु शब्द उसके भीतर से निकलकर मुझ तक पहुँच गए, उसका दिलासा और स्वीकृति गहरी और निश्चित थी। मैंने सिर हिलाया और उस बूढ़े पिशाच की आँखों में देखा, जहाँ

मुझे अपना ही प्रतिबिंब दिखाई दिया।
यह सोचकर मेरा दिल टूट रहा था कि यह हमारी आखिरी रात होगी, अब तक का मेरा सफर किसी चित्र पुस्तक के पन्नों की तरह मेरी आंखों के सामने कौंध रहा था। मैंने सोचा कि मैं कुछ ही दिनों में कितनी दूर आ गई थी, उतार-चढ़ाव, मेरी ट्रेनिंग और सबसे बढ़कर, गाय। भावनाओं और यादों के सैलाब से मेरा दिल मानो फटने वाला था।
"विल्सन, मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी।" मैंने अपने गुरु की ओर देखा, आँखों में उठने वाले आँसुओं को रोकने की कोशिश करते हुए। मैं रोऊँगी नहीं।
"मुझे भी तुम्हारी बहुत याद आएगी, रूबी। काश मैं तुम्हारे लिए और कुछ कर पाता, और समय मिल पाता।" विल्सन ने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया। "लेकिन मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहता हूँ: अतीत के बारे में कभी मत सोचो, सिर्फ भविष्य की ओर देखो। तुम्हें कई फैसले लेने होंगे और कई चुनौतियों का सामना करना होगा, लेकिन मैं पूरी ईमानदारी से कह सकता हूँ, रूबी कार्टर, तुम महान बनोगी।"
मेरा दिल खुशी से भर उठा। "धन्यवाद विल्सन। तुम्हारे बिना मैं यह सब नहीं कर पाता। या गाय के बिना भी नहीं। मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ।"
"मुझे धन्यवाद मत दो," विल्सन ने मेरी ओर इशारा करते हुए फुसफुसाते हुए कहा। "मुझे तो तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए।"
मैंने अपना सारा ध्यान उस पर केंद्रित किया, यह सोचते हुए कि मैंने ऐसा क्या किया होगा जिससे वह मेरा आभारी हो। मानो मेरे मन की बात जान चुका हो, विल्सन ने जवाब दिया।
"मैं बहुत दिनों से अकेला था।" उसका चेहरा सपनों में खोया हुआ था, जैसे कहीं खोया हुआ हो। "मैं लगभग भूल ही गया था कि जीवन का असली मतलब क्या होता है। डर में जी रहा था, अपने संदेहों को खुद पर हावी होने दे रहा था। मैं लगभग भूल ही गया था कि खुशी क्या होती है।" वह मेरी तरफ मुड़ा। "और तुमने मुझे याद दिला दिया। सूरज की किरण की तरह, तुमने मुझे फिर से हंसना, खुद का आनंद लेना याद दिलाया। मुझे तुम्हारे साथ बिताए पल बहुत याद आएंगे।"
खुशी मेरे भीतर ऐसे छा गई जैसे जन्मदिन के केक पर जगमगाती मोमबत्तियाँ और मेरे होंठों पर मुस्कान आ गई। मैंने विल्सन का हाथ पकड़ा और उसे दबाया, इस उम्मीद में कि जब समय आएगा और मुझे टॉम्बस्टोन में दाखिला मिल जाएगा, तो वहाँ विल्सन जैसे और भी लोग होंगे। ऐसे लोग जिन्हें मैं अपना परिवार कह सकूँ। ऐसे लोग जिनकी मैं परवाह कर सकूँ और जिन पर भरोसा कर सकूँ। लेकिन मैं जानती थी कि मुझे उस बूढ़े पिशाच जैसा दूसरा कभी नहीं मिलेगा।
"ठीक है, बेटा।" विल्सन बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। "कल रात बहुत व्यस्त रहने वाली है और तुम्हें आराम की ज़रूरत है।"
मैंने सिर हिलाया और लेटकर खुद को कंबल से ढक लिया। विल्सन ने लाइट बंद की और कुछ पल दरवाजे पर खड़ा रहा। "याद रखना, रूबी। बीते हुए कल के बारे में मत सोचो, सिर्फ भविष्य की ओर देखो।"
मैंने सिर हिलाया। "ठीक है, विल्सन। शुभ रात्रि।" उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और मैं कंबल में दुबक गई, आने वाले दिनों के बारे में मेरे मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। मानो मुझे पहले इसका एहसास न हुआ हो— जबकि मुझे कई बार, बार-बार इसका एहसास हुआ था— एक विचार बार-बार मेरे मन में आ रहा था।
मैं फिर कभी इंसान नहीं बन पाऊंगा।

बत्तीस: रूबी

टैप। टैप। टैप।

मेरे माथे पर कुछ टपकने से मैं चौंक गया। मैंने पलकें झपकाकर ठंडे तरल को अपनी आँखों से हटाया और पलकें उठाकर देखा तो चारों ओर बारिश से भीगी हुई टूटी-फूटी धातु और चमकती रोशनी की दुनिया दिखाई दी।

टैप। टैप। टैप।

टूटे हुए विंडशील्ड से पानी रिसकर मेरे चेहरे पर टपकने लगा।

पेट्रोल की गंध मेरी नाक में घुस गई। मैं खांसने और हांफने लगा, मुंह से पानी थूकने लगा और ऐसा लगा जैसे हजारों तेज धार वाले ब्लेड मेरी त्वचा को काट रहे हों, दर्द मेरे पूरे शरीर में फैल गया, मेरी छाती जकड़ गई और सांस फूलने लगी।

मैंने उठने की कोशिश की, हिलने-डुलने की कोशिश की, लेकिन मैं जकड़ा हुआ था। मैंने मदद के लिए पुकारने की कोशिश की, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे मेरा मन और शरीर आपस में जुड़े हुए नहीं हैं। मैं बस वहीं पड़ा रहा, दर्द से बेहाल।

समय का कोई महत्व नहीं रह गया था, मैं बेहोशी की हालत में पहुँचता-जागता रहा, दर्द असहनीय था। लेकिन मेरे दिमाग को घेर रहे अंधेरे के बीच, मुझे धातु के घिसने की आवाज़ धुंधली-धुंधली याद है, राहत की एक कराह। मुझे वह स्टील याद है जिसने मुझे जकड़ रखा था, हिल रहा था, मेरे शरीर में दर्द भर रहा था मानो मुझे टुकड़े-टुकड़े कर रहा हो। मैं चीख उठा जब ठंडे हाथ मेरे नीचे सरके और मुझे मेरी धातु की कब्र से बाहर निकाला। मैं मानो हवा में तैर रहा था, मलबे से बाहर खुले में, चाँदनी एक पेड़ की शाखाओं से छनकर आ रही थी। गाड़ियों की गाड़ियों की पीली और काली बूँदें मेरी नज़र को धुंधला कर रही थीं।

ठंडी बाहें मुझे जकड़कर कसकर पकड़ लिया। लेकिन, अजीब बात है, वे बाहें सूती चादरों और कंबलों की गर्माहट में बदल गईं। एक तकिया और— नहीं, रुको!

होश अचानक से आया। मैं सपना देख रही थी। मेरी पलकें झपकने लगीं, मानो खुलने ही वाली हों। मुझे महसूस हुआ कि मैं बिस्तर पर हूँ।

नहीं। नहीं। नहीं! मैंने जागने से लड़ते हुए अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। सपने में बने रहने के लिए संघर्ष कर रही थी, अपने रचयिता को देखना चाहती थी। मैंने विल्सन द्वारा सिखाई गई बातों को आजमाया और अपने मन को शांत किया, खुद को यादों में डूबने दिया, दुर्घटनास्थल के अंधेरे और धुंध में डूबने दिया।

ठंडी बाहें मुझे चारों ओर से घेरे हुए थीं, मुझे कसकर पकड़े हुए थीं। मजबूत, बेहद मजबूत बाहें।

हाँ, यही है! वो पल जिसे मैं याद करने की बहुत कोशिश कर रहा था!

लेकिन मेरी कमजोर आँखें खुल नहीं पा रही थीं, यह बताने के लिए कि मुझे किसने पकड़ रखा है, मेरी पलकें इतनी भारी थीं। मेरा शरीर सुन्न और ठंडा था।

मैं मर रहा था, मेरे शरीर से जीवन तेज़ी से निकल रहा था, मेरी आत्मा क्षीण हो रही थी। लेकिन मुझे पता था कि मुझे कुछ करना है, कुछ पता लगाना है।

दुर्भाग्यवश, मैं अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी, विचार आते ही गायब हो जाता था। अंधेरा

मुझे पुकार रहा था, लुभा रहा था, आकर्षित कर रहा था। मैं उससे जूझ रही थी, सांस लेने के लिए, जीने के लिए संघर्ष कर रही थी। लेकिन मृत्यु की उंगलियां मेरे दिल को धातु के फंदे की तरह जकड़ रही थीं, निचोड़ रही थीं, दबा रही थीं। इससे पहले कि मैं मृत्यु के अंधकारमय आह्वान के आगे झुक जाती, मैंने आखिरी बार अपनी पलकें उठाईं, आंखों की एक जोड़ी देखकर चौंक गई, कोमल भूरी आंखें मुझे नीचे देख रही थीं। वे जानी-पहचानी, दयालु आंखें थीं। इससे पहले कि मैं कुछ सोच पाती, मेरी निगाहें धुंधली हो गईं और मेरे सामने का दृश्य अंधकार में डूब गया। सुन्नता। कुछ नहीं।

हकीकत एक बार फिर मेरे दिमाग में कौंध गई, आँखें खुलते ही मैंने देखा कि जिस कमरे में मैं सोया था वह पूरी तरह अस्त-व्यस्त था। मैं झट से उठ बैठा, सीने को पकड़ लिया, साँसें तेज़ चल रही थीं। "धत् तेरे की!" सपना टूटने की निराशा में मैंने बिस्तर पर मुक्का मारा। गाय फर्श पर बिछे अपने पलंग पर करवट बदलते हुए बुदबुदाया। मैं जम गई, अपना मुंह कसकर बंद कर लिया, उसे जगाना नहीं चाहती थी, मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मुझे यकीन था कि वह सुन सकता है। लेकिन राहत की बात यह थी कि वह करवट बदल कर फिर से नींद की हल्की सांसें लेने लगा। मैंने एक लंबी आह भरी, लेकिन मन ही मन अपने दिमाग को कोसने लगी।

काश मैं एक मिनट, एक पल और रुक पाती, ताकि मैं अपने रचयिता को याद कर पाती? मुझे सपने में देखी आँखें याद आईं और वे किसी तरह जानी-पहचानी और सुकून देने वाली लग रही थीं। मैंने उन आँखों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की, यह देखने की कि मुझे अपनी ठंडी बाहों में किसने थाम रखा है। लेकिन अफसोस, वह याददाश्त चाँद ग्रहण की तरह धुंधली पड़ गई, उस छोटे से कमरे की ठंडक ने उसकी जगह ले ली, मानो मेरे शरीर को कंपा दिया हो।

मैंने अपनी बाहों को रगड़ा, अपनी ही त्वचा में अजीब सा महसूस हो रहा था, बेचैनी रेंगते कीड़ों की तरह मुझ पर हावी हो रही थी। मैं या तो अपने रचयिता को याद करना चाहती थी या फिर सब कुछ भूल जाना चाहती थी। मेरे चिढ़ाने वाले सपने मुझे परेशान कर रहे थे, और मैं बस उनसे दूर जाना चाहती थी, अपनी आने वाली यात्रा की चिंता से दूर जाना चाहती थी— अब बस कुछ ही घंटे बचे थे। मैं अपने दिमाग से बाहर निकलना चाहती थी, भले ही थोड़ी देर के लिए ही सही।

हालांकि मुझे पता था कि यह एक जोखिम भरा कदम है, फिर भी मुझे ताज़ी हवा की ज़रूरत थी। मैं उठा और विल्सन के जागने से पहले ही, पुराने फार्महाउस से बाहर निकल गया, सामने के दरवाजे के हर कुंडी को सावधानी से खोलते हुए। मैं शहर की ओर जाने वाली लंबी सड़क पर तेज़ी से चल पड़ा, धुंधली संध्या में।

मैं शहर की ओर चल पड़ी, यह सोचकर कि शायद मैं अपने जीवन के उन दो पुरुषों के लिए कोई उपहार ले आऊं। उन्होंने मेरे लिए बहुत कुछ किया था और मुझे उनकी दयालुता का बदला चुकाना था। और वैसे भी, यह मेरे दिमाग को तरोताज़ा करने का एक शानदार अवसर होगा।

मैं टक्सन से कुछ ही घंटों की दूरी पर पली-बढ़ी थी और अपनी माँ के साथ कई बार वहाँ घूमने गई थी। मुझे शहर की ग्रिड जैसी गलियों और खरीदारी के प्रमुख स्थानों की अच्छी जानकारी थी, इसलिए मैं बिजली की तेज़ी से शहर की ओर भागी, विल्सन और गाय के जागने से पहले वहाँ पहुँचकर वापस आना चाहती थी। मैं सोच रही थी कि FUSE के एक कैप्टन और दो सौ साल पुराने पिशाच को आखिर क्या चाहिए होगा।

मैं शहर के पुराने रास्तों पर खुद को पाया, जर्जर मिट्टी की इमारतों के पास से रेलगाड़ी गुजर रही थी। मुझे फनल केक और रेस्तरां के स्वादिष्ट, गाढ़े खाने की खुशबू आ रही थी। अब जब मुझे पता चल गया था कि मैं एक हाइब्रिड हूँ, तो मैं सोच रहा था कि क्या मैं स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले पाऊँगा, लेकिन मेरा पेट गुड़गुड़ा रहा था। दूसरे पिशाच का खून पीने के बाद से, मुझे भूख बिल्कुल नहीं लग रही थी।

बार और क्लबों में लोगों की भीड़ उमड़ रही थी, छोटी दुकानों के दरवाजों पर लगी घंटियाँ ग्राहकों की चहल-पहल से खुशी से बज रही थीं। कुछ पल के लिए ही सही, मैं भूल गया कि मैं अब इंसान नहीं हूँ, इस हलचल भरे शहर का इतना आनंद ले रहा था।

मैं फोर्थ और सिक्स्थ के कोने पर रुक गई, जहाँ कुछ लोग एक अकेले आदमी को गिटार बजाते देख रहे थे। गिटार का डिब्बा ज़मीन पर खुला पड़ा था, ताकि लोग उसे दान दे सकें। मैं एक तरफ खड़ी होकर उस मधुर धुन को सुन रही थी और अपने हाथों को अपने चारों ओर लपेटकर संतुष्ट महसूस कर रही थी। गाय के साथ बिताए पलों के अलावा, मुझे पहली बार ज़िंदा होने का एहसास हुआ... खैर, ऐसा लगा जैसे हमेशा से ज़िंदा हूँ, और मैं अपने बुरे विचारों और डरावनी यादों से खुशी-खुशी दूर हो गई थी।

मैं वहाँ लोगों के बीच खड़ा था, शुक्रवार की शाम की सैर का आनंद ले रहा था। शहर की जगमगाती रोशनी ऊपर चमक रही थी और संगीत की मधुर धुनें मुझे आनंद के एक आवरण में लपेटे हुए थीं। मेरे मन के किसी कोने में मुझे पता था कि मैंने जो किया वह गलत था; मुझे फार्महाउस की सुरक्षा छोड़कर बाहर नहीं निकलना चाहिए था। मैं जानता था कि शहर में घूमना, लोगों से मिलना एक खतरनाक कदम था, लेकिन मैं उस जीवंत माहौल में खो जाने से खुद को रोक नहीं पाया। यह शायद आखिरी बार होगा जब मैं इस तरह के सुख का आनंद ले पाऊंगा।

उस आदमी ने अपना गीत समाप्त किया और भीड़ ने तालियाँ बजाईं, फिर वे अगले स्टोर या आकर्षण की ओर बढ़ गए। एक आवारा बिल्ली उस आदमी के पास आ गई और वह झुककर उसके गंदे बालों को साफ करने लगा। मैंने टिप देने के बारे में सोचा, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास पैसे नहीं हैं। और तभी मुझे एक विचार आया।

मैं यहाँ कर क्या रही थी? मैं इतनी बेवकूफ कैसे हो गई? मेरे पास पैसे नहीं थे, तो मैं उन आदमियों के लिए तोहफा कैसे खरीद सकती थी, और मैंने अपनी पूरी जिंदगी में कभी कुछ चुराया भी नहीं था। सिवाय उस लिप ग्लॉस के जो मैंने चौदह साल की उम्र में चुराया था, लेकिन खैर, कौन गिन रहा था?

पूरी यात्रा व्यर्थ गई। मैंने निराशा में आह भरी और मान लिया कि मुझे जल्दी से विल्सन के घर वापस जाना होगा। अगर सुबह उठने पर उन्हें पता चला कि मैं वहाँ नहीं हूँ, तो वे बहुत नाराज़ होंगे।

भागने से पहले मैंने उस आदमी और उसकी बिल्ली को आखिरी बार देखा, और तभी मैं स्तब्ध रह गया, मेरे दांत दर्द से आपस में भींच गए। मैंने पलकें झपकाईं और देखा कि मैं सीधे एक ऊंचे धातु के पार्किंग मीटर से टकरा गया था। मेरे शरीर की ताकत से मीटर अपनी जगह से उखड़ गया, बोल्ट जमीन से निकल गए और मीटर एक जोरदार धातुई धमाके के साथ फुटपाथ पर जा गिरा। टक्कर की आवाज अनसुनी नहीं रही, उसकी गूंज सड़कों पर गूंजी और मेरे शरीर में भी कंपन पैदा हुई।

मैं अपनी मूर्खता पर जम कर रुक गया और मुझे एहसास हुआ कि जल्दबाजी में मैं अपनी क्षमता पर नियंत्रण रखना भूल गया था। बिल्ली भाग गई। अकेला संगीतकार और कुछ राहगीर यह देखने के लिए रुक गए कि क्या हुआ है। मेरी पहली प्रतिक्रिया तो तेजी से भागने की थी, लेकिन इससे और भी ज्यादा ध्यान आकर्षित होता, इसलिए मैं धीरे-धीरे कुछ कदम पीछे हट गया। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो गश्त लगा रहे सैनिकों के एक समूह और काले कोट पहने एक आदमी की घूरती निगाहें मेरे सामने थीं। जाहिर है, वे FUSE सैनिक थे, जैसा कि उनकी वर्दी पर लगे बैज से पता चल रहा था। ओह, धिक्कार है!

वे लोग सड़क के ठीक सामने, अगले कोने पर, एक सिगरेट की दुकान के सामने तैनात थे। उनकी संदेह भरी निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं और वे दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे। काले कपड़े पहने आदमी का चेहरा मुझे दिखाई नहीं दे रहा था; वह हुड के नीचे छिपा हुआ था। लेकिन सैनिकों के

माथे पर चिंता साफ झलक रही थी और उनकी धीमी बातचीत में मैंने "दुर्भाग्यपूर्ण" शब्द सुना। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा क्योंकि मुझे लगा कि कहीं वे मेरे बारे में तो नहीं बात कर रहे हैं।
मैंने मुस्कुराते हुए ऐसा दिखाया मानो दुनिया में कुछ भी गलत नहीं हुआ हो, और यथासंभव सामान्य तरीके से विपरीत दिशा में चल दिया।
सांस लो। बस सांस लो। सामान्य व्यवहार करो।
मैं एक-एक कदम बढ़ाते हुए ध्यान केंद्रित कर रही थी, मेरी बाहें सुस्ती से बगल में लटक रही थीं, फिर भी सैनिकों की मौजूदगी का एहसास मुझे सता रहा था। मुझे लगा कि कहीं वे मेरा पीछा तो नहीं कर रहे, लेकिन पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि मुझे पता था कि इससे शक पैदा हो जाएगा और मैं दोषी साबित हो जाऊंगी। मैंने नाक से सांस ली और मुंह से छोड़ी, इस उम्मीद में कि मैं किसी की नजरों में आए बिना बच निकलूँगी।
मैंने अगली गली में तेज़ी से मोड़ लिया और खुद को अंधेरे में छिपा लिया। मैंने हिम्मत करके पीछे देखा और वाकई, तीन सैनिक और काला वस्त्रधारी आदमी मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। मैंने आसपास का जायज़ा लिया और पाया कि मैं अब एक रिहायशी इलाके में चल रहा था, गली में मेरे और पीछा करने वालों के अलावा कोई नहीं था। मुझे एहसास हुआ कि मैं बड़ी मुसीबत में हूँ, इसलिए मैंने अपनी चाल तेज़ कर दी। मैंने अपना ध्यान पीछे की ओर केंद्रित किया और मेरी चाल जितनी तेज़ होती गई, सैनिकों के जूतों की आवाज़ उतनी ही तेज़ होती गई। वे मेरे करीब आते जा रहे थे।
अब बचने का एकमात्र रास्ता मेरी बिजली की गति की क्षमता का उपयोग करना था। एक पल भी सोचे बिना, मैं पलक झपकते ही वहां से भाग गया।
शहर की जगमगाहटें तेज़ी से गुज़रती जा रही थीं और मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और साँसें तेज़ हो रही थीं। मैं तंग गलियों और संकरी रास्तों से होकर गुज़र रहा था, घनी आबादी वाले इलाकों से बचता हुआ। कुत्ते भौंक रहे थे और गाड़ियाँ तेज़ी से गुज़र रही थीं, लेकिन मेरा ध्यान बस यही था कि मैं अपनी वजह से पैदा हुई मुसीबत से जितना हो सके दूर रहूँ। हे भगवान, अगर गाय को पता चल गया तो वो मुझे मार डालेगा। और विल्सन? मैं लगभग कल्पना कर सकता था कि वो पिता समान नाराज़गी दिखाएगा और उंगली हिलाएगा। हे भगवान, मैं कितना बेवकूफ था!
एक पुराने गोदाम के पीछे कूड़ेदानों के ढेर के पास से मैं तेज़ी से गुज़रा, तभी काले कपड़ों में लिपटा एक आदमी हवा में उछलता हुआ मेरी ओर आया, उसकी दहाड़ भयानक और डरावनी थी। मुझे यह सोचने का भी समय नहीं मिला कि वह इतनी जल्दी मेरे पास कैसे पहुँच गया, इससे पहले ही मैं झुककर ज़मीन पर लुढ़कने लगा ताकि उसकी टक्कर से बच सकूँ। मैंने चारों ओर देखा तो पाया कि वह अकेला था, सैनिक कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। यह आदमी कौन था?
डर के मारे मैं फिर से भागने लगा और बड़ी आसानी से एक ऊंची ईंट की दीवार पर चढ़ गया। दीवार के उस पार उड़ते हुए मैं एक सपाट छत पर कूद गया। इतनी ऊंची छलांग लगाने की अपनी क्षमता पर गर्व करने का समय ही नहीं था, बस सहज प्रवृत्ति से काम लेते हुए मैं हांफता हुआ एक छत से दूसरी छत पर चढ़ता गया। मुझे लगा कि अगर मैं ऊपर ही रहूं और उसकी पहुंच से दूर रहूं तो काले कपड़े पहने उस आदमी से बच जाऊंगा। लेकिन जैसे ही मुझे लगा कि मैं बच गया हूं, मुझे अपने पीछे किसी अंधेरी शक्ति का आभास हुआ। मुड़कर देखा तो वही काले हुड वाला अजनबी फिर से छत पर मेरे सामने खड़ा था। धिक्कार है!
वह मेरी ओर झपटा, उसका चेहरा अंधेरे में डूबा हुआ था, उसका मांसल शरीर तनावग्रस्त और हमले के लिए तैयार था।
ये कौन था? उसकी फुर्ती और चपलता देखकर तो लगता ही नहीं था कि वो इंसान था। क्या वो पिशाच था? नहीं, अगर होता तो मुझे उसमें से केले के हलवे जैसी तेज़ गंध आती। उसमें से एक

अजीब सी गंध आ रही थी, मैली-कुचैली, हालांकि मैं समझ नहीं पा रहा था कि वो किस चीज़ की थी।

एक बार फिर, मैंने ठीक समय पर अपनी स्थिति बदली और उसके हमले से बच गया। मैंने छत से छलांग लगाई और एक ज़ोरदार धमाके के साथ वॉलमार्ट सुपरसेंटर के पार्किंग लॉट में जा गिरा, जहाँ बड़े नीले साइनबोर्ड से एक अजीब सी चमक फैल रही थी। मैंने नीचे देखा तो मेरे पैरों से फुटपाथ पर बड़े-बड़े गड्ढे बन गए थे और ऊपर देखा तो दुकानदार मेरी अचानक हुई मौजूदगी पर चीख रहे थे। लोग अपनी शॉपिंग कार्ट छोड़कर इधर-उधर भागने लगे और रात के अंधेरे में गायब हो गए।

मेरा पीछा करने वाला काला आदमी मेरे पास आकर खड़ा हो गया, मुझसे कुछ कदम आगे आकर आमने-सामने की मुद्रा में आ गया, उसकी झुकी हुई पीठ आगे की ओर निकली हुई थी और उसके असामान्य रूप से बड़े पैर मुड़े हुए थे। उसका हांफता हुआ शरीर बेतहाशा सांसों के साथ ऊपर-नीचे हो रहा था।

"क्या तुम पूरी रात यही करते रहोगे?" मैंने लड़ने की मुद्रा में खड़े होकर पूछा। "या मुझे तुम्हें अभी मारना पड़ेगा?" ज़ाहिर है, मैं झूठ बोल रहा था। पहली बात तो यह कि मुझे पता ही नहीं था कि यह आदमी या चीज़ क्या है। और दूसरी बात, मुझे यह भी नहीं पता था कि इसे कैसे मारना है।

अजनबी ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन झपटने से पहले उसका सिर एक तरफ हिल गया। मैं उससे बच निकला और रात के अंधेरे में तेज़ी से भाग निकला, अपने पैरों से विनती कर रहा था कि वे मुझे पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ी से ले जाएं। मेरा दिमाग चकरा रहा था, दिल ज़ोर से धड़क रहा था, और वहां से भागने की चाहत अपने आप में घुटन पैदा कर रही थी। किसी भी तरह मुझे गाय और विल्सन के पास वापस जाना था, लेकिन मैं इस दरिंदे को सीधे उनके दरवाज़े तक नहीं ले जा सकता था। और इस विचार ने मुझे और भी कई सवाल पूछने पर मजबूर कर दिया।

मुझे न सिर्फ यह हैरानी हो रही थी कि आखिर कौन मेरा पीछा कर रहा है, बल्कि यह भी कि वह मेरा पीछा कैसे कर रहा है। उसे किसी न किसी तरह मेरी मौजूदगी का एहसास जरूर होगा, जैसे उस रात मिशन पर उस भयानक पिशाच ने मुझे और गाय को ढूंढ लिया था। लेकिन यह पिशाच नहीं था, मुझे पूरा यकीन था। शायद कोई वेयरवोल्फ हो? मुझे पक्का पता नहीं था, लेकिन यही एक तार्किक अनुमान था जो मेरे दिमाग में चल रहा था। और अगर यह नकाबपोश अजनबी सचमुच एक भेड़िया था, तो यह बात समझ में आती है कि वह मेरी गंध से मेरा पीछा कर रहा था। मुझे पता था कि मुझे क्या करना है।

मैंने अपने दर्द से कराहते पैरों को और भी तेज़ी से दौड़ाया और शहर के पूर्वी हिस्से की ओर निकल पड़ा। मेरा पीछा करने वाला मुझसे दूर होता चला गया, लेकिन मैंने उसे अभी तक खोया नहीं था क्योंकि मुझे उसका आभास हो रहा था कि वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया है। दुकानों की एक लंबी कतार के पास पहुँचकर मैं रुक गया, मेरी नज़रें एक दुकान से दूसरी दुकान पर घूम रही थीं। रेस्टोरेंट। लॉन्ड्री। रेस्टोरेंट। सैलून। रेस्टोरेंट। मुर्दाघर।

धत् तेरे की! मेरे पास दो ही विकल्प थे: एक रेस्टोरेंट जहाँ मैं खाना पकने की खुशबू में अपनी गंध छिपा सकता था, या मुर्दाघर, जहाँ लाशों की बदबू में मेरी गंध दब सकती थी। रेस्टोरेंट भूखे ग्राहकों से भरे हुए थे और वहाँ लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचना मेरे लिए मुश्किल होता। दूसरी ओर, मुर्दाघर उस दिन बंद था और अँधेरा और खाली सा लग रहा था। तो मेरा फैसला यही था, मुर्दाघर जाना।

मैं सड़क के उस पार कूद गया, मुझे महसूस हो रहा था कि भेड़िया मेरे पीछे अंधेरे की मंडराती परछाई की तरह बढ़ रहा है। डर के मारे मैं इमारत के चारों ओर घूमा और पीछे का दरवाजा बंद

पाया। मैंने ध्यान केंद्रित किया और हैंडल को कसकर पकड़ लिया। मैंने पूरी ताकत से खींचा और दरवाजा खुल गया, दबाव से ताला टूट गया। मैं जल्दी से अंदर घुस गया और दरवाजा बंद कर लिया, ऊपर एक कुंडी लगी हुई थी। बस मेरी किस्मत ही खराब थी। मैंने उसे बंद कर दिया और बगल में एक भारी मेज देखी। मैंने उसे दरवाजे के सहारे धकेल दिया और फिर हांफते हुए कमरे की ओर मुड़ा।

मुर्दाघर ठंडा और सर्द था, मानो बर्फ की चादर में लिपटा हो, और दीवारों पर मृतकों के नाम अंकित चांदी की पतली दराजें लगी थीं। जिस कमरे में मैं दाखिल हुआ था, वही शवों को रखने का कमरा था। मैं भय से कांप उठा।

वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अकेली नहीं हूँ। लेकिन मैंने खुद को तसल्ली दी कि मैं अकेली ही हूँ, वहाँ मौजूद लोग मर चुके हैं और इस दुनिया से चले गए हैं—ठीक वैसे ही जैसे कुछ रात पहले मुझे होना चाहिए था, इससे पहले कि किसी ने मुझे पिशाच बना दिया। मैंने अपने मन से ये सारे विचार झटक दिए और एक लकड़ी की मेज के नीचे खिसक गई, अपने घुटनों को बाहों में लपेट लिया। मुझे इंतज़ार करना होगा और प्रार्थना करनी होगी कि भेड़िया मेरी गंध को मिटा दे। मैंने घबराकर ज़ोर से हंसने की इच्छा को दबाया, अपनी मूर्खता और अपनी स्थिति की विडंबना पर हंसने की इच्छा को।

शुक्रवार की रात, मैं यहाँ था, एक पिशाच जो मृतकों के बीच छिपा था, एक वेयरवोल्फ से भाग रहा था और एक बार फिर अपनी जान खतरे में डाल रहा था। मैंने अपना सिर हिलाया, यह जानते हुए कि यह सब मेरी गलती थी। मुझे फार्महाउस में ही रहना चाहिए था और शहर जाने की इच्छा को नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए था, लेकिन मैंने अपने फैसले को सही ठहराने की कोशिश की क्योंकि यह मेरी नई ज़िंदगी शुरू करने से पहले की आखिरी रात थी— एक ऐसी ज़िंदगी जिसके बारे में मुझे यकीन नहीं था कि मुझे पसंद भी आएगी या नहीं। शायद यह डर था या फिर से ज़िंदा महसूस करने की आखिरी कोशिश, आज़ादी को गले लगाने की आखिरी कोशिश, लेकिन चाहे जो भी हो, मैंने गाय और विल्सन को छोड़कर बहुत बड़ी गलती की थी।

मैंने अपना सिर लकड़ी के मजबूत दरवाजे पर टिका दिया, मेरी सांसें धीमी होकर हांफने लगीं। मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि जब मैं शहर में घूमने के बाद अंदर आऊंगी तो विल्सन और गाय के चेहरे पर क्या भाव होंगे, और मुझे पूरा यकीन था कि वे अब तक जाग चुके होंगे और सोच रहे होंगे कि मैं आखिर कहां हूं। मैंने अपना ध्यान दरवाजे की ओर मोड़ा, जहां मुझे सिर्फ सन्नाटा और अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी।

ठीक उसी समय जब मुझे लगा कि मैंने वेयरवोल्फ से पीछा छुड़ा लिया है, दरवाजा ज़ोर से खुला और मेज उड़ गई। लबादा ओढ़े आदमी हांफते हुए मेरे ऊपर खड़ा था, और मुझे पूरा यकीन था कि अगर मैं इस स्थिति से बाहर निकल पाया, तो मुझे अपनी पैंट चेक करनी पड़ेगी। मैंने अपने पीछा करने वाले की तरफ देखा, आखिरकार उसके हाथ, या कहें पंजे, दिखाई दिए, और डर मुझ पर ऐसे टूट पड़ा जैसे कोई फूलदान दीवार से टकराकर टूट गया हो।

मेरा शक सही निकला, वह भेड़िया था, लेकिन पूरी तरह से परिवर्तित नहीं हुआ था। वह भेड़िये के एक अजीब से मानव रूपान्तरण जैसा दिखता था, उसके लंबे चेहरे की त्वचा अभी भी गुलाबी थी, और उसके चेहरे की बनावट इंसानों जैसी थी। लेकिन उसके हाथों पर बाल थे और उसकी उंगलियों से लंबे, नुकीले पंजे निकले हुए थे। वे लड़ाई के लिए तैयार थे। मौत की लड़ाई के लिए।

तैंतीस: लड़का

मैं अचानक जाग गया, मेरा शरीर बुरी तरह हिल रहा था।
"वह जा चुकी है!"
मैंने अपनी भ्रमित आँखें खोलीं और विल्सन की मजबूत पकड़ से छूटने के लिए छटपटाने लगी। वह फर्श पर मेरे ऊपर घुटनों के बल बैठा था, उसका तनावग्रस्त चेहरा खून की तरह लाल था।
अरे यार, जाग जाओ। वो चली गई!
“क्या?” मैं उठ बैठा और अपनी आँखों से धूल के कण मलने लगा। दुनिया एकदम स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी।
“रूबी!” विल्सन गुर्राया। “तुमने उसे भागने दिया!”
मेरे सीने में डर की लहर दौड़ गई जब मेरी नज़र बगल के खाली बिस्तर पर पड़ी, चादरें अस्त-व्यस्त और बिखरी हुई थीं। मैं झट से उठ खड़ी हुई और पूरे कमरे में छानबीन करने लगी, अलमारी का दरवाज़ा खोलकर चादरों और बिस्तर के नीचे भी देखा। जब मुझे कमरे में उसका कोई निशान नहीं मिला तो मैं बाथरूम, बैठक, रसोई की ओर भागी, विल्सन मेरे पीछे-पीछे था।
“ढूंढने का कोई फायदा नहीं। वह जा चुकी है।” विल्सन की आवाज में वही भय झलक रहा था जो मेरे अंदर था।
“नहीं। वो यहीं कहीं होगी।” मैं घर के अंदर भागा और लाल दरवाजे के पास रुक गया— वो दरवाजा जो हमेशा बंद रहता था, वो कमरा जिसमें मुझे कभी जाने की इजाज़त नहीं थी। मैंने हैंडल को हिलाया और जब उससे भी काम नहीं बना, तो मैंने ज़ोर से धक्का मारा और ज़मीन पर गिर गया। मैं उछलकर खड़ा हुआ और फिर कोशिश की। विल्सन ने मुझे रोकने के लिए मेरे कंधे पर हाथ रखा, लेकिन मैंने उसे झटक दिया।
“मुझे अंदर जाने दो विल्सन।” मेरे अंदर क्रोध दोपहर के सूरज की गर्म किरणों की तरह बढ़ता गया।
“वह अंदर हो सकती है।”
“वह अंदर नहीं है। वह चली गई।”
मैं एकदम रुक गई और उस बूढ़े पिशाच की तरफ मुड़ी। "तुम्हें कैसे पता?" मेरी सांसें तेज़ चल रही थीं। "तुम्हें कैसे पता कि वो बाहर चम्मच नहीं तोड़ रही है?" मैं पीछे के दरवाजे की तरफ दौड़कर घर में तलाशी लेने लगी, लेकिन विल्सन ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे वहीं रोक दिया। मैंने उसे गुस्से से घूरा।
“मैंने सुरक्षा कैमरे की फुटेज देखी,” उसने समझाया और उसकी आवाज़ में उदासी और दृढ़ता थी।
“वह घंटों पहले चली गई थी।”
“मुझे दिखाओ।” टॉम्बस्टोन के इतने करीब आकर रूबी के चले जाने की बात सुनकर मेरा दिमाग चकरा गया। “मुझे टेप दिखाओ।”
विल्सन ने निराशा और उदासी से भरी निगाहों से मेरी ओर देखा।
“विल्सन!” मैं चिल्लाया। “मुझे वो टेप दिखाओ!”
उसने एक पल के लिए मुझे देखा। मुझे यकीन है कि वह मेरे शरीर में एड्रेनालाईन के कारण हो रही कंपकंपी को देख सकता था, क्योंकि मैं इसे एक चक्रवात की तरह महसूस कर रहा था। मुझे

विश्वास नहीं हो रहा था कि हम दोनों में से किसी ने भी उसे जाते हुए नहीं देखा था। वह बस यूं ही गायब हो गई थी। विल्सन ने गहरी सांस ली और अपनी जेब से चाबी निकाली। उसने चाबी ताले में डाली और लाल दरवाजा खोल दिया।

मैं कमरे में घुसते ही दीवारों पर नज़र गड़ा दी। चारों ओर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का जाल बिछा था। कैमरे, टीवी, कंप्यूटर, नक्शे। हर तरफ तार ही तार। विल्सन को शहर की हर घटना की जानकारी सबसे पहले रहती थी। और यही वजह थी। उसका अपना खुफिया दफ्तर, एफबीआई के बराबर, यहीं फार्महाउस में था। लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। मुझे बस रूबी को वापस लाना था। वो जिद्दी लड़की, दूसरों से मिलने से पहले ही शायद खुद को मार डालेगी।

"मुझे दिखाओ।" मैं सही स्क्रीन की तलाश में इधर-उधर सिर घुमाने लगा। "कहाँ?"

"ये लीजिए।" विल्सन एक बड़ी स्क्रीन के सामने बैठ गए, जो कीबोर्ड से जुड़ी हुई थी। उन्होंने बटन दबाए और स्क्रीन पर एक तस्वीर चमक उठी। यह विल्सन के घर के सामने के रास्ते का दृश्य था। लंबे सफेद बाल और फुर्तीले पैर तेज़ी से स्क्रीन से गुज़र गए।

"क्या वो वही थी?" सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि कहीं मेरी आँखों को धोखा तो नहीं हो रहा। लेकिन विल्सन ने सिर हिलाया। मेरा दिल घबरा गया। "वो कहाँ गई?"

विल्सन ने सिर हिलाया। "मुझे कैसे पता चलेगा? मेरी जानकारी के अनुसार वह अभी मेक्सिको में भी हो सकती है।"

मेरा गुस्सा भड़क उठा और मैंने मुट्ठियाँ भींच लीं। "तुम्हें कैसे नहीं पता? विल्सन, तुम्हें तो सब पता है! तुम्हें यह कैसे नहीं पता?"

विल्सन झट से खड़ा हो गया, उसका चेहरा मेरे चेहरे से बस कुछ इंच की दूरी पर था, नुकीले दांत बाहर निकले हुए थे। "मुझ पर ऐसे मत चिल्लाओ जैसे यह मेरी गलती हो!"

मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मानो सीने में फट जाएगा। मैंने उस बूढ़े पिशाच को घूरकर देखा, जिसने जवान आदमी का मुखौटा पहन रखा था। उसे देखते ही मैं गुस्से से भर गया। "तुम यहाँ के निगरानी विशेषज्ञ हो। और तुमने खुद ही कहा था, तुम शायद ही कभी सोते हो। तुमने उसे जाते हुए कैसे नहीं देखा? क्या तुम्हें अपनी... अपनी सुपरहीरो पिशाच शक्तियों का इस्तेमाल करके उसे महसूस नहीं करना चाहिए था?"

मैंने गुस्से से उसे घूरा, मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। वह असाधारण दृष्टि और श्रवण शक्ति वाला दो सौ साल पुराना पिशाच था। आखिर मैं भी तो इंसान ही थी। उसे उसके जाने का आभास हो जाना चाहिए था।

विल्सन के नथुने फूल गए, उसकी आवाज़ खतरनाक रूप से धीमी हो गई। "तुम ही उसे यहाँ लाए थे। वह तुम्हारी देखरेख में थी। तुम्हारी ज़िम्मेदारी थी। तुम उसी कमरे में उसके साथ सोए थे। तुम्हें ही उस पर कड़ी नज़र रखनी चाहिए थी।"

मुझे एहसास हुआ कि उसकी बात में दम था, और मेरे होंठों से एक धीमी सी गुर्राहट निकल गई। रूबी मेरी देखरेख में थी और उसे अपने साथ ले जाने का फैसला मैंने ही किया था। विल्सन के साथ काफी देर तक नज़रें मिलाने के बाद, मैं हार मानकर झुक गई। धिक्कार है। बूढ़े लोग हमेशा सही क्यों होते हैं?

"तुम सही कह रही हो," मैंने धीरे से कहा और निराशा से अपने बालों में उंगलियां फेरने लगी। "मुझे और सावधान रहना चाहिए था। बस... मुझे लगा था कि अब तक..."

मैंने क्या सोचा था? शायद मैंने सोचा था कि वह भरोसेमंद है, कि वह सिर्फ एक तर्कहीन खून चूसने वाली से कहीं बढ़कर है। लेकिन तथ्य तो तथ्य होते हैं। वह एक नवजात पिशाच थी और नवजात पिशाच हमेशा अप्रत्याशित होते हैं, चाहे वे कितने भी इंसान जैसे दिखें।

मैं घूमने वाली कंप्यूटर कुर्सी पर बैठ गया और हेडरेस्ट से टेक लगाकर बैठ गया। विल्सन मेरे बगल में बैठ गया और अपनी उंगलियों को डेस्क पर आपस में जोड़कर अपनी ठुड्डी उन पर टिका दी।
मुझे भी खेद है। मुझे उसका आभास हो जाना चाहिए था। मुझे पता होना चाहिए था। मैं अब मुश्किल से सो पाता हूँ और आम तौर पर तो तितली के पंख देखकर भी उछल पड़ता, लेकिन हमारी कड़ी ट्रेनिंग और बुढ़ापे के कारण... मैं..."
हमारी नज़रें मिलीं, और यह एक अजीब सा पल था। उस क्षण ऐसा लगा जैसे हम पहली बार एक-दूसरे को समझे हों, जैसे कोई अनकहा समझौता हो गया हो। हम पहले कभी दोस्त नहीं थे, बस दो लोग थे जिनकी एक जैसी समस्या थी जिसने हमें सबसे अप्रत्याशित परिस्थितियों में एक साथ ला दिया था—सिर्फ व्यापार के कारण। लेकिन अब हमारा एक साझा लक्ष्य था, रूबी को वापस लाना। और हम दोनों यह जानते थे।
"तुम जाओ और उसे ढूंढो, मैं यहीं रुकूंगा ताकि अगर वह वापस आए तो मैं उसकी मदद कर सकूं," विल्सन ने सुझाव दिया।
"मैं भी बिल्कुल यही सोच रहा था।"
मैं उठने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन विल्सन ने हाथ उठाकर मुझे रोक दिया। “अगर किसी चमत्कार से वह तुम्हें वहाँ मिल भी जाए, तो वापस मत आना। उसे सीधे टॉम्बस्टोन ले जाना।”
मैंने सहमति में सिर हिलाया। और बिना कुछ कहे, विल्सन खड़ा हो गया और लैपटॉप खोलकर कीबोर्ड पर टाइप करने में व्यस्त हो गया। मैं अपने सामान का पैक लेकर अतिथि कक्ष की ओर भागा। मैंने अपने लड़ाकू जूते पहने और अपनी बंदूक कमर पर बाँध ली। मैंने अपना बैग कंधे पर डाला और घर से वापस अंदर की ओर चल पड़ा, उस लाल दरवाजे के पास से गुजरा जहाँ विल्सन निगरानी फुटेज देख रहा था। मैं इस बात से पूरी तरह अवगत था कि शायद यह विल्सन को देखने का मेरा आखिरी मौका हो। मैं रुका और दरवाजे से अंदर झाँका।
“विल्सन।” मैंने अपने अगले शब्दों के लिए खुद को तैयार किया और धीमी आवाज़ में उन्हें कहा, “अगर मैंने पहले कभी नहीं कहा हो तो… धन्यवाद। हर चीज़ के लिए।”
विल्सन रुका और पीछे मुड़कर देखा। वह मुस्कुराया, लेकिन कुछ नहीं बोला। इसके बाद क्या होगा, यह बताने की ज़रूरत नहीं थी, यह तो स्वाभाविक था। हम अपने-अपने रास्ते चले जाएँगे और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे, साथ बिताए पलों को भूलने की कोशिश करेंगे। विल्सन अपने काम में वापस लग गया और मैं दौड़कर सामने के दरवाजे की ओर भागा, प्रार्थना कर रहा था कि रूबी फिर से मिल जाए। मुझे उसे घर लाना ही था।

चौंतीस: रूबी

मेरी धड़कन तेज़ हो गई, मेरे चेहरे का रंग उड़ गया। मैंने खुद को उस वेयरवोल्फ की पीली, चमकती आँखों में घूरते हुए पाया जो विल्सन के घर से निकलने के बाद से ही पूरे शहर में मेरा पीछा कर रहा था। वह अभी पूरी तरह से परिवर्तित नहीं हुआ था, अभी भी आधा इंसान आधा भेड़िया था। लेकिन फिर भी वह बहुत डरावना था।

मुझे बार-बार यह अफ़सोस हो रहा था कि काश मैंने चीज़ें अलग तरह से की होतीं, काश मैंने बेहतर फ़ैसले लिए होते। लेकिन फिर, अगर मैं दुनिया के सुखों का आनंद ही न ले पाऊं तो ज़िंदगी का एक और मौका मिलने का क्या फ़ायदा? मैं सोच रहा था कि क्या अब से मेरी ज़िंदगी की यही हालत होगी— भागना, दौड़ना, छिपना, ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष करना। लेकिन भविष्य के बारे में मेरे इन बेतुके विचारों के बावजूद, मुझे अब यही करना होगा, अपनी ज़िंदगी के लिए लड़ना होगा।

वेयरवोल्फ की छाती हांफते हुए तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थी, उसके पैर मुड़े हुए थे; मानो वह हमला करने के लिए तैयार हो। मैं जानता था कि जब तक मैं मर न जाऊं या हिरासत में न आ जाऊं, वह हार नहीं मानेगा, उसकी खौफनाक निगाहों में माफ़ी का कोई संकेत नहीं था। यह स्पष्ट था कि वह वेयरवोल्फ फ्यूज़ के लिए काम करता था, क्योंकि उसकी काली हुडी पर बने एक धब्बे से लाल अंख का निशान मेरी ओर घूर रहा था।

उसने मुझे वहाँ, डेस्क के नीचे, एक डरे हुए खरगोश की तरह उसे झाँकते हुए देखा। वह मेरे डर को भाँप सकता था; यह डर उसे किसी पागल जानवर की तरह उकसा रहा था। वह धीरे-धीरे मेरे करीब आता गया, इस बात का आनंद लेते हुए कि मैं फँस गई हूँ। मैंने अपने हाथों को ऊपर की लकड़ी पर दबाया और आँखें बंद कर लीं, यह सोचते हुए कि यह न केवल खुद को, बल्कि विल्सन और गाय को भी यह साबित करने का मेरा आखिरी मौका है कि अब तक मैंने जो मूर्खतापूर्ण फैसले लिए हैं, उनके बावजूद मैं अपनी क्षमताओं पर नियंत्रण और विजय प्राप्त कर सकती हूँ।

भेड़िया गुर्राता हुआ मेरी ओर बढ़ा, उसकी हरकतों की हवा मेरी ओर दौड़ती हुई आई, गीली मिट्टी और रूसी की गंध से मेरा चेहरा भर गया। लेकिन मैंने अपने डर को—और भेड़िये की बदबू को भी —दूर भगा दिया, अपना ध्यान अपनी ताकत पर केंद्रित किया। और जैसे ही भेड़िया मुझ पर झपटा, मैंने भारी मेज पर ज़ोर से धक्का दिया, जिससे वह आगे की ओर उछल गई। वह दीवार से टकराकर कुचल गई, जिससे कुत्ते जैसी चीख निकली, और पल भर में कमरे में सन्नाटा छा गया। तब मुझे पता चल गया कि मैंने उसे बेहोश कर दिया है।

मैं ज़मीन से उठा और बेहोश पड़े भेड़िया-आदमी के ऊपर खड़ा हो गया, मेरे हाथ बुरी तरह कांप रहे थे। "अरे बाप रे!" मुझे इस बात का गहरा सदमा लगा कि मैंने उस दरिंदे को हरा दिया है, और मुझे सांस लेने में भी मुश्किल हो रही थी। तभी मुझे ख्याल आया कि कहीं वो जाग न जाए, और मैं बिल्कुल नहीं चाहता था कि जब वो जागे तो मैं वहाँ खड़ा रहूँ। घबराहट मुझमें दौड़ रही थी, लेकिन मैंने हिम्मत जुटाई और पिछले दरवाजे से निकलकर रात के अंधेरे में भाग गया।

मैंने खुद को विल्सन के घर की ओर जाने वाले लंबे राजमार्ग पर पाया, जो अंधेरे और रेगिस्तान के बीच से होकर गुजरता था। मैं पिछड़ रहा था, मेरी ताकत कम हो रही थी और मेरी सांसें भारी हो रही थीं। मेरे फेफड़ों में जलन हो रही थी और मांसपेशियों में ऐंठन हो रही थी। मुझे नहीं पता था कि मैं

और कितना सहन कर पाऊंगा, लेकिन शुक्र है कि अब मुझे काले लबादे वाले वेयरवोल्फ की उपस्थिति का एहसास नहीं हो रहा था, इसलिए जब मैंने विल्सन की सुनसान संपत्ति की ओर जाने वाली कच्ची सड़क देखी, तो मैं तेजी से उस पर दौड़ पड़ा।

पुराने फार्महाउस और उसके गुलाबी रंग से रंगे दरवाजे को देखते ही मैंने राहत की सांस ली, मेरा शरीर जैसे पिघल गया। मैं दरवाजे से अंदर घुसा तो देखा कि गाय रैम्बो की तरह मेरी तरफ दौड़ रहा था, पीठ पर बैग और बगल में हथियार लिए। मुझे देखते ही वो चौंक गया और अचानक रुक गया। मुझे कुछ कहना था, कुछ समझाना था, लेकिन सीने में भारी दबाव के कारण मैं मुश्किल से बोल पा रहा था। मैं सामने के प्रवेश द्वार पर रुक गया, दरवाजा मेरे पीछे खुला पड़ा था, और मैंने अपने हाथों को घुटनों पर टिका लिया। मैं हांफ रहा था और खांस रहा था, मेरा शरीर आगे की ओर झुक गया।

"तुम कहाँ थे?" गाय ने झुंझलाहट में गुर्राते हुए कहा, उसकी धूसर आँखें मुझ पर टिक गईं।

मुझे जवाब देने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी जब विल्सन कमरे में घुस आया, उसके चेहरे पर भावनाओं का सैलाब उमड़ रहा था, फिर अचानक उसके चेहरे पर एक डांटने वाले पिता का भाव आ गया। उसने मेरी तरफ देखा और सिर हिलाते हुए बोला, "सुरक्षा के बारे में मैंने तुम्हें जो कुछ भी सिखाया है, क्या वो तुम्हारे उस सुनहरे बालों वाले दिमाग में नहीं बैठा? तुम क्या सोच रहे थे?"

"मैं... मैं..." मेरी सांस अटक गई। अगर सांस ले भी लेती, तो मुझे समझ नहीं आता कि अपनी बात कैसे शुरू करूं। तेज़ हवा के झोंके के साथ-साथ एक काली धुंधली आकृति भी मेरे पीछे-पीछे सामने के दरवाजे से अंदर आ गई।

"वेयरवोल्फ।" गाइ के होंठों से ये शब्द मुश्किल से निकला ही था कि मैं अपने पीछा करने वाले के हमले का सामना करने के लिए मुड़ गया। धिक्कार है, मुझे लगा था कि मैंने उसे नॉकआउट कर दिया है।

हम पैरों, हाथों, नुकीले दांतों और फर के उलझे हुए जाल में ज़मीन से ऊपर उड़ गए। उसका रूप एक इंसान से बदलकर एक विशालकाय काले भेड़िये में बदल गया था, हवा में फैलते ही उसके कपड़े उसके शरीर से फट गए। उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और हम टाइल पर ज़ोर से गिरे, जिससे फर्श चूर-चूर हो गया। मैंने अपने ऊपर मंडराते उस भयानक जानवर को देखा, खुद को उसकी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन मैं उससे बुरी तरह जकड़ा हुआ था। उसके नुकीले दांतों से लार टपक रही थी, उसका जबड़ा कांप रहा था, और उसकी पीली पुतलियाँ ऐसे चमक रही थीं मानो वे खुद प्रकाश उत्पन्न कर रही हों। मैं मुश्किल से हिल पा रहा था, क्योंकि उसकी ताकत लगभग मेरी ही ताकत के बराबर थी।

मैंने गुर्राते हुए खुद को छुड़ाने की आखिरी कोशिश की, और जब मैंने अपने हमलावर को पीठ के बल गिरा दिया तो मैं हैरान रह गया। इससे पहले कि मैं कुछ सोच पाता कि आगे क्या करना है, एक तेज़ गोली चली, जिससे भेड़िया मेरे नीचे बेजान होकर गिर पड़ा। मैं उछलकर दूर हट गया और मुड़कर देखा तो गाय ने बंदूक ताने उस जानवर की छाती पर रखी हुई थी।

"हे भगवान!" मैंने गहरी साँस ली। गाय ने भेड़िये पर कम से कम पाँच और गोलियाँ दागीं, हर गोली से ज़मीन पर पड़ा उसका रोएँदार शरीर छटपटा रहा था, धमाके की गूँज मेरे कानों में गूंज रही थी। वेयरवोल्फ का रूप बदल गया, उसके रोएँ एक इंसान की चमड़ी में समा गए, उसका नंगा शरीर खून से लथपथ ज़मीन पर पड़ा था।

मैं सिसक उठी और अपने हाथों से अपना मुंह ढक लिया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और मेरे सुन्न पैर लड़खड़ा रहे थे।

"क्या कोई और तुम्हारा पीछा कर रहा था?" गाय ने मुझसे पूछा, लेकिन मेरे दिमाग में चल रही उलझन के कारण मैं उसकी आवाज़ ठीक से सुन नहीं पाया। मेरी नज़र धुंधली हो गई, कमरा पूरी

तरह से अंधेरा होने लगा। मैंने दीवार का सहारा लिया, खुद को संभालते हुए। "क्या कोई और तुम्हारा पीछा कर रहा था?" इस बार गाय ने ज़ोर से कहा, जिससे मैं सदमे से बाहर आ गया।

"मुझे... मुझे ऐसा नहीं लगता।" मेरी आवाज दूर और बहुत धीमी सुनाई दी, मानो मैं सपने में हूं और अपनी ही अचंभे में डूबा खड़ा हूं।

"अच्छा।" लेकिन गाय की आवाज़ में राहत खोखली थी क्योंकि उसने अपना हथियार वापस अपनी बेल्ट में रखा और उस आदमी के बेजान शरीर को एक ज़ोरदार लात मारी।

"मैंने तुम्हें क्या कहा है रूबी?" विल्सन ने मुझे डांटते हुए कहा, जिससे मेरी नज़रें ऊपर उठीं। उसने सामने का दरवाज़ा बंद किया और अलग-अलग आकार और प्रकार के दस ताले लगा दिए। वह मेरी ओर मुड़ा, उसका जबड़ा कसकर भींचा हुआ था। "तुम्हें पता होना चाहिए कि शहर में जाना ठीक नहीं है। और वह भी अकेले।" उसने गहरी साँस ली और अपनी रिक्लाइनर कुर्सी के पीछे सहारा लेते हुए बैठ गया, मानो उसे दिल का दौरा पड़ने वाला हो। उसने झुंझलाहट भरी साँस छोड़ी। "तुम अपनी जान भी गँवा सकती थी!"

"मुझे पता है। मुझे माफ़ कर दो।" पास के सोफे पर बैठते हुए मेरी आवाज़ कांप रही थी। "मैं तुम्हारे लिए कुछ अच्छा करना चाहती थी। मैं तुम दोनों के लिए... एक तोहफ़ा लाना चाहती थी।" इसे ज़ोर से कहना बेवकूफी भरा और हास्यास्पद लग रहा था। मैंने शर्म से अपना सिर झुका लिया।

"एक तोहफ़ा?" गाय ने उपहास उड़ाते हुए कहा, जिससे मुझे पहले से भी ज़्यादा बुरा लगा। "हमारे लिए तोहफ़ा होता कि हम यहीं रुक जाते। आपके आदेशों का पालन करते और किसी उन्मादी किशोर की तरह शहर में न भागते।"

गाइ के घमंडी रवैये पर मेरा गुस्सा भड़क उठा और मेरे अंदर उबलते हुए क्रोध को मैं रोक नहीं पाया, मानो कोई लावा का कुंड बह रहा हो। मैं अचानक खड़ा हो गया और गुस्से में अपना एक पैर ज़मीन पर पटक दिया।

"तुम सही कह रहे हो, मैं एक किशोरी हूँ। एक किशोरी जिसने अभी-अभी महसूस किया है कि उसका पूरा जीवन हमेशा के लिए बदल गया है। एक किशोरी जिसने सब कुछ खो दिया है।" मैं एक कदम आगे बढ़ी, उसके करीब पहुँचते हुए। "और तुम क्या हो?" मैंने द्वेष से पूछा, उसकी ओर ठंडी निगाहों से देखते हुए। "तुमने मुझे कभी अपनी उम्र तक नहीं बताई। क्या? बीस? इक्कीस? तुम खुद तो बस एक बच्चे हो, एक गुस्सैल बालक-सैनिक जिसे उसकी भलाई से ज़्यादा शक्ति दे दी गई है।" उसने मुझे हैरानी से देखा, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। वह कभी नहीं समझ पाएगा कि मैं कैसा महसूस करती हूँ, अमर होने का एहसास कैसा होता है।

"बस करो!" विल्सन की आवाज़ मुझ पर गूंज उठी, इतनी तेज़ जितनी मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी, और गाय और मैं वहीं जम गए, क्योंकि वैम्पायर की निगाहें हम दोनों पर घूम रही थीं। "प्रेमियों का झगड़ा फिर कभी के लिए बचाकर रखो।" वह कमरे के उस पार गया और मुझे सोफे पर अपने साथ बैठने के लिए खींच लिया, मेरे पैर पर धीरे से हाथ रखकर मुझे शांत किया। उसकी आवाज़ नरम पड़ गई। "मुझे भौतिक चीजों की कोई ज़रूरत नहीं है, रूबी। बस इस बात की तसल्ली कि तुम सुरक्षित हो, मेरे लिए काफी है। अब कृपया, मुझे बताओ कि क्या हुआ।"

मैंने गाइ की आँखों में देखा, उससे बात करने के तरीके को लेकर मुझे बहुत पछतावा हो रहा था। उसके चेहरे पर भी पछतावा साफ दिख रहा था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और अपनी नज़र ज़मीन पर पड़े वेयरवोल्फ आदमी पर टिका दी। वह फटे कपड़ों के ढेर पर बैठ गया और अपनी जींस की जेबें टटोलने लगा। मैंने नज़रें हटा लीं, अपने विचारों को शांत करने की कोशिश कर रही थी।

"फ्यूज।" ये शब्द मेरे मुंह से फुसफुसाहट की तरह निकला।

गाइ ने उस आदमी-भेड़िये का बटुआ हाथ में लेकर खड़ा हुआ और डरते हुए मेरी तरफ देखा।

"तुम्हारा सामना फ्यूज़ सैनिकों से हुआ था?"
मैंने होंठ दबाते हुए सिर हिलाया। "वे फोर्थ एवेन्यू पर गश्त कर रहे थे। वे मेरे पीछे-पीछे आए, साथ में... वो चीज़ भी थी।" मैंने मरे हुए वेयरवोल्फ की ओर इशारा किया, लेकिन खून से लथपथ दृश्य से अपनी नज़रें हटा लीं। गाय और विल्सन ने चिंता भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा।
"पर कोई बात नहीं," मैंने गहरी सांस लेते हुए कहा। "मैंने उन्हें खो दिया। वही एक था जो मेरे पीछे-पीछे आता था।"
"आपने कहा कि वह फ्यूज़ सैनिकों के साथ था?" विल्सन झट से खड़ा हो गया।
"हाँ। क्यों?" मैंने पूछा, मुझे ऐसा लग रहा था कि इस स्थिति में और भी बहुत सी परेशानियाँ हैं जिनके बारे में मुझे अभी तक जानकारी नहीं है।
"ओह, यह तो अच्छा नहीं है।" विल्सन बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा, उसकी भौंहें तन गईं। "बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। मुझे निगरानी कैमरे देखने होंगे।" वह तेजी से पीछे वाले गलियारे की ओर भागा और लाल दरवाजे के पीछे खुद को बंद कर लिया।
"क्या हुआ?" मैंने गाय से पूछा, चिंता मेरे पूरे शरीर में फैल गई थी। "उसका मतलब क्या है?"
"हाँ।" बटुए से हाथ निकालते हुए गाय ने सिर हिलाया। "मिल गया।" उसने अपनी हथेली में मूंगफली के आकार का एक छोटा सा चांदी का आयताकार टुकड़ा पकड़ा हुआ था।
"क्या? यह क्या है?"
गाइ का चेहरा गुस्से से लाल हो गया, और मैं समझ गया कि मैंने सच में बहुत बड़ी गलती कर दी है। उसने धातु के उस छोटे से टुकड़े को ज़मीन पर फेंक दिया और अपने बूट से उसे कुचल दिया। उसने मेरी तरफ देखा, अपने जबड़े भींचे और फिर आह भरी।
"दुर्लभ मामलों में, फ्यूज़ किसी दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के साथ समझौता कर लेता है। वे फ्यूज़ के लिए काम करने को सहमत हो जाते हैं और फ्यूज़ उनकी जान बख्श देता है।" मैं भौंहें चढ़ाकर देखने लगा, मुझे अभी भी पूरी तरह समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है।
"वो एक ट्रैकिंग डिवाइस थी।" गाय ने अपने जूते के नीचे इशारा करते हुए कहा। "और ये वेयरवोल्फ उनका ट्रैकर था।"
"अरे नहीं।" आखिरकार मुझे स्थिति की गंभीरता का एहसास हुआ। अगर वह कोई ट्रैकिंग डिवाइस थी, तो FUSE को पता चल गया होगा कि मैं कहाँ भागा हूँ। यहीं, विल्सन के घर पर।
"अरे नहीं, बिल्कुल सही।" गाय अपने हाथों से अपनी दाढ़ी वाली ठुड्डी सहलाते हुए इधर-उधर घूमने लगा। उसकी गुस्से से भरी आँखों ने मुझे गौर से देखा। "तुम्हें यही उम्मीद करनी चाहिए कि उन्हें सही जानकारी न मिली हो, वरना..."
"उन्होंने हमें ढूंढ लिया!" विल्सन चिल्लाते हुए लाल दरवाजे से होते हुए लिविंग रूम में घुस गया। "फ्यूज यहाँ है!"
मैंने अपना मुंह खोला, लेकिन एक हल्की सी चीख के अलावा कुछ नहीं निकला। मुझ पर दहशत छा गई।
गाइ ने अपनी बेल्ट से बंदूक निकाली और झटपट उसमें गोलियां भर लीं। विल्सन एक कमरे से दूसरे कमरे में भागा, खिड़कियां और पर्दे बंद करता गया और दरवाज़े कुंडी से कसता गया। सामने के दरवाजे पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ। कोई उसे तोड़ने की कोशिश कर रहा था।
"चलने का समय हो गया है।" गाय ने मेरा हाथ झटककर मुझे कमरे के उस पार पीछे के दरवाजे की ओर खींच लिया।
मैंने पीछे मुड़कर देखा तो विल्सन अपने चमड़े के रिक्लाइनर में धंसकर गहरी सांस ले रहा था, जैसे कोई दिनभर के काम के बाद लेता हो। मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ीं, लेकिन तभी सामने के दरवाजे पर

ज़ोरदार दस्तक हुई, ऐसा लगा जैसे दूसरी तरफ कम से कम चार आदमियों ने मिलकर दरवाजा खटखटाया हो।
“रूबी। अभी।” गाय ने मुझे खींचा, लेकिन मैं रुक गई, मेरी निगाहें अपने शिक्षक पर टिकी रहीं, मैं सोच रही थी कि जब हम पर छापा पड़ने वाला है तो वह इतनी शांति से क्यों बैठे हैं।
“विल्सन!” मैंने कर्कश स्वर में चिल्लाया। “हमारे साथ आइए!”
विल्सन ने मेरी ओर देखा, गुस्से से नहीं बल्कि उदासी से। उसकी गहरी आँखें आग की लपटों की तरह चमक रही थीं। "अब बहुत देर हो चुकी है।"
“नहीं!” मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। “हमारे साथ आओ। हम भाग सकते हैं!”
विल्सन ने अपना सिर हिलाया और अंदर घुसने की कोशिश कर रहे सैनिकों की ओर से एक और ज़ोरदार धमाका हुआ। "अगर मैं तुम्हारे साथ जाता हूँ, तो वे हमारा भी पीछा करेंगे, जैसे उन्होंने तुम्हारा किया। अगर मैं यहीं रुकता हूँ, तो मैं उन्हें इतना समय दे सकता हूँ कि तुम दोनों भाग सको।"
मैंने बेताबी से गाय की ओर देखा कि विल्सन के इस बेतुके विचार के बारे में उसका क्या विचार है, लेकिन उसने केवल सहमति में सिर हिलाया।
एक और ज़ोरदार आवाज़ आई, इस बार दरवाज़े के आधे बोल्ट टूटकर बिखर गए, बस कुछ ही लटके रह गए। मेरा मुँह बहस करने के लिए खुला, पर मुझे एहसास हुआ कि यह व्यर्थ होगा। विल्सन तो बैल की तरह अड़ियल था। मैंने अविश्वास से सिर हिलाया जब गाय ने झुककर विल्सन से हाथ मिलाया। दोनों आदमी एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। यह एक उदास, समझदारी भरी मुस्कान थी।
“लेकिन विल्सन…” अनकहे आँसुओं ने मेरी दृष्टि को धुंधला कर दिया, जिससे देखना मुश्किल हो गया। मेरे हाथ काँप रहे थे। “कृपया…”
विल्सन खड़ा हुआ और मेरे कंधों को सीधा करते हुए बोला, “कोई बात नहीं, रूबी। मैं दो सौ साल का हूँ और जितना दिखता हूँ उससे कहीं ज़्यादा ताकतवर हूँ। मैं अपना बचाव कर सकता हूँ। मैं ठीक रहूँगा।”
“ले…लेकिन…” मैं हकलाते हुए बोला। नहीं। नहीं। नहीं। यह सब मेरी गलती थी। मैं चुपचाप खड़ा होकर विल्सन को उस समस्या का खामियाजा भुगतने नहीं दे सकता था जो मैंने पैदा की थी। यह उचित नहीं था।
विल्सन ने अपने मजबूत हाथों से मेरा शरीर झटका, उसकी भूरी आँखें मेरी आँखों में गहराई से गड़ी हुई थीं। "सीधी खड़ी हो जाओ, लड़की।" मैंने उसकी बात मानी, अपने कंधे उचकाए, आँसू रोकने की कोशिश करते हुए। उसने मुझे एक पल के लिए देखा और जब उसने कुछ कहा तो उसका कठोर चेहरा नरम पड़ गया, मुझे डर था कि ये उसके मुंह से सुनी आखिरी बातें होंगी।
“अब जाओ, रूबी कार्टर। बस मेरी कही बात याद रखना। अतीत के बारे में मत सोचना, सिर्फ भविष्य की ओर देखना। तुम दुनिया की सबसे महान पिशाच बनोगी। इसमें कोई शक नहीं है।”
एक और ज़ोरदार धमाके से दरवाज़ा लगभग अपने कब्ज़ों से उखड़ गया, लेकिन इससे पहले कि सैनिक अंदर घुस पाते, गाय मुझे पीछे के दरवाज़े से बाहर निकाल लाया। बिना कुछ सोचे-समझे, जैसे कि सहज प्रवृत्ति से, मैंने गाय को पकड़ा और हम दोनों को रात के अंधेरे में बाहर खींच लिया। पलक झपकते ही हम संपत्ति के अंत में लगी जालीदार बाड़ के पास पहुँच गए। मैं एकदम रुक गया।
“मेरी तस्वीर।” मुझे याद आया कि मैंने उसे कमरे में अपने तकिए के नीचे ही छोड़ दिया था, और यह सुनकर मैं चौंक गई।

“तुम्हारा क्या?” लेकिन गाय के मुंह से ये शब्द पूरी तरह निकलने से पहले ही, मैं दौड़कर घर वापस गई और पीछे मुड़कर अपने बेडरूम की खिड़की के पास पहुँच गई। शायद ये मेरी एक और बेवकूफी भरी हरकत थी, पर मुझे परवाह नहीं थी। वो तस्वीर ही मेरे अतीत की एकमात्र निशानी थी।
सौभाग्य से, इमारत का वह हिस्सा खाली था। मैंने अपने कमरे की खिड़की तोड़ दी और अंदर घुस गया, तकिए के नीचे से तस्वीर चुरा ली। लेकिन जब मैं जाने के लिए मुड़ा, तो एक सैनिक की मौजूदगी देखकर चौंक गया। उसकी भारी-भरकम आकृति ने खिड़की के शीशे को पूरी तरह से ढक लिया और मुझे अंदर ही रोक दिया, जिससे मैं स्तब्ध रह गया। मैंने उसे शहर के बीचोंबीच हुई घटना से पहचान लिया था। वह वही FUSE सैनिक था जिसके साथ भेड़िया था।
उसने मुस्कुराते हुए मेरे सिर पर बंदूक तान दी, जिसमें निस्संदेह चांदी की गोलियां भरी हुई थीं। "तुम कहाँ जा रही हो, छोटी पिशाचनी? क्या तुम यहीं रुककर खेलना नहीं चाहती?"
ठंडी लोहे की धार मेरे सिर पर चुभ रही थी, मैंने पलकें झपकाईं। लेकिन जैसे ही मैंने उस आदमी की ओर देखा, उसकी मुस्कान बदल गई, एक चौड़े खुले 'ओ' में बदल गई। धीरे-धीरे, मानो पानी के अंदर, गोलियों की आवाज़ से उसका शरीर कांपने लगा। वह ज़मीन पर गिर पड़ा।
हांफते हुए मैंने पीछे मुड़कर देखा तो विल्सन मेरे पीछे खड़ा था, अपने हाथों में तोप का एक बड़ा टुकड़ा उठाए हुए। उस बूढ़े पिशाच ने मुझे फटकार भरी नज़र से देखा, लेकिन उसकी नज़र मेरे हाथों में मौजूद तस्वीर पर टिक गई। उसने कुछ नहीं कहा, बस खिड़की की ओर इशारा किया, मानो मुझे भागने का संकेत दे रहा हो। मैंने विल्सन को आखिरी बार देखा और फिर खिड़की के नीचे झुके हुए सैनिक के शरीर पर चढ़ गया। मैं खिड़की के छेद से अंदर घुस गया, और मेरे साथ कांच के टुकड़े बिखर गए।
एक बार फिर, मैं विल्सन को हमारे साथ आने के लिए मनाना चाहता था। मैं उसे हमले से बचाना चाहता था, लेकिन मुझे पता था कि वह नहीं आएगा। इस बार मैं रुका नहीं। मैं दौड़कर उस जगह के आखिरी छोर पर वापस गया जहाँ मैंने गाय को खड़ा छोड़ा था, वह अवाक और गुस्से में था कि उसने मुझे फिर से खो दिया है।
"धिक्कार है, फेथ।"
अचानक, हमारे पीछे वाले घर में ज़ोरदार धमाका हुआ, विस्फोट के झटके से हम दोनों ज़मीन पर गिर पड़े। मैंने पेड़ों के बीच से झाँककर देखा तो आसमान में आग का एक विशाल गोला उठ रहा था। विल्सन के घर के अवशेषों से धुएँ का एक बड़ा बादल उठ खड़ा हुआ। डर से मेरा दिल काँप उठा, सीने में जकड़न सी महसूस हुई।
“नहीं!” मैं हताशा से आग की ओर वापस रेंगने लगा।
लेकिन गाय ने मुझे वहीं रोक रखा था, उसकी बाहें मेरी कमर के चारों ओर थीं और मैं छटपटा रही थी। आम तौर पर मैं इतनी मजबूत होती कि उसकी पकड़ से छूट जाती, लेकिन मेरी मौजूदा भावनात्मक स्थिति में मैं हिल भी नहीं पा रही थी। मैं उसकी बाहों में गिर पड़ी, सदमा मेरे पूरे शरीर पर हावी हो गया था।
“विश्वास रखो।” गाय ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। “मेरी बात सुनो। तुम्हें शांत होना होगा। तुम्हें ध्यान केंद्रित करना होगा। मेरी तरफ देखो।”
मैंने एक हल्की सी सिसकी भरी और अपने रक्षक की धूसर आँखों में देखने के लिए मुड़ी। मेरी आँसुओं से भरी आँखों से उनके चेहरे के भाव धुंधले हो गए थे, लेकिन उनकी निगाहों में मौजूद दृढ़ता ने मुझे अपनी ओर खींच लिया। उनमें हमेशा एक ऐसी खूबी थी जो मुझे शांत कर देती थी, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विकट क्यों न हों।
“तुम्हें जाने देना होगा।” गाय की आवाज़ कर्कश और उदास थी। “हमें जाने देना होगा।”

“लेकिन विल्सन।” मेरी आँखों से आंसू बहने लगे और मेरे होंठ कांपने लगे। “वह… वह अंदर है।”
गाइ ने अपना सिर हिलाया और अगर मैं गलत नहीं थी, तो मुझे उसकी आँखों में एक धुंधली सी चमक दिखाई दी। “हमारे पास दो विकल्प हैं, फेथ। हम यहाँ रुककर मारे जा सकते हैं, या तुम हम दोनों को सुरक्षित भागने में मदद कर सकती हो। तुम क्या चुनोगी?”
मेरी छाती ज़ोर से धड़क उठी और गले में एक गांठ सी बन गई। मैंने उस तस्वीर को कसकर पकड़ लिया जिसके लिए मैंने इतनी बेताबी से कदम उठाया था और सिर हिलाया।
“चलो।” गाय ने मुझे उठाकर खड़ा किया, और अपनी बाहों को मेरी कमर के चारों ओर लपेटे रखा। “चलो यहाँ से निकल चलते हैं।”

पैंतीस: लड़का

विल्सन के बलिदान ने मेरे दिल को एक कुंद तलवार की तरह चीर दिया और उनकी अनुपस्थिति में पूरी दुनिया में सामूहिक उदासी छा गई। उनके बिना कुछ भी पहले जैसा नहीं रहेगा।

विस्फोट के बाद, रूबी ने मुझे विल्सन को ढूंढने के लिए वापस जाने के लिए मना लिया, लेकिन वह बूढ़ा पिशाच कहीं नज़र नहीं आया, वहाँ बस मलबे और सुलगती राख का ढेर बचा था। सौभाग्य से, ट्रक बच गया था और हम भारी मन से उसमें चढ़े और उस वीरान फार्महाउस को आखिरी बार छोड़कर चले गए।

ट्रक के टायर हाईवे पर सरसराते हुए चल रहे थे और हल्की चांदनी डैशबोर्ड पर पड़ रही थी। मैंने बगल में रूबी की तरफ देखा। विल्सन के तबाह हो चुके फार्महाउस से भागने के बाद से हम दोनों ने कुछ ही शब्द बोले थे। ऐसा लग रहा था मानो अगर हम कुछ न कहें तो वो सच ही न हो। विल्सन ने हमें बचाने के लिए अपनी जान दे दी थी, खुद को कुर्बान कर दिया था ताकि हम सुरक्षित बच सकें, और यह कामयाब रहा। उसने न सिर्फ खुद को एक भयानक विस्फोट में मार डाला, अपनी सारी तकनीक और दुनियावी सामान के साथ, बल्कि उसने बचे हुए FUSE सैनिकों को भी अपने साथ उड़ा दिया था।

हालांकि विल्सन और मेरा रिश्ता हमेशा से जटिल था, फिर भी उसके चले जाने से मेरे दिल में एक गहरा खालीपन सा आ गया। वह हमेशा मेरे उस चिड़चिड़े बड़े भाई जैसा था जिससे मेरी कभी नहीं बनती थी, लेकिन यह जानकर कि वह अब इस दुनिया में नहीं है, मेरे दिल पर एक गहरा साया छा गया।

रूबी की बैंगनी आँखें तेज़ी से बदलते नज़ारों पर टिकी थीं, उसके हाथ उसकी गोद में फैले हुए थे। मेरे गहरे जुड़ाव के कारण, उसका दुख मुझमें समा गया, और मेरा अपना दुख भी बढ़ गया। मैंने देखा था कि वहाँ थोड़े समय में ही वे दोनों कितनी करीब आ गई थीं, और मैं न केवल उसके चेहरे पर दर्द देख सकती थी, बल्कि उसे अपने दिल में भी महसूस कर सकती थी।

हालांकि यह मानना मेरे लिए मुश्किल था, पर मुझे उसके लिए बुरा लग रहा था। जिस रात मैंने उसे पाया था, तब से उसका जीवन ऐसे आघातों से भरा हुआ था जो उसकी उम्र के किसी भी व्यक्ति को नहीं झेलने चाहिए थे। सच कहूँ तो, मैंने अपने जीवन में बीस साल के किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक देखा है। इस मामले में हम दोनों में एक समानता थी— एक पीड़ादायक जीवन, अनगिनत हानियों से भरा जीवन। और शायद यही कारण था कि हम इतने गहरे रूप से जुड़े हुए थे, एक ऐसा जुड़ाव जिसका दावा मैं किसी और के साथ कभी नहीं कर सकता था। और जिस तरह से वह कभी-कभी मुझे देखती थी, उससे मुझे पता चल गया कि वह भी इसे महसूस करती थी। यह सिर्फ खून का रिश्ता नहीं था, बल्कि कुछ गहरा था। कुछ ऐसा जो हमारी आत्माओं की गहराई से आया था। उस रात उससे बिछड़ने के विचार से ही मेरा दिल दुख रहा था।

रूबी ने आह भरी, उसके कंधे अनकहे भावों से कांप रहे थे। जैसे-जैसे हम टॉम्बस्टोन के करीब पहुँच रहे थे, उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। और विल्सन के साथ जो कुछ हुआ था, उसे देखते हुए मुझे यकीन नहीं था कि उसे बाकी लोगों के साथ मिलाने का यह सही समय होगा। लेकिन इस मामले पर मेरी राय चाहे जो भी हो, यह करना ही था। और यह आज रात ही करना था।

“क्या हम रुक सकते हैं?” उसने मेरी तरफ देखा, उसका चेहरा सामान्य से ज़्यादा पीला पड़ गया था। “बस… मुझे थोड़ी ताज़ी हवा चाहिए।”

मैंने एक पल के लिए उसे देखा, मेरा ध्यान कभी उस पर तो कभी सड़क पर भटक रहा था। हमारे पास समय कम था और रुकने का जोखिम नहीं उठाना चाहिए था, लेकिन मैंने उसकी आवाज़ में घबराहट सुनी और उसे अपने दिल में महसूस किया। वह बहुत डरी हुई थी।

अगले विश्राम स्थल पर, मैंने फ़्रीवे से उतरकर ट्रक को पत्थर की बेंचों वाले एक रमाडा होटल के बगल में खाली पार्किंग में रोक दिया। चाँद की हल्की धुंध हर चीज़ पर छाई हुई थी, मानो कोई अलौकिक या स्वप्निल दृश्य हो। रूबी गाड़ी से उतरी और एक खुले मैदान में चली गई। वह वहाँ चुपचाप खड़ी रही, मुझसे मुँह फेरे हुए। और तभी मुझे एहसास हुआ, जैसे उसके भीतर से ऊर्जा का एक सैलाब उमड़ आया हो, उसके भीतर गहरा पछतावा उमड़ पड़ा हो। वह विल्सन के साथ जो हुआ उसके लिए खुद को दोषी मान रही थी, मेरे साथ जो हुआ उसके लिए खुद को दोषी मान रही थी, और अपनी मृत्यु के लिए भी खुद को दोषी मान रही थी, अपराधबोध उसे ईंटों के ढेर की तरह कुचल रहा था।

उसके बगल वाले पेड़ पर एक प्लास्टिक की थैली फंसी हुई थी और हवा में लहरा रही थी। मैंने हिम्मत जुटाई, सीधा खड़ा हुआ और उसके पास गया, यह जानते हुए कि मुझे उसके लिए मजबूत बनना होगा। ऐसे समय में मैं अपनी कमजोरी, अपना दुख नहीं दिखा सकता था। मैंने अपना हाथ उसके हाथ पर रखा और मुझे खुशी हुई कि उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

“खुद को दोष मत दो।” मैंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा। “इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।”

वह मेरी ओर मुड़ी, उसकी आँखें डगमगा रही थीं।

“कैसे? अगर मैं कभी नहीं जाती, अगर मैं कभी…” हवा में उसके शब्द गुम हो गए। उसका शरीर कांप रहा था।

मैं उसे अपनी बाहों में भर लेना चाहता था और उसे वो दिलासा देना चाहता था जिसकी वो हकदार थी, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाया। मैंने समझदारी भरी बातें कहना बेहतर समझा। “मैं विल्सन को अच्छी तरह जानता हूँ और समझता हूँ कि वो नहीं चाहता होगा कि तुम उसके लिए शोक मनाओ। उसने एक लंबा और खुशहाल जीवन जिया, और कई बार मुझसे कहा कि वो मृत्यु को खुले दिल से स्वीकार करेगा।” उसकी झुकी हुई आँखें मेरी आँखों से मिलीं, उसकी घनी पलकों की छाया उसके गालों पर पड़ रही थी। ये देखकर मेरा दिल काँप उठा और मैंने आगे कहा, “वो तैयार था। और अपने जीवन के आखिरी पलों में तुमने उसे एक तोहफा दिया। खुशी का तोहफा, वो खुशी जो उसने कई सालों से नहीं जानी थी।”

उसने सिसकते हुए कहा, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। "उसने मुझसे कहा था कि वह लड़ते हुए मरना चाहता है। कि उसके शव को उसके घर से घसीटकर बाहर निकालना पड़ेगा।"

मैं हँस पड़ी। ये बिल्कुल विल्सन की आवाज़ जैसी थी। “और तुमने उसे ठीक वही दिया, फेथ, उसके जीवन की सबसे बड़ी लड़ाई। अब वो ठीक है और खुश है। वो आगे बढ़ चुका है। और अब हम भी आगे बढ़ेंगे।”

उसने अपने पैरों की ओर देखा और उन्हें ज़मीन पर पटक दिया। उसने सफेद रंग के टेनिस शूज़ पहने हुए थे जो मैंने उसे उस रात खरीदकर दिए थे जब मैं लिली की कब्र पर गया था।

“तुमने मुझे कभी नहीं बताया।” उसकी आवाज़ सूखी और कर्कश थी, दुख से भरी हुई। “तुम विल्सन से कैसे मिले? तुम दोनों के बीच क्या हुआ?”

मैंने अपने जबड़े भींच लिए, विल्सन के साथ बीते अपने अतीत को मैं दोबारा याद नहीं करना

चाहती थी। यह एक ऐसी बात थी जिसे मैंने अपने मन की गहराइयों में दबाकर रखा था। लेकिन यह मेरा फर्ज था। रूबी को सब कुछ बताना मेरा फर्ज था। यह आखिरी बार होगा जब मैं उसे देखूंगी और मुझे लगा कि कम से कम मैं उसे सच बता ही सकती हूं। मैं रामदा के नीचे वाली बेंच पर गई और बैठ गई, कोहनियां घुटनों पर टिकी थीं और हाथ आपस में जुड़े हुए थे। रूबी मेरे बगल में बैठ गई और अंदर की ओर मुड़ गई, उसके घुटने मेरे घुटनों से छू रहे थे। वह चुपचाप स्पष्टीकरण का इंतजार कर रही थी।

"मैं..." मेरे शब्द सूख गए और मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे मुंह में पत्थर अटक गए हों। मैंने अपने जीवन के उस दौर के बारे में कभी किसी को नहीं बताया था, लेकिन मैंने खुद को संभाला और अपनी बेचैनी को दूर धकेल दिया। मैंने गला साफ किया और फिर से बोलना शुरू किया।

"दो साल पहले जब लिली को एक पिशाच ले गया, तो मैं पूरी तरह से टूट गया। मैं न सोता, न खाता। मैंने अनगिनत दिन-रात उसकी तलाश की। मेरे सार्जेंट ने मुझे एक मानसिक अस्पताल में भर्ती करा दिया, जहाँ मुझे दवाइयाँ देकर बांध दिया गया था और मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। मुझे लगने लगा था कि मैं पागल हो गया हूँ।" हवा ने मेरे बालों को बिखेर दिया और मेरी गर्दन को छू लिया, जिससे मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई। मैंने खुद को आगे बोलने के लिए मजबूर किया।

"तभी फ्यूज के जनरल, जनरल ब्रांट मुझसे मिलने आए। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं पागल नहीं हूँ, और मैंने जो कुछ देखा था, उसकी पुष्टि की। उन्होंने मुझे बताया कि पिशाच सच में होते हैं और मुझे अपनी सेना में एक पद की पेशकश की; उन्होंने मुझे बदला लेने और सुरक्षा का वादा किया। मैं मान गया, इस उम्मीद में कि एक दिन मुझे पता चल जाएगा कि उसके साथ क्या हुआ, उसके अपहरणकर्ता को ढूंढ निकालूंगा। मैंने कड़ी मेहनत से प्रशिक्षण लिया और जल्दी ही पदोन्नति भी मिल गई, लेकिन बदले के वादे झूठे निकले। मुझे अपने मकसद में कोई मदद नहीं मिली, बल्कि फ्यूज की भलाई के लिए मेरा इस्तेमाल किया जा रहा था।"

रूबी ने अपनी उंगलियाँ मेरी बांह पर फेरते हुए मुझे मेरी गहरी सोच में दिलासा दिया। दूर से आती झिंगुर की आवाज़ के अलावा, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। बहुत ज़्यादा सन्नाटा। मैंने गहरी सांस ली और आगे बढ़ा।

कुछ समय बाद, एक रात एक पिशाच मुझसे मिलने आया। एक पिशाच जिसने कहा कि वह मेरी मदद कर सकता है।

"विल्सन।" रूबी ने फुसफुसाते हुए कहा।

मैंने सिर हिलाया। "उसने कहा कि वह मुझे लिली के पास ले जा सकता है और उसे बचाने में मेरी मदद कर सकता है। उसने कहा कि वह अभी भी ज़िंदा है।" मैंने ऊपर देखा। रूबी की भौंहें जिज्ञासा से सिकुड़ गईं। मैंने नज़रें हटा लीं, मेरा सीना कस गया। "वह मेरी मदद करना चाहता था क्योंकि वह पहले भी ऐसी ही स्थिति में रह चुका था। मेरे पास उस पर भरोसा करने के अलावा कोई चारा नहीं था। लेकिन जब वह मुझे वहाँ ले गया, उस जादूगरनी के समूह में जहाँ उसे बंदी बनाकर रखा गया था, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।"

"मुझे बहुत अफ़सोस है," रूबी ने धीमी आवाज़ में कहा। उसकी आवाज़ में सहानुभूति थी, जिसने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैं नहीं चाहती थी कि उसे मेरे लिए बुरा लगे, लेकिन मैं उसे सच बताना चाहती थी। मैंने हाथ हिलाकर बात टाल दी। बहुत समय बीत चुका था और मैंने आखिरकार उस बात को भुला दिया था, अपने अतीत को आराम दे दिया था।

"क्या विल्सन पकड़ा गया?" उसकी मीठी आवाज़ ने मेरी धुंधली यादों को तोड़ दिया और मैंने उसकी आँखों में देखा। "क्या इसीलिए वह छिपा हुआ था? क्या वह तुम्हारी मदद करते हुए पकड़ा गया?"

मैंने सहमति में सिर हिलाया। "और उसकी मदद के बदले में, मैंने उसे फ्यूज़ से भागने में मदद की। मैंने इसे एक दुर्घटना जैसा दिखाने की कोशिश की। लेकिन मेरे साथ उसके संबंध के कारण, वह अपने घर टॉम्बस्टोन वापस नहीं जा सका। वह गद्दार था और मारा जाता। इसलिए, मैंने उसे टक्सन में छिपाकर रखा। मैं इतने सालों से उसका राज़ छुपाए हुए हूँ।"

हम दोनों चुप हो गए, इस त्रासदी को समझने की कोशिश करते हुए। मैंने उन सभी पलों के बारे में सोचा जो मुझे इस मुकाम तक ले आए, मानो किसी कहानी की किताब के पन्ने पलट रहा हो। मुझे उनमें से किसी का भी पछतावा नहीं था और खासकर अब, मुझे रूबी को बचाने का भी कोई पछतावा नहीं था।

"चलो।" मैं खड़ी हुई, अपने अंदर बची आखिरी हिम्मत जुटाकर खुद को मजबूत बनाए रखा। मैंने उसे अपना हाथ बढ़ाया। "सूरज निकलने में अब ज्यादा देर नहीं है। हमें तुम्हें तुम्हारे नए घर तक पहुंचाना है।"

छत्तीस: रूबी

मेरा शरीर अकड़ गया था, गहरे पछतावे से सुन्न पड़ गया था। गाय सही था, अब तक जो कुछ भी हुआ था, उसके लिए मैं खुद को दोषी मान रही थी। मुझे बचाने के चक्कर में गाय जिस मुश्किल में फंसा था, उसके लिए मैं खुद को दोषी मान रही थी, उन अनगिनत मौकों के लिए भी जब मैंने हम सबकी जान खतरे में डाली थी, और सबसे पहले तो मरने के लिए भी, कुदरत की उस विचित्र रचना बनने के लिए भी।

लेकिन सबसे ज़्यादा, विल्सन की मौत के लिए मैं खुद को दोषी मानता था। उसने हमारे लिए अपनी जान कुर्बान कर दी थी और यह सोचकर मेरा दिल बैठ गया, मानो ज़मीन पर गिर पड़ा हो। लेकिन गाय के दिलासा भरे शब्दों से थोड़ी राहत मिली। वह सही भी था कि विल्सन नहीं चाहता कि हम उसके जाने का शोक मनाएँ। वह चाहता कि हम आगे बढ़ें। मेरे गुरु के शब्द मेरे मन में गूंजते रहे।

बीते हुए कल पर ध्यान मत दो, सिर्फ भविष्य की ओर देखो। तुम दुनिया के सबसे महान पिशाच बनोगे। इसमें कोई शक नहीं।

गाइ के देखने से पहले ही मैंने अपने गाल से एक आंसू पोंछ लिया। मैं बहुत रो चुकी थी, बहुत देर तक उदास रही थी। अब आगे देखने और जीवन के इस दूसरे मौके का बेहतर इस्तेमाल करने का समय था। आखिरकार, मैं ज़िंदा थी, भले ही एक हाइब्रिड वैम्पायर के शरीर में ही सही। बस, काश गाइ मेरे साथ होता। इस मुश्किल समय में मेरा साथ देता।

उसे छोड़ने का ख्याल मेरे अंदर मकड़ी के जाले की तरह खुजली पैदा कर रहा था, असहज और गलत सा। लेकिन हमें अलग होना ही था और हम दोनों यह जानते थे।

विश्राम स्थल से निकलने के बाद से ही सफ़र में सन्नाटा पसरा हुआ था, क्योंकि गाय ने आखिरकार विल्सन के साथ अपने रिश्ते की सच्चाई मुझसे ज़ाहिर कर दी थी। अब मुझे समझ आ गया था कि उनके बीच इतना तनाव क्यों था और न जाने क्यों, उनकी नज़दीकी को लेकर मुझे अनचाही जलन होने लगी, भले ही वह रिश्ता कितना भी बेमेल क्यों न हो। मैं भी गाय के साथ कुछ ऐसा ही चाहती थी, एक स्थिर रिश्ता, एक ऐसा साथी जिस पर मैं भरोसा कर सकूँ। मैंने यह उम्मीद पाल ली कि शायद मुझे टॉम्बस्टोन में अपनापन मिल जाए, आखिरकार मुझे वह परिवार मिल जाए जिसकी मुझे इतनी चाह थी।

गाइ ने रेडियो की आवाज़ धीमी कर दी और सड़क पर नज़र दौड़ाई। हमें जल्द ही एरिज़ोना के टॉम्बस्टोन शहर पहुँचना था— बदकिस्मत लोगों का शहर। मेरा पेट घबराहट से फड़फड़ा रहा था, लेकिन मैंने शांत रहने की कोशिश की। हम हाईवे 80 पर आगे बढ़ रहे थे और मेरा ध्यान टायरों की हल्की आवाज़ पर केंद्रित था।

"मैं लगभग भूल ही गया था।" गाय ने चुप्पी तोड़ी और अपनी जेब में हाथ डाला। "मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ।"

मैंने उसे संदेह भरी नजरों से देखा, यह सोचकर कि आखिर वह मेरे लिए क्या ला सकता है।

सड़क पर नज़र रखते हुए उसने मुट्ठी में कुछ पकड़ रखा था। मैंने अपना हाथ उसके हाथ से मिलाया और उसने उपहार मेरी हथेली में गिरा दिया। मैंने अपनी उंगलियां खोलीं तो देखा कि वह पॉलिश किए हुए मोतियों और लकड़ी के क्रॉस से बनी एक माला थी। मैंने उसे अपनी उंगलियों से लटकने

दिया और उसकी खूबसूरती देखकर मेरी सांसें थम गईं। गाय की गर्मजोशी भरी दयालुता मेरे सीने से होते हुए पूरे शरीर में फैल गई।
“यह बहुत सुंदर है। धन्यवाद।”
उस व्यक्ति ने सिर हिलाया लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।
मैंने उपहार को गौर से देखा, और बहुत पहले सुनी हुई कोई बात मेरे मन में कौतूहल से आ गई। मैंने उत्सुकता से अपनी भौंहें सिकोड़ीं। "रुको। क्या पिशाचों और क्रूस के बीच कोई संबंध है? क्या इससे मुझे चोट लगेगी?"
गाइ ने मानो हमेशा की तरह पहली बार हल्की सी हंसी हंसी, मानो सब कुछ ठीक हो जाएगा। उसने अपनी तीखी निगाहें मेरी तरफ डालीं और मुस्कुराया। "ये तो पुरानी कहावत है। अगर चाहो तो इसे सुन लो।"
मैंने मोतियों से सजी लंबी माला को अपने सिर पर डाला और उसे अपनी छाती पर टिका लिया, उंगलियों के बीच क्रॉस को थामे हुए। इससे मेरे बचपन और अतीत की अनगिनत यादें ताज़ा हो गईं। हालाँकि मेरा परिवार कभी कट्टर कैथोलिक नहीं था, फिर भी हम धार्मिक परिवारों की एक लंबी परंपरा से आते थे और त्योहारों और विशेष अवसरों पर अक्सर चर्च जाते थे। उपहार देखकर मैं मुस्कुराई, मुझे अपनी दादी द्वारा मेरे तेरहवें जन्मदिन पर दी गई माला याद आ गई।
“यह तुम्हें कहाँ से मिला?” मैंने आश्चर्य से पूछा, अपनी उंगलियों के बीच लकड़ी को रगड़ते हुए। क्रॉस का सिरा किसी कील की तरह नुकीला था।
गाइ ने इंडिकेटर चालू किया और लेन बदलते समय हल्की सी क्लिक की आवाज़ आई। उसने रियरव्यू मिरर में देखा। “मैंने इसे उस पुरानी वीरान मिशनरी जगह पर पाया था, जिस रात तुमने लेन बदली थी। मैं... मुझे इसे तुम्हें देने का सही समय नहीं मिल रहा था।”
मैंने उसे अपने सीने से लगा लिया, और उपहार को अपने हाथों में थाम लिया। "अभी का समय बिल्कुल सही है।"
“शायद इसे जन्मदिन का देर से मिला तोहफा कह सकते हैं।” गाय ने सड़क पर नज़र रखते हुए धीरे से कहा। उसकी ओर देखते ही मेरा दिल खुशी से भर आया। मेरे अगले शब्द साँस फूलते हुए निकले।
“तुम्हें याद था…”
हैरानी की बात है कि गाय ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, मेरे उपहार पर मेरी प्रतिक्रिया से वह बहुत खुश था। हम दोनों ने जो कुछ भी झेला था, उसके बाद मुझे लगा था कि मेरे रूप परिवर्तन के दौरान मेरा जन्मदिन शायद किसी ने याद ही नहीं रखा होगा, लेकिन उसे सब याद था। उसका चेहरा निहारते हुए मेरा दिल खुशी से फटने वाला था, मैं उसकी गालों की बनावट और ठुड्डी पर हल्की दाढ़ी को याद करने की कोशिश कर रही थी। मैंने देखा कि कैसे हाईवे की बत्तियाँ उस पर बार-बार टिमटिमा रही थीं, उसे रोशनी और छाया में डाल रही थीं। यह एक सपने जैसा था जिससे मैं कभी जागना नहीं चाहती थी, एक ऐसा सपना जिसमें, जीवन में पहली बार, मैं पूरी तरह से सुरक्षित और खुश महसूस कर रही थी। लेकिन यह सुकून कुछ ही मिनटों में खत्म होने वाला था, हमारा साथ समाप्त होने वाला था।
गाय ने पीछे मुड़कर रियरव्यू मिरर में देखा, उसके चेहरे पर चिंता के भाव थे। यह देखकर मेरे मन में अचानक भय की एक सिहरन दौड़ गई।
"क्या गलत?"
उसकी निगाहें शीशे से सड़क पर और फिर वापस शीशे पर टिक गईं। बोलने से पहले उसने अपनी गर्दन एक तरफ झुकाई।

"जब से हमने विश्राम स्थल छोड़ा है, तब से कोई हमारे पीछे है।"
अरे बाप रे, मैंने ध्यान ही नहीं दिया। मैंने चिंता से भौंहें सिकोड़ीं। "क्या यह सड़क पर कोई और ड्राइवर तो नहीं था?"
उसकी उंगलियां स्टीयरिंग व्हील पर कसकर पकड़ी हुई थीं, उंगलियों के जोड़ सफेद पड़ गए थे। लेकिन उसके चेहरे पर डर साफ झलक रहा था। वह शांत और संयमित दिख रहा था, लेकिन अंदर ही अंदर मैं जानता था कि वह घबराया हुआ था।
“पहले तो मुझे भी यही लगा था, लेकिन अब मुझे पक्का यकीन नहीं है। हम दूसरे रास्ते से जाएंगे।” गाय अगले एग्जिट पर मुड़ा और मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक बड़ी काली एसयूवी रैंप से हमारे पीछे आ रही थी। “धत् तेरे की!” उसने गुस्से में कहा।
फिर उसने दोबारा दाएँ मुड़ा और फिर बाएँ, एसयूवी हमारी हर हरकत का पीछा कर रही थी।
“तुम्हें क्या लगता है ये कौन है?” मैंने घबराकर अपनी उंगलियाँ आपस में मलते हुए पूछा। बहुत बुरा हुआ। हमें बस यही नहीं चाहिए था कि हम इतने करीब आकर पकड़े जाएँ।
“फ्यूज।” उसकी निगाहें फिर से शीशे पर टिक गईं। “मैं उन काली एसयूवी को कहीं भी पहचान सकता हूँ।”
“फ्यूज?” गले में अटकी गांठ को मैंने बड़ी मुश्किल से संभाला। सिर्फ इस शब्द को सुनते ही मेरे अंदर डर फैल गया और अचानक मैं विल्सन के घर वापस पहुँच गया, जहाँ फ्यूज का सिपाही मेरे सिर पर बंदूक ताने खड़ा था। मैं कांप उठा।
“उन्होंने हमें कैसे ढूंढा?”
उसका चेहरा तनावग्रस्त और सतर्क हो गया। "उनकी नज़रें हर जगह हैं, और चोरी की गाड़ी में होना शायद उसके लिए मददगार साबित नहीं होगा।"
मैंने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा और गाड़ी को ठीक हमारे पीछे आते हुए पाया, लेकिन अंदर बैठे व्यक्ति या व्यक्तियों को पहचान नहीं पाई। ट्रक की गति से मेरा शरीर कांप रहा था और मेरी धड़कन तेज़ हो गई थी। "मैं नहीं चाहती कि तुम मुसीबत में पड़ो," मैंने कहा, यह सोचते हुए कि जब से मैं इस प्राणी में बदली हूँ, ऐसा लगता है कि मैं जिसके भी करीब जाती हूँ, वह खतरे में पड़ जाता है। मेरे चारों ओर सब कुछ बारूदी सुरंगों से भरा था, जो किसी भी क्षण फट सकता था। अगर मेरी वजह से गाय पकड़ा गया तो मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगी।
“मुझे कोई परेशानी नहीं होगी,” गाय ने मानो मेरे मन की बात पढ़ ली हो, वैसे ही कहा। उसने अपनी नज़रें शीशे पर टिका दीं। “अभी तक किसी ने मुझे नहीं देखा है। मुझे बस इस आदमी से पीछा छुड़ाना है, तुम्हें टॉम्बस्टोन तक सुरक्षित पहुँचाना है और जितनी जल्दी हो सके मुख्यालय वापस जाना है।”
इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया दे पाता, गाय ने सड़क पर एक तीखा मोड़ लिया, टायर घिसते और घूमते हुए कच्ची सड़क पर चले गए। मेरा शरीर एक तरफ उछल गया और दरवाजे से टकरा गया।
“कसकर पकड़ लो, फेथ।” गाय ने मेरी तरफ देखते हुए बचकाना अंदाज़ में मुस्कुराते हुए कहा, “यह सफर थोड़ा मुश्किल होने वाला है।”
ट्रक अचानक आगे बढ़ा और मैं घबराहट में अपनी जांघों को पकड़ लिया क्योंकि कम आबादी वाले खेत और फार्म तेजी से पीछे छूटते जा रहे थे, काली एसयूवी अभी भी हमारा पीछा कर रही थी।
“अच्छा हुआ मैंने फोर व्हील ड्राइव गाड़ी चुनी।” उबड़-खाबड़ रास्ते पर गाड़ी के इधर-उधर हिलने-डुलने पर गाय हँस पड़ा। मैंने उसकी तरफ देखा और समझ गई कि अब उसे मज़ा आ रहा है, उसकी मासूम सी मुस्कान देखकर मुझे भी हंसी आ गई, भले ही हालात इतने खराब थे।

मैंने पीछे मुड़कर फिर देखा तो गाड़ी करीब आती नज़र आ रही थी और यह देखकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। "हम उन्हें खोने वाले नहीं हैं।"

“वह तो नौसिखिया है।” गाय ने स्टीयरिंग व्हील पर अपनी पकड़ और कस ली। “उसने अभी कुछ देखा ही नहीं है।”

उसने एक्सीलरेटर को ज़ोर से दबाया और हमारी ट्रक के पीछे से धूल उड़ने लगी, जिससे पीछा करने वाले के लिए रास्ता धुंधला हो गया। हमने तेज़ी से दाईं ओर मुड़कर एक मोड़ से होते हुए ओवरपास तक तेज़ी से गाड़ी चलाई। पुल पर चढ़ने के बजाय, गाय ने हमें सड़क से उतारकर एक खड़ी पहाड़ी से नीचे धकेल दिया, ट्रक लगभग सीधा खड़ा हो गया।

मेरी आवाज गले में अटक गई और मैंने साइड बार को कसकर पकड़ लिया। सीधा बैठने के लिए मैंने अपनी पीठ सीट से सटा ली। "क्या आप इस बारे में पूरी तरह आश्वस्त हैं?"

“चिंता मत करो, फेथ,” गाय ने कहा। “मैंने विल्सन से वादा किया था कि मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा और मैं कभी वादा नहीं तोड़ता।”

जैसे-जैसे हम तेज़ी से नीचे उतर रहे थे, मैंने अपनी सांस रोक ली, ऊबड़-खाबड़ ढलान से हमारे शरीर कांप रहे थे। रात इतनी अंधेरी थी कि मुझे खाई का तल मुश्किल से दिखाई दे रहा था। लेकिन मैंने अपनी नज़रें टिकाईं और मंज़िल दिख गई। हम करीब थे।

जैसे ही हम ज़मीन पर पहुँचे, मेरी साँस अटक गई, ट्रक घूम गया और हमें अंडरपास के नीचे ले गया। गाय ने हेडलाइट्स बंद कर दीं और इंजन रोक दिया, बस हमारी तेज़ साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैंने अपनी तेज़ नज़र से बाहर देखा, चाँदनी में जमती हुई बारीक धूल धूल के कणों की तरह चमक रही थी। गाय ने अचानक मेरा हाथ पकड़ लिया, बिजली के झटके मेरी बांह में दौड़ गए, और मैं उसकी गर्माहट से काँप उठी।

“कोई बात नहीं।” उसने अंधेरे में से मेरी तरफ देखा। “अब हम सुरक्षित हैं।”

पीछा करने के रोमांच ने मेरी इंद्रियों को तीव्र कर दिया था, और गाय की नज़दीकी से हमारे बीच आकर्षण और भी गहरा होता चला गया। मैं महसूस कर सकती थी कि हमारे दोनों दिल एक साथ धड़क रहे हैं, उसका गर्म खून और मेरा ठंडा खून, हमारी नसों में जोश से दौड़ रहा है। मेरा सिर उसकी ओर मुड़ा, और उसका मेरी ओर, हमारे होंठ बस कुछ इंच दूर थे। मैं और करीब झुकी, अपने होंठ उसके होंठों से लगाना चाहती थी, लेकिन हिचकिचा गई। उसके गर्म साँसों के स्पर्श से मेरे पेट में एक तेज़ दर्द सा उठ गया और मैं ऐसा नहीं कर सकी, यह जानते हुए कि इससे केवल परेशानी ही होगी।

हेडलाइट्स खाई के ऊपर की ओर बढ़ती गईं और उनकी बढ़ती रोशनी को देखकर गाय एकदम सीधा बैठ गया, मानो हमारी नज़दीकी को भूल गया हो। हम चुपचाप बैठे रहे जब तक कि हमारा पीछा कर रही काली एसयूवी पुल से गुज़रते हुए हमारी नज़रों से ओझल नहीं हो गई। गाय ने राहत की सांस ली और मुस्कुराते हुए अपने बालों में उंगलियां फिराईं।

"यह निकट वाला था।"

मैंने मुस्कुराया, लेकिन वह मुस्कान गंभीर थी। मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मुझे इस बात का दुख था कि हम खतरे से बाहर थे, क्योंकि इसका मतलब था कि मैं एक घंटे के भीतर टॉम्बस्टोन पहुँच जाऊँगा।

“शायद हमें कल रात तक इंतज़ार करना चाहिए,” मैंने कंधे उचकाते हुए कहा। “जब तक हमें पूरी तरह से यकीन न हो जाए कि हमारा पीछा नहीं किया जा रहा है। हम कोई और घटिया सा मोटल ढूंढकर फिल्म देख सकते हैं? हम विल्सन के लिए एक शोक सभा भी कर सकते हैं।” मैंने उम्मीद भरी मुस्कान के साथ कहा।

उस आदमी ने माफी मांगते हुए मुस्कुराते हुए कहा, "नहीं। अब हम ठीक हैं। वैसे भी, मुझे सुबह तक मुख्यालय वापस जाना है, नहीं तो उन्हें शक होने लगेगा।"

मैं जवाब देने ही वाला था कि खाई के ऊपर से तेज़ रोशनी और उड़ते हुए पत्थर दिखाई दिए। गाय और मैं डर से जम गए, हमारी ठुड्डी ऊपर उठीं तो हमने देखा कि एक काली एसयूवी पहाड़ी की चोटी से हवा में उछली और चट्टानी पहाड़ी पर ज़ोर से गिरी, और बेतहाशा तेज़ी से हमारी ओर आ रही थी। करीब... और करीब।

"धत् तेरे की!" गाय ने इंजन चालू किया, ट्रक ज़ोर से स्टार्ट हुआ। उसने एक्सीलरेटर पैडल पर पैर रखा, जिससे टायर धूल का गुबार उड़ाते हुए तेज़ी से घूमने लगे। गाड़ी एक झटके से रुकी, लेकिन फिर वापस अपनी जगह पर स्थिर हो गई, मेरे अंदर दहशत सी दौड़ गई।

"क्या हुआ?" डर से कांपते हुए मैंने अपनी सीट के किनारों को कसकर पकड़ लिया। गाय बार-बार एक्सीलरेटर पैडल दबा रहा था, टायर बेतरतीब इस्तेमाल के कारण चीख रहे थे।

"हम फंस गए हैं।" ट्रक को आगे बढ़ाने की एक और कोशिश करते हुए उसका चेहरा तनाव से सिकुड़ गया। लेकिन हर कोशिश हमें कीचड़ में और भी गहरे धंसाती जा रही थी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और मैंने हिम्मत करके ऊपर देखा। एसयूवी की तेज़ रोशनी उसकी ऊबड़-खाबड़ ढलान से टकराकर ऊपर उड़ती धूल और मलबे को रोशन कर रही थी। वह लगभग आधी ढलान पार कर चुकी थी।

"धत् तेरे की!" गाय ने गुस्से में स्टीयरिंग व्हील पर मुक्का मारा और फिर से एक्सीलरेटर पैडल पर ज़ोर से पैर पटका। रबर ज़मीन पर घिसटती हुई, चरमराहट और चटकने की आवाज़ आई। लेकिन ट्रक हिलता नहीं, थम सा गया।

"निकल जाओ," उसने आदेश दिया और अपनी चौड़ी आँखों से मेरी ओर देखते हुए कहा। "भागो।" डर के मारे मेरे फेफड़े तेजी से हवा अंदर-बाहर कर रहे थे। मैंने इनकार में अपना सिर हिलाया।

"नहीं," मैंने लगभग फुसफुसाते हुए कहा। पास आती एसयूवी की रोशनी गाय के चेहरे पर पड़ रही थी, जिससे उसकी तनावग्रस्त जबड़े की हड्डी कभी रोशनी में तो कभी छाया में चमक रही थी।

"जाओ। मैं इसे संभाल लूंगा। लेकिन तुम पकड़े नहीं जाने चाहिए।"

मैंने अपने हाथों को कांपने से रोकने के लिए मुट्ठी भींच ली।

"मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा रहा।" मेरे सीने में डर की लहर दौड़ गई। "मैं नहीं जाऊंगा।"

"नासमझी मत करो, फेथ!" गाय ने एक बार फिर टायरों को आज़माया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उसने मुझे घूरकर देखा। "अपनी रफ़्तार का इस्तेमाल करो। टॉम्बस्टोन बस कुछ ही मील दूर है। तुम वहाँ जल्दी पहुँच सकती हो।"

जलते हुए रबर की गंध से मेरी नाक में चुभन हुई और धूल से मेरी आँखों में जलन होने लगी। गाय को इस हालत में छोड़ने के ख्याल से ही मैं बुरी तरह डर गई थी। ऐसा नहीं होना चाहिए था। मैं अभी तैयार नहीं थी।

मुझे... मुझे परवाह नहीं है। मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता।

एक पल के लिए गाय के चेहरे पर कोमलता छा गई। वह कुछ कहने ही वाला था कि तभी एसयूवी अचानक सामने आ गई और इधर-उधर फिसलते हुए हमसे टकरा गई, जिससे हम दोनों बुरी तरह गिर पड़े। धूल के गुबार से सब कुछ धुंधला दिखने लगा। टक्कर के सदमे से मैंने अपना सिर हिलाया और गाय की तरफ देखा। वह चक्कर खाकर पलकें झपका रहा था, लेकिन शारीरिक रूप से उसे कोई चोट नहीं आई थी। हमारी डरी हुई आँखें मिलीं।

"जाओ!" वह चिल्लाया। "तुम अभी भी भाग सकते हो।"

पता नहीं मेरे गले में पित्त की तरह उमड़ती घबराहट थी या गाय के चेहरे पर दिख रहा डर, लेकिन

मैंने अपनी गाड़ी का दरवाज़ा पकड़कर हिलाया। वो हिला तक नहीं। एसयूवी ने मेरी तरफ की गाड़ी को कुचल दिया था, जिससे मैं अंदर फंस गया था।
“मैं नहीं कर सकता! यह खुलेगा ही नहीं।”
मुझे दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी और कदमों की आहट हमारी तरफ आती हुई महसूस हुई। गाय ने गहरी सांस ली और हैंडल पकड़ने के लिए मेरी तरफ झुक गया।
"धिक्कार है फेथ! मैं— टॉड?"
मैंने गाय के हैरान चेहरे को देखा और उसकी नज़र का पीछा करते हुए विंडशील्ड पर गया। हेडलाइट्स की रोशनी में, फ्यूज़ वर्दी पहने एक आदमी वहाँ अकेला खड़ा था, ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था। गाय और सैनिक एक पल के लिए एक-दूसरे को देखते रहे, धूल हमारे चारों ओर बैठ गई और हमारी दो क्षतिग्रस्त गाड़ियाँ दिखाई देने लगीं।
अजनबी ने सलाम किया, उसकी तीन उंगलियां कंधे पर जमी हुई थीं और मैं पूरी तरह से हैरान होकर देखता रहा जब गाय मुस्कुराया, राहत की सांस लेते हुए उसका शरीर ढीला पड़ गया। उसने ट्रक का दरवाजा खोला और सैनिक को आवाज़ दी।
"अरे केम्प! क्या तुम मुझे मारना चाहते हो?"
वह व्यक्ति वहीं खड़ा रहा, लेकिन उसने बेमन से मुस्कुराते हुए कहा, "माफ़ कीजिए, महोदय। मेरा नियंत्रण छूट गया था।"
“आराम से सैनिक।” गाय गाड़ी के आगे वाले हिस्से की ओर बढ़ा। केम्प ने अपना हाथ नीचे किया और कुछ देर बाद दोनों गले मिले और एक-दूसरे की पीठ थपथपाई।
मैं अचरज से अवाक रह गया। गाय के हावभाव से साफ था कि अब हम किसी खतरे में नहीं थे। फिर भी, वह एक FUSE सैनिक था और डर मेरे अंदर बुरी तरह जम गया था। मानो मेरी बेचैनी भांपते हुए, गाय ने विंडशील्ड से मेरी ओर देखा और मुस्कुराया। "सब ठीक है," उसने इशारे से कहा और हाथ उठाकर मुझे ट्रक में ही रहने का संकेत दिया। फिर वह केम्प की ओर मुड़ गया।
“तुम लोग मेरा पीछा क्यों कर रहे थे?” ट्रक के इंजन की धीमी आवाज़ के बावजूद, मैंने कान लगाकर उनकी बातचीत सुनने की कोशिश की। केम्प ने अपना बूट ज़मीन पर गड़ाया, उसकी नज़रें बारी-बारी से मुझ पर और गाय पर जा रही थीं।
"मैं आपको ढूंढने की कोशिश कर रहा था, महोदय, लेकिन आपके मोबाइल से आपसे संपर्क नहीं हो पा रहा था।"
गाइ ने अपने दोस्त को संदेह भरी निगाहों से देखा, हेडलाइट्स की रोशनी में दोनों आदमियों के चेहरे साफ दिखाई दे रहे थे। “ऐसा क्या ज़रूरी काम हो सकता है कि तुम मेरा इस तरह पीछा कर रहे हो? मैंने तुमसे कहा था कि मैं कुछ दिन की छुट्टी ले रहा हूँ। ये सब क्या है, केम्प?”
केम्प ने घबराहट में अपने सूखे होंठों को चाटा और एक पैर से दूसरे पैर पर अपना भार बदलते हुए कहा, "महामुख्यालय में एक दुर्भाग्यशाली व्यक्ति है, महोदय। बिस्बी की लड़ाई का एकमात्र जीवित बचा हुआ व्यक्ति।"
मैं उलझन में पड़कर भौंहें सिकोड़ लीं। मुझे लगा कि उस रात मैं ही अकेली बची थी। लड़ाई की तस्वीरें मेरे दिमाग में कौंध गईं, वो रात जब मैं धमाकों और आग के बीच जाग उठी थी, मुझे लगा जैसे मैं किसी नरक में हूँ। उसका ज़िक्र होते ही मेरे अंदर डर बैठ गया। केम्प ने पीछे हाथ बढ़ाया और एक लंबा सफेद लिफाफा निकाला। उसने उसे कसकर पकड़ रखा था और अपनी बात जारी रखी।
“जिस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति की मैं बात कर रहा हूँ, उसने मुझसे उसके लिए एक संदेश पहुँचाने को कहा। उसने कहा कि यह महत्वपूर्ण है।”

गाइ ने असहजता से मुंह बनाया और अपने हाथ जेबों में डाल लिए। "तुम्हें पता है कि यह नियमों के खिलाफ है, केम्प। बंदियों को बाहरी दुनिया से कोई संपर्क रखने की अनुमति नहीं है।"
“मुझे पता है।” सैनिक की आवाज़ कांप रही थी और अनिश्चित थी। “मैं उसे अनदेखा कर देता, सिवाय इसके कि वह एक नाम बार-बार कह रहा था। एक नाम जो शायद आपके लिए दिलचस्प हो।”
गाइ ने अपना सिर एक तरफ झुकाया। "क्या नाम है?"
केम्प ने गहरी सांस ली और अपने हाथों में लिफाफा पलट दिया। "रूबी कार्टर, वही लड़की जिसके बारे में तुमने पिछली बार बात करते समय मुझसे पता लगाने को कहा था।"
मेरा नाम सुनते ही मेरा पेट गुड़गुड़ाने लगा—घबराहट और डर का मिलाजुला एहसास। क्या गाय ने मेरा हालचाल पूछा था? और बदकिस्मत लोगों की इस दुनिया में भला मुझे कौन जानेगा? कहीं ऐसा तो नहीं कि...
यह जानकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। जिस रात कार दुर्घटना में मरने के बाद मैं जागा, उसी रात मैं एक पिशाच बन गया था। लेकिन मैं अकेला था, मेरा बनाने वाला कहीं नज़र नहीं आ रहा था। क्या यही वो बदनसीब इंसान है जिसके बारे में सब बात करते थे? मेरा बनाने वाला? मैंने धीरे-धीरे साँस ली, अपने दिमाग में उमड़ रही उथल-पुथल को शांत करने की कोशिश की, भावनाओं का ऐसा सैलाब जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था।
केम्प ने लिफाफा मुझे सौंप दिया, गाय ने उसे ध्यान से देखा और फिर मेरी ओर एक सरसरी नज़र डाली। उसने अपना ध्यान वापस सैनिक पर केंद्रित कर लिया।
क्या किसी को पता है कि तुमने ऐसा किया है?
"जी नहीं, महोदय।"
"क्या किसी को पता है कि तुम यहाँ हो, कि तुम मुझे ढूंढने आए हो?"
"जी नहीं, महोदय।"
गाइ ने गहरी सांस ली और धीरे से छोड़ी। उसने दूसरे आदमी के चेहरे पर घूरते हुए कहा, "ठीक है, तो फिर। इसे ऐसे ही रहने देते हैं। और इस दुर्भाग्यपूर्ण मामले के बारे में हम मुख्यालय लौटने के बाद सोचेंगे।"
केम्प ने मिट्टी में अपने पैर घसीटे। "अगर मैं इतनी हिम्मत करके पूछ सकूँ, महोदय, वह कब हो सकता है?"
गाय ने अपने बिखरे बालों में हाथ फेरा और आह भरी। "जल्दी ही, केम्प।" उसने मेरी तरफ देखा और फिर वापस मेरी तरफ। "मुझे पहले कुछ ज़रूरी काम निपटाने हैं, लेकिन मैं सुबह तक वहाँ पहुँच जाऊँगा।"
अगर मैं उस लिफाफे में इतना खोई न होती, तो उस आदमी का यह कहना कि मैं महज़ एक व्यवसाय थी, मुझे बहुत दुख पहुँचाता। मैं उससे अपनी नज़रें नहीं हटा पा रही थी। मुझे जानना था कि उसमें क्या है। मुझे जानना था कि क्या उसमें मेरे रचयिता के बारे में कोई सुराग छिपा है।
केम्प अपनी एसयूवी में गया और डिग्गी खोली। वह लकड़ी के दो तख्ते लेकर लौटा। उसने और गाय ने उन तख्तों को हमारी ट्रक के आगे के दोनों टायरों के नीचे ठूंस दिया। वे दोनों विंडशील्ड के सामने फिर से मिले और एक-दूसरे को देखने लगे।
कुछ पल की खामोशी के बाद, गाय आगे बढ़ा और केम्प के हाथ पर थपथपाया। “अच्छा काम करते रहो, सिपाही। और यह,” उसने लिफाफे पर थपथपाते हुए कहा, “हम दोनों के बीच ही रहेगा। ठीक है?”
केम्प ने सिर हिलाया, उसकी निगाहें हिचकिचाते हुए मेरी ओर घूमीं। एक पल बाद, वह काली

एसयूवी में कूदा और धूल उड़ाते हुए चला गया। गाय वापस ट्रक में चढ़ा और दरवाज़ा बंद कर लिया। उसने मेरी ओर देखा, उसकी आँखें कोमल और नम थीं, और उसने मुझे लिफाफा थमा दिया। मैंने उसे अपने हाथों में लेकर देखा, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। लिफाफे के पहले पन्ने पर नाम साफ-सुथरे, बड़े अक्षरों में लिखा था।

रूबी कार्टर।

मैंने गाइ की ओर एक नज़र डाली, डैशबोर्ड की नीली रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। बोलते समय मेरी आवाज़ कांप रही थी। "तुम इसे नहीं पढ़ोगे?"

गाइ ने गाड़ी को ड्राइव मोड में डाला और इंजन को तेज़ किया। कुछ ही पल में ट्रक तेज़ी से आगे बढ़ा और लकड़ी के तख्तों पर से आसानी से निकल गया, जिससे हम फंसे हुए थे। हम दोनों जानते थे कि इसका क्या मतलब हो सकता है; कि शायद यह लिफाफा ही वह जवाब है जिसकी मुझे इतने समय से तलाश थी। उसने मेरी तरफ देखा और आह भरी।

“इसे पढ़ना मेरा काम नहीं है। यह आपका निर्णय है।”

गाइ पथरीले रास्ते से होते हुए वापस राजमार्ग पर आ गया। थोड़ी देर बाद, मुझे टूटे-फूटे पुराने संकेत दिखाई दिए जो टॉम्बस्टोन के नज़दीक होने का संकेत दे रहे थे। मेरे हाथ-पैर सुन्न हो गए, शरीर में झुनझुनी होने लगी।

“गाइ?” मैंने लिफाफे को अपनी हथेलियों के बीच कसकर पकड़ लिया।

"हाँ?"

मैं अपना डर स्वीकार नहीं करना चाहता था, लेकिन फिर भी मेरे मुंह से शब्द निकल ही गए।

"मुझे डर लग रहा है।"

मुझे ठीक से पता नहीं था कि मुझे किस बात से ज़्यादा डर लग रहा था: टॉम्बस्टोन के अन्य बदकिस्मत लोगों में शामिल होने से, या लिफाफा खोलने से। लेकिन दोनों ही स्थितियों में, डर और घबराहट मेरे पूरे शरीर में फैल गई।

“सब ठीक हो जाएगा,” गाय ने गंभीर निगाहों से जवाब दिया। “जैसा कि विल्सन ने कहा, तुम मजबूत और दृढ़ निश्चयी हो। तुम आसानी से घुलमिल जाओगे। और उस लिफाफे में जो कुछ भी है, वह सिर्फ तुम्हारे लिए है। अब इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है।”

उसके शब्दों से मेरा दिल बैठ गया। मानो वह कह रहा हो कि अब मेरा उससे कोई लेना-देना नहीं है। पर मैं समझ गई। गाय को एक नई ज़िंदगी जीनी थी और हम इस तरह दुश्मन बनकर साथ नहीं रह सकते थे। लेकिन सच्चाई ने मेरे दुख को कम नहीं किया। और अब जब टॉम्बस्टोन में मेरा प्रवास बस आने ही वाला था, तो डर मेरे मन में और गहरा बैठ गया।

मैं कोई साधारण पिशाच नहीं था जो उनके समुदाय में शामिल हो रहा था। मैं एक आधा पिशाच, आधा इंसान, सुपर-हीरो जैसी शक्तियों वाला और एक इंसान का दिल रखने वाला अजीब प्राणी था। लेकिन उस समय मेरे पास अनुकूलन करने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। हम सड़क पर एक बैरिकेड के पास पहुँचे जो पुराने वीरान कस्बे की ओर जाने का संकेत दे रहा था। वहाँ एक बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था 'अवैध: वापस लौटें।' लेकिन गाय सड़क से हटकर उसके चारों ओर से निकल गया। वह गाड़ी चलाता रहा।

“इसे एक नई शुरुआत समझो,” उन्होंने सड़क पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा। “एक नए जीवन की नई शुरुआत। ऐसा मौका बहुत कम लोगों को मिलता है।”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि वह मेरी आवाज़ में डर और उदासी को सुन पाए। मैं मज़बूत बनना चाहती थी, बल्कि आने वाली चुनौतियों के लिए मुझे मज़बूत बनना ही था। मैं अब एक पिशाच थी और लगभग अपने घर पहुँच चुकी थी। और शायद, बस शायद, मुझे

आखिरकार पता चल जाए कि मुझे किसने बनाया है।

सैंतीस: रूबी

जब मैंने लिफाफा अपनी हथेलियों में पकड़ा तो मेरी रीढ़ की हड्डी में एक अजीब सी सिहरन दौड़ गई। यह लिफाफा, जिसे देखकर ऐसा लग रहा था कि यह मेरे ईश्वर का ही भेजा हुआ है। मैंने लिफाफे के सामने साफ-साफ लिखे अपने नाम पर नजर डाली और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

रूबी कार्टर

गाइ ने अपना गला साफ किया, जिससे मेरा ध्यान उसकी भूरी आँखों पर वापस गया, डैशबोर्ड की हल्की रोशनी में वे नीली चमक रही थीं। "क्या तुम इसे नहीं खोलोगे?" उसने पूछा।

मैंने एक बार फिर चिट्ठी पर नज़र डाली। मुझे लगा था कि वह चाहता है कि मैं टॉम्बस्टोन पहुँचने तक इसे न खोलूँ, लेकिन लगता है अब खोलने का समय आ गया था। जैसे ही मेरी उंगलियाँ कागज़ पर कसीं, मेरे पेट में घबराहट ऐसे फैल गई जैसे झागदार पानी बाथटब में बह रहा हो। "क्या हमारे पास पर्याप्त समय है?"

ट्रक सुनसान राजमार्ग पर तेज़ी से दौड़ रहा था, किनारे लगे संकेत हमें टॉम्बस्टोन के नज़दीक होने का संकेत दे रहे थे। गाय ने एक पल के लिए खिड़की से बाहर देखा और फिर मुझे देखकर मुस्कुराया। उसने गैस पैडल से अपना पैर हटा लिया और ट्रक की रफ़्तार धीमी हो गई।

मैं समय निकाल लूंगा।

विशाल खुला रेगिस्तान इतनी धीमी गति से हमारे सामने से गुजर रहा था मानो समय थम गया हो। मैंने गाय की मुस्कान का जवाब दिया और घबराहट से आह भरी, अपनी उंगलियों के बीच कागज को महसूस करते हुए।

अगर यह पत्र मेरे ईश्वर का था, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, तो मेरे मन में ये सवाल उठ रहे थे: क्यों? अभी क्यों? और आखिर वे क्या कहना चाहते होंगे? लेकिन अपनी घबराहट के बावजूद, मैं और इंतज़ार नहीं कर सकती थी। मैंने गहरी साँस ली, अपने बेचैन दिल को शांत करने की कोशिश की, और पत्र का पिछला भाग खोला। मैंने अंदर से कागज़ निकाला और काँपती उंगलियों से उसे खोला।

पृष्ठ पर राजमार्ग की बत्तियाँ चमक रही थीं और शब्द बार-बार दिखाई दे रहे थे और गायब हो रहे थे, लेकिन मैंने उन्हें फिर भी देखा।

प्रिय रूबी,

मेरा नाम फ्रैंक कैवलॉन है। मैंने मन ही मन सौ बार तुम्हें यह पत्र लिखने का सपना देखा था। लेकिन अब जब मैं लिख पा रहा हूँ, तो मुझे शब्द नहीं सूझ रहे। इसलिए, मैं सीधे-सीधे कह देता हूँ। रूबी, मैं तुम्हारा जैविक पिता हूँ।

मेरी सांस अटक गई और मैंने गहरी आह भरी। गाय ने मुझे तिरछी नज़र से देखा, पर कुछ नहीं बोला। मैंने उसे असहज मुस्कान दी और जब उसने नज़रें हटा लीं, तो मैंने अविश्वास भरी निगाहों से वापस पन्ने पर नज़रें गड़ा दीं, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था।

मैं चाहती हूँ कि तुम जानो कि मैं तुम्हें और तुम्हारी माँ को कभी छोड़ना नहीं चाहती थी, लेकिन हालात ऐसे थे कि तुम्हारी सुरक्षा के लिए मुझे ऐसा करना पड़ा। मुझे इस बात का बहुत दुख है कि

जन्म के बाद मैं तुम्हें कभी अपनी बाहों में नहीं ले पाई। लेकिन जो बीत गया सो बीत गया और अब मैं ऐसी स्थिति में हूँ जहाँ शायद यही एक आखिरी बातचीत होगी जो मैं तुमसे कर पाऊँगी। बहुत सी बातें हैं जो मैं तुम्हें बताना चाहती थी, और मैं हर दिन मन ही मन तुमसे बातें करती हूँ। लेकिन इस कागज पर जगह सीमित है, और लिखने के लिए समय भी सीमित है। तो बस, शुरू करते हैं।

चाहे तुम मुझे देख पाओ या न देख पाओ, रूबी, तुम्हारे जन्म के दिन से ही मैं हमेशा तुम्हारे साथ था। जब तुमने पहला कदम उठाया, तो मैंने छुपकर तुम्हें देखा। जब तुमने पहली बार साइकिल चलाई, तो तुम्हारी आँखों में चमक आ गई। जिस रात तुम्हारे घर के सामने वाले लॉन में तुम्हारा पैर टूट गया और तुम झूठे आँसू बहा रही थी, उस रात मैं तुम्हारे साथ था। मेरी सबसे बड़ी इच्छा थी कि मैं तुम्हें अपनी बाहों में लेकर एक सच्चे पिता की तरह दिलासा दूं। लेकिन मैं बस अंधेरे में उदास होकर देखता रहा, मेरा दिल टूटता रहा।

मैं तुम्हारे पहले स्कूल डांस में मौजूद था। तुम्हें राजकुमारी की तरह सजे-धजे, घुंघराले बालों और मेकअप में देखकर मेरा दिल खुशी से भर आया था। मैं तुम्हारे हाई स्कूल ग्रेजुएशन में भी मौजूद था, दुनिया का सबसे गर्वित पिता।

ट्रक एक गड्ढे में जा गिरा और मेरा शरीर झटके से उछल पड़ा। मुझे उम्मीद थी कि चिट्ठी में क्या होगा, यह सोचकर मैं बहुत उत्सुक हो गया। मेरे होंठ कांप रहे थे और दिल ज़ोर से धड़क रहा था। लेकिन मैं पढ़ता रहा, पन्ने से नज़रें हटा नहीं पा रहा था।

रूबी, मैं हर पल तुम्हारे साथ थी। तुम कभी अकेली नहीं थीं, जैसा कि मुझे पता है कि तुमने इतने सालों तक महसूस किया। तुम्हारी माँ हमेशा एक अच्छी माँ थीं, और हालाँकि मुझे यह स्वीकार करने में बुरा लगता है, लेकिन जिस व्यक्ति ने मेरी जगह ली, वह तुमसे लंबे समय तक दूर रहने के बावजूद भी प्यार करता था। मैं उन दोनों का दिल से शुक्रिया अदा नहीं कर सकती कि उन्होंने मेरी बेटी का इतना ख्याल रखा, लेकिन मैं उनकी बहुत आभारी हूँ। लेकिन जितनी बार मैं तुम्हारे साथ थी, आखिरी बार का दर्द मेरी आत्मा को कचोटता है।

मैं उस रात वहीं थी जब तुम भारी मन से बारिश में गाड़ी चलाते हुए निकल गई थी। मुझे पता है क्या हुआ था। और मुझे यह भी पता है कि तुम्हारी माँ ने आखिरकार तुम्हें मेरे बारे में बताया था और यह जानकर मुझे बहुत दुख होता है कि इसका तुम पर इतना गहरा असर हुआ। लेकिन उन्हें मेरे जाने का कारण कभी पता नहीं चला, क्योंकि मैं उन्हें बता नहीं पाई थी। और मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि तुम्हें यह जानकर कितना गुस्सा आया होगा कि मैंने तुम दोनों को छोड़ दिया था। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।

लेकिन उस रात मैं तुम्हारी सुरक्षा को लेकर चिंतित होकर तुम्हारे पीछे-पीछे आया था। और जब तुम्हारी कार दुर्घटनाग्रस्त हुई, तो खून बहते हुए तुम्हें मैंने ही अपनी बाहों में थाम रखा था। मैं तुम्हें जीते जी कभी अपनी बाहों में नहीं थाम पाया, लेकिन मृत्यु के समय मैंने तुम्हें थाम लिया, हमारी निकटता का आनंद लेते हुए।

आखिरकार पहली बार तुमने मेरी आँखों में देखा, हमारा पहला मिलन हुआ। लेकिन यह वह मिलन नहीं था जिसका मैंने हमेशा सपना देखा था। तुम मर रही थी और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मैं तुम्हें इस तरह खोना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी, खासकर तब जब मुझे पता था कि मैं कुछ कर सकती हूँ। इसलिए मैंने तुम्हें कार में आग लगने से पहले ही बाहर निकाला और उस जगह ले गई जहाँ मुझे पता था कि तुम सुरक्षित रहोगी। एक ऐसी जगह जहाँ मेरे जैसे लोग छुपकर रहते हैं।

जैसे ही गाय ने खिड़की खोली, ठंडी हवा का एक झोंका मेरे चेहरे पर लगा और मैंने कागज़ को इतनी ज़ोर से पकड़ लिया कि मेरी उंगलियों के जोड़ दुखने लगे। मेरी आँखें दुख और खुशी के मिले-

जुले भावों से भर उठीं, मानो गर्म आँसू बहने ही वाले थे। लेकिन उन्हें बहने देने के बजाय, मैं आगे बढ़ती रही, और अधिक जानना चाहती थी। और अधिक जानने की ज़रूरत थी।

लेकिन इससे पहले कि मैं तुम्हें तुम्हारे रूपांतरण के दौरान देख पाती, वे मुझे ले गए। वे लोग—जो हमारी जाति को मारना चाहते हैं—ने हमारे ठिकाने पर घात लगाकर हमला किया और मुझे छोड़कर बाकी सबको मार डाला, और मुझे बंदी बना लिया। जब मुझे लगा कि उन्होंने तुम्हें मार डाला है, तो मेरे अंदर क्रोध का सैलाब उमड़ पड़ा, लेकिन तभी मुझे तुम्हारा आभास हुआ। क्योंकि मैंने ही तुम्हें जन्म दिया था, मैं जानती थी कि तुम अभी भी जीवित हो, और आज भी जीवित हो। और तुम जहाँ भी हो, मुझे आशा है कि तुम मुझे मेरे किए के लिए क्षमा कर दोगी। हालाँकि मेरा जीवन अंधकारमय रहा है, मैंने सोचा था कि अगर मैं तुम्हें बचा सकूँ, तो शायद मुझे फिर से प्रकाश मिल जाए। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो मुझे पता है कि यह एक स्वार्थी कदम था, लेकिन उस समय मेरे पास यही एकमात्र विकल्प था। मैं अपनी नन्ही बच्ची को मौत के हाथों नहीं जाने दे सकती थी।

बेटी, मैंने तुम्हें एक भयानक वरदान दिया है, तुम्हारी मर्ज़ी के बिना तुम्हें एक अमानवीय प्राणी बना दिया है। और इसके लिए मुझे बहुत अफ़सोस है। अगर तुम मुझसे हमेशा के लिए नफ़रत करो तो मैं समझ सकता हूँ, लेकिन बस इतना जान लो कि मेरे दिल में तुम्हारे लिए जो प्यार है, वह निःशर्त है। जान लो कि मैंने हमेशा तुम्हारा भला ही चाहा है और इतनी कम उम्र में तुम्हें खोने का ख्याल भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे माफ़ कर दो, रूबी। हर चीज़ के लिए। मैं दुआ करता हूँ कि तुम मुझे माफ़ कर दो कि मैंने तुम्हें तुम्हारी ज़िंदगी के सबसे अहम सालों में छोड़ दिया, जब एक पिता को तुम्हारे साथ होना चाहिए था। मुझे माफ़ कर दो कि मैंने तुम्हें बदलने का फ़ैसला किया। और मुझे माफ़ कर दो कि मैंने तुम्हें एक बार फिर अपने हाल पर छोड़ दिया है।

मैं अब हिरासत में हूँ, और इसीलिए मैं इतनी जल्दी में लिख रहा हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि मेरा समय समाप्त हो रहा है। मैं उनके सवालों का जवाब नहीं दूँगा और न ही उनकी माँगों के आगे झुकूँगा। और संभवतः, जब तक तुम्हें यह पत्र मिलेगा, अगर कभी मिला भी, तब तक मैं मर चुका होऊँगा। मुझे माफ़ कर दो, मेरी बेटी। मुझे बहुत अफ़सोस है। मैंने जो किया है, उसके लिए मेरा दिल दुखता है।

मैं तुमसे असीम प्रेम करता हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर दो।

फ्रैंक कैवलॉन (पिता)

मेरे सीने में गर्माहट और कुछ-कुछ दिल का दर्द सा फैल गया। मेरे गाल से एक आंसू गिरा और मेरे असली पिता के नाम के बगल वाले पन्ने पर एक नम फूल जैसा निशान बन गया। और जैसे कोई बम फटा हो, यादों की चमक और चटख रंग मेरे दिमाग में फूट पड़े और जिस ट्रक में मैं बैठी थी, वह धुंधला होता चला गया, हर रंग एक दृश्य में घुलता चला गया, मेरे जीवन की घटनाओं का एक क्रम। यादें मुझ पर इतनी गहरी चोट पहुँचा रही थीं कि मुझे लगा जैसे मैं आसमान में लटका हुआ कोई पटाखा हूँ जो टुकड़ों में बिखर रहा है। यह सब उस समय से शुरू हुआ जब मैं नवजात शिशु थी, कपड़े में लिपटी हुई, परछाई में छिपी रहस्यमयी भूरी आँखों को देखकर खिलखिला रही थी। फिर, मैंने अपना घर, अपना परिवार देखा। खुद को ऐसे देखा जैसे कोई स्लाइड शो देख रही हो। तस्वीरें तेज़ी से आँखों के सामने से गुज़र रही थीं, मेरे अंदर हर तरह की भावनाएँ उमड़ रही थीं, मेरा सीना उनके भारी भार के नीचे सिकुड़ रहा था।

पल बीतते गए, समय गुज़रता गया और मैं बड़ी होती गई। मेरा चेहरा बदल गया, गोल-मटोल गाल उभरने लगे। मेरे चेहरे के दाग-धब्बे कम होते गए, टांगें लंबी होती गईं। एक बच्ची का शरीर एक युवती के शरीर में बदल गया और जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई, मेरा दिल भी मजबूत होता गया। मेरे

माता-पिता के चेहरे उम्र के साये में ढलने लगे, उनके बाल किनारों से सफ़ेद होने लगे। लेकिन हर पल, मुझे वे शाश्वत भूरी आँखें, बिल्कुल मेरी आँखों जैसी, मुझे बढ़ते हुए देखती रहीं, सोते समय मेरी रक्षा करती रहीं। मेरा दिल काँप उठा।

मुझे याद आया। मुझे सब कुछ याद आया, कुछ भी याद नहीं आया, जीवन और मृत्यु की गंध भी। मुझे अपने पिता के प्रति अपना प्रेम याद आया, चाहे उनका मुझसे खून का रिश्ता हो या न हो। मुझे अपने सपने और आकांक्षाएं याद आईं, मानो मैंने उन्हें एक बोतल में भरकर समुद्र में बहा दिया हो। लेकिन मेरे दिमाग में जीवन के जो टुकड़े घूम रहे थे, उनके बीच एक खास पल जम गया, धुंधलाता चला गया।

मैं क्षतिग्रस्त कार के अंदर फंसी पड़ी थी। बारिश। ठंडी बारिश। भूरी आँखें, जिनमें अब बैंगनी चमक आ गई थी, मुझे दुर्घटनास्थल से बाहर ले गईं, मजबूत बाहों ने मुझे थामे रखा, जब मैं खून बह रही थी, जब मैं मर रही थी। मेरे पिता, मेरे असली पिता, वहाँ थे। फ्रैंक। वह एक पिशाच थे, लेकिन दयालु और करुणामय थे। वह मुझे मरते हुए नहीं देख सकते थे। वह अपनी बेटी को मृत्यु की बाहों में जाते हुए नहीं देख सकते थे, जबकि उनके पास अमरता का वरदान था, एक ऐसा वरदान जो वह मुझे दे सकते थे।

जैसे ही नुकीले दांतों ने मेरी त्वचा को भेदा, मेरी गर्दन में तेज दर्द होने लगा। दुर्घटना के कारण मेरे शरीर में वैसे भी बहुत कम खून बचा था, इसलिए कुछ ही पलों में मेरा सारा खून सूख गया। जैसे ही मेरे शरीर से खून की आखिरी बूंद निकली, अंधेरा छा गया। मुझे धुंधला सा एहसास हुआ कि मुझे कहीं ले जाया जा रहा है, मानो मैं उड़ रही हूँ, बारिश की बूँदें मुझ पर और फ्रैंक पर पड़ रही थीं। मुझे धुंधली सी आवाजें और चिंता भरे अभिवादन याद आए। किसी ने मुझे छुआ। और फिर गोलियों की आवाज। आग की लपटें। दर्द। आवाजें चीखों में बदल गईं। चीखें गायब हो गईं, और मैं अकेली रह गई। एक धमाके ने मुझे चीर डाला, मेरे कपड़े मेरे शरीर से अलग कर दिए, मेरी त्वचा झुलस गई।

लेकिन मैंने अपनी रगों में जीवन का रक्त बहता हुआ महसूस किया, वही रक्त जो मेरे पिता फ्रैंक ने मुझे दिया था। इसने मेरे घावों को भर दिया, मेरे शरीर को तड़पते हुए ठीक कर दिया। और ठीक जब मुझे यकीन हो गया कि मैं फिर से मर रहा हूँ, तभी मैंने एक और चेहरा देखा। युद्ध की वर्दी में एक देवदूत का चेहरा। उसने मेरे सिर पर बंदूक तान रखी थी, उसके चेहरे पर भाव बदल गए थे। लेकिन फिर उसने अपना हथियार नीचे रख दिया और घुटनों के बल बैठ गया।

"धत् तेरे की, मुझे इसका पछतावा होगा।"

मेरा दिमाग झटक गया, यादों को समझने की कोशिश कर रहा था। लेकिन जैसे ही वे यादें आईं, वैसे ही पल भर में बिखर गईं, मानो हवा में राख की तरह उड़ गईं। मेरा शरीर अतीत और वर्तमान, सपने और हकीकत के बीच जूझ रहा था।

“रूबी? रूबी, क्या तुम ठीक हो?” गाय की आवाज की सच्चाई धुंध को चीरते हुए मुझ तक पहुंची, मानो गर्म रोशनी की किरण की तरह मुझे भेद रही हो।

मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और मेरी आँखें तेज़ी से झपक रही थीं। ट्रक फिर से मेरी नज़र में आया, साथ ही गाय का चिंतित चेहरा भी। उसने मेरी तरफ देखा, फिर सड़क की तरफ और फिर मेरी तरफ।

“रूबी, क्या बात है? क्या हुआ?”

मैं हांफ रहा था, मुश्किल से सांस ले पा रहा था, पत्र को सीने से ऐसे चिपकाए हुए था जैसे वह मेरे लिए जीवनरक्षक नाव हो। मेरे मुंह से शब्द सूखकर निकल रहे थे।

“मेरे… मेरे पिता।”

"मुझे याद है..."
मेरे भीतर खुशी और दुख का मिला-जुला भाव उमड़ रहा था और मुझे विश्वास नहीं हो रहा था— मेरे जैविक पिता इतने वर्षों से मेरी रक्षा कर रहे थे। और वे, सब लोगों में से, मेरे सृष्टिकर्ता थे। लेकिन अब उन्हें FUSE ने पकड़ लिया था और शायद मुझे उनसे मिलने का मौका कभी नहीं मिलेगा। दुःख ने मेरे हृदय को जकड़ लिया।
मैंने अपना सिर हिलाया, ताकि इस बात को मैं समझ सकूँ। गाय ने सड़क से अपना चेहरा हटाकर मेरी तरफ देखा।
“तुम्हारे पिता?” उसने स्टीयरिंग व्हील पर अपनी पकड़ मजबूत करते हुए पूछा। “क्या... ‘तुम्हारे पिता’ से तुम्हारा क्या मतलब है?”
मेरी नजरें मेरी गोद में पड़े आंसुओं से भीगे पत्र पर पड़ीं। आखिरकार जवाब मिलने की खुशी से मैं पूरी तरह से राहत महसूस करने लगी।
“वो मेरे पिता थे।” मैंने एक साँस लेने के लिए संघर्ष किया, फिर दूसरी। “जी हाँ, मेरे असली पिता — वो, जिनके बारे में मैंने सोचा था कि उन्होंने हमें सालों पहले छोड़ दिया था। वही हैं। वही मेरे रचयिता हैं।” मैंने कागज़ को धीरे से छुआ, मानो ऐसा करने से मुझे अपने असली पिता और उनके व्यक्तित्व के बारे में बेहतर समझ मिल सके। “उनका नाम फ्रैंक है।”
“फ्रैंक? तुम्हारे पिता?” गाय ने मुझे संदेह भरी निगाहों से देखा। “तुम इतने यकीन से कैसे कह सकते हो? तुम्हें कैसे पता कि वो सच बोल रहे हैं?”
"मै सिर्फ इतना जनता हूँ।"
मेरी बात पर गाय ने सिर हिलाकर सहमति जताई और उसकी निगाहें हाईवे पर टिकी हुई थीं। आधी रात बीत चुकी थी और भोर होने वाली थी। फिर भी, आसमान कौवे के पंख की तरह काला था।
"मुझे खुशी है कि आखिरकार तुम्हें पता चल गया।" गाय की आवाज खुरदरी और कर्कश थी।
“मैं भी।” मेरे होंठों पर मुस्कान आ गई, लेकिन मैं हिचकिचा गई। “लेकिन, गाइ?”
गाइ अपनी सीट पर थोड़ा हिल गया। "हाँ।"
“मैं अभी टॉम्बस्टोन नहीं जा सकती, खासकर तब जब मुझे पता है कि मेरे पिता को बंदी बनाया गया है। आपको मुझे उनके पास ले जाना होगा। मुझे उन्हें बचाने में मदद करनी होगी।”
गाइ ने अपना सिर हिलाया, उसके चेहरे पर एक कठोर भाव छा गया। “बिल्कुल नहीं, फेथ। मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम मारी जाओगी, हम दोनों मारे जाएंगे। हम जोखिम नहीं उठा सकते।”
"लेकिन-"
“बिल्कुल नहीं,” गाय ने मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा। “हम आपको टॉम्बस्टोन तक सुरक्षित पहुंचाने के लिए इतनी दूर आए हैं और मैं अब इसे खराब नहीं करने वाला। साथ ही, मैंने एक वादा भी किया है।”
गाइ और उसके वादों के बारे में सब कुछ जानते हुए, मैंने अपनी आँखें घुमाने की इच्छा को रोका। मैंने गहरी साँस ली और अपनी झुंझलाहट को दूर किया। यह एक ऐसी लड़ाई थी जिसे मैं कभी नहीं जीत सकती थी। मैंने गाइ की ओर देखा, मेरे मन में अभी भी कई सवाल थे।

“आपके सैनिक केम्प ने कहा है कि वह हिरासत में है। उसके साथ क्या होगा? क्या वे उसे मार डालेंगे?”

कुछ पल के लिए हमारे बीच सन्नाटा छा गया, फिर गाय ने एक गहरी आह भरी। उसने मेरी तरफ गंभीरता से देखा।

“आम तौर पर, हाँ, अगर वह हमारे सवालों का जवाब नहीं देता और हमारे साथ सहयोगी के रूप में काम करने के लिए सहमत नहीं होता, तो उसे मार दिया जाता। लेकिन…” गाय ने अनमने ढंग से अपनी कलाई पर बंधी घड़ी को घुमाया और फिर दोनों हाथ स्टीयरिंग व्हील पर रख दिए। वह सीधे आगे देख रहा था। “लेकिन मैं यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करूंगा कि वह सुरक्षित रहे।”

“तुम मेरे लिए ऐसा करोगे?” मैंने अविश्वास से पूछा। जब हम पहली बार मिले थे तब से गाय इतना बदल गया था कि अब मुझे उसमें वो ठंडा कैप्टन मुश्किल से ही दिखाई देता था। सच कहूँ तो, मैं भी बदल गई थी, खुद को पहचानना मुश्किल हो गया था। मैंने उसकी तराशी हुई सूरत को हसरत भरी निगाहों से देखा, ये सोचते हुए कि साथ बिताए समय में हम दोनों बेहतर इंसान बन गए थे— खैर, एक इंसान और एक वैम्पायर। लेकिन फिर भी, मुझे आखिरकार लगा कि हमने अपने असली स्वरूप को पा लिया है और हम दोनों मिलकर इस दुनिया को बेहतर बना सकते हैं। गाय ने मुझे एक मासूम सी मुस्कान दी, जिसने मेरा दिल पिघला दिया।

"बेशक, मैं तुम्हारे लिए यह करूँगा।"

राहत की लहर गर्म नदी की तरह मुझमें उमड़ पड़ी और कुछ और... क्या यह प्यार था? महान कैप्टन गाय स्टोन के लिए प्यार? मैंने अपनी नज़रें झुका लीं और घबराहट में अपनी उंगलियों को आपस में खेलने लगी। मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया।

“बस यही है,” गाय ने घोषणा की, जिससे मेरे दिल में डर की एक लहर दौड़ गई। मैं सीधा बैठ गया, मेरी आँखें बाहर चारों ओर देखने लगीं। फ्रैंक के पत्र और गाय के लिए अपनी भावनाओं में इतना डूबा हुआ था कि मुझे पता ही नहीं चला कि हम टॉम्बस्टोन के कितने करीब आ चुके हैं। उसने फ्रीमॉन्ट स्ट्रीट के किनारे गाड़ी रोकी और एक बड़े मेस्क्वाइट पेड़ के नीचे पार्क कर दी।

वहाँ से, दूर से, मुझे टॉम्बस्टोन का प्रवेश द्वार दिखाई दे रहा था। यह उन तस्वीरों जैसा लग रहा था जो मैंने वर्षों पहले गुफा ढहने की घटनाओं की देखी थीं, सिवाय इसके कि अब शहर को घेरने वाली एक ऊँची दीवार थी और सामने दो बड़े लकड़ी के द्वार थे। खिड़कियाँ बंद किए हुए जर्जर भवन घेरे के ऊपर से झाँक रहे थे और लाल अक्षरों में लिखा एक बड़ा बोर्ड हमें चेतावनी दे रहा था, "अंदर न आएँ: यह इलाका जर्जर घोषित है।"

मैंने उस दृश्य को निहारा, मेरे होंठ कांप रहे थे, मैंने लिफाफे को अपने घर से ली गई तस्वीर के साथ अपनी पैंट की बेल्ट में रख लिया। मैंने हमेशा सोचा था कि टॉम्बस्टोन पहुँचने पर मैं घबरा जाऊँगी, लेकिन उस पल मेरे दिल में जो डर समा गया, उसके लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं थी।

बस यही वो पल था जिसका हम इंतज़ार कर रहे थे, और अब जब हम आखिरकार यहाँ पहुँच गए थे, तो मुझे ये बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन मैंने गहरी साँस ली और खुद को जितना हो सके तैयार किया। गाय ट्रक से बाहर निकला और मेरी तरफ आकर, एक सभ्य सज्जन की तरह मेरा दरवाज़ा खोलकर मुझे बाहर निकलने में मदद की। मैं गली के कोने की तरफ बढ़ने लगी, लेकिन गाय मेरे पीछे रुक गया।

मैं इससे आगे नहीं जा सकता। निगरानी रखी जाएगी।

मेरे गले में एक गांठ सी बन गई और मेरा दिल धड़क उठा। मैंने उसकी तरफ मुड़कर बेमन से मुस्कुराने की कोशिश की। गाय ने भी उदास मुस्कान दी और अपनी घड़ी की तरफ देखा। "अब

जाने का समय हो गया है।"
मैंने अपने निचले होंठ को धीरे से काटा लेकिन मैं वहीं अटकी रही।
"कोई बात नहीं," उसने प्यार से कहा। "जब तक वे तुम्हें अंदर नहीं आने देते, मैं यहीं रुकूंगा।"
मैंने गहरी साँस ली, मेरी आँखों से अनचाहे आँसू बहने ही वाले थे। मैं धीरे-धीरे गाय की ओर बढ़ी और उसके सामने खड़ी हो गई। उसने मुझे अपनी गहरी, तूफानी निगाहों से देखा, एक ऐसी आंधी जिसमें मैं बह जाना चाहती थी, पर जानती थी कि ऐसा कभी संभव नहीं था।
अचानक, उसने अपनी बाहों को मेरी कमर के चारों ओर लपेट लिया और मुझे अपने करीब खींच लिया, मेरा सिर उसकी छाती पर टिका हुआ था। उसने मुझे धीरे-धीरे आगे-पीछे झुलाया, उसका गर्म आलिंगन मेरे शरीर को बेजान कर रहा था। मैंने उसकी महक को महसूस किया, मर्दानगी, कस्तूरी, चमड़े और स्टील की वो मोहक खुशबू। मेरे कंधे कांप रहे थे और होंठ थरथरा रहे थे, लेकिन मैंने खुद को मजबूत बनाए रखा और जो करना जरूरी था वो किया। थोड़ी देर बाद, मैं उससे अलग हो गई, यह जानते हुए कि अगर मैं उसकी बाहों में और देर तक रही तो मैं उसे कभी जाने नहीं दूंगी।
"धन्यवाद।" मैंने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन वह मुस्कान उदास थी। "आपने जो कुछ भी किया उसके लिए।"
"कुछ नहीं था।" गाय मुस्कुराया और अपने हाथ जेब में डाल लिए। अब वह सख्त मिजाज कैप्टन स्टोन जैसा नहीं लग रहा था, बल्कि एक ऐसे लड़के जैसा लग रहा था जो एक लड़की से प्यार करता था। एक ऐसी लड़की जिसे वह जाने दे रहा था।
मैं अनिच्छा से मुड़ी और कुछ कदम चली, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। मेरा शरीर मुझे मज़बूत रहने और अपनी यात्रा जारी रखने के लिए कह रहा था, लेकिन मेरा दिल... मेरा दिल मुझे रुकने के लिए कह रहा था, अपने सच्चे प्यार का साथ कभी न छोड़ने के लिए, उस आदमी का जिसके साथ मैं कभी नहीं रह सकती थी।
मैंने एक और कदम बढ़ाया, मेरे सफेद टेनिस जूते के नीचे ज़मीन चरमरा उठी। मैं सोच रही थी कि क्या मैं कभी किसी से सच्चा प्यार कर पाऊँगी, यह मानना मेरे लिए मुश्किल था, क्योंकि मैं एक निर्मम पिशाच बन चुकी थी। मैंने अपने गले में लटकी माला को कसकर पकड़ा और अपने ही इस सवाल का जवाब दिया। हाँ, मैं प्यार करने में सक्षम थी। हालाँकि मैंने अभी तक यह स्वीकार नहीं किया था, मैं गाय स्टोन से पूरे दिल से प्यार करती थी, इतना कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।
गाइ ही मेरा सब कुछ था, मेरा दिल और मेरा सोलमेट। गाइ ही मेरा सच्चा प्यार था।
झींगुरों की कर्कश आवाज़ से हवा में एक अजीब सी गंध गूंज रही थी, मानो वो कोई आम रात हो। लेकिन वो रात आम नहीं थी, बल्कि अजीब तरह से सामान्य से बिल्कुल अलग थी। पल भर में, जो आंसू मैं रोक रही थी, वो बह निकले और मैं पीछे मुड़ गई। मानो सपने में, मैं दौड़ी और उसे गले लगा लिया, उसकी छाती पर सिर रखकर रोने लगी। मैंने सब कुछ कह दिया, अपनी सारी भावनाएं, सारा दर्द, सारा प्यार और स्नेह जो मेरे दिल में उसके लिए था। मुझे अब किसी बात की परवाह नहीं थी और मैं इसे और रोक नहीं सकती थी। मैं चाहती थी कि उसे सच पता चले और मेरे शब्द हांफती हुई सांसों के बीच से निकले।
"कृपया, मुझे छोड़कर मत जाओ। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।"
गाय ने मुझे थोड़ी दूरी पर रखते हुए पीछे हटकर कहा, "रूबी..."
मेरी सांस अटक गई।
यह पहली बार था जब उन्होंने मुझे फेथ कहकर पुकारने के बजाय मेरा असली नाम लिया था। उन्होंने सचमुच मुझे रूबी कहकर पुकारा था। मैंने उनकी ओर देखा, जो गहरी भावनाओं से भरे हुए

थे। उन्होंने स्नेहपूर्वक अपनी उंगलियाँ मेरे बालों में फिराईं।
“नहीं।” उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई, उसमें दुविधा झलक रही थी। “हम साथ नहीं रह सकते। तुम भी यह बात मुझसे बेहतर जानते हो।”
“क्यों नहीं?” मैंने अपनी हथेली उसके जबड़े पर फेरते हुए कहा, मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे। “कौन तय कर सकता है कि हम किससे प्यार कर सकते हैं और किससे नहीं? मुझे बताओ, क्यों?”
मैं देख सकता था कि गाय अपनी भावनाओं को काबू में रखने के लिए संघर्ष कर रहा था। "बस यही सच्चाई है।"
मैंने पीछे हटकर अपनी मुट्ठी उसके सीने पर पटकी। “नहीं! ऐसा नहीं है। हम अपना रास्ता खुद बना सकते हैं, गाइ स्टोन। हमारे बीच कुछ खास है और मुझे पता है कि तुम भी इसे महसूस करते हो। आखिर हमारे बीच जो है वो इतना गलत कैसे हो सकता है?”
उसके मजबूत हाथों ने मुझे स्थिर करने, मुझे शांत करने की कोशिश की। लेकिन जवाब में उसकी आवाज़ कांप उठी। "तुम एक पिशाच हो। मैं एक इंसान हूँ।"
मैंने उसकी आँखों में देखा, मानो उसकी आत्मा में गहराई तक झाँक रही हो। “मुझे परवाह नहीं। मैं तुम्हें चाहती हूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। किसी और को नहीं।” मैंने पुराने शहर के द्वार की ओर इशारा किया। “इनमें से कुछ भी मायने नहीं रखता। कुछ भी नहीं। तुम ही मायने रखते हो। तुम ही हो जो मैं चाहती हूँ। प्लीज़ गाइ। प्लीज़...”
गाइ ने निराशा में अपने बालों में उंगलियाँ फिराईं। मैं उसके सीने में उसके दिल की धड़कन सुन सकती थी और जानती थी कि वह मेरे लिए धड़क रहा है। फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, गाइ की भावनाएँ मुझ पर गर्म हवा के झोंके की तरह टूट पड़ीं। मैं उस झटके से हांफ उठी, और मुझे समझ आ गया कि यह क्या था।
यह वही छठी इंद्री थी जिसे विल्सन ने मुझे सिखाने की कोशिश की थी, लेकिन इस बार यह बिना किसी प्रयास के ही प्रकट हुई। मैंने गाय की भावनाओं और संवेदनाओं को महसूस किया; वे उससे निकलकर मुझमें ऐसे समा गईं जैसे किसी टूटे हुए बांध से पानी बहता है, जिससे मैं कांपने और थरथराने लगा।
उसकी पीड़ा। उसका संघर्ष। उसका दर्द।
मुझे जाने देने का दर्द उसके भीतर इतना गहरा था जितना मैंने कभी सोचा भी नहीं था। वह जानता था कि यही सही फैसला है, यही एकमात्र रास्ता है। लेकिन इस कठिन निर्णय के दर्द के पीछे प्यार छिपा था। मेरे लिए एक ऐसा गहरा प्यार जो दर्द से भरा था, हम दोनों के भीतर धड़कता हुआ, हमें कल्पना से परे जोड़ता हुआ। लेकिन गाय ने नज़रें फेर लीं, मानो मेरी आँखों में देखते हुए उसके अगले शब्द इतने दर्दनाक होंगे कि उन्हें कहना भी मुश्किल होगा।
“मैं तुम्हारे साथ ऐसा नहीं कर सकता। मैं तुम्हें उस तकलीफ से नहीं गुज़ार सकता। तुम निशाने पर आ जाओगी और अगर हम वहाँ तक पहुँच भी गए तो हमें भागना पड़ेगा। हम बिखर जाएँगे, रूबी। तुम्हें चोट लग सकती है, शायद तुम्हारी जान भी जा सकती है।” गाय मुझसे दूर हट गया, मेरे हाथ हवा में लटके रह गए। “मैं... मैं नहीं कर सकता।”
मैं कुछ कहना चाहती थी, कुछ भी जिससे मैं उसे मना सकूँ। मैं उसे बताना चाहती थी कि मुझे पता है कि अब वह मुझसे जुड़ चुका है। मैं उसे बताना चाहती थी कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता और हम इसे ठीक कर सकते हैं। लेकिन मुझे मन ही मन पता था कि यह सब व्यर्थ होगा। उससे झगड़ने से कुछ हासिल नहीं होगा।
मैं घुटनों के बल गिर पड़ी, सिसकियों से मेरा सीना फूल रहा था और मैंने अपने हाथों को कमर के चारों ओर लपेट लिया। मेरा मुंह कुछ कहने के लिए खुला रह गया, पर कहने के लिए कुछ बचा ही

नहीं था और मैं अपनी किस्मत बदलने के लिए कुछ कर भी नहीं सकती थी। मैं एक पिशाच थी और वह एक इंसान था और हमारा साथ होना नामुमकिन था। कहानी यहीं खत्म। मुझे हमेशा से पता था; बस अब तक मैं इस बात पर यकीन नहीं करना चाहती थी।

"मुझे माफ करना, रूबी।" गाय ने ऐसे गहरी सांस ली मानो वह उसकी आखिरी सांस हो। "मैंने विल्सन से वादा किया था। हम ऐसा नहीं कर सकते..."

मैं गुस्से से उछल पड़ा, मेरे अंदर आग की लपटों की तरह क्रोध उमड़ रहा था। क्या मैं गाय या विल्सन से नाराज़ था? इस स्थिति से? अपने परिवार से? या फिर मौत से भी? मुझे पक्का पता नहीं था। लेकिन चाहे जो भी हो, मैं बुरी तरह भड़क उठा।

"मुझे पता है!" मैंने खुद पर काबू न रख पाने के बावजूद चिल्लाकर कहा। "मुझे पक्का पता है!"

मेरे शब्दों की तीव्रता ने गाय की निगाहें मेरी ओर खींच लीं। वह तेजी से आगे बढ़ा और मेरे चेहरे से कुछ ही इंच की दूरी पर रुक गया, उसकी आँखों में तीव्र क्रोध की आग धधक रही थी।

"धिक्कार है रूबी कार्टर! मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ..."

और एक खूंखार जानवर की तरह, उसने मुझे पकड़ लिया और अपने होंठ मेरे होंठों से कसकर दबा दिए, अपनी जीभ मेरे मुंह में डाल दी। मैंने भी वैसा ही किया, अपनी जीभ से उसके मुंह को टटोलते हुए। हमारे आंसू एक-दूसरे के गालों पर भीग गए थे, हमारे प्यार की गर्मी हमारे अंदर समुद्र की लहरों की तरह दौड़ रही थी। मैं उसमें समा गई और वह मुझमें, दुनिया में हमारे सिवा कुछ भी नहीं था। झींगुरों की आवाज़ धीमी पड़ गई, रात थम गई और चांदनी मंद हो गई। दुनिया धुंधली सी दिखने लगी।

उसने अपने होंठ मेरे होंठों से सटा दिए, कठोर और उग्र, भूख से लथपथ और मांग से भरे हुए। मैंने उसका स्पर्श स्वीकार किया और उसे पूरे उत्साह से लौटा दिया। हमारे हाथ एक-दूसरे के शरीर को टटोल रहे थे, हमारे स्पर्श के साथ ही कामुक गर्मी भी फैल रही थी।

हमारा जुड़ाव घंटों, मिनटों और सदियों तक एक साथ कायम रहा, हमारे शरीर आपस में मिल गए, हमारी आत्माएं स्पर्श हुईं, हमारे दिल एक साथ टूट गए। यह अंत की शुरुआत थी, एक किताब का आखिरी पन्ना, एक अनंत रात से पहले का अंतिम सूर्यास्त।

जब हमारे होंठ अलग हुए, तो मेरी सांसें थम गईं। अगर मैं और देर तक रुकती तो दिल के दर्द से मर जाती। मेरा दिल पहले से ही मेरे सीने में बुरी तरह धड़क रहा था।

मैंने उससे दूर हटने की कोशिश की, लेकिन इस बार गाइ ने मुझे जाने नहीं दिया। हमारी नज़रें मिलीं, लेकिन मैंने खुद को उसकी बाहों से छुड़ा लिया, यह जानते हुए कि अब कुछ भी नहीं बदलेगा। हम कभी साथ नहीं हो सकते। मेरा शरीर उससे अलग हो गया, मेरी उंगलियां आखिरी बार उसकी छाती को छूईं, इससे पहले कि मैं लड़खड़ाते हुए दूर चली गई।

"रूबी..." उसने फुसफुसाते हुए मेरी ओर हाथ बढ़ाया।

मैंने सिर हिलाया। नहीं, हमें इसे और लंबा नहीं खींचना चाहिए। मैंने उसकी आँखों में गहराई से देखा और जाने से पहले अपने दिल की सबसे सच्ची बात कह दी।

"भले ही मुझे उनके बीच रहना पड़े, मैं कभी भी उनमें से एक नहीं बनूंगा।"

गाय ने अपना मुंह खोला लेकिन उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला, उसकी मुट्ठियां बगल में भींची हुई थीं, उसका चेहरा निराशा से तनावग्रस्त था।

मैं बड़े दरवाज़ों की ओर पीछे हट गई, हमारी निगाहें लगातार एक-दूसरे से मिली रहीं। मैंने अपने प्रिय व्यक्ति की एक छवि अपने मन में बसा ली, उम्मीद थी कि वो हमेशा मेरे दिल में बसे रहेंगे। उनका खड़े होने का तरीका, उनकी मुस्कान, उनका मुझे गले लगाने का तरीका। उनकी आंखें मेरी आत्मा में उतर जाती थीं, सोच में डूबे हुए वो अपने बालों में हाथ फेरते थे, और गुस्से में उनका

जबड़ा कस जाता था।
मेरा दिल टूट गया था, मैं पीछे की ओर चलती रही, दूर से उसकी आकृति छोटी होती जा रही थी। हमारी निगाहें एक-दूसरे पर टिकी रहीं, तभी एक तेज चमकती रोशनी ने मुझे घुमा दिया और मैंने खुद को एक तेज सफेद स्पॉटलाइट में खड़ा पाया, चकाचौंध कर देने वाली रोशनी से आंखें सिकोड़ते हुए।
“नया रंगरूट!” एक ऊँची मीनार से एक आदमी ने आवाज़ लगाई और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। द्वार धीरे से चरमराते हुए खुले और एक छोटी सी महिला मेरी ओर आई। वह जवान लग रही थी, लगभग मेरी ही उम्र की। उसके लंबे भूरे बाल भूरे रंग के लबादे पर बिखरे हुए थे और उसकी पीली त्वचा हुड के नीचे चमक रही थी। उसकी नाक छोटी और बटन जैसी थी और मुस्कुराने पर सिकुड़ जाती थी। वह मेरे सामने खड़ी थी।
“मुझे तुम्हारे नुकीले दांत देखने हैं।” उसकी आवाज़ कोमल और धमकी रहित थी, लेकिन मेरी धड़कनें तेज़ हो गईं और मेरे पैर कांपने लगे। हाल ही में गिरे आंसुओं से मेरा चेहरा तन गया था और मेरे होंठ अनिश्चितता से कांप रहे थे। मैंने एकाग्रता से अपनी भौंहें सिकोड़ीं और विल्सन की सिखाई हुई बातों को मानते हुए अपने नुकीले दांत उसके सामने दिखाए।
उसके पीले होंठों पर हल्की सी मुस्कान फैल गई। "माफ़ कीजिए। यह तो बस औपचारिकता है। अंदर आ जाइए।"
उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बड़े लकड़ी के फाटक के अंधेरे प्रवेश द्वार की ओर ले गई। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो गाय जा चुका था, और मेरा दिल और भी ज्यादा बैठ गया। मेरा गला जल रहा था, एक और सिसकी निकलने ही वाली थी। लेकिन मैंने खुद को रोक लिया।
"आपका नाम क्या है?" उसने पूछा, जिससे मेरा ध्यान वापस उसकी ओर आकर्षित हुआ।
“रूबी।” मैंने नाक से सांस ली और मुंह से सांस छोड़ी। “रूबी कार्टर।”
वह मुस्कुराई। “यह तो बहुत अच्छा नाम है। टॉम्बस्टोन में तुम्हारा स्वागत है, रूबी।”
मैंने जबरदस्ती मुस्कुराकर जवाब दिया। मेरा नाम रूबी था, लेकिन दिल से मैं हमेशा फेथ ही रहूंगी।

उनतीस: लड़का

उसे जाते हुए देखना ऐसा था मानो मेरा दिल मेरे सीने से फाड़कर निकाल लिया गया हो। ऐसा लगा जैसे मेरी हड्डियाँ मेरे शरीर से निकाल ली गई हों और हर हड्डी को ज़बरदस्ती वापस अंदर डाल दिया गया हो। मुझे लगा कि मैं फिर कभी ऐसा महसूस नहीं कर पाऊँगी। मुझे लगा कि मैं फिर कभी प्यार नहीं कर पाऊँगी।

लिली को खोने के बाद, मैंने कसम खाई थी कि मैं कभी किसी के सामने नहीं खुलूंगा, क्योंकि मुझे असहनीय पीड़ा का डर था। लेकिन यह अलग था। यह कॉलेज के दिनों के आकर्षण या वासनापूर्ण प्रेम से कहीं बढ़कर था। यह एक व्यापक प्रेम था। ऐसा लगा जैसे उस रात गोदाम में ब्रह्मांड ने रूबी को मेरे सामने ला खड़ा किया हो, मानो मुझे उसे बचाना हो, उसकी रक्षा करनी हो। और इस खूबसूरत पिशाचनी ने मेरे अंदर के अंधेरे को दूर कर दिया। उसके अंदर एक चमक थी, आनंद और मासूमियत की एक चकाचौंध भरी रोशनी। एक ऐसी रोशनी जिसने मेरे सारे संदेह दूर कर दिए। सालों बाद पहली बार मैंने खुद को फिर से जीवित महसूस किया था।

रूबी से जुड़ने से पहले, उसका खून पीने से पहले ही, हमारे बीच एक ऐसा रिश्ता बन चुका था, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन अगर मैं उसे अपने साथ रहने के लिए कहता, तो इससे खतरा ही बढ़ता और मैं रूबी को किसी भी तरह से खतरे में नहीं डालना चाहता था। उसे छोड़ना मेरे जीवन का सबसे कठिन फैसला था, लेकिन यह एक ऐसा फैसला था जिसका मुझे सामना करना ही था।

मैं आगे बढ़कर उसे पुकारना चाहता था, उसे बताना चाहता था कि मैंने गलती की है, लेकिन इससे उसे खोने का दर्द और बढ़ जाता। वह एक खूबसूरत चिड़िया की तरह थी, जिसे पिंजरे में नहीं रखा जा सकता था, और मुझे उसे आज़ाद करना ही था। उसके लिए द्वार खुल गए और मेरा जबड़ा कस गया। मैं ट्रक में कूदा और देखे जाने के डर से गाड़ी चलाकर चला गया।

किसी और समय में, किसी और लोक में, सुदूर अतीत में या समानांतर जीवन में, हमारा साथ होना तय था। रूबी कार्टर के लिए मेरा प्यार कभी भुलाया नहीं जा सकता, चाहे समय कितना भी लंबा हो जाए या अंतरिक्ष की दूरी कितनी भी बढ़ जाए। लेकिन जैसा कि सभी महान प्रेम कहानियों में होता है, अंत अवश्य होता है। और यही हमारा अंत था। हमारा समय समाप्त हो गया था।

मैंने अपना हाथ उसकी खाली सीट के पीछे फेरा, मानो ऐसा करके मैं उसे आखिरी बार छू सकूँ। लेकिन वह जा चुकी थी, बस यही अंत था। मैंने अनिच्छा से अपना हाथ नीचे कर लिया, ठंडी धातु का स्पर्श मेरी त्वचा को छू गया। मैंने उस अप्रत्याशित वस्तु को उठाया, उसे मंद चाँदनी में ऊपर उठाया और पहचानते ही हँस पड़ा। मैं इतना ज़ोर से हँसा कि मेरे पेट में दर्द होने लगा।

मेरे हाथ में एक चम्मच थी जो बिल्कुल बीच से मुड़ी हुई थी, उसका घुमाव इतना सटीक था कि मुझे लगा मानो उसे बनाया ही गया हो। उसकी चांदी किसी रत्न की तरह चमक रही थी और उसे देखकर मेरे सीने में गर्माहट दौड़ गई।

उसने कर दिखाया! आखिरकार उसने कर ही दिखाया! मेरा पहला ख्याल उसे गले लगाकर बधाई देने का आया, लेकिन चम्मच को देखकर मेरे शरीर में जो गर्माहट दौड़ी थी, वो ठंडी पड़ गई। वो अब मेरे साथ नहीं थी और मैं उसे कभी बता नहीं पाऊँगी कि उसने कितना अच्छा काम किया है। मैं वो

शब्द कभी नहीं कह पाऊँगी जो मैं हमेशा से कहना चाहती थी। मैंने निराशा से एक गहरी साँस छोड़ी और उस चाँदी के टोकन को अपने बैग में रख लिया। ये शायद बेवकूफी हो, लेकिन मैं इसे हमेशा संभाल कर रखूँगी।

रात गर्म थी और मैंने दोनों खिड़कियाँ खोल दीं ताकि ठंडी हवा मेरे चेहरे को सुकून दे। मैं बिस्बी की ओर, मुख्यालय की तरफ, हाईवे पर तेज़ी से गाड़ी चला रहा था, यह जानते हुए कि अब या तो मुझे अपनी पुरानी नौकरी वापस पानी है या बदलाव के बारे में सोचना है।

मैं चुपचाप गाड़ी चला रही थी, मेरा मन सवालों से भरा हुआ था। मैं सोच रही थी कि रूबी की रक्षा न कर पाने के बाद मैं अपनी पुरानी जिंदगी कैसे जी पाऊंगी। मैं सोच रही थी कि क्या वह इतनी बड़ी हो गई है कि अपनी रक्षा खुद कर सके। मुझे उम्मीद थी कि ऐसा ही हो। मैंने अपने कंधों को हिलाकर तनाव कम किया और खुद को यकीन दिलाया कि वह ठीक रहेगी।

लेकिन मेरा क्या होगा? मुख्यालय लौटने पर मैं क्या करूँगी? उसका जैविक पिता तो वहाँ ज़रूर होगा और मैंने उससे मदद करने का वादा किया था। लेकिन मैं यह कैसे करूँगी, मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था।

मैं यह भी सोचने लगा कि जो कुछ मैं अब जानता हूँ, उसे जानने के बाद मैं उस उद्देश्य में कैसे दोबारा शामिल हो पाऊँगा जिसके लिए मैंने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं पा रहा था कि क्या मैंने कहीं कोई गलत चुनाव कर लिया था, क्या मैंने बिना सोचे-समझे किसी ऐसे पक्ष का साथ दे दिया था जिसके बारे में मुझे कुछ पता ही नहीं था। लेकिन इससे पहले कि मैं अपने संदेहों पर और विचार कर पाता, ट्रक की छत पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ।

सहज ही मैंने ब्रेक ज़ोर से दबाए, जिससे गाड़ी अनियंत्रित होकर इधर-उधर मुड़ गई। मैंने सड़क पर चारों ओर देखा कि कहीं किसी चीज़ से टकरा तो नहीं गई, लेकिन हाईवे खाली था। अंधेरे में मैं बिल्कुल अकेला था, बस मेरी ट्रक की हल्की रोशनी ही दिखाई दे रही थी।

"हेलो कैप्टन।" एक कर्कश आवाज़ ने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए और मेरी निगाहें उस ओर गईं। यात्री खिड़की से काली आँखों की एक जोड़ी मुझे घूर रही थी और पल भर में मैं अकेला नहीं रहा। डर से मेरा दिल कांप उठा जब एक पिशाच का रूप मेरे बगल में प्रकट हुआ और मैं सड़क से हट गया।

जैसे ही नुकीले दांत मेरी गर्दन में धंसे, मैंने रूबी का खौफ महसूस किया, ठंडा और भयानक। वह मुसीबत में थी और मुझे उसी पल एहसास हो गया कि मैंने गलती कर दी है। मुझे उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए था। मुझे अपने फैसले पर पछतावा करने का भी समय नहीं मिला था कि मेरा शरीर अंधेरे में डूब गया, मेरा दिमाग सुन्न पड़ने लगा और उसके साथ ही, मेरी वैम्पायर फेथ के ख्याल भी गायब हो गए।

चालीस: रूबी

टॉम्बस्टोन के द्वारों के भीतर एक ऐसा शहर था जो मेरी कल्पना से परे था, एक अलौकिक दुनिया जहाँ पिशाच आज़ादी से घूमते थे और वेयरवोल्फ बच्चे गलियों में खेलते थे। यह एक खूबसूरत, पुराने ज़माने का समुदाय था, आपस में जुड़ा हुआ और सामंजस्यपूर्ण। यह एक परिवार था।
परिवार।
ये शब्द मेरे मन में एक सुकून देने वाली चादर की तरह समा गया, और मैं ये सोचे बिना नहीं रह सकी कि यही वो सब था जो मैं हमेशा से चाहती थी, जिसकी मुझे ज़रूरत थी। मुझे लगता है कि हर कोई यही चाहता है; स्वीकृति, प्यार और रहने के लिए एक जगह। और जब मैंने अपने लंबे सफर पर पीछे मुड़कर देखा, तो मुझे पता चला कि मुझे ठीक वही मिला था— सबसे अप्रत्याशित आत्माओं से प्यार और स्वीकृति।
मैंने अपने असली पिता के बारे में सोचा और यह जानकर मुझे कितना सुकून मिला कि वे हमेशा मेरे साथ थे, और मुझे एहसास हुआ कि उन्हीं की वजह से मैं ऐसी बनी। मैंने विल्सन के बारे में सोचा और उनकी अनोखी मुस्कान और अच्छी सलाह से मुझे खुशी मिली। और आखिर में मैंने गाय के बारे में सोचा। मेरे कप्तान। मेरा प्यार। उन्होंने मेरे लिए जो कुछ किया और उनके प्रति मेरे दिल में जो स्नेह था, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। लेकिन चाहे मेरे दिल में उनकी जो भी जगह हो, अब आगे बढ़ने का समय था। अपने नए परिवार से जुड़ने का समय।
मैं अपने मार्गदर्शक— उस पिशाच लड़की के पीछे-पीछे चल पड़ा, जिसने मुझे द्वार पर लेने आई थी — उस खंडहर हो चुके, फिर भी जीवंत कस्बे से होते हुए। और मैं मुस्कुराया। मैं बहुत दिनों बाद इतना मुस्कुराया था। आखिरकार मैं घर पहुँच गया था।
उस लड़की ने अचानक मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे रोक दिया।
"मुझे खेद है।" उसने भौंहें चढ़ाईं, कच्ची सड़क के किनारे लगे मिट्टी के तेल के लैंपों की रोशनी में उसका व्याकुल चेहरा और भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था।
“माफ़ करना?” मैंने उलझन में सिर हिलाया और उसे घूरते हुए कहा, “किसलिए?”
“तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।” उसके ये शब्द सुनते ही मेरे भीतर चंद्र ग्रहण की तरह सन्नाटा छा गया। उसने अपने चेहरे से अपने भूरे बाल हटाए। “जब तक सेना तुमसे पूछताछ नहीं कर लेती, तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। मैं तुम्हें तुम्हारी कोठरी तक ले जाऊंगी।”
सेल? मेरा दिल मेरी पसलियों के अंदर ज़ोर से धड़क रहा था।
"किसकी प्रतीक्षा-?"
इससे पहले कि मुझे कुछ समझ आता, मैं रंगों के धुंधलेपन में तेज़ी से वहाँ से भाग गया, चीखते हुए उस एकमात्र व्यक्ति को पुकार रहा था जो मेरी ज़रूरत के समय मेरी मदद कर सकता था। गाय स्टोन।

~समाप्त~

क्या आपको अनफॉर्चुनेट सोल्स सीरीज़ की पहली किताब पसंद आई? दूसरी किताब, ब्रोकन

सोल्स, का यह अंश देखें, जिसे आप यहाँ से प्री-ऑर्डर कर सकते हैं। साथ ही, आने वाली किताबों और अन्य उपहारों के बारे में उपयोगी जानकारी पाने के लिए मेरी मेलिंग लिस्ट में *यहाँ* साइन अप करना न भूलें। और अगर हो सके, तो कृपया इस किताब की समीक्षा लिखें। मुझे आपकी प्रतिक्रिया जानने में खुशी होगी!
जेड xoxo

टूटी हुई आत्माएँ

~ भाग दो ~
रूबी

कैद में रहने के कारण मेरे मन में क्रोध के विचार उमड़ रहे थे, लेकिन मैं इतना कमजोर था कि कुछ कर नहीं पा रहा था। मैंने बोलने के लिए मुंह खोला, लेकिन मेरा गला निष्क्रियता के कारण फट रहा था। मैंने अपने होंठ चाटे, बची हुई थोड़ी सी लार निगली और फिर कोशिश की।
"माफ़ कीजिए?"
मेरी कोठरी की रखवाली कर रहे दोनों वेयरवुल्फ हिले-डुले, लेकिन एकदम स्थिर और चुप रहे। वैसे तो वे अपने इंसानी रूप में थे, लेकिन मुझे उनकी कुत्ते जैसी गंध आ रही थी।
“मुझे प्यास लगी है, भूख लगी है। क्या मुझे थोड़ा खून मिल सकता है?” मेरी आवाज़ फटी हुई थी, उस रेगिस्तान से भी ज़्यादा सूखी जिसमें मैं पला-बढ़ा था। “इंसान का खून?”
मुझे उल्टी आने लगी, क्योंकि मैं जानती थी कि मैं इसे कभी नहीं पी पाऊंगी। इसे पीने से मेरा दम घुट जाता था। और विल्सन को जब पता चला कि मैं अभी भी आधी इंसान हूं, तो इसे पीना उतना ही गलत था जितना किसी सूअर का बेकन खाना। उफ़! लेकिन मुझे उस महिला वैम्पायर की वापसी की ज़रूरत थी, जिसने मुझे सबसे पहले टॉम्बस्टोन के दरवाज़े पर पाया था।
जब से मुझे कैद किया गया था, वह मुझे हर दिन खून लाकर देती थी और वही एकमात्र व्यक्ति थी जिससे मेरा संपर्क था। और मुझे यह आभास था कि शायद उसी से मुझे कुछ जवाब मिल सकते हैं। हम्प्टी और डम्प्टी से तो मुझे कुछ भी नहीं मिलेगा, यह तो पक्का है— शायद कुछ गुर्राहट और घुरघुराहट, और गीले कुत्ते की एक अजीब सी गंध, लेकिन भला कौन चाहेगा भला?
मानो मेरी प्रार्थना का जवाब मिल गया हो, इमारत में कहीं एक दरवाजा खुला, जिससे पता चला कि खाने का समय हो गया है। यह सोचकर मुझे राहत मिली कि मैं उस युवा पिशाच को फिर से देख पाऊंगा।
उसके कदमों की आहट दालान में गूंजती हुई बारिश की बूंदों जैसी लग रही थी। मोमबत्ती की रोशनी में उसका चेहरा जगमगा रहा था, उसके हाथ में एक प्याला और बगल में एक गठरी थी। उसके बिखरे बाल उलझे हुए थे और उसने वही कपड़े पहने थे जो उसने मुझे पहली रात गेट से लेने आते समय पहने थे। कई रातें पहले की बात है। उसकी फटी हुई भूरी स्कर्ट और फीकी कमीज चिथड़ों जैसी लग रही थी और मुझे लगा जैसे वह मेरे पिताजी के टीवी पर देखे जाने वाले पुराने ब्लैक एंड व्हाइट वेस्टर्न फिल्मों की किसी किसान लड़की जैसी हो। उसे देखकर मेरे मन में घृणा दौड़ गई।
हम्प्टी ने मेरी कोठरी का ताला खोला और सलाखों को सरका दिया, जिससे महिला पिशाच सावधानी से अंदर आ सकी, मानो मैं बाहर निकलकर उसे काट लूँगा। इतने लंबे समय तक कैद रहने के बाद, शायद मैं ऐसा कर ही दूँ।

मेरी पहली रात के धोखे भरे अभिवादन को छोड़कर, जब से मुझे कैद किया गया था, टॉम्बस्टोन - बदकिस्मत आत्माओं के शहर - में लाया गया था, तब से उसने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा था। और अपने दृढ़ संकल्प के बावजूद, वह मुझे एक डरी हुई चूहे जैसी लगी, उसके भूरे बाल उसके कोमल कंधों पर लटक रहे थे जब वह मेरे पैरों के पास प्याला रखने के लिए झुकी। उसने अपनी नज़रें नीचे कर लीं, मानो उसे डर हो कि मैं उससे बात करूँगा। और मैं ज़रूर करता।

"तुम्हारा नाम क्या है?" मैंने पूछा, जिससे वह चौंक गई। मैं पूरी तरह थक चुकी थी। बीते दिनों में मुझ पर छाए सुन्नपन और दिल के दर्द से तंग आ चुकी थी, अपने दिमाग में अंधेरा छाने देने से तंग आ चुकी थी, पीड़ित बनकर रहने से तंग आ चुकी थी। मैं विल्सन की याद को व्यर्थ नहीं जाने दूंगी। चूंकि अब मेरा अपना कोई परिवार नहीं था, इसलिए वह बूढ़ा पिशाच मेरे लिए पिता समान बन गया था, जिसने मेरी रक्षा के लिए अपनी जान दे दी, ठीक वैसे ही जैसे गाय ने मेरी जान बचाई थी।

गाय स्टोन।

मेरे सैनिक का नाम सुनते ही मेरे दिल में इतना दर्द हुआ कि मुझे लगा जैसे मैं अंदर से टूट जाऊंगी। मेरे अतृप्त प्रेम और उससे बिछड़ने के दुख के बावजूद— क्योंकि हमारा प्रेम वर्जित था— उसने मेरी जान बचाई थी ताकि मैं टॉम्बस्टोन में आज़ादी से जी सकूं। हर कोने में मंडराते खतरे से मुक्त होकर सुरक्षित जीवन जी सकूं।

और किसलिए? क्या इसलिए कि मैं सलाखों के पीछे सड़ता रहूँ? मैंने गुस्से से सिर हिलाया, सामने की सलाखों को घूरते हुए जो ज़मीन पर तिरछी परछाइयाँ बना रही थीं। विल्सन और गाय दोनों नहीं चाहेंगे कि मैं हार मान लूँ। मैं कभी हार नहीं मानूँगा।

मेरे सवाल को अनसुना करते हुए, उस महिला पिशाच ने मेरे बगल से कंबल खींच लिया और उसकी जगह एक साफ कंबल ओढ़ा दिया। मुझे लगभग हंसी आ गई। तो, अनगिनत दिनों तक उन्होंने मुझे बिना किसी संपर्क या बाहरी दुनिया की झलक के, बस थोड़ा सा खून देकर कैद रखा, लेकिन कपड़े धोने को प्राथमिकता दी? मैंने अपनी हंसी रोकी।

"मैं यहाँ क्यों हूँ?" मैंने फिर से कोशिश की।

उसकी पलकें ऐसे फड़फड़ा रही थीं मानो ऊपर देखने की इच्छा को दबा रही हों। लेकिन उसने देखा और उसकी असीम निगाहें एक पल के लिए मेरी निगाहों पर टिक गईं। वह लड़की मेरी ही उम्र की लग रही थी, सत्रह या शायद अठारह। लेकिन कौन जानता था कि उसकी असली उम्र क्या थी, क्योंकि पिशाच अपनी अमरता से उम्र के असर को अच्छी तरह छिपा लेते हैं। उसने एक बार फिर मेरी निगाहें बचाईं और पुराने कंबल को अपनी बगल में दबा लिया, मानो मुझसे कोई जवाब न मिलने पर नाराज़ हो।

"कम से कम मुझे यह तो बता दो कि मुझे यहाँ कितने दिन रहना पड़ेगा। मैं कमज़ोर होता जा रहा हूँ।" यह झूठ नहीं था। उस कोठरी में डाले जाने के बाद से, चाहे कितना भी समय बीत गया हो, मैंने दिया गया खून नहीं पिया था। और अब मुझे इसका असर महसूस होने लगा था।

"कृपया..." मैंने लगभग फुसफुसाते हुए कहा। मेरा संकल्प कमजोर पड़ रहा था।

मेरी विनती सुनकर उसका शरीर तनावग्रस्त हो गया, लेकिन जब उसने पीछे मुड़कर पहरेदारों की ओर देखा तो मेरा दिल खुश हो गया। वे दूसरी ओर मुँह करके खड़े थे, मानो हमारी बातचीत से अनभिज्ञ हों या उन्हें इसकी परवाह ही न हो।

"मुझे माफ करना," उसने धीमी आवाज़ में कहा और अपनी नज़रें ज़मीन पर झुका लीं। "यह नियम है। होरस द्वारा पूछताछ के बाद आपको रिहा कर दिया जाएगा।"

डर मेरे अंदर सांपों की तरह रेंगने लगा। क्या कोई मुझसे सवाल कर रहा है? अगर मैं यहाँ शरण लेने आया कोई आम पिशाच होता तो ये ठीक होता। लेकिन मैं ऐसा नहीं था। मेरा एक ऐसा अतीत था

जिसे मैं किसी को बता नहीं सकता था।
“कब?” मैंने पूछा। “मुझसे कब पूछताछ की जाएगी?” मेरी निराशा तब और बढ़ गई जब वह महिला बिना कुछ कहे खड़ी हुई और कोठरी से बाहर चली गई। दरवाजा ज़ोर से बंद हुआ तो मैं झुंझलाहट से भर उठा। बहुत खूब!
पहरेदार अपनी-अपनी जगहों पर लौट आए, राइफलें उनके कंधों पर टिकी हुई थीं। हे भगवान, क्या यहाँ सब लोग ऐसे ही थे— इतने ठंडे और बात न करने वाले? ऐसा तो नहीं था कि मैं उनसे गुब्बारों और फ्रूट पंच से स्वागत की उम्मीद कर रही थी, लेकिन मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे एक आम अपराधी की तरह जेल में डाल दिया जाएगा। और वो भी बिना किसी स्पष्टीकरण के, बस सन्नाटा पसरा हुआ था। मैं सोच रही थी कि क्या सभी नए आने वालों के साथ ऐसा ही बर्ताव किया जाता है, या मैं ही अकेली थी जिसे इस भयानक, वीरान, भूतिया जेल का अनुभव करना पड़ा।
विल्सन की चेतावनी ने मुझे तुरंत झकझोर दिया। उस बूढ़े पिशाच ने मुझे चेतावनी दी थी कि मैं अपना रहस्य किसी को न बताऊँ— वह रहस्य कि मैं एक दुर्लभ आधा पिशाच हूँ जो किसी भी अन्य पिशाच की तुलना में अधिक तेज़ी से शक्ति प्राप्त करता है। वह रहस्य कि मुझमें अभी भी मानवता और करुणा बाकी है। और वह रहस्य कि मैं अभी भी आधा इंसान हूँ।
विल्सन के अनुसार, मेरे परिवार के इतिहास में कहीं न कहीं एक पिशाच ने एक इंसान के साथ संबंध बनाया था, और वह जीन पीढ़ियों से चला आ रहा है और अंत में, जैसा कि आपने अनुमान लगाया होगा, मुझमें आ गया। मुझे इसके पीछे का वैज्ञानिक कारण पूरी तरह से नहीं पता था, शायद मेरी पूरी तरह से पिशाच बनने से प्रतिरक्षा से संबंधित कुछ था। लेकिन फिर भी, यह जीन मेरे अंदर तब सक्रिय हो गया जब मेरे निर्माता ने मुझे काटा - मेरे निर्माता, जिनके बारे में मुझे हाल ही में पता चला था कि वे मेरे जैविक पिता हैं, और जाहिर तौर पर उस पिशाच जीन के वाहक हैं, हालांकि मैं उनसे पहले कभी नहीं मिला था।
क्या इसीलिए मुझे इतने लंबे समय तक यहाँ रखा गया था? क्या उन्हें पता था कि मैं अलग हूँ? क्या उन्हें इसका आभास हुआ था? यह सोचकर मैं भयभीत हो गया, मेरा मन किया कि मैं वहाँ से भाग जाऊँ और अपनी स्थिति से बेखबर होकर आनंदमयी अवस्था में लौट जाऊँ। लेकिन इसके बजाय मैं सीधा बैठ गया, और होश बनाए रखने की पूरी कोशिश की। मैं उस होरस जैसे प्राणी द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों का इंतज़ार करूँगा और अगर सब कुछ योजना के अनुसार हुआ, तो इस प्रक्रिया में मैं एक मृत पिशाच नहीं बनूँगा। मैंने खून का प्याला उठाया और उसे फर्श की दरार में उंडेल दिया, जैसा कि मैं पिछले कुछ दिनों से करता आ रहा था। मैं लकड़ी की बेंच पर लेट गया और अपना सिर अपनी बांह पर टिका लिया।
समय का पता ही नहीं चला और मुझे याद भी नहीं आया कि मैं सो गई थी या नहीं, लेकिन हॉल में दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर मैं चौंक गई। मैं एकदम सीधी होकर बैठ गई और भेड़िया रक्षक की घबराहट भरी बड़बड़ाहट सुनी।
"होरस," एक ने फुफकारा।
“चुप रहो,” दूसरे ने पलटकर जवाब दिया।
मुझे हैरानी हुई कि यह होरस कौन है और हम्प्टी और डम्प्टी के चेहरों को देखकर लग रहा था कि वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जिससे मौसम के बारे में हंसी-मजाक भरी बातें की जा सकें। जैसे ही वह आगंतुक पास आया, मेरे मन में डर बैठ गया, मेरी गर्दन के बाल खड़े हो गए। अगर पहरेदार होरस से डरते हैं, तो शायद मुझे भी डरना चाहिए।

~*~

करने के लिए जारी:

टूटी हुई आत्माएँ
अभी प्री-ऑर्डर के लिए उपलब्ध है!
किंडल

जेड के बारे में

जेड एम फिलिप्स पैरानॉर्मल रोमांस और फैंटेसी शैलियों में लिखती हैं और अन्य पुस्तकों के साथ-साथ बहुप्रतीक्षित 'अनफॉर्चुनेट सोल्स सीरीज़' की लेखिका भी हैं। लेखिका होने के अलावा, जेड गिटार बजा सकती हैं, स्पाइडर मंकी का बेहद सटीक अभिनय कर सकती हैं और अपनी कलम की एक ही झटके से अलौकिक प्राणियों की पूरी सेनाओं को पराजित करने की जादुई क्षमता रखती हैं। जब वह रहस्यमय प्राणियों और प्यारे किरदारों के बारे में नहीं लिख रही होती हैं, तो वह अपने बच्चों के साथ रात में डांस पार्टी करती हैं, अपनी पसंद के विषयों पर ब्लॉग लिखती हैं और चूल्हे पर नए-नए व्यंजन आजमाती हैं (जिसके चलते अक्सर उनके स्मोक डिटेक्टर भी काम करने लगते हैं)। जेड अपने पति, दो बच्चों और अपनी शरारती बिल्ली, विलियम वालेस ब्रेवहार्ट फ़ज़ी मैकफ़ारलैंड द थर्ड के साथ एरिज़ोना में रहती हैं।

जेड के साथ संपर्क बनाए रखें:

वेबसाइट: www.jademphillips.com

मेलिंग लिस्ट: www.jademphillips.com/contact

फेसबुक: https://www.facebook.com/Jade-M-Phillips

ट्विटर: https://twitter.com/JadeMPhillips